श्रीनेमविजय महाराजविरचित

# धर्मपरीक्षानो रास.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

मुंबई.

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां छापी प्रसिद्ध कर्यो.

प्रथमावृति.

संवत् १९६९. सने १९१३.

Printed by R. Y. Shedge, at the N. S. Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay, and
Published by Bhanji Maya, for Shravak Bhimsi Manek, Mandvi, Saka Lane, No. 225-231, Bombay.

श्रीजिनाय नमः

श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

# अथ श्रीधर्मपरीक्षानो रास.

## दुहा.

प्रथम जिनेश्वर पय नमुं, वृषभनुं लंछन जास ॥ मरुदेवी नंदन ऋषभ, नाभीराय कुल तास ॥ १ ॥ अढार वर्ष आरा तणां, सागर कोडा कोड ॥ गयो धर्म वाल्यो जिणे, तेह नमुं कर जोड ॥ २ ॥ आदि चारित्र आदरी, दीधो द्विधा धर्म ॥ मन वच काया वश करी, ठेदी आठे कर्म ॥ ३ ॥ शिवपुरना वासी थया, अजरामर सुख ठाम ॥ चोवीशे तीर्थंकरा, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥ समरुं श्रुतदेवी सदा, आपे वचन विलास ॥ तुष्टमान थाजो तमे, सफल फले मुज आश ॥ ५ ॥ गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु तुठे गम होय ॥ गुरु कहीए माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ ६ ॥ भवियण भावे सांभलो, धरमाधरम विचार ॥ द्वेष बुद्धि दूरे करी, परीक्षा करजो सार ॥ ७ ॥ उत्पत्ति तेहनी

दीपक, धर्मपरीक्षा रास ॥ वातो विविध प्रकारनी, आणी हरख उल्लास ॥८॥ सांजलतां शुज उपजे, मन नावे मन मांय ॥ सो आणे सांचो धरम, वाच्यो तिमज कहाय ॥ ए ॥

ढाल १ ली.

देशी चोपाइनी.

जंबूद्वीप जोयण एक लाख, जंबू वृक्षनी नामे साख ॥ असंख्याता सायर द्वीप कह्या, केवली वाण्या ते में लह्या ॥ १ ॥ जंबूद्वीप मध्य मेरु जोय, सुदर्शन नामे ते होय ॥ बीजा पर्वत कह्या अनेक, मेरु लाख जोयणनो एक ॥ २ ॥ तेथी दक्षिण दिश नणी कह्युं, नरत क्षेत्र ते शास्त्रे लह्युं ॥ पांचसें बवीश ने ब कला, बत्रीश सहस देश निरमला ॥ ३ ॥ साडा पचवीश आरज देश, बीजा अनारज कहीए लेश ॥ आरज धरम मरमनो जाण, म्लेछ वर्णनो अनारज गण ॥ ४ ॥ पचास जोयणनो परमाण, रूपामय वैताढ्य वखाण ॥ एहवो पर्वत शाश्वतो मान, श्वेत वर्ण ऊलहलते वान ॥ ५ ॥ पचवीश जोयण जूमि मांहि, उंचो पचीश जोयण उगांहि ॥ दश जोयण डुंगरथी जोय, दक्षिण दिश नणी ते होय ॥ ६ ॥ कह्यां नगर मोटां पचास, नगर पुंज कोक गाम निवास ॥ मुख्य पचास नगरमां जेह, वैजयंतपुर कहीए तेह

॥ ७ ॥ बार जोयणनो लांबो अछे, नव जोयणनो पोहोलो पछे ॥ गढ मढ मंदिर पोल प्रकार, सोहे उंलाउंल आगार ॥ ८ ॥ वाव्य कुवा सरोवर जिहां, जिननां शिवनां मंदिर तिहां ॥ धर्म तणी पोशालो घणी, एही नगरी विद्याधर तणी ॥ ए ॥ वसे विप्र विद्याना धणी, वनिता रूपे रलीश्रामणी ॥ वणिक करे मोटा व्यापार, वस्तुना नाना अंबार ॥ १० ॥ बावन वीर तणां त्यां स्थान, वितधारीनां मुख पर बान ॥ नव नारु नव कारु लोक, वस्त्र पहर्यां पचरंगी थोक ॥ ११ ॥ विद्या शक्तिए चाले आकाश, विमान रचना जाणे आवास ॥ तीर्थयात्रा करतां दिन जाय, पुण्ये प्राणी निगमे आय ॥ १२ ॥ तिण नगरी जीतारि जूप, अद्भुत इंद्र सरिखुं रूप ॥ न्याय-मारगमां चाले राय, रामचंद्र उपम कहेवाय ॥ १३ ॥ राय तणी राणीनुं नाम, पवन-वेगाथी वाधे काम ॥ दंपति बेहुने वाध्यो नेह, हरख थाये जिम आवे मेह ॥ १४ ॥ रूपे अद्भुत दीसे नार, इंद्राणी जाणे अवतार ॥ बेने धर्म तणो छे राग, केवली जाख्यो पाले माग ॥ १५ ॥ एम जोगवतां सुख अथाग, आवी उपन्यो कर्मने जाग ॥ राणी कुखे थया नव मास, प्रसव्यो पुत्र सफल थइ आश ॥ १६ ॥ उछव महोछव कीधा घणा, साजन आव्या पोता तणा, जमाड्या जोजन पक्वान, ते साखे थाप्युं

अनिधान ॥ १७ ॥ मनोवेग नामे कुमार, देखी रंजे सहु नरनार ॥ नणी गणीने प्रौढो थयो, मात पिता मन आनंद नयो ॥ १८ ॥ शीखी विद्या नवनवी रीत, मीठुं बोले वाधे प्रीत ॥ वन उपवनना खेले ख्याल, जीव नापाना जोवे फाल ॥ १९ ॥ जमी मूलीना जाणे नेद, मंत्र जंत्रथी पूरे उमेद ॥ ढाल नेमविजये ए कही, प्रथम खंडनी पहेली सही ॥ २० ॥

## उहा.

जो वैताढ्यगिरि थकी, उत्तर श्रेणि कहाय ॥ दश जोजन दूरे कह्यां, साठ नगर समुदाय ॥ १ ॥ एक एक नगर प्रत्ये कह्यां, कोम कोम ठे गाम ॥ मानव लोक वसे तिहां, विद्याधरनां ठाम ॥ २ ॥ साठ नगरमां शोनतुं, नयर विजयपुर नाम ॥ लंक समोवम जाणीए, अलखत ठे अनिराम ॥ ३ ॥ प्रनास नामे नूपति, पाले राज अखंम ॥ मान्य करे मिथ्यातने, पापी मांहे प्रचंम ॥ ४ ॥ विपुला राणी तेहनी, सुख नोगवतां सार ॥ पुत्र थयो एक एहवो, पवनवेग कुमार ॥ ५ ॥ जोवन पाम्यो अनुक्रमे, मिथ्या-मतनी बुद्धि ॥ माने नहीं जिनधर्मने, एहवी जेनी शुद्धि ॥ ६ ॥ विद्या तणी शकते करी, उमी जाय आकाश ॥ फिरतो हरतो आवीउं, मनोवेगनी पास ॥ ७ ॥ बे जण

वेग एकठा, बहु धंधाणो नेह ॥ नित्य आवे एकेकने, फरी फरीने गेह ॥ ८ ॥ वातो विविध प्रकारनी, करता मांहोमांह ॥ धर्म वखाणे आपणो, अन्यो अन्य उमांह ॥ ९ ॥

## ढाल बीजी.

रे जीवडा दीधानां फल जोय—ए देशी.

मनोवेग कहे सांभलोजी, जैनधरम जग सार ॥ केवली भाषित निरमलोजी, उतारे भव पार रे भाइ ॥ धरम समो नहीं कोय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावनाजी, धर्मना चार प्रकार ॥ जीवदया जतने करीजी, जे पाले नरनाररे ॥ भा० ध० ॥ २ ॥ सुक्षम बादर जाणीएजी, त्रस थावर दोय जीव ॥ सन्नीउ असन्नीउजी, संमुर्छिम गर्भज हीवरे ॥ भा० ध० ॥ ३ ॥ अनेक भेद छे धर्मनाजी, कहेतां नावे पार ॥ तव पवनवेग बोलीउजी, हुं नवी जाणुं लगाररे ॥ भा० ध० ॥ ४ ॥ त्यांथी बे जण आवीआजी, पुष्पदंत गुरु पास ॥ अध्यारु छे आदिनोजी, गम्र भणावे तासरे ॥ भा० ध० ॥ ५ ॥ भणवा बेठा बे जणाजी, ज्योतिष वैदक सार ॥ मंत्र जंत्र जमी मूलीजी, वेद शास्त्र अपाररे ॥ भा० ध० ॥ ६ ॥ भणी गणी प्रोढा थयाजी, पाम्या परम आनंद ॥ मनोवेग श्रावक भलोजी, पवनवेग मिथ्या कंदरे ॥ भा० ध० ॥ ७ ॥ विमाने बेसी दोय

स्वामिन् तुं अवधार ॥ पवनवेग मुज मित्र छेजी, तेहनो कहो विचाररे ॥ जा० भ० ॥ १७ ॥ नव्य जीव छे तेहनोजी, किंवा अनव्य नर एह ॥ कदाग्रही माने नहींजी, जिनवर वचनज तेहरे ॥ जा० ध० ॥ १ए ॥ मुनिवर कहे तुमे सांजलोजी, मनोवेग राय सुजाण ॥ नेमविजय ढाल वीजीएजी, प्रथम खंमनी परमाणरे ॥ जा० ध० ॥२०॥

दुहा.

पवनवेग तुज मित्र जे, उत्तम जीव छे तेह ॥ जव्य जीव करी जाणजो, एमां नहीं संदेह ॥ १ ॥ ते माटे तमने कहुं, एनो एक उपाय ॥ पाडलीपुर दक्षिण दिशे, तुमे जाजो तिणे ठाय ॥ २ ॥ थिवुं वेंधव मली एकवा, अपूरव करीने वेश ॥ वादी लोक वसे तिहां, दुरधर दक्षिण देश ॥ ३ ॥ ब्राह्मण नाती मली तिहां, जाग जमनो ठाम ॥ आडंवर अधिके करी, करे होमनां काम ॥ ४ ॥ होमे हिंसा छे घणी, बकाय विराधन थाय ॥ पंचेंद्रि जीव मोटका, होमे अग्नि मांय ॥ ५ ॥ त्यां तुमे वाद करो जइ, विप्रना उतारो नाद ॥ लान थशे तुमने घणो, जव सांजलशे साद ॥ ६ ॥ शुरु राखजो जिनधरम, नाखजो मरम पुराण ॥ अगम थइ आघा जइ, केजो कथा कुपुराण ॥ ७ ॥ पवनवेग

१ अहंकार.

हयंग, मरुधर देश वखाणीए ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीरा वागड लाट कर्णाट, कानड मेवाम
माळवो ॥ वीरा वेराट वच्छ कच्छ नाम, कजळ नेपाळ जाळवो ॥ वी० ॥ ६ ॥ वीरा
कणवीर कानन देश, कावील वीहयंग मेवातमां ॥ वीरा गंधार वेदर्भनो गाम, बबर कामरु
जातिमां ॥ वी० ॥ ७ ॥ वीरा जोतां जोतां जग मांहे, फरतो दक्षिण दिश आवीर्ज ॥
वीरा पाडलीपुर नगर मांहे, दीठे हरख बहु व्यापीर्ज ॥ वी० ॥ ८ ॥ वीरा चार जोयणने
विस्तार, नयर पाडलीपुर जाणीए ॥ वीरा चार पोळ तुंग प्राकार, गढ मढ कोरणी
वखाणीए ॥ वी० ॥ ९ ॥ वीरा चोराशी चोवटां बजार, हाटनी श्रेणी सोहामणी ॥
वीरा सात भूमि मोहोल आवास, गोख झरुखे चितरामणी ॥वी०॥१०॥ वीरा माणिक
मोती व्यापार, रतन प्रवालानी नहीं मणा ॥ वीरा हीरा झवेर सुवर्ण, वणिज चलावे
वणिक घणा ॥ वी० ॥ ११ ॥ वीरा ब्राह्मण वरण विशेष, विद्या भणावे विद्यारथी ॥
वीरा वेदीया वेद विचार, सांभळे बेठा स्वारथी ॥वी०॥ १२ ॥ वीरा यज्ञ करी मांड्या
याग, मध मदिरा दूध दहीं घणां ॥ वीरा उत्तम खारेक खांड, सरसव घृत टोपरां
तणां ॥ वी० ॥ १३ ॥ वीरा जोगी तापस संन्यास, तेहना मठ रळियामणा ॥ वीरा
देवल दीसे अनेक, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तणां ॥ वी० ॥ १४ ॥ वीरा हनुमंत गोरी

पाडलीपुर जोवा तणी, मुजने होंश विशेष ॥४॥ देखाडो नहीं जो तुमे, करशो करशुं एम ॥ अमे जाशुं घर आपणे, मुज नथी जोवुं तम ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, मित्रजी म करो रोष ॥ जाशुं आपण बे जणा, जो छे तुमने शोख ॥ ६ ॥ पाडलीपुर तुम दाखवुं, इहडे राखो हाम ॥ फरी न करशो शोचना, करशुं सही ए काम ॥७॥ पवनवेग ते सांभली, थयो मन्न रळीयात ॥ बे जण बेसी एकठा, करवा मांडी वात ॥ ८ ॥ निज घर जइ परवारीने, चालो जइए त्यांहि ॥ शोभे छे शणगारथी, अद्भुत तरु उपवांहि ॥९॥ परठेण करीने उठीआ, आपणा निज आवास ॥ मनोवेग झटपट करी, मित्र तेडीउ तास ॥ १० ॥

## ढाळ चोथी.

हो तरिगारे नाइ हो तरिया–ए देशी.

ऊना पाणीए स्नान करावी, देवपूजा कीधी रंगेरे ॥ चुआ चंदननी अर्चा कीधी, अनोपम वस्त्र पहेर्या अंगेरे ॥ प्रीतिनी रीत जुओ तुमे भाइ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ भोजन करवा बे जण बेठा, बेठा साजन मांहेरे ॥ पीरसवा मांडी सुखडी सारी,

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] पुन जानी [illegible] ॥ मांयेवा पावट

[illegible] ॥ प्रीं० ॥ ५ ॥ पान मापार्मी तर्वाग एलची,

[illegible] ॥ कपुर वास्या नीर मंगावी, शौच थया चालवा सारु ॥

प्री० ॥ ६ ॥ चदन कपुर केशर घाली, अंग विलेपन कीधरे ॥ कुसुममाला पहेरी कोटे,

मुहूरत वेला लीधरे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ साज लेइने सामग्री कीधी, विमानमां वेसी तामरे ॥

आव्या ततक्षण पासली परिसर, दीठां मनोहर ठामरे ॥ प्री० ॥ ८ ॥ उतरी हेठा

विमान मांहेथी, पहेर्यां वस्त्र ते साररे ॥ माथे मुकुट काने कुंडल, कोटे मोतीनो हाररे

॥ प्री० ॥ ९ ॥ बांहे बाजुबंध वेरखा बांध्या, मुद्रिका कटी कंदोरारे ॥ पाये मोजडी

सोल शणगारे, वशीकरण पासे मोहोरारे ॥ प्री० ॥ १० ॥ एकने मस्तक खडनो भारो,

बीजाने मस्तक काठीरे ॥ हाथ कोहाडो दातरडां लेइ, बीजा हाथमां लाठीरे ॥ प्री०

॥ ६ ॥

॥ ११ ॥ रूप कपाटीनो करी आव्या, नगर प्रवेश ते कीधोरे ॥ रूप जोइने अचंबो
पाम्या, लोकने आशिष दीधोरे ॥ प्री० ॥ १२ ॥ भेरी वजाडी मोटे सादे, घंटानाद
सुणाव्योरे ॥ पुरव दिशे वादीनी शाला, जोवा अनेक लोक आयोरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥
सिंहासन बेठा बे नाद, अचरिज सहुने आवेरे ॥ गुण गिरुआ बेहु पुरुष अनोपम,
किहांथी आव्या किहां जावेरे ॥ प्री० ॥ १४ ॥ सारा नगरमां शब्द सुणायो, भेर
घंटानो नादरे ॥ द्विज सघला सांभलीने आव्या, करवा विद्यानो वादरे ॥ प्री० ॥ १५ ॥
वादी कहे अमे वाद करीशुं, ज्ञानी कहे जोशुं भेदरे ॥ एहने पुछशुं जो तुमे जाणो,
तो कहो मांहेलो भेदरे ॥ प्री० ॥ १६ ॥ जोतिषी जंपे जोष अमारो, जोइ काढो कोइ
दोषरे ॥ सघलामां ज्योतिषनुं मान छे, केतोक केरो जोषरे ॥ प्री० ॥ १७ ॥ भट्ट कहे
अमे भारत भांखेलो, गहन अरथ पुछी लेशुंरे ॥ कवि बोले अमे छंदनी जाति, पुछीने
देशोटो देशुंरे ॥ प्री० ॥ १८ ॥ व्यास वदे अमे पुराण वातो, जाणुं केम ...
कामी कहे अमे कामने जाणुं, अम आगम ...
अमे नाटीकी ...

प्रहारे ॥ हुंहुंकार करता आव्या, अनुक्रमे सहु तेणी वाररे ॥ प्री० ॥ २१ ॥ क्रोध मान माया लोभ पर्हर्या, राग द्वेषनां गेहरे ॥ पहेला मंडली टाळ चोथीमां, नेमत्रिजग कहे एहरे ॥ प्री० ॥ २२ ॥

दुहा.

तख्त उपर पेठा चढी, दीठो सहु परिवार ॥ आलोचे मनमां तिहां, ए कुण कहीए कुमार ॥ १ ॥ आभूषण अधिक करी, पहेर्या सोळ शणगार ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र ए, अथवा देवकुमार ॥ २ ॥ अन्यो अन्य सांसे पड्या, जक्ति करे बहु जेव ॥ जगन्य जागता होमथी, आव्या सही ए देव ॥ ३ ॥ पुण्य आपणां पाधरां, आव्या छे परमेश ॥ तुष्टमान थाशे सही, धर्यां अनोपम वेश ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए छे सही, नारायणनुं रूप ॥ आपण सहुने तारशे, पड्या छीए जवकूप ॥ ५ ॥ कोइ कहे महादेवजी, आव्या आपणी सेव ॥ हरहर मुख जपे सहु, सहुथी अधिको देव ॥ ६ ॥ कोइ कहे ब्रह्माजी तणो, अनुपम रूप आकार ॥ ब्रह्मलोकथी आवीया, तारे सहु नरनार ॥ ७ ॥ कोइ कहे ए इंद्र छे, को कहे सूरज चंद्र ॥ को वासी पातालनो,

शेषनाग नागेंद्र ॥ ७ ॥ द्विज पखीया सांसे सहु, प्रणमे वारोवार ॥ भाव जगति करतां घणी, कलना न पखी लगार ॥ ए ॥ विप्र एक बोल्यो तिहां, सघला दीसो मूढ ॥ प्रणति करो छो तमे घणी, गुण नवी जाणो गूढ ॥ १० ॥ विष्णु रूप जग ए नहीं, शंख चक्र नवी पास ॥ ईश्वरनुं रूप केम कहो, त्रिशुल त्रिलोचन तास ॥ ११ ॥ चार वेद ब्रह्मा मुखे, अज्ञानी तुमे लोक ॥ शुन्न शणगारो देखीया, काष्ठ उपाडे थोक ॥१२॥

## ढाल पांचमी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे, जो मन माने तो करो लज्जारे–ए देशी.

अकल सरूपी दीसे छे एहरे, करीने विचार पूछशुं तेहरे ॥ साच जूठनुं पारखुं कीजेरे, नहींतर एहने देशोटो दीजेरे ॥ १ ॥ ब्राह्मण सघला बोल्या वाणीरे, कवण नगरीथी आव्या जाणीरे ॥ कवण जातिना छो तुमे भाइरे, किण कारण आव्या रूप बनाइरे ॥ २ ॥ कवण धरम करो छो साररे, कवण शास्त्र जण्या गुण धाररे ॥ वाद करो अमशुं निरधाररे, तो अम उपजे हरख अपाररे ॥ ३ ॥ मनोवेग कहे सांभलो विप्ररे, अमे छीए कथाली क्षीप्ररे ॥ वाद कहो केम कीजे तुमशुंरे, तमे सहु आव्या मलीने अमशुंरे ॥४॥ न्याय पुराणनी नवी जाणुं वातोरे, धरमाधरमनी न चुकुं तांतोरे ॥

॥ ११ ॥ रूप कराईनो करी आज्ञा, नगर प्रवेश ते कीधोरे ॥ रूप जोइने अनंगो
नाठा, लोकने आनंद दीधोरे ॥ प्री० ॥ १२ ॥ नेरी नगारी मोटे सादे, घंटानाद
गाजा, गोखे आनंद दीधोरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥ गाया अनेक लोक आपांरे ॥ प्री० ॥ १३ ॥
धन्नागोरे ॥ रूप दिठे नारीनी शाखा, गोया अनेक लोक आपांरे ॥ गुण गिरुआ वेदु पुरुष अनोपम,
निरागम वेग में नाठ, अपरिज सहुने आवेरे ॥ गुण गिरुआ वेदु पुरुष अनोपम,
निरुणी आज्ञा किधी जावेरे ॥ प्री० ॥ १४ ॥ सारा नगरमां शब्द सुणायो, नेर
पंडानो नारे ॥ द्विज पण्डा सांनळीने आव्या, करवा विवानो वादरे ॥ प्री०॥१५॥
नारी कहे अमे नाद करीशुं, ज्ञानी कहे जोशुं वेदरे ॥ एहने पूछशुं जो तुमे जाणो,
तो कहो गांहेला नेदरे ॥ प्री० ॥ १६ ॥ जोतिषी जंपे जोष अमारो,जोइ कालो कोइ
शोषरे ॥ सगाळाग ज्योतिषनुं मान छे, केतोक करो जोषरे ॥ प्री०॥ १७ ॥ नट कहे
अमे नाटक मांहेलो, गहन अरथ पूछी लेशुंरे ॥ कवि बोले अमे छंदनी जाति, पूछीने
हैरोटो देशुंरे ॥ प्री० ॥ १८ ॥ व्यास वदे अमे पूराण वातो, जाणुं केम हवे जाशेरे ॥
कामी कहे अमे कामने जाणुं, अम आगल स्पष्ट थाशेरे ॥ प्री० ॥ १९ ॥ वेद कहे
अमे नाडीनी विधिमां, नागशुं एहना होकरे ॥ व्याकरणी कहे वाद ते अमशुं, केम
करशो पगरो लोकरे ॥ प्री० ॥ २० ॥ पाठक पंड्या बोल्या ततखिणे, ढीक्र पाडुना

प्रहाररे ॥ ढुंढुंकार करंता आव्या, अनुक्रमे सहु तेणी वाररे ॥ प्री० ॥ २१ ॥ क्रोध मान माया लोन नरीया, राग द्वेषनां गेहरे ॥ पहेला खंडनी ढाल चोथीमां, नेमविजय कहे एहरे ॥ प्री० ॥ २२ ॥

## डुहा.

तखत उपर वेग चढी, वींटो सहु परिवार ॥ आलोचे मनमां तिहां, ए कुण कहीए कुमार ॥ १ ॥ आजूषण अधिके करी, पहेर्या सोल शणगार ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र ए, अथवा देवकुमार ॥ २ ॥ अन्यो अन्य सांसे[1] पड्या, नक्ति करे बहु जेव ॥ जगन्य जागना होमथी, आव्या सही ए देव ॥ ३ ॥ पुण्य आपणां पाधरां, आव्या ठे परमेश ॥ तुष्टमान थाशे सही, धर्या अनोपम वेश ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए ठे सही, नारायणनुं रूप ॥ आपण सहुने तारशे, पड्या ठीए नवकूप ॥ ५ ॥ कोइ कहे महादेवजी, आव्या आपणी सेव ॥ हरहर मुख जपे सहु, सहुथी अधिको देव ॥ ६ ॥ कोइ कहे ब्रह्माजी तणो, अनुपम रूप आकार ॥ ब्रह्मलोकथी आवीया, तारे सहु नरनार ॥ ७ ॥ कोइ कहे ए इंद्र ठे, को कहे सूरज चंद्र ॥ को वासी पातालनो,

[1] संशयमां.

शेषनाग नागेंद्र ॥ ८ ॥ द्विज परखीया सांभळे सहु, प्रणमे वारोवार ॥ नाथ जगति
करतां घणी, कहना न करी लगार ॥ ९ ॥ विप्र एक बोल्यो तिहां, सघळा दीसो
मूढ ॥ प्रणति करो छो तमे घणी, गुण नवी जाणो गूढ ॥ १० ॥ विष्णु रूप जग ए
नहीं, शंख चक्र नवी पास ॥ ईश्वरनुं रूप केम कहो, त्रिशूल त्रिलोचन तास ॥ ११ ॥
चार वेद ब्रह्मा मुखे, अज्ञानी तुमे लोक ॥ शुन शणगारो देखीया, काष्ठ उपाडे थोक ॥१२॥

## ढाल पांचमी.

आ मित्रशाखी आ गुण सउयांरे, जो मन माने तो करो लडारे–ए देशी.

अकल सरूपी दीसे छे एहरे, करीने विचार पूछशुं तेहरे ॥ साच जूठनुं पारखुं
कीजेरे, नहींतर एहने देशोटो दीजेरे ॥ १ ॥ ब्राह्मण सघळा बोल्या वाणीरे, कवण
नगरीथी आव्या जाणीरे ॥ कवण जातिना छो तुमे नाहरे, किण कारण आव्या रूप
धनाहरे ॥ २ ॥ कवण धरम करो छो साररे, कवण शास्त्र भण्या गुण धाररे ॥ वाद
करो अमशुं निरधाररे, तो अम उपजे हरख अपाररे ॥ ३ ॥ मनोवेग कहे सांभळो
विप्ररे, अमे छीए कयासी क्षीप्ररे ॥ वाद कहो केम कीजे तुमशुंरे, तमे सहु आव्या
मळीने अमशुंरे ॥४॥ न्याय पुराणनी नवी जाणुं वातोरे, धरमाधरमनी न बुझुं तांतोरे ॥

रान मांहे रोझमा जेम जीवरे, ते सरिखा अमे तुं सदैवरे ॥ ५ ॥ द्विजवर तव कोपानल थाएरे, जो नवी जाणो तुमे वेहु कांएरे ॥ तो घंटानो केम कीधो नादरे, जेरी वजाडी पाड्यो तुमे सादरे ॥ ६ ॥ गर्व घणो आणी मन मांहींरे, उंचा चढी बेठा छो उछांहीरे ॥ अति घणो कीधो तुमे अन्यायरे, नरम थइ बोलो हवे न्यायरे ॥ ७ ॥ मनोवेग कहे अमे एमरे, नाद कीयो ते कौतुक जेमरे ॥ ते माटे तमे सहु मली आव्यारे, तुमने अमे बे दिलमां नाव्यारे ॥ ८ ॥ जो न गमे सिंहासन पर बेठारे, तो अमे उतरी बेसुं हेठारे ॥ रीस न करो अमने तुमे देवरे, ज्यांथी आव्या जाशुं ततखेवरे ॥ ९ ॥ राजी थइने विप्र कहे ज्ञाइरे, रूप देखीने कहीए चित्त लाइरे ॥ वस्त्र आभूषणे दीसो ताजारे, मीठाबोला मोटी माजारे ॥ १० ॥ नीच काम कां करो कुमाररे, खड इंधणना आणो ज्ञाररे ॥ साच कहो जूठुं मत बोलरे, जेहवा रूपे छो तेहवो तोलरे ॥ ११ ॥ नाति जातिनो कुल मत लोपोरे, साचुं कहेतां रखे तुमे कोपोरे ॥



मनोवेग कहे तुमे छो मोटारे, न्याय पुराणमां अमे तुं खोटारे ॥ १२ ॥ नीच तणां आदर्यां अमे कामरे, केम पुराय विवादे हामरे ॥ बहु बलवंता संगाते वादरे, कीजे तो वधे विखवादरे ॥ १३ ॥ अमे एकाकी परदेशी लोकरे, जे बोलुं ते सर्वे थाए फोकरे ॥

सगां साजन नहीं इहां कोयरे, तो अमारो साखी कोण होयरे ॥ १४ ॥ ब्राह्मण सहु बोल्या तेणी वाररे, तुमे नेहु नाइ देवकुमाररे ॥ साची वात कहेजो निरधाररे, कयां पुराण साथां सिरदाररे॥ १५ ॥ न्याय नीति साची कहो वातरे, असत्य वाक्यथी होशे घातरे ॥ मनोवेग कहे सांजलो वाचरे, वात होये बोलतां साचरे ॥१६॥ सोल मूठीए नर मल्यो एकरे, साच बोल्याथी पाम्यो छेकरे ॥ गरदन उपर सोल मूठ खाधीरे, ते नर सीस रह्यो तिहां वांधीरे ॥१७॥ द्विज सघला तव कहे कर जोडरे, अमने सांजलवानो छे कोडरे ॥ सोल मूठीया नर तणी वातोरे, साच बोल्याथी केम पाम्यो घातोरे ॥१८॥ मनोवेग बोल्यो गुणवंतरे, मलयार देश देशोमां संतरे॥ मंगलपुर नामे छे गामरे, इन्द्र सारीख करी अभिरामरे ॥१९॥ अगर तगर उंचा छे तालरे, श्रीफल फोफल कपास तमालरे ॥ नरी सर्वांग सहकारनो गामरे, धनवंत लोक वसे तेणे गामरे ॥२०॥ जमर नामे कुणवी छे एकरे, रूपणी नामे नार सुविवेकरे॥ पहेला खंडनी पांचमी ढालरे, नेमविजय कहे पद उजमालरे ॥ २१ ॥

दुहा.

मधुकर नामे पुत्र छे, क्रोधी मूरख रीसाल ॥ निज घरनुं धन खोइने, विणस्यो

[illegible] माल ॥२॥ एक दिन [illegible] मार्ग कीधी गीम ॥ कोप चडावी चालीयो, गया गाम [illegible] ॥३॥ आवीय [illegible] पिपल नामे गाम ॥ धान खेत्रनां आणी- ने [illegible] मधुकर [illegible] लाको नर्णा. (आ) धान तणा अंबार ॥ [illegible] मग मजना [illegible] पार ॥ ४ ॥ देश तुमारामां मही. निपन्यां [illegible] ॥ देश अमार [illegible] पान ॥ ५ ॥ मरी लवींग ने एलची. [illegible] आम्र ॥ ६ ॥ तान मधुकरनी [illegible] पाम्या [illegible] ॥ [illegible] नवी मानीए [illegible] फोक ॥ ७ ॥ पटेल [illegible] पृथीए, करशु कहेश जम ॥८॥ काप [illegible] धालो गह ॥ [illegible] पटेल [illegible] तसाटी [illegible] ॥९॥ हाथ पाय छेदा परा. [illegible] लाक ॥ तद राखवो नवि घटे, कलंक मूके फोक ॥१०॥

ढाल ७ही.

राम सीताने धीज करावेरे, त्रणसे हाथ खाइ खणावेरे—ए देशी.

देवो शेठ बोल्या दयावंतरे, स्वामी एह दीसे छे संतरे ॥ चीजडां चोरने चूसट

१ हेरूमां.

दीजेरे, एवडो ए काम केम कीजेरे ॥ १ ॥ आठ दीक गरदन मांहीरे, दीजे वात
कही सत तांहीरे ॥ राजा आदे वात सहु मानीरे, दीधी आठ दीक तेहने वानीरे
॥ २ ॥ मधुकर चिंतवे मन मांहीरे, साच बोल्ये खाधो मार आंहीरे ॥ जीवतो निज
पुर जो जाउंरे, तो एहवो मार नवी खाउंरे ॥३॥ एम चिंतवी चाल्यो तेणी वाररे,
वेगे आयो देश मलयाररे ॥ लवींग एलची मरी देखीरे, लोको प्रते कहे तव चेखीरे
॥ ४ ॥ सांभलो तुमे मलवारी लोकरे, वयण माहरुं मत जाणो फोकरे ॥ एक आहीर
देश ठे एहवोरे, में जइ जोयो ते कहेवोरे ॥५॥ घउं साली चणानी राशरे, मग मठ
चोला जव ते खासरे ॥ एलची ने लवींग सोपारीरे, शुं करीए जुवो चित्त धारीरे
॥ ६ ॥ मलवारी लोको सुणी कोप्यारे, मधुकरनां वयण ते लोप्यारे ॥ पुरव रीति
तेणे कीधीरे, आठ मूठीनी मार ते दीधीरे ॥ ७ ॥ खोटाबोलो नर ठे एहरे, अन्यो
अन्य कहे सहु तेहरे ॥ लोक आगे कही सत्य वातरे, सोल मूठीनी खाधी घातरे
॥ ८ ॥ मलवारी लोके तेणे ठामरे, सोल मूठीउं धराव्युं नामरे ॥ मनोवेग कहे विप्र
आगेरे, साच बोल्ये वयर ते जागेरे ॥ ए ॥ निज निज देश तणी जे वाचरे, अवर
देश न माने ...
पणा मत आगल जे वातरे, न गमे कोइक थाय उत्पातरे

॥ १० ॥ तेम तुम आगे कहीए वातरे, ते थापो साची होय ख्यातरे ॥ एम करतां उपजे विरोधरे, अति वाधे मन मांही क्रोधरे ॥ ११ ॥ विप्र बोल्या सांजली वाणीरे, उपजे नहीं डुःखनी खाणीरे ॥ एवो अज्ञानी नथी आंहि कोइरे, कहेशे वात तुमारी जोइरे ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे तुमे वादीरे, वाद करवाने उन्मादीरे ॥ शंका अम मन मांहे एहवीरे, मानो नहीं सही तेहवीरे ॥ १३ ॥ विप्र सांजलीने तव जंपेरे, साच कह्याथी कुण कंपेरे ॥ साच तणो जे कह्यो गूढरे, अममां नहीं कोइ मूढरे ॥ १४ ॥ मनोवेग अछो तुमे जाणरे, वात कहो साची परमाणरे ॥ कहेजो कोइ वात विचारी रे, कोइ न करे मारी तारीरे ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सहु साथरे, तुमे सांजलो विद्याना आथरे ॥ मूढ उपर कथा कहुं जेहरे, जूठ बोल्या उपर तेहरे ॥ १६ ॥ कहेशुं कथा ते तो रुडीरे, मत जाणो तुमे कोइ कुडीरे ॥ कंठापुर एहवुं एक ठाजेरे, नगर अवरमांहीं विराजेरे ॥ १७ ॥ प्रजापाल नामे तिहां राजारे, तेहनी छे मोटी माजा रे ॥ ब्राह्मण वरणना वासरे, वेद जणावे अति खासरे ॥ १८ ॥ ज्ञूतमति नामे छे एकरे, विद्यावंत विनय विवेकरे ॥ वरस पचास थयां वारुरे, निरधनमां सिरदारुरे ॥ २० ॥

---

१ जंकार.

... विश्राम ॥ ... ॥ एम अनुदिन ते वहुने. वाकयो वोहोलो नेह ॥ कांति ... पूरण ... अनोपम ... ॥ १० ॥

ढाल मानमी.

मीना ... जाणं आवो ... हो मीना अति मोह—ए देशी.

... दिन पाठ्या ... मथुरा नगरीथी नेमी ... हो ॥ नाव नवि सुणी ॥ ... विनति ... आवी ते ... हो ॥नाo॥ १ ॥ पधारो अमारे देश ... विशेष हो ॥ नाo॥ ... जगत जाग कहे- ... ॥नाo॥२॥ तुम विना ते ... जाणं ... हो ॥नाo॥ तिहां आव्या ... अनेक ... जाणं जगत विवेक हो ॥ नाo ॥ ३ ॥ ... हो ... वाली ... नाली हो ॥ नाo ॥ नारीने नेमी एकांत. शिखामण दे ... हो ॥नाo॥४॥ घर माही पादजा राते. ... लागे कांइ वाते हो ॥नाo॥ ते तुम मन करो काम. फरशो ... मां कांइ ... हो ॥ नाo ॥५॥ जोवनमां जोख- म लागे, मोह वांधे मदन वहु जागे हो ॥नाo॥ अति घणुं शुं कहुं तुमने, मास चार थाश तिहां अमने हो ॥नाo॥ ६ ॥ देवदत्तने वोलाव्यो, घर ए तुमने भलाव्यो हो ॥

लाग्या सुख पात्र हो ॥जा०॥ बेहुनो सरखो मल्यो जोग, राति दिवस माणे जोग हो जा०॥१६॥ एम करतां चारे मासे,गया बेहु जण बेसी विमासे हो ॥जा०॥ आवशे तुम जब प्यारो, तब मुजने मेलशो न्यारो हो ॥ जा०॥ १७ ॥ एकांते बेहु जण बेसी, वात करतां नारी व्हेसी हो ॥जा०॥ तुमे दिलगीर मत थाउ, मेलुं नहीं जीव जो जाउ हो ॥जा० ॥ १८ ॥ प्रपंच करुं एक एहवो, आपण जेलां रहुं तेहवो हो ॥जा०॥ तो मुजने साची जाणो, तुमे दुःख हइए मत आणो हो ॥ जा०॥ १९ ॥ जगनदत्ता तब चाली, मध्य रात्रि काली करवाली[1] हो ॥जा०॥ पहेला खंडनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे ततकाल हो ॥ जा० ॥ २० ॥

## दुहा.

मसाणमां गइ एकली, आण्यां मडां बे रंग ॥ एक मूक्युं निज ढोलीए, अवर उंटला चंग ॥ १ ॥ धन सघलो काढी लीयो, घरे लगावी आग ॥ मध्य रात्रि दो नीकल्यां, चाल्यां उत्तर भाग ॥ २ ॥ मंदिर लाग्युं अति घणुं, मलीया लोक अपार ॥ करता हाहाकार त्यां, सर्व बल्युं तेणी वार ॥ ३ ॥ जल छांटीने उलव्युं, बल्यां दीठां

१ तरवार.

नेह निम्न ॥ शोक करे ब्राह्मण घणा, थया खदथा खिन्न ॥ ४ ॥ राम राम सहु उच्चर, सती शिरोमणि तेह ॥ मीठांबोली गोरडी, एहवी नहीं गुणगेह ॥ ५ ॥ विष्णु विष्णु एक कहे, मोटो हुर्ड अनर्थ ॥ गुरुभक्ति विद्यारथी, भस्म थयो द्विज पुत्र ॥ ६ ॥ शोक करे जन त्यां घणा, कीधां स्नान अपार ॥ ब्राह्मण सहु विचारता, नफर मेलीए सार ॥ ७ ॥ लेख लखीने ब्राह्मणे, नफर मूक्यो निरधार ॥ जूतमति आवो जलद, ढील म करो लगार ॥ ८ ॥ चली गयुं घर तम तणुं, विद्यारथी वनिताय ॥ अगनिमां बलीयां बेहु, थयुं अघटतुं आंय ॥ए॥ उना नव रहेशो तिहां, पाणी पीवा काज ॥ दहन थयुं घर तुम तणुं, घणुं शुं लखीए राज ॥ १० ॥

ढाल आठमी.

ढोलो ठे मुख मारुरे, एहनी आंखमीए फलक्यो दारुरे, मारा धणुंरे सवाइरे ढोला—ए देशी.

मथुरां पहोतो क्षिप्र, जिहां जूतमति ठे विप्ररे ॥ मारा परम सनेही सुणजो ॥ ए टेक ॥ करी प्रणाम पत्र दीधो, जूतमतिए हाथे लीधोरे ॥ मा० ॥ १ ॥ शोक आण्यो मन मांहीं, दुःख दोहग उपन्यो त्यांहिंरे ॥ मा० ॥ आव्यो कंठपुर शीघ्र, घर परजल्यो दीठो विप्ररे॥ मा० ॥ २ ॥ मूरछा आवी ततकाल, तिहां मलीयां बाल गोपालरे ॥ मा०

कीधो सचेत तेणी वार, मांड्यो करवा पोकाररे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हैयुं दले माथुं कुटे.
हाहा देव शुं चुंटरे ॥ मा०॥ एहवी नहीं मले नारी, घरनुं सुख गयो हुं हारीरे ॥ मा०
॥ ४ ॥ मस्तक मूछना केश, लोच करे गांडी वेशरे ॥ मा० ॥ आंसुनी धार विछुटी. पडी
धाक जाणे लीधा लुंटीरे ॥ मा० ॥५॥ जगनदत्ता मुण नारी. मुज मूकी गइ निरधारीरे ॥
मा०॥ तुं प्राणप्रिया गुण नारी. मुज दर्शन दे एक वारीरे ॥मा०॥६॥ तुज चंद्रवदन हरीलंक.
कनक कलश कुच शंकरे ॥मा०॥ तुज विण दीसुं हुं रंक. मुज मेली गइ विण वंकरे ॥
मा० ॥ ७ ॥ अगनि देव तें शुं कीधुं, मुज रामा प्राण हरी लीधुंरे ॥ मा० ॥ अरे पापी
तुं देव ब्रह्म, हत्या कीधी तें सबरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ मुज नारि हर ब्रह्मा मख्या. सघला
पड्या ते जूठारे ॥ मा० ॥ करता गोत्रजनी सेव. ते नाठा गुरुकुल देवरे ॥ मा० ॥ ९ ॥
विचारथी तुं पवित्र, परदुःख भंजनना मित्ररे ॥ मा० ॥ दाहा किंजवर पुत्र. किम रहेश
तुज घर सूत्ररे ॥ मा० ॥ १० ॥ ब्रह्मचारी तुं धीर. परस्त्रीना सहोदर वीररे ॥ मा० ॥ तुं
सुतो छंटला तीर, तुज लाह वह्युं शरीररे ॥ मा० ॥ ११ ॥ मरजो ए ब्राह्मण पापी.
मुज तेहवी गया मीसापीरे ॥ मा० ॥ यज्ञ कारण सहु व्यापी, मुज घरघरणी जस्मापीरे ॥
मा० ॥ १२ ॥ तिणे अवसर ब्राह्मण एक, आवी कहे वातो विवेकरे ॥ मा० ॥ नारी कारण

गुण एम, दुःख नोगवो तो गोढुं जेमरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ आवे नारी कही हे खोटी, कूड कपटनी मति हे मोटीरे ॥मा०॥ देवानी वात नवि मोले; सनावे जूनुं बोलेरे ॥मा०॥१४॥ चार हार अशुचिनो वास, सोनी निरखवनी हामरे ॥ मा० ॥ शोक करो किण काम, शोक मांही नागे गुण मामरे ॥मा०॥ १५ ॥ तुमे पंडित मोटा जानी, नणा गण्या वो गुण ज्ञानीरे ॥ मा० ॥ धरी वैराग मन मांही, राम नाम लाजे उछांहीरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ नूपति सांनली कोप्यो, ब्राह्मणनो वचन ते लोप्योरे ॥ मा० ॥ तुं शुं जाणे अजाण, मुज आगे वात परमाणरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ हरि हर ब्रह्मादिक जेह, नारीने वश पड्या तेहरे ॥ मा० ॥ अम सरिखा पामर पंख्या, शास्त्र विशानी वाते संख्यारे ॥ मा० ॥ १८ ॥ मति शुं अमने आपे, एहवी बुद्धि अमारी उथापेरे ॥ मा० ॥ महा रांकना जा तुं इहांथी, मति देवा आव्यो हे क्यांथीरे ॥ मा० ॥ १९ ॥ ते ब्राह्मण गयो एम वारी, नूतमतिए बुद्धि विचारीरे ॥ मा० ॥ पहेले खंडे कही ढाल आठ, नेमविजय कहे शुन्न गाठ रे ॥मा०॥२०॥

दुहा.

गेह गुंथ एवां मही, अस्थि गाड्यां मांही ॥ श्री विद्यारथी वे तणां, लइ चाल्यो उछांही ॥ १ ॥ गंगाजी जात्रा नणी, मारग जातां गाम ॥ आव्यो एमां ए गयो,

गहनो विद्यार्थी नाम ॥ ९ ॥ [illegible] आवी [illegible] विद्यार्थी
छुं सुत तणा तुम पंडित महाराज [illegible] मार [illegible]
पंच लागवा आवीओ मारा [illegible] आवा
॥ आवीने इहां रह्या [illegible] जाती
पुत्र ॥ कुण तु क्यांथी आवीओ [illegible] ब्रह्मचारी
श्रम नार ॥ देवदत्त विद्यार्थी [illegible]
मांही जेह ॥ गंगाजी मात [illegible] आ [illegible]
देवदत्त कुमार ॥ जानी बेटा [illegible] मन [illegible]
जानी आव्यो पास ॥ पंच [illegible] ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

कपुर होवे अति उजलो रे ए देशी.

कामनी कहे स्वामी सुणोरे, सं[illegible] पुत्र प्रीत ॥ बहुपण परण्या सुजनरे, राखो
हेतीज रीतरे ॥ साजन मानज्यो मुद्द काय ॥ ए आंकणी ॥१॥ कांपे जानी कहे निहारे,
तुं कहेनी करे रांड ॥ आ गाम तणां लोक एहवारे, फोक वांसे मारु मांकरे ॥सा०

॥ १४ ॥

॥ २ ॥ मुज रामा सती निरमलीरे, अगनिमां परजली तेह ॥ विचारथी मुज नारीनांरे,
अस्थि लइ जाउं एहरे॥ सा० ॥ ३ ॥ मनोवेगे कथा कहीरे, सांभलो विप्र विचार ॥
अज्ञानी तेणे वापडेरे, वचन न मान्युं साररे॥सा० ॥ ४ ॥ मूतमतिए जेम कह्योरे, तेम
तुमे करशो आज ॥ सत्य वचन मुज बोलतांरे, नवी मानो गुणलाजरे॥सा० ॥ ५ ॥
कथा सुणी द्विजवर कहेरे, सांभलो तुमे कुमार॥एवो नहीं अममां कोइरे, स्त्रीमोही
मूढ गमाररे॥सा० ॥ ६ ॥ सत्य वचन तुम भाषतांरे, द्विजवर नहीं आणे खेद ॥ जेहुं
होय तेहवुं कहोरे, अमे करी मानशुं वेदरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ तुमने देखी अम तणेरे,
कौतिक उपजे आज ॥ राजकुमार रलिआमणारे, केम कीजे नीच काजरे ॥ सा०॥ ८ ॥
रूप सोभागे रुयडारे, हीन करम वली कांय ॥ बिहु वानां घटतां नथीरे, सरूप कहो
वली तायरे॥ सा० ॥ ९ ॥ मनोवेग तव बोलीउरे, सांभलो भट्ट विचार ॥ एकमना मन
आणजोरे, उत्तर देजो साररे॥ सा० ॥ १० ॥ राजकुमर अमे रुअडारे, नीच करुं वली
काम ॥ ते बेहु वानां घटतां कहुंरे, ब्राह्मण सुणजो तामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ पूर्वापर
विचारजोरे, करजो वचन विचार ॥ विष्णुवाद कहुं रुअडोरे, संक्षेपे छे ते साररे ॥
सा० ॥ १२ ॥ जमुना नदी रलीआमणीरे, तेह तणे उपकंठ ॥ गोकुल वन विस्तार

ठेरे, तिहां वसे श्रीकंठरे॥सा०॥१३॥ नारायण देव तुम तणोरे, चौद भुवन विख्यात॥ चौद भुवन मुखमां वसेरे, शत्रु तणो करे घातरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पुरुषोत्तम पवित्र भलोरे, चौद भुवननो राय ॥ लोक सहुने उधरेरे, वांदे तेह तणा पायरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शंख चक्र गदा धरेरे, सारंग धनुष वली सार ॥ मस्तक मुगट सोहामणोरे, कंठे एकावल हाररे ॥ सा० ॥ १६ ॥ काने कुंमल जलकतांरे, पहेरखा वांहिं अपार ॥ सोल आजूषण शोजतांरे, गुण नवि लाजे पाररे ॥ सा० ॥ १७ ॥ दामोदर एहवो कह्योरे, अथवा साचुं के जूठ ॥ विप्र विचारी बोलजोरे, उचरीए नहीं कुठरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ पुराण प्रसिद्ध ए जाणीएरे, महीतल मोटो देव ॥ तुम वचन मान्यां खरांरे, अमे करीए एनी सेवरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ ब्राह्मण तव सहु हरखीयारे, कर जोडी कहे सार ॥ साचां वयणां तुमे कह्योरे, खोटां नहीं लगाररे ॥ सा० ॥ २० ॥ ए वात साची अमे लहुंरे, तुमे कही तत-काल ॥ पहेले खंडे मुनि भलीरे, नेमविजय उजमालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

## दुहा.

मनोवेग तव बोलीउ, सुणो द्विजवर वाण ॥ नंद गोप गोवालीउ, नीच कुले ते जाण ॥ १ ॥ गाय भेंस तेहने घणी, ठासांनो नहीं पार ॥ ते सहु चारे कानुडो, वारु वन

ओंकार ॥ काने कर काळी धरी, गळे गुंजानो हार ॥ मस्तके कुल मेघु तणा, ... ॥ २ ॥
... नार ॥ ३ ॥ वंसी वाये सुन्दर कहो, मधुर करे सुनाद ॥ नारायण गोवाळीयो,
गाढ करे वली साद ॥ ४ ॥ गोकुल गोवालणीशुं रमे, गाळे तेहज ढोर ॥ कहो त्रिभुवन
नाथ ते, नीच करम करे घोर ॥ ५ ॥ राजकुंवर रूपा अमे, नीच करम करुं जेम ॥
विश्वनाथ वली धीजसो, नीच करम कीयां तेम ॥ ६ ॥ सामान्य करम जे आचरे, ते
... कहीए देव ॥ ओहं के साचुं कहो, विप्र विचारो देव ॥ ७ ॥ तव ते ब्राह्मण
बोलीया, सत्य वचन जे होय ॥ उत्तर दीधो जाय नहीं, वेद पुराणे सोय ॥ ८ ॥ अमे
ते ( कहो ) किम लोपीए, तुमने करुं प्रणाम ॥ घटतां वचन वली कह्यां, गुणह तणां
गुण ग्राम ॥ ९ ॥

## ढाल दशमी.

फाविसरो पाणी लागणो, काविल मत चाल्यो–ए देशी.

मनोवेग पोंखे हस्युं, पुराणनी कहुं वातो ॥ हस्तीनागपुर जाणीए, पांडव पांच विख्यातो ॥ १ ॥ भीम युधिष्टर अर्जुन, सहदेव नकुल कुमार ॥ पांच नाह सुभट भला,

१ गवाळी.

केम आवीया. सफल जमारा थाय ॥ ए ॥ नारद बोल्या ततखिणे, विरोचन सुखनी खाण ॥ तुम घरणीने आणने श्रमने सफल विहाण ॥ १० ॥

ढाल बारमी.

फुलडां ते काजल सारे ए ना जमर नजाशो मारे राज ॥ ए नो फुलमीनो रूप रंग जाजो—ए देशी.

राजाए तव आणी नार राज. कर कांकण ठाड्युं तेणी वार राज ॥ तुमे सांनलजो सहु कोइ ॥ ए आंकणी ॥ नारायण हुवा तव त्यार राज, विस्मय पाम्या लोक अपार राज ॥ तु० ॥१॥ एक कहे कारण केस्युं राज. नारी जवकुं पटज एस्युं राज ॥ तु०॥ एक कहे नारायण नोहे राज, विपरीत रूप सही सोहे राज ॥ तु० ॥२॥ एक कहे गोविंदनी लील राज, देव चरित्र जाणे नवि सील राज ॥तु०॥ एक कहे केम वाध्युं पेट राज, जइ पूठीए राजाने ठेठ राज ॥ तु० ॥३॥ तव पूछ्या विरोचन राज राज, तुमे शुं कीधुं एह अकाज राज ॥तु०॥ विष्णु तणुं वधार्युं पेट राज, पापे करी जाशो तुमे हेठ राज ॥ तु० ॥ ४ ॥ राजा तव कांखो थयो त्यांहि राज,कालुं मुख लेइ गयो घर मांही राज ॥तु०॥ डुःख सोग करे अपार राज, हुं केम छुटीश एह संसार राज ॥ तु० ॥ ५ ॥ हर ब्रह्माए तेड्या

ताम राज, विष्णु देव पधारो आम राज ॥ तु० ॥ कहो कारण शुं छे केहवुं राज,
विपरीत रूप दीसे एहवुं राज ॥ तु० ॥ ६ ॥ नारायणे कह्युं तव मांभी राज, शरीर
वितक जेवुं लह्युं ठांमी राज ॥ तु० ॥ खमलड ते सहु हसीया राज, सांजली वात
अचंबे वसीया राज ॥ तु० ॥ ७ ॥ महादेवे हाकोब्या अति घणा राज, काला मुख
हुआ तेह तणा राज ॥ तु० ॥ देव दामोदर त्रिभुवन राय राज, सहुको लागे एहने
पाय राज ॥ तु० ॥ ८ ॥ प्रीछ्या वचन महेसर मली राज, पूज्या पाय नारायणना
वली राज ॥ तु० ॥ क्षमा करजो स्वामी हे देव राज, अमे अपराधी हुआ ततखेव
राज ॥ तु० ॥ ९ ॥ सघला मली विमासण करे राज, गर्भ काढशुं हवे केणी परे राज
॥ तु० ॥ ब्रह्मा शंकर बोल्या भेद राज, जांग वाढी करी काढो छेद राज ॥ तु०॥१०॥
तेह वचन मनमां धरी राज, देव सघले हास्यज करी राज ॥ तु०॥ जोर करी काढ्युं
छोकरुं राज, ते कारण वलि नामज धर्युं राज ॥ तु० ॥ ११ ॥ विष्णु सदन वैकुंठज
थया राज, देव सहु निज ठामज गया राज ॥तु०॥ मनोवेग कहे कह्यो संखेव राज,
अवर पुराण सांजलजो हेव राज. ॥ तु० ॥ १२ ॥ वलि राजा वलवंतो जाम राज,
राज रिद्धि पाम्यो तेणे ठाम राज ॥ तु० ॥ अपूरव इंद्र थया तणी राज, इश्या

उपनी मनमां घणी राज ॥ तु० ॥१३॥ जगन मांड्यो हवे तेणे क्षिप्र राज, अनेक तेडाव्या त्यां विप्र राज ॥ तु० ॥ होम हुताशन परजले राज, पुण्यदान दे जे नर मले राज ॥ तु० ॥ १४ ॥ जाग नवाणुं थया जव पूरा राज, कंप्युं इंद्रासन थइ सनुरा राज ॥ तु० ॥ ज्ञाने करी विचार्युं जेह राज, मुज पदवी लेशे सही तेह राज ॥ तु० ॥१५॥ विष्णु मंदिर मघवा गयो राज, सांजल गोविंद वात उचयो राज ॥तु०॥ वलि राजा जगन बहु करे राज, मुज पदवी तणो घातज हरे राज ॥ तु० ॥१६॥ कूर रचो जगनाथ देव राज, नाश करो दैत्य तणो ततखेव राज ॥ तु० ॥ बलिने छलो करीने उपाय राज, आश पुरो मनोरथ थाय राज ॥ तु० ॥ १७ ॥ कृपा करी बोल्या तव हरि राज, जाउ तुमे आपणे ठाम फरी राज ॥ तु० ॥ निज पदवी जोगवो जाइ राज, अमे करशुं काम तुम साइ राज ॥ तु० ॥ १८ ॥ रच्यो दामोदरे विचार राज, काश्यप ऋषि तस नार राज ॥ तु० ॥ आदिति नामे कही नार राज, तेहनी कूखे लीयो अवतार राज ॥ तु० ॥ १९ ॥ जाणीए त्रेतायुग मांही राज, वामन रूप धरी उछांही राज ॥ तु० ॥ पहेले खंडे बारमी ढाल राज, नेमविजय कहे तेणे ताल राज ॥ तु० ॥ २० ॥

## ढाल.

दीयो अवतार ए पांचमो, वसिष्ठ गुरु छे तास ॥ नित्य नमे ते गुरु जणी, राखीने विश्वास ॥ १ ॥ भृगु क्षेत्र जणी चालीयो, बांधवा बलिने उपाय ॥ जाग मंडपमां आवीयो, सो सज्जन पुंठे थाय ॥ २ ॥ हाथ पाय टुंका अछे, धोतकपांवर अंग ॥ चुयांचली बाली काछमो, मस्तक फालीउं चंग ॥ ३ ॥ छाग लीयो कर एक-वमो, दर्न डुर्यां वली लीध॥ कंठ जनोइ निरमली, कसवटे टीपणुं कीध ॥४॥ द्वादश तिलक कर्यां नलां, चार जणे मुख वेद ॥ अचंच्या द्विज देखीने, अपर वचन हुवा छेद ॥ ५ ॥ कालीभरे पूछ्यो वामणा, कहोजी स्वरूप तुम देव ॥ द्विज बोल्यो नाइ आवीयो, जाचवाने बलि देव॥ ६ ॥ हुं भीखारी ब्राह्मणो, अमने मेलवो नृप ॥ रखवाखे जइ विनव्युं, वामन कर्णुं स्वरूप ॥ ७ ॥ बलि आव्या वामन कने, वेद सुणी हरख्यो चित्त ॥ कर जोमीने बलि जणे, मागो वंछित वित्त ॥ ८ ॥ देश गाम मागो घणां, मागो मंदिर कलत्र ॥ गाय नेंस मागो द्रूकती,गज रथ घोमा छत्र ॥ ९ ॥ मणि माणिक मोती घणां,रू कनक रूपुं फार॥ शुक जणे सांजल बलि, विप्र नहीं ए सार ॥ १०॥

धणीजी, सेवकने सुख थाय ॥ वामन रूप करी आवीयाजी, जय जय हुआ जग मांय ॥ सु० ॥९॥ तुठ्या तो आपो दामोदराजी, सेवावरती थाउं सार ॥ मुज किंकरपणुं तमे करो जी, काठी धरी रहो वार ॥सु०॥१०॥ मद्दा विष्णु सेवक थयाजी, काठी धरी रह्या हाथ ॥ वचन बांध्या डुःखीया थयाजी, कष्ट पाम्या जगनाथ ॥सू० ॥ ११ ॥ दीवाळीए छाण तणोजी, बलि राणो करे लोक ॥ गोयर घरघर थापीएजी, कृष्ण तणां करी फोक ॥ सू० ॥ १२ ॥ वेद पुराणे कथा कहीजी, विप्र जाणो तुमे भेद ॥ खोटुं के साचुं होयेजी, कहो विचारी वेद ॥सू०॥ १३ ॥ विप्र वचन वखतुं कहेजी, खोटुं नहींय लगार ॥ वेद पुराणे भाखीयोजी, सत्य वचन तुम सार ॥ सू० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली बोलीयोजी, सांनलो विप्र सुजाण ॥ लोककथा कहुं एक नलीजी, मधुरी सुललित वाण ॥ सू० ॥ ॥ १५ ॥ दक्षिण देश मांहे नलोजी, गाम ते वसे कच्छ नाम ॥ श्रीपुरजी सुविकार छे तिहांजी, नामो सुत सह काम ॥ सू० ॥ १६ ॥ श्रीपुरजी हरिनक्त हवेजी, विष्णु देहरे नित्य जाय ॥ पंचामृत थाली करीजी, तेह विण अन्न न खाय ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रीपुरजी परगाम चालतांजी, नामा सुतने देइ शीख ॥ दामोदर देरे जाजे सहीजी, जेम तुज टले भवभीख ॥ सू० ॥ १८ ॥ पंचामृत भोजन देजोजी, एम कही चाल्यो

## ढाल तेरमी.

वीर वखाणी राणी चेलणाजी--ए देशी.

वामन रूप धरी केशवोजी, कपट करी मागे दान॥ ठेतरशे तुने ठल करीजी, जजमान गइ तुज सान॥ सूरिजन सांजलजो कथाजी॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दान म देजो एहनेजी, मानो अमारो तमे वोल॥ बलि वोल्या मम वोलनोजी, शुक्र तमे नवी जाणो तोल ॥ सू० ॥ २ ॥ वासुदेव जाचक थइ आवीयाजी, धन धन मुज अवतार॥ जे जोइए ते मागो वामणाजी, राज रिद्धि आपुं अपार ॥ सू० ॥ ३ ॥ वामन वाडव वोलीयोजी, मारे नहीं वहु काज ॥ मढली करवाने कारणेजी, त्रिण क्रम थो महाराज ॥ सू० ॥ ४ ॥ आणी उदक कोरे करवमेजी, दान दीए बलि सार॥ जाचक मोटा श्रीकंठनेजी, हस्त मांहीं धरे जलधार ॥ सू० ॥ ५ ॥ नालुउं शुक्रे रुंधीउंजी, डाज घाली फोड्युं नेत्र॥ दानव गुरु काणो हुउंजी, स्वस्ति कह्यो द्विज मित्र॥ सू० ॥ ६ ॥ नारायण अंग वधारीयोजी, ब्रह्मलोके लाग्यो शरीर॥ जूमि सघली जरी वेहु क्रमेजी, एक क्रम मागे ते धीर ॥सू०॥ ७ ॥ बलि राजाए पुंठ धरीजी, वचन राखवाने काज॥ वैकुंठे पग मूक्यो श्रीजीजी, चांपवा लाग्यो बलि राय ॥ सू०॥ ८ ॥ तुष्टमान हुआ जग-

धणीजी, सेवकने सुख थाय ॥ वामन रूप करी आवीयाजी, जय जय हुवा जग मांय ॥ सु० ॥९॥ तुष्या तो आपो दामोदराजी, सेवावरती थाठ सार ॥ मुज किंकरपणुं तमे करो जी, काठी धरी रहो वार ॥सु०॥१०॥ सदा विष्णु सेवक थयाजी, काठी धरी रह्या हाथ ॥ वचन बांध्या दुःखीआ थयाजी, कष्ट पाम्या जगनाथ ॥सू० ॥ ११ ॥ दीवाळीए ठाण तणोजी, बलि राणो करे लोक ॥ गोयर घरघर थापीएजी, कृष्ण तणां करी फोक ॥ सू० ॥ १२ ॥ वेद पुराणे कथा कहीजी, विप्र जाणो तुमे भेद ॥ खोटुं के साचुं होयेजी, कहो विचारी वेद ॥सू०॥ १३ ॥ विप्र वचन वसतुं कहेजी, खोटुं नहींय लगार ॥ वेद पुराणे भाखीयोजी, सत्य वचन तुम सार ॥ सू० ॥ १४ ॥ मनोवेग वली बोलीयोजी, सांभलो विप्र सुजाण ॥ लोककथा कहुं एक भलीजी, मधुरी सुललित वाण ॥ सू० ॥ ॥ १५ ॥ दक्षिण देश मांहे भलोजी, गाम ते वसे कच्छ नाम ॥ श्रीपुरजी सुचिकार ठे तिहांजी, नामो सुत सह काम ॥ सू० ॥ १६ ॥ श्रीपुरजी हरिभक्त हुवेजी, विष्णु देहरे नित्य जाय ॥ पंचामृत थाली करीजी, तेह विण अन्न न खाय ॥ सू० ॥ १७ ॥ श्रीपुरजी परगाम चालतांजी, नामा सुतने देइ शीख ॥ दामोदर देरे जाजे सहीजी, जेम तुज टले भवभीख ॥ सू० ॥ १८ ॥ पंचामृत भोजन देजोजी, एम कही चाल्यो

गाम ॥ दूध लइने नामो गयोजी, हरिनुं उचरे नाम ॥ सु॰ ॥ १९ ॥ दूध लइने मुख आगलेजी, कहे पीयो नारायण देव ॥ पाषाण बिंब बोले नहींजी, बालक रडे पडे खेव ॥ सू॰ ॥ २० ॥ तव हरिने दया उपनीजा, दूध पीधुं ततकाल ॥ पहेले खंडे ढाल तेरमीजा, नेमविजय सुविसाल ॥ सू॰ ॥ २१ ॥

दुहा.

सुचिकार श्रीपुरजी, तेहनो सुत ततकाल ॥ तुठ्या नारायण नामाने, भगति भलो ए चाल ॥१॥ एक वार नामो जमे, जमतां चिंते ताम ॥ आवे नारायण इण समे, भाखरी आपुं राम ॥ २ ॥ ज्ञानदृष्टे करी जोइयुं, (नामो) जोये माहरी वाट ॥ श्वान रूप धरी आवीया, दीठो भाखर थाट ॥ ३ ॥ दोय चार मुखमां ग्रही, नाठा श्वान तिणे रूप ॥ नामो पुंठे धाइउ, ग्रही लेउं हरि भूप ॥४॥ आघा जइ रूप फेरव्युं, नामो गयो निज गेह ॥ नामो घर ठांये एकलो, विष्णु आव्या स्वयं देह ॥ ५ ॥ गोविंदे घर ठांइउं, (घर) ठेंडी नामे कीध ॥ पोली लइ हरि हरखीया, पोहोता वैकुंठ सिद्ध ॥ ६ ॥ विप्र सुणो तमे बुद्धिवला, नीच करम कीया देव ॥ पुराण वचन लोक वातथी, सत्य के जूठुं हेव ॥ ७ ॥ विष्णु उदर मांही भला, चौद भुवन रहे थेट ॥ बलि राजाए

किंकरी, मोटो हुवो केम पेट ॥ ७ ॥ माथा थइ विचारजो, गर्भेन अश्व न होय ॥ पुरुष नारी केम संजवे, चित्र विचारी जोय ॥ ए ॥ चोद भुवनपति जे कथो, ते केम वामन वास ॥ दीन नीखारी थांनणो, थकि जाच्यो थइ दास ॥ १० ॥

## ढाल चोदमी.

हमिरीया तारा ने मारा टोडीया, चरता एकण नास—ए देशी.

लोक प्रसिद्ध वली सांनलो, दामोदर थया आन ॥ सनेही ॥ नामा मुरली नाखरी, लेइ नाठा जगवान ॥ सनेही ॥ सूरिजन सांनलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ ॥ १ ॥ घर ठायो नामा तणो, पोथी आपी कान ॥ स० ॥ नीच करम नहीं ए थकी, विचार करो सावधान ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ दोय वानां नवि संनवे, मुज माता एह विध्य ॥ स० ॥ नारी वेटा घर घणां, ब्रह्मचारी काठबंध ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ परनारी चंडावली, राधा गोवालणी जेह ॥ स० ॥ जोगवी श्री गोवालणी, न्यायवंत किम तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ सिद्ध स्वरूपी जे हवा, ते किम धरे अवतार ॥ स० ॥ पहेलो अवतार मच्छ तणो, संखासूर संहार ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ बीजो अवतार कच्छनो, केटन मार्यो ताम ॥ स० ॥ नव त्रीजो वाराहनो, दाणव मार्यो गाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ चोथे नरसिंह

अवतर्यां, हिरणकश्यपनो नाश ॥ स० ॥ पांचमे वामन रूप लीयो, बलि चांप्यो जूमि पास ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ फरसराम छठे सुणो, सहसार्जुन फेड्यो ठाम ॥ स० ॥ सातमे राम हुवो जलो, रावण टाल्युं नाम ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ केशव आठमे अवतर्यो, जरासिंध हण्यो कंस ॥ स० ॥ अढार दोणी दल रण हण्यो, क्षय कर्यो जादव वंश ॥स०॥सू०॥ ९ ॥ नवमो बोध जवांतरे, म्लेच्छ मांही कीधो व्याप ॥स०॥ दशमे कलंकी राजीउ, जननी चंमालणी द्विज बाप ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ एकाकार करी घणुं, अचरावे अनाचार ॥ स० ॥ देव निरंजन जे हवा, ते केम लीये अवतार ॥स०॥सू०॥ ११ ॥ घृत जेम दूध ते नवि थाये, सिद्ध संसारी न होय ॥ स० ॥ पाको धान मही नवि उगे, सिध्यो जीव तेम जोय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ पाषाण मथी सोनुं काढीयुं, ते केम पत्थर थाय ॥ स० ॥ कर्म हणी जे सिद्ध हुवा, ते केम पुद्गल पाय ॥स०॥सू० ॥ १३ ॥ देव दयाल नर जे कह्या, केम करे जीव संहार ॥ स० ॥ राग द्वेष मद मच्छर नहीं, दैत्यने किम ते मार ॥स०॥सू०॥ १४ ॥ नारी विजोग पड्यो रामने, सीता सीता पोकार ॥ स० ॥ नर तरु पशुने पूछे घणुं, दरशन होशे मुज नार ॥स०॥ सू०॥ १५ ॥ सर्वज्ञ ते जाणे सहु, पूछे बीजाने केम ॥ स० ॥ चौद जूवन मुख मांहि छे, चढे केम लंका जेम

॥स०॥ सू० ॥ १६ ॥ विप्र विचारो देवनां, लक्षण कहीए संखेव ॥स०॥ सिद्ध सरूपी जे होये, तेहने ए नहीं टेव ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ दूध मांहि घृत रस रहे, विश्वानल काष्ट मांहि ॥ स० ॥ तिल मांहे तेल जिम रहे, जीव कलेवर ज्यांही ॥ स० ॥ सू० ॥ १८ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तणा, जे कला पालणहार ॥ स० ॥ लख चोराशी फेरीने, नावे नर अवतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ध्यान शुकल मन ध्यावतां, मुगति रमणी होये हाथ ॥ स० ॥ पहेले खंडे ढाल चोदमी, नेम कहे सांभलो साथ ॥ स० ॥ सू० ॥ २० ॥

दुहा.

रूप रस गंध वरण नहीं, उदादिकादि नांहिं ॥ जेह निरंजन नित्य छे, ज्ञानमय पावे त्यांहिं ॥ १ ॥ ते विष्णु सदाशिव भणी, ते किम कहीए देव ॥ अवर अज्ञानी जे नरा, तेहनी करे छे सेव ॥ २ ॥ नाम मात्र जे उपन्या, गुण अवगुण जे होय ॥ शुद्धि विना केम उपजे, सुणो वात सौ कोय ॥ ३ ॥ वलतो उत्तर केम होये, विप्र तणो मन भंग ॥ हाथ जोडी प्रणिपति करी, कहे सहु अनुसंग ॥ ४ ॥ वाद करता हारीया, जीत्या तेहे भेहु जाय ॥ कथा कहो कोइक नवी, सांभलवा होंश थाय ॥ ५ ॥ मनोवेग बोल्यो तिहां, संखेपे कहुं एक ॥ गणेश विचार विवरी करी,

ब्राह्मण सुणो विवेक ॥ ६ ॥ नीच ऊंच कर्मो कर्यां, ब्राह्मण सुणजो मर्म ॥ धूरथी मांगीने कहुं, ए देवमां श्यो धर्म ॥ ७ ॥ गोरी नंदन गणपति, सकल देवमां सार ॥ प्रथम विनायक सहु जपे, विघन हरे नर नार ॥ ८ ॥ गजवदन गिरुउं थहे, डुंदालो वीदार ॥ मूषक वाहन शुभगति, पाय घुघरी घमकार ॥ ९ ॥ सिद्धि नामे नारी छे, लक्ष लाभ वली देय ॥ मोटा मोदक आपे सही, कुटुंब मागे सहु तेय ॥ १० ॥ महीमां मोटो देवता, सुर नर सारे सेव ॥ प्राणीनां विघन हरे, काम करे ततखेव ॥ ११ ॥ विवाह कामे पूजीए, ( घर ) हाट वखारे तेह ॥ गणपतिने संभारीए, अवसर आवे एह ॥ १२ ॥

## ढाल पंदरमी.

मीहरीया मन लाग्यो–ए देशी.

रावण विमासे मन इस्युं, आराधन करुं देवरे ॥ साजन सांभलो ॥ विनायक आवे जो इहां, विघन भांजे सहु हेवरे ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रपंच रची साधुं पहने, पछी सुर नर साधुं जेहरे ॥ सा० ॥ किंबहुना गणेश साधीउं, बंधीखाने घाल्यो तेहरे ॥ सा० ॥ २ ॥ विघनराजे हाथ जोडीया, विनवीयो रावण रायरे ॥ सा० ॥ काज तमारां स्वामि हुं

करुं, अहनीश सेवुं पायरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ रायने मूक्यो विनायक नणी, रासन चरावो
देवरे ॥ सा० ॥ काठी 'नारो खेता आवजो, दातरडुं कोदाडो देवरे ॥ सा० ॥ ४ ॥
रासन चारे रायण तणा, मीन करम करे निलरं ॥ सा० ॥ नारो लेइ मस्तक प्रते,
रासन दांकि एली रीतरे ॥सा०॥५॥ खरु काणी नारो करे, अणउपन्नो लीए शिशरे
॥ सा० ॥ आणी चारे रासन नणी, करम नोगवे निशदिशरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ रासन
राख्या नवी रहे, घाडि कांगरनी करे तामरे ॥ सा० ॥ विघनराज करणी करे,
पाप नणुं फल आमरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ करम करे देव गहवां, तो अमने श्यो दोपरे ॥
सा० ॥ विचार संखेपे करी कह्यो, ब्राह्मण रायजो संतोपरे ॥ सा० ॥८॥ मनोवेग तव
बोलीयो, सांनलो वाम्य वातरे ॥ सा० ॥ खोटुं के में साचुं कह्युं, उत्तर देजो भ्रातरे॥
सा० ॥ ए ॥ विप्र वचन वदतां नण्या, सत्य वचन तुमे नागरे ॥ सा० ॥ वेद पुराणे
एम कह्युं, छे अम केम लोपायरे ॥ सा० ॥ १० ॥ मित्र वदन अवलोकीयुं, सामुं जोयुं
तामरे ॥ सा० ॥ समस्या करीने आवीया, पूरगले वन गामरे ॥ सा० ॥११॥ पवनवेग
प्रतिबोधवा, मनोवेग कहे सारे ॥ सा० ॥ पूर्वापर विरोध नहीं, जैनसूत्रे सुविचा-

ररे ॥सा०॥१२॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे साररे ॥सा०॥ नारायणउत्पत्ति कहुं, जैनशासननो विचाररे ॥सा०॥१३॥ सुखम सुखम पहेला जणयो, बीजो सुखमज कालरे ॥सा०॥ सुखम डुखम त्रीजो सुणो, डुखम सुखम सुविशालरे॥सा०॥१४॥पांचमो डुखम दोहीलो, दुखम डुखम विकरालरे ॥सा०॥ नाम तेहवां परिणाम छे, चडतो पडतो छे कालरे ॥सा०॥ १५ ॥ सुखम डुखम अंते अवतर्या, आदिनाथ जवताररे ॥सा०॥ तेहनो पुत्र जरतेसरो, प्रथम जिन चक्री ते साररे ॥सा०॥ १६ ॥ चोथे काले त्रेवीश हुवा, तीर्थंकर गुणधाररे ॥ सा० ॥ अजितादि ए जाणजो, महावीर अंतिम साररे॥सा०॥ १७ ॥ जरतादिक ब्रह्मदत्त लगे, चक्री द्वादश जाणरे ॥ सा० ॥नव नारायण निरमला, त्रिपिष्ट आदि सुख खाणरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ हयग्रीव आदे जरासंध ये, पर्यंत नव ए होयरे ॥ सा०॥ प्रतिनारायण चक्रधरा, अढार अधोगति जोयरे॥ सा० ॥१९॥ विजय हलधर पूरे कह्यो, अंते महापद्म नामरे ॥सा०॥ नव बलजद्र बलवंत जला, ऊर्ध्वगामी अजिरामरे॥ सा० ॥ २० ॥ त्रिपष्टि पुरुष ए रुयडा, जव्य जीव जवताररे ॥ सा० ॥ पन्नरमी ढाल पहेला खंडनी, नेमविजय निरधाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥

ढाल.

कह्या महापुराणमां, सुणजो त्यां विस्तार ॥ विचार कहुं हवे वर्णवी, निश्चय करी निरधार ॥ १ ॥ नुमानी नली स्थिति कहुं, निरंजन कहे मूढ लोक ॥ पूर्वे नवे बहु परे नम्यो, निर्नामिक हुउं सोक ॥ २ ॥ दुःखे दीक्षा आचरी, राज रिद्ध देखी ताम ॥ नियान बांध्यो निर्नामिके, स्वर्गे लह्यो सुखवास ॥ ३ ॥ तिहां थकी चवी करी, वसुदेव देवकी नंग ॥ कुखे आवी अवतर्यो, कृष्ण हुउं उत्तंग ॥ ४ ॥ त्रण खंड साध्या नला, सेवे सुर नर राय ॥ न्यायवंत दामोदरो, परनारी सहु माय ॥ ५ ॥ लाख बेंतालीश रथ नला, तेटला गजवर सार ॥ नव कोड घोमा हणहणे, नोगवे त्रिखंड मोरार ॥ ६ ॥ सोल सहस्र राणी नली, तेहशुं सुख विलास ॥ लोक लंपट लंपट सवे, परनारीशुं निवास ॥ ७ ॥ तेटला नृप सेवा करे, सुर किंकर ठे सार ॥ राज रिद्ध केशव तणी, कहेतां न लहुं पार ॥ ८ ॥ आवती चोवीशीए नलो, अरिहंत होशे देव ॥ पंच कल्याणकनो धणी, सुर नर करशे सेव ॥ ९ ॥ पवनवेग तुमे सांजलो, वलि वंधन विचार ॥ जिनवाणी ठे रुयडी, संखेपे कहुं सार ॥ १० ॥

रंग मोहोलमां राधिका. [illegible] ॥ [illegible] मृग देमनी.

[illegible]

मालव देश मांहि [illegible] ॥ [illegible] निहां, श्रीमती राणी जेह ॥ १ ॥ चार म [illegible] ॥ नमुनि मिथ्याते आगलो, जैनशुं करे [illegible] ॥ नरपति मंत्रीने कहे [illegible], मांनव स्वामी राय ॥ श्रावकजाव [illegible] नृप हरखीयो जतिवर वांदण जाय । [illegible] ॥ ५ ॥ प्रथम कथा तुमे सांजलो. [illegible] वन मांहे ॥ [illegible] मुनि [illegible] ॥ ६ ॥ ज्ञानी गुरु ते [illegible] मुनिराय ॥ [illegible] विघन होशे पण राय ॥ ७ ॥ गुरु वचन मनमां [illegible] ॥ राजा तव तिहां आवीयो, मुनि वांद्या नृप ताम ॥ ८ ॥ ते साधुने [illegible], उत्तर वलतो न दीध ॥ ढोर अज्ञानी बापडा. मंत्रीए निंदा कीध ॥ ९ ॥ [illegible]

आव्यो नगर मोझार ॥ श्रुतसागर मुनि भेटीया, विद्या तणोरे भंडार ॥ १० ॥ दुष्ट वाक्य मंत्री बोलीया, वाद कीधो तिहां सार ॥ विप्र चार हराबीया, मान खंड्युं तेणी वार ॥ ११ ॥ नरपतिए निभ्रंछीया, एके हराव्या आज ॥ मुरखा गर्व न आणीए, करो न एवां काज ॥ १२ ॥ झलखाणा पडी गया, नीचे जुवे निज पाय ॥ कृष्ण वदन तेहनां हुयां, मारवा कीधो उपाय ॥ १३ ॥ ब्राह्मण वादे हराबीया, गुरु आगे कहे वात ॥ आचार्य त्यां तव बोलीया, मुनिवरनो होशे घात ॥ १४ ॥ श्रुतसागरे गुरु पूछीया, विघन किम दूरे जाय ॥ गुरुजीए तव भाखीयुं, वादस्थानके तुमे जाय ॥ १५ ॥ ध्यान धरजो रयणे, उपसर्ग जाशे तेम ॥ सांभलीने मुनि तिहां गयो, कायोत्सर्ग रह्यो जेम ॥ १६ ॥ चार मंत्री तिहां आवीया, खड्ग काढी ते वार ॥ चारे जण एक घा करे, खील्या जहे ते सार ॥ १७ ॥ सूर्योदये तिहां आवीया, लोक तणां वली वृंद ॥ फट फट तुंमा सहु भणे, पाप तणां एह कंद ॥ १८ ॥ राजा तव तिहां आवीयो, गाल दीए अघोर ॥ ध्यान पारी मुनि बोलीयो, उखेलो एह चोर ॥ १९ ॥ राजाए दंडी करी, खर रोहण वली कीध ॥ विगोइने काढीया, देसोटो तिहां दीध ॥ २० ॥ पहेला खंडनी सोलमी, ढाल कही सुविसाल ॥ नेमविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ २१ ॥

आव्यो नगर मोझार ॥ श्रुतसागर मुनि भेटीया, विद्या तणोरे भंडार ॥ १० ॥ दुष्ट वाक्य
मंत्री बोलीया, वाद कीधो तिहां सार ॥ विप्र चार हरावीया, मान मूक्युं तेणी वार ॥ ११ ॥
नरपतिए निभ्रंछीया, एके हराव्या आज ॥ मुरखा गर्वे न आणीए, करो न एवां
काज ॥ १२ ॥ झंखवाणा पडी गया, नीचे जुवे निज पाय ॥ कृष्ण वदन तेहनां हुआं,
मारवा कीधो उपाय ॥ १३ ॥ ब्राह्मण वादे हरावीया, गुरु आगे कहे वात ॥ आचार्य
त्यां तव बोलीया, मुनिवरनो होशे घात ॥ १४ ॥ श्रुतसागरे गुरु पूछीया, विघन किम
दूरे जाय ॥ गुरुजीए तव भाखीयुं, वादस्थानके तुमे जाय ॥ १५ ॥ ध्यान धरजो
रूयडो, उपसर्ग जाशे तेम ॥ सांभलीने मुनि तिहां गयो, कायोत्सर्ग रह्यो जेम ॥ १६ ॥
चार मंत्री तिहां आवीया, खड्ग काढी ते वार ॥ चारे जण एक घा करे, खीला जेह
ते सार ॥ १७ ॥ सूर्योदये तिहां आवीया, लोक तणां वली वृंद ॥ फट फट थुंका सहु
नाणे, पाप तणां एह कंद ॥ १८ ॥ राजा तव तिहां आवीयो, गाल दीए अघोर ॥
ध्यान पारी मुनि बोलीयो, उखेलो एह चोर ॥ १९ ॥ राजाए दंडी करी, खर रोहण
वली कीध ॥ विगोइने काढीया, देसोटो तिहां दीध ॥ २० ॥ पहेला खंडनी सोलमी,
ढाल कही सुविसाल ॥ नेमविजय कहे सांभलो, आगल वात रसाल ॥ २१ ॥

दुहा.

अपर कथा तुमे सांजलो, संखेपे कहुं सार ॥ हस्तीनागपुर रुयडो, उत्तर देश मोजार ॥ १ ॥ मेघरथ नृपति जलो, पदमावती जरतार ॥ पदम लघु विष्णु वडो, पुत्र बेहु हे उदार ॥ २ ॥ मेघरथ विष्णु मुनि हुवा, पदमरथ आपी राज ॥ चारित्र पाले रुयमो, बेहु करे आतम काज ॥ ३ ॥ गजपुरमां तव आवीया, द्विज मंत्री ते चार ॥ राजाने जइ जेटीया, दान मान दीधां सार ॥ ४ ॥ मंत्रीपद आप्यां जलां, सुख पाम्या ते चार ॥ सिंहवली शत्रु तेह तणो, देश उजामे अपार ॥ ५ ॥ राजाने चिंता घणी, दिन दिन थंगे खीण ॥ मंत्रीए तव पूछीउं, शरीर दीसे कां हीण ॥ ६ ॥ पदमरथ राजा कहे, सुणो तमे बलि प्रधान ॥ सिंहवली वयरी अम अछे, तेणे करी नहीं सुख मान ॥ ७ ॥ आदेश लइ नृपति तणो, प्रधाने कर्यो प्रयाण ॥ सैन्य सुजट निज सज करी, बलि मंत्री बुद्धिजाण ॥ ८ ॥ सबल संग्राम तिहां जइ कीयो, शत्रु कटक हुवो जंग ॥ सिंहवलीने बांध्यो तदा, पाम्या जय जय रंग ॥ ९ ॥ वयरी बांधी आणीने, जेट रायने कीध ॥ पदमरथ आणंद हुउ, बलिने वरदान दीध ॥ १० ॥ बलतो मंत्री बोलीयो, सांजलो श्रीमहाराज ॥ मागुं त्यारे आपजो, वर आवे मुज काज ॥ ११ ॥

नरपतिए तव हा भणी, पछि हुयो हरख अपार॥ सुखभर राज्य करे सदा, अवर कथा कहुं सार ॥ १२ ॥

## ढाल सत्तरमी.

### यतनीनी देशी.

हस्तीनागपुर वन मांहे, अकंपनाचार्य आव्या त्यांहे ॥ सातसें मुनिवर छे साथे, परिवार तणी बहु आथे ॥ १ ॥ बलि मंत्री तेहने देखी, वयर नावे पूरव लेखी ॥ पद्मरथ राय पासे आवी, विनति करे तिहां समजावी ॥ २ ॥ वर आपो अमने आज, दिवस सातनुं आपो राज ॥ काज सारो अमारुं प्रभुजी, तुम विना कोण बीजो विभुजी ॥ ३ ॥ राजाए तव वर आप्यो, राजभार तेहनो थाप्यो ॥ पापी कूड कपट मन मांही, धरी लहीये क्रोधातुर तांही ॥ ४ ॥ वाड करी मुनिने वींट्या, साधुने घणुं ए आपेट्या ॥ नरमेध जगन जाग मांड्यो, जति कारण बीजो काम छांड्यो ॥५॥ जलचर ने थलचर जीव, नभचर ते पाकंतां रीव ॥ वेद पाठक ब्राह्मण आव्या, घणुं उजमाल थइ मन भाव्या ॥ ६ ॥ जीव हणवा वाम्य मलीया, हवन करवा हरखमां भलीया ॥ चरम अस्थि लेइ शिर नाखे, मुनि उपर सहु मली धांखे ॥ ७ ॥ एवुं

सांजली पामे सुख ॥ बलि राजा हयडे हरखी, वामन रूप नजरे परखी ॥ १८ ॥ वामन वांद्यो पगीने पाये, विनति करे कर जोमी तांये ॥ जे जोइए ते मागो स्वामि, मुज पासे अंतरजामी ॥ १९ ॥ वामन विप्र बोल्या ताम, मुज नहीं नृप लोजे काम ॥ त्रण क्रमनी जूमि जरी आपो, मठ बांधवा सारुं थापो ॥ २० ॥ वलतुं बलि बोले एहवुं, विप्र कहो माग्युं केहवुं ॥ मागोने कोइ राज जंमार, घोमा हाथी रुपक्त अपार ॥ २१॥ विप्र कहे सुणो महाराज, अवर मारे ठे नहीं काज ॥ क्रम त्रण मठ करवाने, मही मांहि जूमि जरवाने ॥२२॥ पात्र लेइ कर दीए धार, स्वस्ति दान दीधुं तेणी वार ॥ मुनि-वरे वधार्यो अंग, अति घणो देखी थया जंग ॥२३॥ प्रथम पाय ठव्यो ज्यां मेर, मानुषोत्तर बीजो ठेर ॥ पाय त्रीजानो नहीं ठाम, विष्णु कोप्यो बोले ताम ॥ २४ ॥ बलि बांधी पूठे पाय दीधो, सुर नर मली जय जय कीधो ॥ हाथ जोडीने मुनिवरने, कहे क्षमा करो स्वामि अमने ॥ २५ ॥ एह बंधन ठोमो स्वामि, क्रोध न कीजे गुणग्रामी ॥ उप-शममें थया साधु, बलिबंधन ठोड्यो निराबाधु ॥ २६ ॥ विष्णुने सहु लाग्या पाये, मंत्रीए धर्म आचर्यो ध्याये ॥ समकित लीधुं सहु लोके, जिनधर्म पाले जन थोके ॥ २७ ॥ श्रावकव्रत बलिए लीधां, मुनिवर वांदे सुख सीधां ॥ पद्मरथ राजाए आण्यो

मुनि पाटीने रोजे जाय ॥२७॥ विष्णुकुमार वावञ्य कीधो, सातमें मुनि रक्षण लीधो ॥ रावणी बांधे लोक तेथी, घसेवनो दिन कह्यो एथी ॥२८॥ विष्णुकुमार गुरु कने जाइ, लीधो प्रायश्चित व्रत धाइ ॥ निरमल जाव धरीने साधे, क्रिया तप जप ज्ञान ते लाधे ॥३०॥

## दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग विवेक ॥ जिनशासन महीमां खरो, के मिथ्या धर्म ठेक ॥ १ ॥ पवनवेग बोल्यो तुरत, निश्चय करी सुख ठाम ॥ सत्य वचन तुमे जे कह्यां, रही तुमारी माम ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुजविजय कवि शिष ॥ जावविजय जावे करी, नमुं तेहने निशदिश ॥ ३ ॥ सिद्धिविजय शिष्य तेहना, रूपविजय कविराय ॥ कृष्णविजय कर जोडीने, रंगविजय रंग लाय ॥ ४ ॥ पहेलो खंड पूरो थयो, सतरे ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नेहथी, श्रोता सुणो एक चित्त ॥५॥

इति श्री विष्णुवाद, ब्रह्मविवाद, गणेशोत्पत्ति नीच करमाचरणे,

प्रथमोल्लास प्रथम खंड संपूर्ण

---

१ धात्र, शोता.

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुम नाथ ॥ विप्र पुराणनी वारता, पूर्वापर चित्त लाय ॥१॥ विरोध घणां छुं दाखवुं, अघटतां असत्य तेह ॥ सांभलतां थाशो खुशी, एमां नही संदेह ॥ २ ॥ पवनवेग कहे तुमे, जोड शास्त्र विचार ॥ शिघ्र नाह मुज दाखवो, विनोद तणो भंडार ॥ ३ ॥

ढाल पहेली.

लाख चोराशी रथ भला ए, तेहना वृषभ धोरी सुकुमाल—ए देशी.

विद्या प्रभावे बेहु जणे ए, भील तणुं रूप कीध ॥ साजन सहु सांभलो ए ॥ कृष्ण वरण बीहामणा ए, धनुषबाण कर लीध ॥ सा० ॥ १ ॥ मस्तक केश छे बाबरा ए, चोपटा नाक चली मुछ ॥ सा०॥ रातां नेत्र गुंजा समां ए, दांत लांबा होठ ऊंछ ॥ सा० ॥२॥ कठिण हैया करकस देही ए, पुफ वेला शिर भार ॥ सा०॥ मयूर पिंछ घरेणां धर्यां ए, लोह कंकण गुंजाहार ॥ सा० ॥ ३ ॥ विद्याबल मंजार कर्यो ए, घट मांही लेइ धर्यो

नाव, मुनि वांदीने सेजे जाय ॥२७॥ विष्णुकुमार वात्सल्य कीधो, सातसें मुनि रक्षण लीधो ॥ राखमी बांधे लोक तेथी, बलेवनो दिन कह्यो एथी ॥२ए॥ विष्णुकुमार गुरु कने जाइ, लीधो प्रायश्चित मत धाइ ॥ निरमल नाव धरीने साधे, क्रिया तप जप ज्ञान ते लाधे ॥३०॥

## डुहा.

मनोवेग कहे सांनलो, पवनवेग विवेक ॥ जिनशासन महीमां खरो, के मिथ्या धर्म ठेक ॥ १ ॥ पवनवेग बोल्यो तुरत, निश्चय करी सुख ठाम ॥ सत्य वचन तुमे जे कह्यां, रही तुमारी माम[1] ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुनविजय कवि शिष ॥ नावविजय नावे करी, नमुं तेहने निशदिश ॥ ३ ॥ सिद्धिविजय शिष्य तेहना, रूपविजय कविराय ॥ कृष्णविजय कर जोडीने, रंगविजय रंग लाय ॥ ४ ॥ पहेलो खंड पूरो थयो, सतरे ढाळे करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नेहथी, श्रोता सुणो एक चित्त ॥५॥

इति श्री विष्णुवाद, ब्रह्मविवाद, गणेशोत्पत्ति नीच करमाचरणे,

प्रथमोल्लास प्रथम खंम संपूर्ण

---

१ खाज, चोला.

## खंड २ जो.

### दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुम नाथ ॥ चित्र पुराणनी वारता, पूर्वापर चित्त धार ॥१॥ विरोध घणां छुं दाखवुं, अघटतां असत्य तेह ॥ सांभलतां थाशो सुखी, मुज मनमां नही संदेह ॥ २ ॥ पवनवेग कहे तुमे, जोइ शास्त्र विचार ॥ शिघ्र जाइ मुज दाखवो, विनोद तणो भंडार ॥ ३ ॥

### ढाल पहेली.

लाख चोराशी रथ भला ए, तेहना भूपत धोरी सुकमाल—ए. देशी.

लाख चोराशी रथ भला ए, तेहना भूपत धोरी सुकमाल—ए. देशी. — (see above)

कृष्ण विद्या प्रभावे वेहु जणे ए, भील तणुं रूप कीध ॥ साजन सहु सांभलो ए ॥ मस्तक केश ते बाबरा ए, चोपडा वरण भीलामणा ए, धनुषबाण कर लीध ॥ सा० ॥ १ ॥ राता नेत्र गुंजा समां ए, दांत लांबा होठ जूठ ॥ सा० ॥२॥ नाक चपटी मुख ॥ सा०॥ मयूर पिंछ घरेणां धर्यां ए, कठिण लेखा करकस वेहीए, मुक वेला शिर नार ॥ सा०॥ विद्याबल मंजार कर्यां ए, घट मांही लेइ धर्यो कोइ कंकण गुंजाहार ॥ सा० ॥ ३ ॥

तेह ॥ सा० ॥ काने बुचो काळो घणो ए, लेइ चाल्या नर वेय ॥ सा० ॥ ४ ॥ ब्रह्मशाला उत्तर दिशे ए, भील आव्या दोय ताम ॥ सा० ॥ घंटानाद भेरी ताडीने ए, वेठा सिंहासन ठाम ॥ सा० ॥ ५ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया ए, वाद करीशुं अपार ॥ सा० ॥ वचन खंडशुं तेह तणां ए, जीतीने कुटशुं ते वार ॥ सा० ॥ ६ ॥ देखीने वाक्य कोपीया ए, रेरे अधम नर तिम ॥ सा० ॥ सिंहासन बेठ्या तुमे ए, भेर वजाडी किम ॥ सा० ॥ ७ ॥ अघट काम कर्युं घणुं ए, आव्या कहो कोण काज ॥ सा० ॥ मनोवेग तव बोलीयो ए, सांभलो तमे द्विजराज ॥ सा० ॥ ८ ॥ भीनडो वेचवा आवीया ए, पुलिंदे अमारी जात ॥ सा० ॥ विप्र वचन बलतो भणे ए, जुठं जुठं मूर्खनी वात ॥ सा० ॥ ए ॥ लंठ मोटा महा रंकना ए, घंटानाद कियो जेण ॥ सा० ॥ विप्रशुं वाद कर्या विना ए, वेठा सिंहासन तेण ॥ सा० ॥ १० ॥ मनोवेग भणे सांभलो ए, विप्र म धरशो रोप ॥ सा० ॥ भेर वंटारव अमे कर्यो ए, विनोद कारण नहीं दोष ॥ सा० ॥ ११ ॥ जो तुमने वेठा नवी गमे ए, तो उतरी वेसुं हेठ ॥ सा० ॥ क्षमा करो द्विज तुमे भला ए, हर्ष धरी चित्त ठेठ ॥ सा० ॥ १२ ॥ विप्र भणे सुण भील-

१ भील.

डा ए, मिंजारना गुण केत ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, मुज मिंजार गुण एत ॥ सा० ॥ १३ ॥ एह शरीर गंध विस्तरे ए, बार जोयण परिमाण ॥ सा० ॥ मूषक नाचे त्यां लगे ए, ए अपूरव गुण जाण ॥ सा० ॥ १४ ॥ सांजलीने विप्र हरखीया ए, मांहोमांहे बोले ताम ॥ सा० ॥ लीजीए मीनडो रुयडो ए, तो सरे सहुनां काम ॥सा०॥१५॥ आपणे गाम उंदर घणा ए, हाण करे कणसूल ॥ सा० ॥ वेचातो लीजे मीनमो ए, नील कहो तुमे मूल ॥ सा० ॥ १६ ॥ एह मीनो अमे लेयशुं ए, सत्य वचन जाखो सार ॥ सा० ॥ मनोवेग कहे सांजलो ए, एहनो मूल साठ दीनार ॥ सा० ॥ १७ ॥ विप्र सहुए विचारीयुं ए, मूल थोडो मिंजार ॥ सा० ॥ एटलो जान एक दिवसे होंगे ए, मूषक करे घरबार ॥ सा० ॥ १८ ॥ एक कहे मूज धोतीयां ए, एक कहे नारी घाट ॥ सा० ॥ चीर साली फाली उंदरे ए, एक कहे खएयुं हाट ॥ सा० ॥ १९ ॥ एक कहे करड्यां कापडां ए, एक कहे खाधां धान ॥ सा० ॥ एक कहे पग दोय तणा ए, अंगुलीए वही वान ॥ सा० ॥ २० ॥ एम कही मलीया सहु ए, एकेक लीधो दाम ॥ सा० ॥ साठ सोनैया जोमीया ए, आव्या शालाए ताम ॥ सा० ॥ २१ ॥ बालव कहे नीलमा

---

१ पाक.

गुणो ए, द्रव्य लइ आपो मीन ॥सा०॥ मनोवेग कहे परीक्षा करी ए, तेउ पछे कहेशो हीन ॥ सा० ॥ २२ ॥ एक कहे साचुं सही ए, घट मांहीथी काढ्यो तेह ॥सा०॥ द्विज सहुए मीनो नीरखीउं ए, चुचो रुधिर ज्यों देह ॥ सा० ॥ २३ ॥ विप्र जणे सुण जीवमा ए, मीनको चुचोसें कान ॥ सा० ॥ रुधिरालो दीसे वली ए, कहो कारण गुणवान ॥ सा० ॥ २४ ॥पहेली ढाल बीजा खंडनी ए, रंगविजय कविराय ॥ सा० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे ए, वात सुणो चित्त लाय ॥ सा० ॥ २५ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, वनवासी अमे जीव ॥ अपूरव दीठो मीनको, लीधो जाली गुण शील ॥१॥ पाली पोपी मोटो कर्यो, द्रव्य जोइए ठे आज ॥ घटमां घाली मीनको, आव्या वेचवा काज ॥ २ ॥ जूमि घणी चाली करी, आव्या वाडव गाम ॥ दिवस गयो रजनी थइ, विश्राम रह्या एक ठाम ॥ ३ ॥ थाक्यो जूख्यो मीनडो, घट थकी काढ्यो दीन ॥ एक ठामे थकी रह्यो, निद्रा आवी खेद खीन ॥४ ॥ अमे सुता निद्रावशे, नीकली उंदर श्रेण॥ सुतो दीठो मीनडो, मूषक मली करे केण ॥ ५ ॥ सबल शत्रु वे आपणो, दुःखीउं कीजे एह ॥ मोटो उंदर आवीयो, ( मीनो ) सुतो

बीजो भेद ॥ ६ ॥ कान दोय तेणे करमीया, चुचो थयो तिणी वार ॥ सांभली ब्राह्मण कोपीया, मोटो नील गमार ॥ ७ ॥ चार जोजन गंध करी, उंदर नासे दूर ॥ तेना कान केम करडीया, निद्रा तणे भरपूर ॥ ८ ॥ एहथी अचेतन जेहने, डुगंध दीसे क्रूर ॥ तेहने कहो किम कीजीए, आनकीये केम नूर ॥ ९ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांभलो विप्र सुजाण ॥ एक दोष मंजारनो, अवर गुणनी खाण ॥ १० ॥ विप्र वदे ए केम घटे, आवण विणसे दूध ॥ भेद तूटे लोज लपथी, विचारी जुओ निज बुद्ध ॥ ११ ॥ सुगंधी वस्तुमां एक कणी, लसण करे डुगंध ॥ गुण घणा शुं कीजीए, एक दोष टले पंथ ॥ १२ ॥ मनोवेग कहे द्विज सुणो, जो कीजे वादनी वात ॥ मिंजार दोष हुं परहरूं, जो द्विज करे मुज घात ॥ १३ ॥ सत्य वचन मुज भाषतां, लोक न माने आज ॥ कबाबद्दी राजकुमर परे, केम कीजे द्विजराज ॥ १४ ॥

## ढाल बीजी.

गुणे पितांबर पहेरी आव्याजी, मुखने मरकलडे—ए देशी.

सकल सभाए बोल्या वाणीजी, नाह तुमे सांभलो ॥ पुलिंद तमे गुण खाणीजी ॥ १ ॥ कबाबद्दी पुरुष ते केहवोजी ॥ ना० ॥ तेहनो गुण हतो जेहवोजी ॥ ना० ॥ वात सुणाओ

ते अमनेजी ॥ जा० ॥ शाबाशी दीजे तमनेजी ॥ जा० ॥ २ ॥ वचन सुणी मनोवेगजी ॥जा०॥ कहे तुमे राखजो नेगजी ॥जा०॥ कथा सुणी रखे कोपोजी ॥जा०॥ वचन माहरो रखे लोपोजी ॥ जा०॥३॥ वगलाण देश मोफारजी ॥जा०॥ नंदरबार नगर उदारजी ॥जा०॥ नरपति नामे ठे राजाजी ॥जा०॥ रूपिण राणीना गुण ताजाजी ॥ जा० ॥४॥ पुत्र हुउ जनम अंधजी ॥जा०॥ सहु कहे कुमार अंधजी ॥जा०॥ जाट जीखारीने तेहजी ॥जा०॥ शृंगार दान दीए एहजी ॥ जा० ॥ ५ ॥ नित नवां दीए आजरणजी ॥ जा० ॥ मंत्री विनवे जइ राय चरणजी ॥ जा० ॥ कुमार करे धन हाणजी ॥जा०॥ जंमारीने कहे तिण ठाणजी ॥ जा० ॥ ६ ॥ कुमारे माग्यां अलंकारजी ॥जा०॥ जंमारी कहे तिणी वारजी ॥ जा० ॥ आजूषण खुट्यां जंडारजी ॥ जा०॥ शुं आपुं तुमने कुमारजी ॥ जा० ॥ ७ ॥ अंध कुमरे तज्यां अन्नपानजी ॥ जा० ॥ डुमनो थइ सुतो एक थानजी ॥ नरपतिए सांजली वातजी ॥जा०॥ प्रधान तेमीने एकांतजी ॥ जा० ॥८॥ अम घर एकज पुत्रजी ॥जा०॥ तेह रुठ्यो जाखे उछूत्रजी ॥जा०॥ बुद्धिसागर मंत्री कहे तामजी ॥जा०॥ कुमर मनावुं हुं आमजी ॥ जा० ॥ ए ॥ मंत्रीए तेड्या सोनारजी ॥जा०॥ लोहना घमी आपो

१ प्रीति.

शृंगारजी ॥ जा० ॥ सोनीए घडीने आप्याजी ॥ जा० ॥ कुमरने हाथे जइ आप्याजी ॥ जा० ॥ १० ॥ भोजन कराव्युं कुमारजी ॥जा०॥ मंत्री बोले तिणी वारजी ॥ जा० ॥ कुमर सुणो तुमे वातजी ॥जा०॥ भंडारमांथी काढ्या तुम तातजी ॥ जा० ॥ ११ ॥ एह शृंगार ले पहेयाजी ॥जा०॥ विघन निवारे तेहवाजी ॥ जा० ॥ आपशो मां तुमे कोइनेजी ॥जा०॥ अमे अपायुं तुम जोइनेजी ॥जा०॥ १२ ॥ जे कोइ कहे लोहाभरणजी ॥जा०॥ तेहने मार देजो आवे मरणजी ॥ जा० ॥ कुमरे मान्यो तेहनो बोलजी ॥जा०॥ राख्यो मंत्रीनो तव तोलजी ॥ १३ ॥ लोक भणे ए अलंकारजी ॥जा०॥ लोढानां आपे निरधारजी ॥ जा० ॥ ताम कुमर करे तव रीसजी ॥जा०॥ लकुटी मारे तस शिशजी ॥ जा० ॥ १४ ॥ दुःखीआ थया सहु लोकजी ॥ जा० ॥ कदाग्रही नाम दीयो थोकजी ॥ जा० ॥ जेहवो हुवे तेहवो बोलजी ॥जा०॥ कदाग्रहीनी परे शो तोलजी ॥ १५ ॥ मनोवेग कहे सारजी ॥ जा० ॥ सत्य वचन निरधारजी ॥ जा० ॥ विप्र न मानो तुमे बोलजी ॥जा०॥ केम रहे अमारो तोलजी ॥ जा० ॥ १६ ॥ तुम तणां वेद पुराणजी ॥जा०॥ अरथ करतां करो जो हेराणजी ॥जा०॥ ते माटे केम कहेवायजी ॥जा०॥ अम तणी लाज लोपायजी ॥ जा० ॥ १७ ॥ जेणे आदर्युं काम चलीजेहजी ॥जा०॥ ते जाणे

लऊं सही तेहजी ॥ ना० ॥ अतिमोही नर एक मूढजी ॥ना०॥ तेहनी कथा चित्त धरो गूढजी ॥१८॥ वीजा खंडनी ढाल कही वीजीजी ॥ना०॥ श्रोता सहु कहेजो जीजीजी ॥ ना० ॥ रंगविजय कविनो शिष्यजी ॥ना०॥ नेमविजय प्रणमे निशदिशजी ॥ १९ ॥

दुहा.

विप्र वचन तव बोलीया, सुणरे नील सुजाण ॥ कथा कहो अतिमोही तणी, सांनलवा सावधान ॥ १ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, ब्राह्मण सुणजो सार ॥ कथा कहुं हुं रुयमी, विनोद तणो नंडार ॥ २ ॥ नमीयाड देशमां निरमली, नर्मदा नदी वहे सार ॥ दक्षिण तट तिहां गाममो, शामंत नाम अपार ॥ ३ ॥ लोक वसे तिहां रुयमा, धर्म करे अनिराम ॥ माधव मेहेतो अति नलो, अधिकारी तिण गाम ॥ ४ ॥ सुंदरी नारी तेह तणी, शीयलवंत गुणवंत ॥ ते वेहु जणथी पुत्र हुवो, सोनपाल नाम महंत ॥ ५ ॥ पुत्र प्रसुत हुवा पछी, माधव न गमे तेह ॥ सुंदरी रूप शुं कीजीए, जोवन नाठुं देह ॥ ६ ॥ शामंत गाम वसुदत्त वसे, सुरंगी नार सुचंग ॥ कुरंगी पुत्री ते तणी, रूप कला सुरंग ॥ ७ ॥ माधवे धन आपी घणुं, परणी कुरंगी नार ॥ जोवननर रलीयामणी, तेहशुं नेह अपार ॥ ८ ॥ काम कतहल करे घणुं, इंडी लंपट तेह ॥

कुरंगीए अति मोहीयो, जोगवे जोग तस देह ॥ ए ॥ सेजे कुरंगी कुलक्षणी, अपर-
शुं रांचे तांग ॥ कामे पीमी कामिनी, न मले तेने जोग ॥ १० ॥

ढाल त्रीजी.

कंत तमाकु परिहरो—ए देशी.

सुंदरीनां लक्षण नवां, शीलवंती शुभ नार ॥ मोरा लाल ॥ पर नर दीठो नवि गमे,
पाले शुद्ध आचार ॥ मो० ॥ १ ॥ सूरिजन सांजलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ सुंदरीनो
शील नवी गमे, कुरंगी करेरे कुरंग ॥ मो० ॥ कोपे चमी नित्य कलकले, आप वखाणे
अंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ २ ॥ जरतारनो वली धन घणो, दीये अपटतां आल ॥ मो० ॥
लापण लरीनी कुंकुण, मुख मोडी बोले गाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ३ ॥ सुंदरी मनमां
गीमा धरी, उपशमे आणे अंग ॥ मो० ॥ अशुभ कर्म कीधां में घणां, धर्म तणो कीयो
रंग ॥ मो० ॥ सू० ॥ ४ ॥ कुरंगी कंथ आगल कहे, सांजलो स्वामि एकंत ॥ मो० ॥
नमी नारी तुम न रुयमी, अवगुणनो नहीं अंत ॥ मो० ॥ सू० ॥ ५ ॥ शोकनी वात
कशी कहुं, कहेतां आवे मुज लाज ॥ मो० ॥ रूप माटे तुमे जाणशो, नहीं कहीए
ते आज ॥ मो० ॥ सू० ॥ ६ ॥ माधव कोप्यो धमहम्यो, तेहना सांजली बोल ॥ मो० ॥

वनितानो विश्वास करे, ते जाणीए निटोल ॥ मो० ॥ सू० ॥ ७ ॥ माधवे सुंदरी परहरी, अधशुं आण्युं नेह ॥ मो० ॥ पुत्र सरसी जुइ करी, वहेंची आप्युं तेह ॥ मो० ॥ सू० ॥ ८ ॥ आठ पसह आप्या जसा, दश आपी वसी गाय ॥ मो० ॥ जाग करी सहु वेंचीयां, लोके कीधो न्याय ॥ मो० ॥ सू० ॥ ९ ॥ अपर मंदिर सुंदरी रहे, नंदन सरसी तेह ॥ मो० ॥ सद्गुरु ते प्रतिबोधीया, जैन धरममां नेह ॥ मो० ॥ सू० ॥ १० ॥ माधव कुरंगीशुं मोहीयो, घोले जीजी जाप ॥ मो० ॥ अवसानी आणा धरे, तेह तणो हुउं दास ॥ मो० ॥ सू० ॥ ११ ॥ कटकाइए चालीयो, देश तणो महीपाल ॥ मो० ॥ माधव तणी दूत मोकल्यो, तेडी लावो ततकाल ॥ मो० ॥ सू० ॥ १२ ॥ दूते तव आवी कह्युं, माधव म लाउ वार ॥ मो० ॥ राजा कटके चालीयो, बोलाव्या कुआर ॥ मो० ॥ सू० ॥ १३ ॥ माधवने तव उपन्यो, कुरंगी उपर मोह ॥ मो० ॥ नारीने तेडी वीनवे, आपण होशे विछोह ॥ मो० सू० ॥ १४ ॥ कुरंगी कहे स्वामि सुणो, तुम विण घडीय न जाय ॥ मो० ॥ अन्नपान ते नवि रुचे, दिवस वरसां सो थाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ १५ ॥ अमे तुम साथे आवशुं, नहीं तो करशुं आपघात ॥ मो० ॥ मुज उपर किरपा करी, मानो अम तणी वात ॥ मो० ॥ सू० ॥ १६ ॥ तव माधव इम बोलीयो, सांजल शीलवंती नार ॥ मो० ॥ थोडे दिवसे अमे

आवशुं, इमी परे रहेजो घरबार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १७ ॥ तुज सतीमां गुण छे घणा, लंपट लोक इह गाम ॥ मो० ॥ जगनी सुत महाबुद्धिने, शीव वह करजो घरकाम ॥ मो० ॥ सू० ॥ १८ ॥ एम कहीने ते चालीयो, पहोतो कटक मोझार ॥ मो० ॥ माधव मनमां चिंतवे, सहाए कुरंगी नार ॥ मो० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल त्रीजी बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ मो० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, आगे कहुं वात बनाय ॥ मो० ॥ सू० ॥ २० ॥

## दुहा.

कटके जब कंत चालीयो, तब हुवो हर्ष अपार ॥ कुरंगीने काम व्यापीयो, मांड्यो कुव्यापार ॥ १ ॥ योवनजर रूपे भलो, सोनार चंगो नाम ॥ प्रपंच करी घर तेडीयो, एकांत बोली ताम ॥ २ ॥ सांभलो स्वामि रयणा, रूप तणा भंडार ॥ जोवनवंतां बेहु जणां, लाहो लीजे संसार ॥ ३ ॥ बुद्धि माधव अम धणी, इम काटलुं तेह ॥ भूरत चंगो बोलीयो, सफल जनम थाय आपणो, तुम मले सुख थाय देह ॥ ४ ॥ ५ ॥ तुम वचन सांभल भोली नार ॥ सात व्यसन सेवुं सदा, ए मुज गमे विचार ॥ ५ ॥ मुज लोपतां, ब्रह्महत्यादिक होय ॥ वेद पुराणे आवयुं, चतुर नर लोपे कोय ॥ ६ ॥

एम कही विद्धु जण मळ्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन चउ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, गाली कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल–ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भूख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने कांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, बेठी करीने प्रणाम ॥ स॰ ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स॰॥ सू॰ ॥२॥ तुं बाइ वली भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स॰ ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स॰ ॥ सू॰ ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स॰ ॥ भोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स॰ ॥ सू॰ ॥ ४ ॥ जमाडुं

॥ ३५ ॥

मुज घर चंदनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वनाव सुंदरी तणोरे
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ मू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे, लाल,
मोह धरी बेठो बार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे साद्दज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ मू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, ( हवे ) सयां बेठुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
मू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मळयारे लाल, ( तेणे ) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सरल लंपट उभी रहीरे लाल, गाळी कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जुठ कां लयोरे लाल, शीलवंती मुज पह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ए ॥ हुं नूख्यो नोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे नरनार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी जणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ मू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, नोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥
स० ॥ तज जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, बापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
पिता आपणेरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांजली तव

एम कही विहु जण मळ्यां, जोगवे जोग विलास ॥ रात दिवस व्यजिचारीत्र्या, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पत्र आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, गाली कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल—ए देशी.

जोजन जलां वेगे करोरे लाल, जूख्या छे जरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने फांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांजलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ तुं वाइ वली जाम-नीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ जोजन करावो जरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ जोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

तुज घर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वनाव सुंदरी तणार
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ मू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे, लाल,
मोह धरी बेठो बार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ मू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, ( हवे ) सयां वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
मू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मल्यारे लाल, ( तेणे ) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जून कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज पह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गयोरे लाल, पाय पकी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ए ॥ हुं नूख्यो नोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे नरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी नणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, नोजन रंधाव्युं तें त्यांहि ॥
स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंही ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, वापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
...रे लाल, स्नेह नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांजली तव

एम कही विद्दु जण मळ्यां, जोगवे जोग विलास ॥ रात दिवस व्यजिचारीया, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, नाही कुरंगी नार ॥ भूरत पन खेइ गयो, गाली कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलपी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल—ए देशी.

जोजन लशां वेगे करोरे लाल, जूख्या डे जरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने जांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांजलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, वेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वळी वेदेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ तुं वाइ वळी जाम-णीरे लाल, हुं नानी वुं तेह ॥ स० ॥ जोजन करावो जरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ जोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

गुन पर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वनाव सुंदरी तणोरे
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ मू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे लाल,
मोह धरी नेहो धार ॥ स० ॥ मधुर मरे सारज करेरे लाल, उत्तर दीधो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ मू० ॥ ६ ॥ धर्म दीवस अमे आवीयारे लाल, ( हवे ) सयाँ वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, पाछिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
मू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मळ्यारे लाल, ( तेणे ) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सरल संकट वणी रहीरे लाल, गाळी कीधी कोइं जार ॥ स० ॥ मू० ॥ ८ ॥
माधव कहे नृप कां सधोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गणोरे लाल, पाप पखी मनावे तेह ॥ स० ॥ मू० ॥ ९ ॥ हुं नूख्यो नोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे नरनार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी जणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ मू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, नोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥
स० ॥ तुं जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंही ॥ स० ॥ मू० ॥

एम करी बिहु जण मळ्यां, भोगवे भोग विलास ॥ रात दिवस व्यभिचारीथ्या, धन विलसे करे हास ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत पन खेइ गयो, लाली कीध अपार ॥ ९ ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल—ए देशी.

भोजन भलां वेगे करोरे लाल, भृख्या छे भरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने झांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांभलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, बेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम ॥ स० ॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वली भामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ भोजन करावो भरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ भोजन नहीं करे मज घरेरे लाल, कुरंगी मण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडं

तुज पर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वनाव सुंदरी तणोरे लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे, लाल, मोह धरी वेगो वार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे श्रमे आवीयारे लाल, (हवे) सयां वेहुनां काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥ सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मल्यारे लाल, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥ स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥ माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां गयोरे लाल, पाय पडी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ए ॥ तुं नूख्यो नोजन दीयोरे लाल, लाज न कीजे नरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी नणेरे लाल, तुं मोटो उतार ॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, नोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥ स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, बापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो पिता आपणेरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांजली तव

एम कही बिहु जण मल्यां, जोगवे जोग विलास ॥ रात दिवस व्यजिचारीया, धन विलसे करे हास ॥ ७॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पउ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाल्ही कुरंगी नार ॥ धूरत धन लेइ गयो, लाखी लीध अपार ॥ ९ ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह धरंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रलीयामणुंरे लाल–ए देशी.

जोजन जणां वेगे करोरे लाल, जूख्या छे जरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने जांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांजलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, बेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम॥ स०॥ सू० ॥२॥ तुं वाइ वली जाम-नीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ जोजन करावो जरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ जोजन नहीं करे मज घरेरे लाल, कुरंगी सण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ [illegible]



॥ ३५ ॥

तुज घर कंतनेरे लाल, इम कही गइ निज गेह ॥ स० ॥ सरल स्वनाव सुंदरी तणोरे
लाल, रसवती नीपाइ तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ५ ॥ माधव आव्यो कुरंगी घरेरे, लाल,
मोह धरी वेगो वार ॥ स० ॥ मधुर स्वरे सादज करेरे लाल, उत्तर दीयो कुरंगी
नार० ॥ स० ॥ सू० ॥ ६ ॥ घणे दीवसे अमे आवीयारे लाल, (हवे) सयां वेहुनां
काज ॥ स० ॥ मनोहर तुं मुज कामनीरे लाल, बाहिर आवो तजी लाज ॥ स० ॥
सू० ॥ ७ ॥ शब्द सुणी लोक बहु मल्यारे लाल, (तेणे) कह्युं कां पोकारो नार ॥
स० ॥ सबल लंपट ठपी रहीरे लाल, गाली कीधी कोठे जार ॥ स० ॥ सू० ॥ ८ ॥
माधव कहे जूठ कां लवोरे लाल, शीलवंती मुज एह ॥ स० ॥ मोह धरी घरमां
गयोरे लाल, पाय पमी मनावे तेह ॥ स० ॥ सू० ॥ ए ॥ हुं भूख्यो जोजन दीयोरे
लाल, लाज न कीजे जरतार ॥ स० ॥ कोप धरी कुरंगी जणेरे लाल, तुं मोटो उतार
॥ स० ॥ सू० ॥ १० ॥ सुंदरीशुं मोह तुज तणोरे लाल, जोजन रंधाव्युं तें त्यांहिं ॥
स० ॥ उठ जा घरमां तेह तणेरे लाल, पाखंड करी आव्यो आंहीं ॥ स० ॥ सू० ॥
॥ ११ ॥ सोनपाल नंदन बोलीयोरे लाल, बापना प्रणमी पाय ॥ स० ॥ मंदिर पधारो
पिता आपणेरे लाल, रसोइ नीपाइ मुज माय ॥ स० ॥ सू० ॥ १२ ॥ वयण सांजली तव

एम कही पिऊ जण मल्यां, जोगवे जोग विलास ॥ रात दिवस व्यजिचारीआ, धन विलसे करे हांस ॥ ७ ॥ वर्ष एक एणी परे गयो, पाप करंतां तेह ॥ माधवनो आगज हुवो, दिन पछ आवे गेह ॥ ८ ॥ जारे आवतो जाणीने, वाही कुरंगी नार ॥ धूरत पन खेइ गयो, गाली कीध अपार ॥ ए ॥ कटकी करीने आवीयो, माधव मोह परंत ॥ आगलथी नर मोकल्यो, कुरंगी आव्यो कंत ॥ १० ॥

## ढाल चोथी.

राणकपुर रखीयामणुंरे लाल–ए देशी.

जोजन जलां वेगे करोरे लाल, भूख्या ठे जरतार ॥ सनेहीरे ॥ तेणे वचने जांखी थइरे लाल, चिंता उपनी अपार ॥ सनेहीरे ॥ सूरिजन सांजलजो कथारे लाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सुंदरीने मंदिर गइरे लाल, बेठी करीने प्रणाम ॥ स० ॥ वली वेहेन सुणो विनतिरे लाल, घरे आव्या आपणा स्वाम ॥ स० ॥ सू० ॥ २ ॥ तुं बाइ वली जामनीरे लाल, हुं नानी तुं तेह ॥ स० ॥ जोजन करावो जरतारनेरे लाल, राखो वरूपण देह ॥ स० ॥ सू० ॥ ३ ॥ तव सुंदरी बोली इसुंरे लाल, मुजशुं प्रीत नहीं कंत ॥ स० ॥ जोजन नहीं करे मुज घरेरे लाल, कुरंगी सुण संत ॥ स० ॥ सू० ॥ ४ ॥ जमाडुं

बैन नमे गोरखा, न करे कोलन कन्चार ॥ कुजने मोकली पेंगा नगी,
१ नह न्चार ॥ १ ॥ कुंवरी जाणुं रंग मोडीयों, परीक्षा करं कुने पड़ ॥
दर्शा जाग रंर्यान, नगा वाव म्यानी देह ॥ २ ॥ जाग कचोसुं नरी करी,
नर मुंदरी हाथ ॥ मावर नगी जड आर्दीनो, छन्न साक के नाग ॥ ३ ॥ कुरं-
, गाक मांवकडु, देग्मी गीजनो नाथ ॥ जमला वचाले जगुं, मका पहना हाथ ॥४॥
। उन्ना मावर किनी, गेनो निज नांगज ॥ प्रकांन जड पुत्रे नही, केम उतारां
नी हैज ॥ ५ ॥ महाबुद्धि नर योलीयो, मुग मामा एक वात ॥ शीज सोग्नुं तुम
न्मार्नु पन जाग नेपान ॥ ६ ॥ मावर बोल्यो मांनडी, मांनड नुं सतु नार ॥
नमाठी किनी कने, पुंगे पावनी कुग जाग ॥ ७ ॥ कुरंगी बोली नन्दीने, नाने-
प, नेह ॥ नांमवजो पुरषी नहु, वात कहुं गुर येह ॥८॥ गुनगुं हाग्य करे नडु,
शिव नयणां नेण॥९॥रूप यतुरं गुज नणुं, अधिक कहुं हुं एनानानुज ननापरनारनी,
म नाग्नु में नेत ॥ बहु शीपु गुजने नणुं, नदी नारी गुज नेग ॥ १० ॥ पन नानुं एगो
, नमकडी कागो निग ॥ जड पाने देगां नदा, पारगुं एम पर दिम ॥११॥ गुणी मावर

पुत्रनारे लाल, जय पाम्यो माधव ताम ॥ स० ॥ बोल बोले कुरंगी आकरारे लाल, मुख निहाले नारी तणुं श्याम ॥ स० ॥ सू० ॥ १३ ॥ कोहाड डसी दांत एम कहेरे लाल, इहां थकी जा जा धूतार ॥ स० ॥ ठेक करवाने आव्यो इहांरे लाल, जणनारने जा घरवार ॥ स० ॥ सू० ॥ १४ ॥ कोप नारीनो जाणी आवीयोरे लाल, सुंदरी घरे ततकाल ॥ स० ॥ मान दीधुं घणुं आवतांरे लाल, सुंदरी मनमां उजमाल ॥ स० ॥ सू० ॥ १५ ॥ लेखे अवतार आज आवीयोरे लाल, स्नान करावे सुंदरी नार ॥ स० ॥ थाल मांड्यो जमवा जणीरे लाल, पासे कचोलांनी हार ॥ स० ॥ सू० ॥ १६ ॥ पक्वान्न पीरस्यां प्रेमे करीरे लाल, साल दाल घृत पूर ॥ स० ॥ माधव महेतो मन चिंतवेरे लाल, कुरंगी रूठी दुःख भूर ॥ स० ॥ सू० ॥ १७ ॥ मधुरी वाण सुंदरी कहेरे लाल, भोजन नवी करो केम ॥ स० ॥ तव माधव एम उचरेरे लाल, नवि भावे अन्न मुज जेम ॥ स० ॥ सू० ॥ १८ ॥ लघु भामनी शाक आणे इहांरे लाल, तो अमृत लागे अन्न ॥ स० ॥ तव सुंदरी लेवा गइरे लाल, हाथ कचोलो लेइ मन ॥ स० ॥ सू० ॥ १९ ॥ ढाल चोथी बीजा खंडनीरे लाल, रंगविजय कवि शिष्य ॥ स० ॥ नेमविजय कहे नित प्रतेरे लाल, प्रणति करुं निशदिश ॥ स० ॥ स० ॥ २० ॥

दुहा.

कुरंगी वेन तमे सांभलो, न करे भोजन भरतार ॥ मुजने मोकली लेवा भणी, शाक उपर बहु प्यार ॥ १ ॥ कुरंगी जाण्युं कंत मोहीयो, परीक्षा करुं हवे एह ॥ वृक्ष बबूलनो छाल लेइने, चणा दाल खाधी जेह ॥ २ ॥ छाण कचोलुं भरी करी, आप्यां सुंदरी हाथ ॥ माधव भणी जइ आपीयो, उत्तम शाक छे नाथ ॥ ३ ॥ कुरंगीए शाक मोकल्युं, देखी रीझ्यो नाथ ॥ जमतां वखाणे घणुं, रुडा एहना हाथ ॥४॥ जमी उठ्या माधव तिहां, तेड्यो निज भाणेज ॥ एकांत जइ पूछे सही, केम उतार्यो कुरंगी हेज ॥ ५ ॥ महाबुद्धि तब बोलीयो, सुण मामा एक वात ॥ शील लोप्युं तुम कामनी, खाधुं धन जार संघात ॥ ६ ॥ माधव बोल्यो सांभली, सांभल तुं लघु नार ॥ संपदा सघली किहां अछे, तुमे वावरी कुण वार ॥ ७ ॥ कुरंगी बोली ततक्षीणे, भाणेजनो ए नेह ॥ सांभलजो धुरथी सहु, वात कहुं ध्रुव वेह ॥८॥ मुजशुं हास्य करे बहु, एक दिन पकड्यो तेण॥हृदय वलुयुं मुज तणुं,अधिक कहुं शुं एण॥९॥पुण्य तणा परभावथी, शील राख्युं में नेह ॥ कए दीधुं मुजने घणुं, घणी पाडी मुज वेह ॥ १० ॥ धन खाधुं एणे बहु, तस्करी करतो नित्य ॥ जइ परने देतो सदा, वावर्युं एम घर वित्त ॥११॥ सुणी माधव

कोपे चड्यो, तेडावी ततकाल ॥ नाणेज नणी ढींक पाडुए, मार दीधी तेणे ताल ॥१२॥ घरथी काढी मेलीयो, लोक करे अपवाद ॥ वांक नहीं नाणेजनो, विण वांके कीधो वाद ॥१३॥ लोके मली विचारीने, माधवनो दीयो नाम ॥ अतिमोही नर एहवो, सहु कहे गामोगाम ॥१४॥

## ढाल पांचमी.

जंबूद्वीपना नरतमां, एलावरधनपुर सारोरे—ए देशी.

मनोवेग कहे सांनलो, विप्र विचारो जेमरे ॥ अतिमोही नरनी परे, तुमे करशो वली तेमरे ॥ सूरिजन सांनलजो कथा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जे जेणे वस्तु मोहीया, ते जाणे एह साररे ॥ शुन्न अशुन्न जाणे नहीं, नूला नमे गमाररे ॥ सू० ॥ २ ॥ वेद पुराण जे तुम तणां, तेणे मोह्या अपाररे ॥ वचन तेह तणां आदरी, अघटतुं करे संसाररे ॥ सू० ॥ ३ ॥ यथार्थ वचन मुज नाखतां, जो होय शिक्षा पातरे ॥ नाणेज महाबुद्धिनी परे, ( केम न ) होये अम तणो घातरे ॥ सू० ॥ ४ ॥ नक्ष अनक्ष अंतर कह्यो, पेय अपेय विचाररे ॥ अनाचार आचार नहीं, ते नर मूढ गमाररे ॥ सू० ॥ ५ ॥ ब्राह्मण वयण तव बोलीया, सांनलो नाइ नीलोरे ॥ अम मांही मूढ को नहीं, अतिमोही कुशीलोरे ॥ सूं० ॥ ६ ॥ बान्धव कहे नाइ सांनलो, मंजारमां एक

दोपरे ॥ केम परहरशो अमने कह्यो, कोइ न करे तुम रोपरे ॥ सू० ॥ ७ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, विप्र सहुको सुजाणरे॥ वेद पुराणमां जे कह्युं, तेहवी वोलुं अमे वाणरे ॥ ८ ॥ नर्मदा नीर वहे निरमलुं, ते कांठे वन सोहे साररे ॥ तापसी पल्ली तिहां अछे, तापस तपसी अपाररे ॥ सू० ॥ ए ॥ मंडपकोशीक तप करे, अहोरात्रि जपे हरि रामरे॥ तापस सर्व बहु तप तपे, स्नान मज्जन रेवा ठामरे ॥ सू० ॥ १० ॥ पंचाग्नि धुम्रपानशुं, कंद मूल नक्षण तेहरे ॥ मोटी जटा मस्तक धरे, पांच इंद्रि दमे देहरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ सोमदत्त जजमान नलो, तपसीयांने दीये दानरे ॥ एकदा तापसी नोतर्या, तेड्या सहु देइ मानरे ॥ सू० ॥१२॥ विविध प्रकारे नोजन कर्यां,वेसणां मांड्यां हारबंधरे॥ थाल कचोलां मांड्यां घणां, शाक पक्वान्न सुगंधरे ॥ सू० ॥ १३ ॥ मंरूपकोशीक देखीने, वीजे तापसे निंदा कीधरे ॥ थाल मूकीने चाल्या सहु, कोपे दंताधर लीधरे ॥ सू० ॥ १४ ॥ धाइ जजमाने पूछीया, जमवा वेळा उठ्या केमरे ॥ शुं अपराध अमारडो, काज विणास्यो मुज तेमरे ॥ सू० ॥१५॥ वृद्ध तापस तिहां वोलीया, सांभलो सोमदत्त देवरे ॥ मंडपकोशीक तमे नोतर्या, पंक्तिमां वेसाड्यो खेवरे ॥सू०॥१६॥ मंरूपकोशीके पूछीउं, में शुं कीधो अपराधरे ॥ दोप

काढ्यो तापसे श्रम तणो, फोगट विगोयो कांइ साधरे ॥ सू० ॥ १७ ॥ घरढा तापस तव बोलीया, सांजल मूढ गमाररे ॥ नारी विना तुं वांझीयो, ब्रह्महत्या पग पग साररे ॥ सू० ॥ १८ ॥ पुत्र विना सद्गति नहीं, स्वर्ग मुक्ति नवि होयरे ॥ पुत्र तणुं मुख जोइने, तापस दीक्षा धरे सोयरे ॥ सू० ॥ १९ ॥ मोटो अपराध तुमे कर्यो, थाल विचे चोट्यो तेहरे ॥ पापी नर जाणी उठीया, मूकी जाणां जयां गेहरे ॥ सू० ॥ ॥ २० ॥ मंडपकौशीक एम जणे, सांजलो तापस राजरे ॥ बुढो देखी मुज कोण दीए, विप्र कन्या सारे काजरे ॥ २१ ॥ तापस बोल्या सुणो तापस, पुराण स्मृति बोल्युं एमरे ॥ पांच आपद जे स्त्रीने होये, परणो ते मांहेनी तेमरे ॥ सू० ॥ २२ ॥ नासी गयो नर जेहनो, मरण पाम्यो वली जेहरे ॥ तापस थयो नारी तजी, नपुंसक हुवो पछे तेहरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ घरमो हुउं कंत जे तणो, नारीने आपदा पंचरे ॥ एह मांही जेहवी मले, एक परणो करी संचरे ॥ सू० ॥ २४ ॥ नष्टे मृते प्रव्रजे च, क्लिबे च पतिते पतौ ॥ पंचस्वापत्सु नारीणां, पतिरन्यो विधीयते ॥ २५ ॥ बीजा खंड तणी कही, ढाल पांचमी वारुरे ॥ रंगविजय कविरायनो, नेम कहे श्रोता सारुरे ॥ सू० ॥ २६ ॥

## डुहा.

अपत्य सहित जे कामिनी, पुरुष चाल्यो परदेशं ॥ आठ वरष वाट जोइने, अन्य नर साथ प्रवेश ॥ १ ॥ संतान रहित जे ब्राह्मणी, कंत गयो व्यापार ॥ चार वरष लगे वाट जोइ, पछे अवर जरथार ॥ २ ॥ स्मृति वाक्यम् ॥ अष्टौ वर्षाणि पश्येत, ब्राह्मणी पतिते पतौ ॥ अप्रसूता च चत्वारि, पुरतोऽन्यः समाचरेत् ॥ वचन सुणी तापस तणां, मंकप हरख्यो ताम ॥ रांमी ब्राह्मणी परणीउं, पंकाणी तेहनुं नाम ॥ ३ ॥ जोग जोगवतां वेहु थकी, पुत्री हुइ गुण माल ॥ स्वर्ग रंजा जाणे अवतरी, ठाया नाम रसाल ॥ ४ ॥ आठ वरषनी जब थइ, ( कहे ) मंडपकोशीक सार ॥ सांजल जामनी तुज कहुं, तीरथ जात्रा कीजे अपार ॥ ५ ॥ ठाया ( पुत्री ) मूंकीशुं किहां, गम कहो मुज खास ॥ तापसी कहे स्वामि सुणो, मेलो थापण शंकर पास ॥ ६ ॥ मंडपकोशीक एम जणे, सांजल जोली नार ॥ हर लंपट चंचल सदा, नवि ठोडे कन्या सार ॥ ७ ॥ कामनी कहे वोलो कशुं, महादेव त्रिजुवन धीश ॥ लोक सहु पूजे तेहने, व्यजिचारी नोहे ईश ॥ ८ ॥ तापस कहे सुण कामनी, ईश्वरचरित्र कहुं जेह ॥ महीमंकल मोटो जलो, कैलास पर्वत तेह ॥ ९ ॥ गौरी शंकर सुख जोगवे, करे तप जप धरी ध्यान ॥

त्रिकाल संध्या कारणे, गंगाए गया जगवान् ॥ १० ॥ स्नान करी देव पूजीया, संध्या चंदन कर्युं सार ॥ तिणे अवसर कांठे देखीउं, गंगा नारी रूप फार ॥ ११ ॥ गंगा देखी विह्वल थयो, कामबाण पीड्यो ईश ॥ ध्यान मूकी मन चिंतवे, उर्वशी रंजा सुरीश ॥ १२ ॥ एह कन्या मुजने वरे, सफल देह पण थाय ॥ रूप रच्युं कुंवर तणुं, लघु वय कोमल काय ॥ १३ ॥

## ढाल ठठी.

एणे पुर कंबल कोइ न लेशी, फेर पाठा चाल्या परदेशी–ए देशी.

फेरवी रूप हुवो जग त्रात, गंगा सरसी मांमी वात ॥ सांजल कुमरी मनोहर नार, मुज वाणी तुं हृदय विचार ॥ १ ॥ एकला वनमां कारण कशुं, मारुं मन तुज उपर वस्युं ॥ त्रिजुवन मांहिं तुं रुमी नार, जोवन सफल करो संसार ॥ २ ॥ कुमरी कहे मुज गंगा नाम, परणी नथी कंथ अजिराम ॥ केम करीए मोटो व्यजिचार, ए नोहे उत्तम आचार ॥ ३ ॥ शंकर कहे सांजल कुमारी, हुं कुंवारो हुं निरधारी ॥ सरीखो जोग मल्यो ठे घणो, करीए कारण विवाह तणो ॥ ४ ॥ गंगा वचन गम्युं ते सार, संक्षेपे कीधो आचार ॥ काम क्रीमा कीधी बेहु घणी, सुख पाम्यो तव ईश्वर धणी

॥ ५ ॥ कैलास चडवा चाल्यो जाम, कामनीए कंथ पूछ्युं ताम ॥ परणीने क्यां जाश॥
नाथ, अमे आवीशुं तमारे साथ ॥ ६ ॥ शंकर कहे सांभल तुं सुंदरी, मुज मंदिर
छे गिरि उपरी ॥ तिहां रही निरमल ध्यान धरुं, नारी संगति तव परिहरुं ॥ ७ ॥
अण काल आवुं तुम भणी, काम क्रीडा करशुं नेह घणी ॥ तमे रहेजो तमारे ठाम,
शीघ्र आवीशुं अमे करी काम ॥ ८ ॥ एम कही ते चाल्यो जाम, पुंठे लागी गंगा
ताम ॥ कैलास उपर चमीआं वेय, पारवतीए दीठां तेय ॥ ९ ॥ गोरी कहे सांभल
सुंदरी, कोण नारी तुं केने वरी ॥ गंगा कहे सांभलरे संत, अमे जान्हवी ए मुज कंथ
॥ १० ॥ पारवती कहे तुमे अंत, केम भोगवशो मुज वालंभ ॥ गंगा कहे पूछो वृतांत,
मुज रतिक्रीडा कहेशे कंथ ॥ ११ ॥ उमीया कहे सांभलो भरतार, कुण कामनी ए
केहेनी नार ॥ शंकर भणे सुण सुंदरी, क्रीडा करतां में गंगा वरी ॥ १२ ॥ गोरी
कहे सुण निर्लज्ज निठोर, लंपट धुतारो तुं छे चोर ॥ असंतोषी कामी तुं सही, हुं
नारीए तृप्ति तुज नहीं ॥ १३ ॥ गंगा सरीखो करशो नेह, तो हुं मारी मूकीश देह ॥
सांभली शंकर बोल्या ताम, रूपवती तुं छे अभिराम ॥ १४ ॥ तुज उपर मुज प्रेम
अपार, गंगा तणो करशुं परिहार ॥ संतोषी पारवती सार, मूकवा चाल्यो गंगा नार

॥ १५ ॥ जान्हवी तीरे लाव्यो जाम, काम कुतूहल कीधो ताम ॥ गंगा राखी जटा मोझार, नारी येशुं करे व्यापार ॥१६॥ मंरूपकौशीक कहे वृतांत, शंकर न होये एहज संत ॥ सुर नर खेचर जाणे सहु, महादेव व्यभिचारी बहु ॥१७॥ यापण ठवीए ईश्वर पास, तो सही पामे पुत्री विणास ॥ दूध जलावीए जो मंजार, तो शंकर शुं करो व्यापार ॥ १८ ॥ तापस नारी बोली ताम, ईश्वर मोटो एहनो ठाम ॥ ठायाने मूकीशुं तिहां, विचार करीने बीजो जिहां ॥ १९ ॥ कामनी कहे सांभलो तुमे कंत, ठाया ठवीए पासे अनंत ॥ वासुदेव भुवन त्रय राय, सुर नर जेना सेवे पाय ॥ २० ॥ तापस कहे सांभलरे नार, ए मोटो गोवालणीनो जार ॥ केम ठवीए ए पासे बाल, सहु जाणे ए परस्त्री काल ॥ २१ ॥ तापसीए विनवीया कंत, स्वामि कथा कहो ते संत ॥ मंरूपकौशीक बोल्यो ताम, सांभलजो नारी अभिराम ॥ २२ ॥ ढाल छठी बीजा खंडनी सारी, नेमविजय कहे निरधारी ॥ श्रोता सांभलजो सहु कोय, वात कहुं जे आगल होय ॥ २३ ॥

दुहा.

धरी, वेचण आवी ताम ॥ २ ॥ दहीं दूध भाजन भरा, आवा ...
रिज पाम्या रूपनी, ते चितक सुण तास ॥ ३ ॥ कामे पीमाणो घणो, विरहानल संताप ॥ अवर नारी ते नवि गमे, लेह लागी ते आप ॥४॥ सोल सहस्र गोपी तणो, त्यां उतार्यो मोह ॥ राधा उपर अति घणो, पाम्यो त्यां व्यामोह ॥ ५ ॥ सुण राधा गोवालणी, तुजशुं रंग अपार ॥ अवर नार मुज नवि गमे, तुज सम को नहीं संसार ॥६॥ दाण आप मटुकी तणुं, सांनल मारी वाण ॥ प्रेम धरो अमशुं तमे, म करो खेंचा ताण ॥ ७ ॥ तव बोली राधा तिहां, सांजल राजा राम ॥ पुरुषोत्तम ए वातमां, किम सीजे तुम काम ॥ ८ ॥ नारायण सुर नर कहे, अयुक्त बोलो आज ॥ मोटा पण खोटा हिये, राखो तुमारी लाज ॥ ए ॥ नीच जाति आहीरनी, बोला अमे नरनाम ॥ तेहने पशुं केम घटे, पेखी किम पमो खाम ॥ १० ॥

ढाल सातमी.

कर जोमी कामनी जंपे, कहेतां थरहर काया कंपे–ए देशी.

सांनलो धर्मशास्त्र विचार, ए नहीं उत्तम आचार ॥ परनारी लंपट नर जेह, मरीने डुरगति जाये तेह ॥ हो लाल ॥ सुणजो साजन सहुको ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

रात दिवस जे बांधे पाप, नगर मांहीं लहे ते संताप ॥ सदा जव होये अशुन्न ध्यान, तेहने को नवि दीये मान ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २ ॥ कर्मजोगे जो राजा जाणे, ठेदन नेदन बहु करे काणे ॥ दंडे मुंडे लोकने बांधे, करावे गर्दन्न रोहण खांधे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ लिंग नासिका होये ठेद, सज्जन सहुको पामे खेद ॥ कालां मुख होवे बांधव तणां, लज्जा पामे कुलवंत घणा ॥ हो ला० ॥सु०॥४॥ फिट फिट करे सहु कोय, मित्रवर्ग सहु डुःखीउ होय ॥ दान पूजा जश लोपाय, कृष्ण वदन लोकमां थाय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ते उपर कथा सुणो एक, जेथी श्रावे तुमने विवेक ॥ कोइ गाम रहे एक शेठ, राज काजनी करे ठे वेठ ॥ हो ला० ॥सु० ॥ ६ ॥ तेहने श्रीमती नामे नारी, रूपे रंन्ना सुर अवतारी ॥ शेठने प्रोहीतशुं मित्राइ, नित आवे जावे घर धाइ ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ७ ॥ एक दिन ते शेठ विचारी, परदेश चाल्या परवारी ॥ प्रोहीतने नलावी गेह, तस नारीशुं मांड्यो नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ८ ॥ शीलवंत नारी कहे ताम, केम कहो ठो मुजने आम ॥ तव बोल्या प्रोहीत तेह, जो करशो मुजशुं नेह ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ए ॥ तो सुख थाशे तुमने, राजी करशो जो अमने ॥ जे कहेशो ते विधि करशुं, तुम वयण अमे दिल धरशुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १० ॥ तव चिंतवे नारी एम, शील रहेशे माहरुं

केम ॥ एवी बुद्धि कोइक उपाउं, प्रोहीतनी लाज लोपावुं ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एम चिंतवी बुद्धि उपाइ, प्रोहीतने कहे समजाइ ॥ पोहोर रात्रि जाये तेणी वार, आवजो थाइ हुशियार ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १२ ॥ प्रोहीत थयो तव राजी, गयो निज घर मनमां गाजी ॥ कोटवाल पासे गइ नारी, तमे छो नगर तणा अधिकारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥१३॥ प्रोहीत वांछे मुजशुं प्रीत, तेनी कहेवा आवी हुं रीत ॥ सांभली कोटवाल तव बोले, नहीं नारी अवर तुम तोले ॥ हो ला० ॥ १४ ॥ अमशुं जो राखशो राग, तो प्रोहीतनो शो लाग ॥ एम सांभली नारी कहे वात, बीजे पोहोरे आवजो रात ॥ हो ला० ॥ १५ ॥ तिहांथी गइ सचीवनी पासे, वात धुरथी कही उल्लासे ॥ तुमे नगर तणा अधिकारी, कोटवालने राखो वारी ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ १६ ॥ कामांध थयो नारी देखी, कोटवालने नाखुं उवेखी ॥ मुज आगे थल श्यो एहनो, वयण मानशो मां कांइ कहेनो ॥ हो ला० ॥सु०॥१७॥ सचीव कहे मुज साथे, मेलो मेलव्यो छे जगनाथे ॥ सुंदरी कहे त्रीजे पहोरे, आवजो थइ आपणे तोरे ॥ हो ला० ॥ सु० ॥१८॥ राजा जणी चाली आवी, वात धुरथी कही संभलावी ॥ राजा पण रीझ्यो जोइने, बोलो मां वयण कहे कोइने ॥ हो ला० ॥सु० ॥ १९॥ हुं गाम तणो तुं राजा, कोण लोपे माहरी

माजा ॥ प्रोहीत प्रधान कोटवाल, तेहने काढी मूकुंरे ततकाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥२०॥ हुं थापुं करी पटराणी, बीजी तुम आणे पाणी ॥ तव सुंदरी कहे तुमे राय, चोथे पोहरे मुज घर मांय ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २१ ॥ त्यांथी आवी निज घर मांहे, पाडोसण डोसी ठे त्यांहे ॥ तेहने तेमी समजावे एम, कागल लखी आपुं जेम ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २२ ॥ बीजा खंडनी सातमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ तुमे सुणजो बाल गोपाल, आगल कहुं वात रसाल ॥ हो ला० ॥ सु० ॥ २३ ॥

डुहा.

कागल लइ उतावली, रात रहे घमी चार ॥ रोती रमती आवजे, करती अति पोकार ॥ १ ॥ समजावी पाडोसणी, घरमां एक मजूस ॥ तेहमां खानां चार ठे, चोखी करी लइ लूस ॥ १ ॥ एम करतां संध्या थइ, आव्यो प्रोहीत जाम ॥ आदरमान दीधो घणो, लटपट करती ताम ॥ ३ ॥ जोजन जाजन करे घणां, सजी सोल शणगार ॥ हाव जाव देखामती, पोहोर रात तेणी वार ॥ ४ ॥ कोटवाल रही बारणे, कहे कमाड उघाड ॥ मांहीं थकी बोली तिहां, हुं जोतीती वाट ॥ ५ ॥ तव प्रोहीत नारी नणी, कहे हवे कोण हेवाल ॥ जो जाणे मजने ...

मनुष्य पकडे माछरी, तुम पेसो ने मांहिं ॥ गमन पडे कोइने कशी, मौन करी रह्यो त्यांहिं ॥ ७ ॥ श्रोढीतने मांहिं घालीयो, यंत्र जमीने द्वार ॥ तलार घरमां तेडीयो, पोसारे तेणी नार ॥ ८ ॥ खातां पीतां खेलतां, दोय पोहोर गइ रात ॥ त्रीजा पोहोरे आवीयो, सचीव थइ रळीयात ॥ ९ ॥ बोल्यो कोटवाल एम कहे, मुज सांतो कोइ नाम ॥ मुजने देखे जो इहां, न रहे माछरी माम ॥ १० ॥ बीजे खाने घालीयो, सचीवने लीधो मांय ॥ गीत गान करती थकी, सचीव तणो गुण गाय ॥११॥ चोथो पोहोर जब आवीयो, राजा पोहतो थाण ॥ कमाड उघाडी उतावलां, देखे कोइ अजाण ॥ १२ ॥ सचीवे साचव सांभल्यो, थरथर ध्रुजे काय ॥ नारी नणी बोले तिहां, मुज सांतो कोइ नाय ॥ १३ ॥ त्रीजे खाने घालीयो, राजा लीधो मांहिं ॥ नयण घाण लगाडतो, रीसाणे राजा तांहिं ॥ १४ ॥ चार पमी रात पाछली, आवी पाडोसण नार ॥ कागल हाथमां लेइ करी, निपट करती पोकार ॥ १५ ॥

### ढाल आठमी.

करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे—ए देशी.

उठ उठ रे सांम तुं सूइ रह्यो रे, मूकी तुज भरतार ॥ कागल आव्योरे आज परदे-

पनोरे, सांजल मूर्ख निरधार ॥ सांजलजो श्रोतारे, कथा अचरिज तणीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सांजली नारी रुदन करे अति घणुंरे, कुटे हृदय ने शीष ॥ सगां साजन सहु आवी मल्यांरे, ढार उत्तां पाडे चीस ॥ सां० ॥ २ ॥ मांहे बेठो राजा मन चिंतवेरे, हुवो रंगमां जंग ॥ मुजने सांतो कोइ एकांतमांरे, आवी लाग्यो व्यंग ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ नारी कहे तुमे मोटा राजवीरे, किहां सांतुं नथी ठाम ॥ कहो तो मजूस एक मोटो अछेरे, मौन करी रहो धाम ॥सां०॥४॥ कहे राजा तुमे शीघ्र थइ हवेरे, म करो ढील लगार ॥ चोथे खाने राजाने घालीयोरे, प्रपंच करी तेणी वार ॥ सां० ॥ ५ ॥ नर नारी आव्यां घरमां वहीरे, आरीम कारीम कीध ॥ एम करतां परजात थयो हवेरे, वात थइ परसीध ॥ सां० ॥ ६ ॥ वात सुणी दरबारमां राणीएरे, खबर करो जइ राय ॥ चाकर दोड्या नृपने शोधवारे, दीठा नहीं कोइ राय ॥ सां० ॥ ७ ॥ सचीवने शोध्या सारा शहेरमांरे, दीसे नहीं कोटवाल ॥ प्रोहीतने जोया वली चिहुं दिशेरे, फरी आव्या ततकाल ॥ सां० ॥ ८ ॥ राणी कहे ए शेठ हतो वांझीयोरे, एहनो माल होये जेह ॥ राणी जाणे गुपत राजा वच्चेरे, मंगावी सेउं तेह ॥ सां० ॥ ॥ ९ ॥ सेवक दोडाव्या राणीए ततखणेरे, एहना घरमां वस्तु सार ॥ लावो जइने

कोइ जाणे नहींरे, ढील म करजो लगार ॥ सां० ॥ १० ॥ चाकर चाल्या सहु थइ एक मनारे, पढ़ोंला शेठने गेह ॥ नारीए दीधो आदरनाव आयतारे, बोल्या अनुक्रमे तेह ॥ सां० ॥ ११ ॥ सार वस्तु जे तुज घरमां होयेरे, ते आपो अमने आज ॥ तव बोली ते नारी सांनलीरे, साचा कहुं तुमे राज ॥ सां० ॥ १२ ॥ मजूस मोटी घरमां अछेरे, माल मांहीं छे सार ॥ तृपन जोडी लेइ जावो तुमेरे, मेल्यो छे मुज नरतार ॥ सां० ॥ १३ ॥ सांनली दोड्या अनुचर उतावलारे, तृपन आण्या तत-काल ॥ जोडी तृपन तणाथी लेइ गयारे, राणी थइ उजमाल ॥ सां० ॥ १४ ॥ तालां उघाडी मांहेथी काढीयोरे, प्रोहीतने तेणी वार ॥ राणी कहे तुमे पेठा केम इहांरे, अद्भुत वात अपार ॥ सां० ॥ १५ ॥ तव प्रोहीत कहे बीजुं बारणुंरे, उघाडी देखो देव ॥ ततक्षण उघाड्यो जव सहु मलीरे, दीठो कोटवाल ततखेव ॥ सां० ॥ १६ ॥ अचरिज देखी राणी एम कहेरे, चोकी करवा काज ॥ तस्कर पकडवा पेठा तुमेरे, नली राखी तुमे लाज ॥ सां० ॥ १७ ॥ मुख ढांकीने कोटवाल एम कहेरे, उघाडो त्रीजुं बार ॥ तेहवे राणीए कपाट उघाडीउंरे, सचीव दीठो तेणी वार ॥ सां० ॥ १८ ॥ राणी कहे तुमे दफतर मांडवारे, जइ पेठा एकांत ॥ सचीव कहे तुमे मुजने

शुं कहोरे, केम थइ रह्या निचिंत ॥ सां० ॥ १९ ॥ राजाजी साथे सहु मली अमे गयारे, चोथो उघाड्यो ठाम ॥ ततक्षण राणीए द्वार उघाडीयुंरे, नीचुं घाल्युं ताम ॥ सां० ॥ २० ॥ चादर ठंढी मुखने तांतीयुंरे, फिट फिट करे सहु लोक ॥ उठी त्यांथी गया निज निज घरेरे, चिंतवे मनशुं फोक ॥ सां० ॥ २१ ॥ बीजा खंडनी ढाल ए आठमीरे, नेमविजय कहे सार ॥ श्रोता सांभलजो सहु एक मनारे, जे वात होये निरधार ॥ सां० ॥ २२ ॥

## दुहा.

चारे मली मन चुंपशुं, आणी शुद्धि विवेक ॥ सासरवासो करीये सही, तो उतरे आपणी टेक ॥ १ ॥ ते नारी तेडावीने, कीधी नगनी तेह ॥ सासरवासो करी नलो, वोलावी फरी गेह ॥ २ ॥ एम राधा केशव भणी, समजावे कही वात ॥ परनारीना संगथी, उपजावे उतपात ॥ ३ ॥ नारायण मोटा देवता, लागी चुंडी टेव ॥ दामोदर वोल्या तुरत, सांभलो राधा देव ॥ ४ ॥ धर्मशास्त्र जाणुं अमे, वचन म लोपो आज ॥ परउपगारी परगडु, मोटी तुमारी लाज ॥ ५ ॥ अमे नामनी बहु उभरी,
[illegible]

राजी थइ, गाशे पर कोइ जोय ॥ तेना गद्द उमाणही, गेहु जाण मद्दीनां सोय ॥ ७ ॥ वेकुंठे संतोषी घणुं, राधा जोडी हाथ ॥ कहे स्वामी मुज जाणजो, रीस करशो मुज नाथ ॥ ८ ॥ काम काज घरमां घणां, हुवो मुज नरतार ॥ कोपी गाल आपे घणी, जो जाणे व्यभिचार ॥ ९ ॥ राते मुज घर आवजो, गुण करी गुण देइ ॥ घर निशानी सो कही, पोहोती निज घर तेह ॥ १० ॥

ढाल नवमी.

गीतके गेहैं गीतके पुत, आतम गहीला छे आपपुत–ए देशी–( राग बंगालही. )
गिरधारी वाल्हो गोविंद, राधाने तेडे रायप धेन ॥ गत रात हो ॥ ताडातेडि' टडाडे तन, कोइ सुरज थइ आकाशे मान ॥ म० ॥ १ ॥ पीत लागे छे आगनी समान, पण करता आचरीलो जाण ॥ म० ॥ रात पडी हुओ अंधकार, गोविंद पहोंतो गोपाडणी बार ॥ म० ॥ २ ॥ तरकडी परे आडया तेह, द्वार दीधां दीठां ततखेव ॥ म० ॥ वेकुंठनाथ निमाले ताग, लोक सुता छे एणे जाग ॥ म० ॥ ३ ॥ लोकातील ... पच्छी लोक, आग नोरी घरशे मुज फोक ॥ म० ॥ ...

पोठुं तो जाणे सहु कोय ॥ म० ॥ ४ ॥ अंगुलीनो संचल कीध, टपोरे कपाटे दीध ॥
म० ॥ राधा घोली जोती वाट, अंगुलीए कोण हणे कपाट ॥ म० ॥ ५ ॥ अमे माधव
तुं ते महंत, राधा कहे तुमे गे वसंत ॥ म० ॥ नहींरे कामनी हुं चक्रीश, राधा कहे
कुंजारनो ईश ॥ म० ॥ ६ ॥ धरणीधर हुं मोटो देव, शेषनाग तुं आव्यो हेव
॥ म० ॥ नारे अहीमर्दन अजिराम, राधा कहे गरुड तुज नाम ॥ म० ॥ ७ ॥ नहींरे
हुं हरि जगदीश, राधा कहे तुं वानर ईश ॥ म० ॥ विष्णु कहे राधा म करो हठ,
उत्तर देयाने अमे हुं ठठ ॥ म० ॥ ८ ॥ राधा रंगे हास्युं एम करी, बार उघाडी लीधा
मांहे हरि ॥म०॥ काम कुतूहल मांड्यो ताम, जानूदय पाम्यो वली जाम ॥ म०॥ ९॥
रात्रिए जइ अन्यायज करे, दिवसे आवी राज्य उधरे ॥ म० ॥ नारायण लक्षण ठे एह,
घाल गोपाल जाणे ठे तेह ॥ म०॥ १० ॥ तापस कहे सांजल तापसी, वात विचारी जुठने
असि ॥म०॥ सोल सहस्त्र स्त्री नहीं संतोष, हरिने मोटो परनारी दोष ॥ म० ॥ ११ ॥
थापण ठवीए हरिनी पास, तो पुत्रीनो होये नाश ॥ म०॥ अवर विचार करीशुं जेम,
गया घाला मूकीए तेम ॥ म० ॥ १२ ॥ ताम तापसी वदे वर वाण, सांजलो
स्वामि तुमे ठो जाण ॥ म० ॥ वात कहुं एम विचारी एक, सृष्टि निपाइ ब्रह्माए विवेक

कहो तेह ॥ ७ ॥ गुरु कहे इंद्र सांजलो, ब्रह्मा तप करे अघोर ॥ अरधी चोकमी हुवा पढी, तुम पद लेशे जोर ॥ ८ ॥ सांजली इंद्र उपाय रचे, अपठरा तेडी तिण काज ॥ ब्रह्मा तपथी चालवो, जिम रहे आपणो राज ॥ ए ॥ नृत्यकी कहे देवेंद्र सुणो, ए नवि होय असशुं काम ॥ गरढो कपटी कोपशे, श्राप देइ फेडे ठाम ॥ १० ॥

## ढाल दशमी.

नणदलनी देशी.

प्रीतम हे प्रीतम इंद्र, कहे सघली मली ॥ तिल तिल दीठं मुज रूप ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा निपजावीशुं, सर्व कलानो कूप ॥प्री०॥ सुणजो साजन वातलमी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तिल तिल रूप नृत्यकी दीयो, तिलोत्तमा घमी सुरराज ॥प्री०॥ कर जोमी उनी रही, आदेश द्यो कोण ठे काज ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २ ॥ अमरपति कहे रंजा सुणो, ब्रह्मा तप करो नाश ॥ प्री० ॥ एह चिंता सहुने घणी, पूरो अमारी आश ॥प्री०॥सु०॥३॥ तिलोत्तमा वीकुं धरी, नारद तुंबर देव ॥ प्री० ॥ तप करतो ब्रह्मा जिहां, तिहां आवी ततखेव ॥प्री०॥सु०॥ ४ ॥ सनमुख नाटक मांडीयुं, धप मप धौं धौं कार ॥ प्री० ॥ मादल वाजे मधुर स्वरे, झं झं झेरी विस्तार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ५ ॥ घम घम घुघरी घमकती,

कट कट मोमी काय ॥प्री०॥ हाव नाव देखाकती, नव रस नाटिक थाय ॥प्री०॥सु०॥
॥ ६ ॥ जेम जेम नीरखे नारीने, तेम तेम ध्यान गयो दूर ॥ प्री० ॥ तिलोत्तमा रूप
देखी करी, हरख उपन्यो जरपुर ॥ प्री० ॥ सु०॥ ७ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां,
नाचीगुं रुपिनुं चित्त ॥प्री०॥ विकल रूप ब्रह्मा हुवो, श्रवणे सुणी ते गीत ॥प्री०॥सु०॥
॥ ८ ॥ ब्रह्मा चल चित्त जाणीने, वामांगे मांड्यो नाट ॥ प्री० ॥ छ राग छत्रीशे आलवी,
तान मेंड नहीं घाट ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ए ॥ मोह पाम्यो ब्रह्मा घणुं, चिंतवे मन मांहे एम
॥ प्री० ॥ रुपि मयलामां हुं थयो, मुख फेरवी जोउं केम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १० ॥ जो
नवी नीरखुं नृत्यकी, तो मुज दुःख होये देह ॥ प्री० ॥ नयणे निहालुं तिलोत्तमा,
सफल जनम मुज तेह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ११ ॥ एक चोकसी तपने फले, मुख होजो
माने पास ॥ प्री० ॥ वदन बीजुं ब्रह्मानुं हुवो, देखी रूप विलास ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १२ ॥
पीन पयोधर पेखतां, रंजया भाता जाम ॥ प्री० ॥ नाटक रचीगुं पाछले, आनंद नृत्य
तिहां ताम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १३ ॥ सा री ग म प ध नी गायतां, ब्रह्मा विमासे तेह ॥
प्री० ॥ पाछुं फरी अवलोकतां. लाज आवे मुज देह ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १४ ॥ बीजी
चोकसी तपे करी, नीकलजो मुख पुंठ ॥ प्री० ॥ वदन हुवो ब्रह्मा तणो, रूप जोइ हृदये

तून ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १५ ॥ चित्त चढ्युं जाणी करी, नाटक मांड्युं जमणे अंग ॥ प्री० ॥ नाव जेद देखामे घणा, ब्रह्मा नवि जोये रंग ॥ प्री० ॥सु० ॥१६॥ कामबाणे वींध्यो तदा, मन मांहीं चिंते ताम ॥ प्री० ॥ लाज लागे मुख फेरतां, विण जोए विणसे काम ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १७ ॥ चोकडी त्रीजी तपे करी, मुख नीकलजो सार ॥ प्री० ॥ चोथुं वदन हुवुं जह्मुं, दीसे दक्षिण नार ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १८ ॥ तव नाटिक गगने कर्युं, नव रस ब्रह्म विलास ॥ प्री० ॥ सृष्टिकर्ता मन चिंतवे, केम करी देखुं आकाश ॥ प्री० ॥ सु० ॥१९॥ उंचुं जोतां हास्युं हसे, जोया विण न रहाय ॥प्री०॥ अरध चोकमी तप तणे फले, मुज मुख गगने थाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २० ॥ गर्दन्न वदन नीकल्युं तदा, जूंकारव करे विकराल ॥प्री० ॥ तव नाठी तिलोत्तमा, स्वर्ग गइ इंद्रने कहे हेवाल ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २१ ॥ दशमी ढाल बीजा खंडनी, रंगविजय कविराय ॥ प्री० ॥ तस शिष्य नेमविजय कहे, सांजलजो चित्त लाय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ २२ ॥

दुहा.

सांजलजो स्वामि तुमे, ब्रह्मानो तप जेह ॥ उंठ चोकडीनो कष्ट कर्यो, विफल थयो सहु तेह ॥ १ ॥ मुख चारे मुज देखीने, पांचमुं रासजनुं होय ॥ विकल थयो नृत्य जोवतां,

आव्यां जोवा काज ॥ विपरीत रूं रूं करे मुख तोय ॥ २ ॥ आनंद्या सुर सामटा, रूपने देखीने, खम खम हसत समाज ॥ ३ ॥ तव ब्रह्मा कोपे चढ्यो, सुर उपर कीधी केम ॥ नाठा जाए घर भणी, तोहि नाव्यो नीवेम ॥ ४ ॥ रूंरूंकार करतो थको, धायो केडे जाय ॥ कोलाहल स्वर्गमें थयो, अचरिज सहुने थाय ॥ ५ ॥ के खाशे के मारशे; नाठा त्रिभुवनमां पड्यो त्रास ॥ जय पाम्या तापस सहु, तप जप मूकी तास ॥ ६ ॥ नाठा लोक सहु धुजता, केइ पाडे पोकार ॥ सुर नर किंनर आगले, आवे करतां मार मार ॥ ७ ॥ ईश्वर शरणे आवीया, कहे मुज राखो देव ॥ ब्रह्मा संतापे छे घणुं, दुःख भांजो अम देव ॥ ८ ॥ रुद्र जाय रुडे कर्यो, खुंखुं मस्तक खर नख ॥ पीडा उपनी ब्रह्मा घणी, बोले मुखथी अशक्त ॥ ९ ॥ हत हत्यारा पापीया, तुजने शुं को देव ॥ मस्तक मारुं तोडीयुं, हत्या चड तुज देव ॥ १० ॥

## ढाल अगीयारमी.

साहेबा मोती घो हमारो, मोहना मोती घो—ए देशी.

मुज कपाल चमो तुज हाथ, जेम न करे एहवो किहां साथ ॥ मानो तुमे वयण हमारो, सही करी मन मांही धारो ॥ ए आंकणी ॥ आपे ईश्वर थयो तव कालो, महादेव

कहे मनवालो ॥ मा० ॥ १ ॥ शंकर लागे ब्रह्मा पाय, कर जोडी कह्यो जग राय ॥ मा० ॥ में पापीए कीधो वाध, खीमा करी खमजो अपराध ॥ मा० ॥ २ ॥ मुज पापीनी हत्या जाय, स्वामि ते कहजो उपाय ॥ मा० ॥ खर कपाल परूं वली जेम, वचन भाखजो ब्रह्मा तेम ॥ मा० ॥ ३ ॥ कोमल वचने कृपा तव कीध, कोप तजी शिखामण दीध ॥मा०॥ ब्रह्मा कहे सांभलरे ईश, पापी मोटो तुं जगदीश ॥मा०॥४॥ हत्या माहरी था उतरे एम, वचन कहुं ते करे तुं तेम ॥मा०॥ जटा जूट माथे हर राखो, मसाण राख विलेपन राखो ॥मा०॥५॥ नर कपाल तणो रचो हार, अस्थि रोम मांहीं गुंथो फार ॥मा०॥ कोटे घालो ते वली माल, देखीती मोटी विकराल ॥मा०॥६॥ भाक ने किन्नरी वाउ अपार, भांग धंतुरो खाउ फार ॥मा०॥ नगन थइ हींडो गामो गाम, भिक्षा मागो ठामो ठाम ॥मा०॥७॥ वरणावरण म करशो भेद, सघले लेजो भिक्षा ठेद ॥मा०॥ मुज कपाल मांहीं घालो जेह, रात दिवस तमे जमजो तेह ॥मा०॥८॥ एणी परे हत्या जाशे तारी, ए शिखामण सारी ॥ मा० ॥ रुधिर लेइ को पुरशे कपाल, खर मस्तक पडशे तत्काल ॥ मा० ॥ ९ ॥ ब्रह्मा वचन सुणी तव ईश, जोगी रूप धर्युं जगदीश ॥ मा० ॥ कपालीक धरीयो तेह नाम, रात दिवस हींडे गामो गाम ॥मा०॥१०॥ एम करतां गयो घणो काल, मसाण भूमि सेवी

पापीने घरे गयो ततकाल, रुधिर पूर्यु ब्रह्मा कपाल ॥मा०॥११॥ ईश्वरनी उजमाल ॥मा०॥ पापीने घरे गयो ततकाल, रुधिर पूर्यु ब्रह्मा कपाल ॥मा०॥ कपालीक शंकरनो नाम, लोक जनी लीधी हत्या, हाथ थकी तुंबकीपनी धरत्या ॥मा०॥ कपालीक शंकरनो नाम, लोक कहे जपो शिव नाम॥मा०॥१२॥ वेद पुराण कथा छे एह, बाल गोपाल जाणे छे तेह ॥मा०॥ ब्रह्मानी सांजलजो वात, तप संजम कीधो छे घात ॥ मा० ॥ १३ ॥ अंबर गइ तिलो-त्तमा जाम, कामे पीड्यो ब्रह्मा ताम ॥ मा०॥ विकल रूप हुवो छे अपार, भुवन चतुं देखे ते नार ॥ मा० ॥ १४ ॥ विह्वल थयो मलवाने धाय, नर नारी सहु नासां जाय ॥ मा० ॥ झाड वीमने सांइ देय, देवी जाणे तिलोत्तमा एय ॥ मा० ॥ १५ ॥ मृग पशु तणो धामे जाम, लंपट देखी नासे ताम ॥ मा० ॥ रींछणी एक मली वन मांय, लथवथ करीने तेहने साय ॥मा०॥१६॥ रूप जाण्युं रंजानुं एह, गृद्ध ब्रह्माए जोगवी तेह ॥मा०॥ ऋतुवंती ते हुती ताम, जंबुवंत उपन्यो अजिराम ॥ मा० ॥ १७ ॥ बलवंत बुद्धि तणो निधान, प्रसिद्ध जाणे सहु वेद पुराण ॥ मा० ॥ रामचंद्र तणो हुवो ते दूत, जग विख्यात ब्रह्मनो सूत ॥ मा० ॥ १८ ॥ गरढानी करणी छे एह, किम छवीए पुत्री पासे तेह ॥ मा० ॥ सृष्टिकर्ता ब्रह्मा कह्यो सार, नीपाइ नहीं एके नार ॥ मा० ॥ १९ ॥ रींछणीशुं कीधो व्यभिचार, भुंडपणुं एहने अपार ॥ मा०॥ तापस अमे सहुको जाणुं,

ब्रह्मा लक्षण केतां वखाणुं ॥ मा० ॥ २० ॥ बीजा खंडनी इग्यारमी ढाल, सुणजो सहुको बाल गोपाल ॥ मा० ॥ रंगविजयनो कहे एम शिष्य, नेमविजयनी पहोंती जगीश ॥ मा० ॥ २१॥

## डुहा.

आप कहुं वात एहनी, सांजल ढाया मात ॥ वेद पुराणमां एहवी, साची कहुं एक वात ॥ १ ॥ सावित्री नार ब्रह्मा तणी, बेटी जग गुणधार ॥ सारदा कुमरी रंजा जीसी, देखी चलीयो तेणी वार ॥ २ ॥ कामे पीड्यो पुंठे थयो, जारती नाठी जाय ॥ वनमां नासी ते गइ, पुत्री पुंठे थाय ॥ ३ ॥ ब्रह्मा ठेतरवा सही, मृगली रूप धर्युं सार ॥ तव ब्रह्मा कुरंगनो, रूप धरी व्यजिचार ॥ ४ ॥ पुत्रीने विलसी करी, एहवो जेनो काम ॥ तो पुत्री ढाया आपणी, केम जलावीए ताम ॥ ५ ॥ तापस कहे नारी जणी, पुत्री न ढोरु एह ॥ हरि हर ब्रह्मा सारिखा, पर नारी न मूके तेह ॥ ६ ॥ कर जोमी तापसी जणे, सांजल स्वामि कंत ॥ सूरज पासे सोंपीए, ढाया बाला संत ॥ ७॥ तापस कहे सुण तापसी, दिनकर ठे ढीनाल ॥ कुंती कन्या जेणे जोगवी, किम ढोरु ते बाल ॥ ८ ॥

## ढाल बारमी.

दील लगारे वादल वरणी—ए देशी.

सांजल तापसी जादव राजा, समुद्रविजय सुखकारी ॥ तुमे सुणजोरे॥ आगे होइ जे वात, मूकी पर तणी तात ॥तु०॥ ए आंकणी॥ तेहनी जगनी कुंती कन्या, रूपे रंजा अवतारी ॥ तु० ॥ १ ॥ चतुर्थ स्नान करवाने वाला, जमुना नदी गइ तेह ॥ तु० ॥ वस्त्र विवर्जित स्नान करंती, सूर्यदेवे दीठी तेह ॥ तु० ॥ २ ॥ रूप देखी तव मदने पीड्यो, विप्र वेश वेगे लीधो ॥ तु० ॥ कपांवर पेहेर्यां जनोइ आरोपी, सर्वांग तिलक कीधो ॥ तु० ॥ ३ ॥ राम राम मुख बोलतो निरमल, आव्यो कुंतीनी पासे ॥ तु० ॥ आशिर्वाद देइ करी जंपे, सांजलो कुमरी उल्लासे ॥ तु० ॥ ४ ॥ काम क्रीडा अमशुं तमे खेलो, जोवननो लाहो लीजे॥ तु० ॥ कुंती कहे कुमारिका अमे तुं, अघट काम किम कीजे ॥ तु० ॥ ५ ॥ द्विज रूपी सूरज वदे वाणी, सांजलो कुमरी अजाण ॥ तु० ॥ उत्तम वर्ण ब्राह्मण वेद जाण, विना नवि धरुं प्राण ॥ तु० ॥ ६ ॥ पवित्र पात्र अमे जगत् प्रसिद्धा, अमने आपे जे दान ॥ तु० ॥ पाप जाय सुख संपत्ति पामे, स्वर्ग लोके वहे मान ॥ तु० ॥ ७ ॥ विप्र वचन कुमरी मन मान्युं, खस्ति जणावी का-

य ॥ तु० ॥ जोग विलास हुवो रंग रोल, हर्षे प्रीत वेज थाय ॥ तु० ॥ ८ ॥ गर्न धर्यो कुंतीए तेणे अवसर, जोग करी वलीयो जाण ॥ तु० ॥ कुमरी कहे किहां जाउ गो स्वामि, वृत्तांत कहो गंडी काण ॥ तु० ॥ ए ॥ द्विजवर कहे सुणो सुंदरी कन्या, सूर्यदेव अम नाम ॥ तु० ॥ रूप देखी चित्त अम तणुं चलीयुं, विप्र होइ कीधो काम ॥तु०॥ १० ॥ भुवन प्रकाश करुं दिन गगने, जावा द्यो मुज आज ॥ तु० ॥ कुंती कहे हुं तुं बाल कुमारी, उधान रह्यो दिनराज ॥ तु० ॥११॥ जासुर जणे जामनी तुम कूखे, पुत्र होशे दातार ॥ तु० ॥ रूप कला बल बुद्धि विचक्षण, त्रीजा दिवस मोकार ॥ तु० ॥ १२ ॥ मंत्र अपूर्व वली आपुं तुमने, नर आकर्षण होय ॥ तु० ॥ समरतां आवे सहु पासे, काज करशुं आपण दोय ॥ तु०॥१३॥ मंत्र आपी करी कुंती संतोषी, जानु गयो निज गम ॥ तु० ॥ कन्याए काने जण्यो सुत सुंदर, करण हुवो तेह नाम ॥ तु० ॥ १४ ॥ मंरूपकोशीक कहे सुण तापसी, कुंतीने जोगवे जेह ॥ तु०॥ सूरज देवता मोटो लंपट, गयाने केम गोडे तेह ॥ तु० ॥ १५ ॥ ढाल बारमी खंड बीजानी, कही श्रोता जन सारु ॥ तु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पजणे, नेमविजय कहे चारु ॥ तु० ॥ १६ ॥

## दुहा.

नागसी कहे भामिनि सुणो, चंद्र अने महा संत ॥ पुत्री ते पासे गयी, जात्रा जइए कंत ॥१॥ मंगलकौशीक तव कहे, सुण नागजी मात ॥ चंद्र चपल लंपट घणो, घटती न होय वात ॥२॥ तेह कथा सघली सांभलो, मांडे कीध अनाचार ॥ गुरुपत्नी तेणे भोगवी, कहेशुं तेह विचार ॥ ३ ॥ बृहस्पति सुरमांहे वडो, सुर सघलानो गोर ॥ तस नारी दीठी रुयडी, चंद्र थयो चोर ॥ ४ ॥ व्यभिचार तेहशुं आचर्यो, रात दिवस ते चंद्र ॥ सुर गुरुए जाणी करी, वात करी तव इंद्र ॥ ५ ॥ जजमान तुमे सांभलो, चंद्रे हरी मुज नार ॥ अन्याय कीधो घणो घणो, वेगे करो अम सार ॥६॥ सुरपति सैन्य लेइ संचर्यो, युद्ध करवाने जाय ॥ सोमे शिव संख्या करी, आव्यो ईश्वरने धाम ॥ ७ ॥ कर जोडी शशीकर कहे, सुणो शंकर महाराज ॥ एक कथा देउ सांचली, अम तणो करो काज ॥ ८ ॥ शंकर तव सेना सहु, त्रिशूल धरी निज हाथ ॥ इंद्र सामो वेगे जइ, युद्ध करे ते साथ ॥ ९ ॥ उभय रण झूझे घणां, सुरपति शंकर बेहु ॥ संग्राम करतां दिन घणा, फेडेता नावे छेह ॥ १० ॥

## ढाल तेरमी.

कंकण मोल लीयो–ए देशी.

संधी तव देवे करीरे साजन, संग्राम निवार्यो ताम ॥ सुगुणा सांजलो ॥ गुरुपत्नी आपो वलीरे ॥ सा० ॥ जाउ तुमे आपणे गाम ॥ सु० ॥ १ ॥ सोम कहे सुर सांजलोरे ॥ सा० ॥ गेरु ठे अम तणुं जेह ॥ सु० ॥ उदर मांही अवला तणेरे ॥ सा० ॥ अपावो अमने तेह ॥ सु० ॥ २ ॥ सुरगुरु तव तिहां बोलीयोरे ॥ सा० ॥ सांजलो तुमे सहु देव ॥ सु० ॥ उदरे अपत्य ठे माहरुंरे ॥ सा० ॥ किम अपावो ततखेव ॥ सु० ॥ ३ ॥ सोम कहे गेरु माहरोरे ॥ सा० ॥ बृहस्पति कहे ए मुज ॥ सु० ॥ गुरु जजमान जगमो करेरे ॥ सा० ॥ नवि पामे कोइ सूज ॥ सु० ॥ ४ ॥ वढतां थकां बेहु वारीयारे ॥ सा० ॥ न्याय कीधो तिणे एह ॥ सु० ॥ गर्भवती स्त्रीने पूठीएरे ॥ सा० ॥ साचुं कहेशे तेह ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुर सघले मली पूठीयुंरे ॥ सा० ॥ गुरु कामनीने ताम ॥ सु० ॥ सुधुं बोलो मावमीरे ॥ सा० ॥ केहनो अपत्य अजिराम ॥ सु० ॥ ६ ॥ गुरुपत्नी कहे सांजलोरे ॥ सा० ॥ उदर मांहे ठे जेह ॥ सु० ॥ तेहने तमे पूठजोरे ॥ सा० ॥ साचुं कहेशे पली तेह ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव तेणीए ते जनमीयोरे ॥ सा० ॥ पुत्र हुवो अजि-

राम ॥ सु० ॥ बाप तणां लक्षण घणांरे ॥सा०॥ देवे मली पूछ्यो ताम ॥ सु० ॥ ८ ॥
सुत साचुं तव उचरेरे ॥सा०॥ सोम तणो हुं पुत्र ॥ सु० ॥ सुर सघला जाणे सहीरे ॥
सा० ॥ इणी जननीए प्रसूत ॥सु०॥९॥ सोम सूत सहुए कहेरे ॥सा०॥ जाराजात वली
नाम ॥ सु० ॥ बुधवार बुद्धि आगलोरे ॥ सा० ॥ पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ सु० ॥ १० ॥
चंद्र तणां लक्षण गहवांरे ॥ सा० ॥ जाणे बाल गोपाल ॥ सु० ॥ एह पासे केम मूकी-
एरे ॥ सा० ॥ पुत्री जाया बाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ तापसी कहे तापस सुणोरे ॥सा० ॥
इंद्र अपूरव आज ॥ सु० ॥ तेह पासे पुत्री मेलीनेरे ॥ सा० ॥ पछी कीजे निज काज ॥
सु० ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनीरे ॥सा०॥ इंद्र तणो व्यभिचार ॥ सु० ॥ पुराण
प्रसिद्ध जाणे सहुरे, ॥ सा० ॥ कहेशुं तेह विचार ॥ सु० ॥ १३ ॥ गंगा नदी छे निर्म-
लीरे ॥ सा० ॥ तापस वसे तिहां सार ॥ सु० ॥ गौतम ऋषि सहुमां वडोरे ॥ सा० ॥
अहिल्या तणो भरतार ॥ सु० ॥ १४ ॥ एक वार स्वर्गह थकीरे ॥ सा० ॥ इंद्र सुरासुर
राय ॥ सु० ॥ विमान बेसीने आवीयोरे ॥सा०॥ वांदवा ऋषिवर पाय ॥ सु० ॥ १५ ॥
अहिल्या दीठी तिहां रुयडीरे ॥ सा० ॥ रूपे करी रंभा समान ॥ सु० ॥ देखी इंद्र
विहवल हवोरे ॥ सा० ॥ लाग्यां अंग कामनां बाण ॥ सु० ॥ १६ ॥ रूप रची तेणे

रुपगोरे ॥ सा० ॥ अहिल्या निज वश कीध ॥ सु० ॥ मढी मांहे पेसी करीरे ॥सा०॥ इंद्रे आलिंगन दीध ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्नान करी तव आवीयोरे ॥ सा० ॥ गोतम तापस जाम ॥ सु० ॥ द्वार दीधां देखी करीरे ॥ सा० ॥ आचंभ्यो तेह ताम ॥ सु० ॥ १८ ॥ पर पुरुष देखी करीरे ॥सा० ॥ उपन्यो कोप अपार ॥सु०॥ रंडे मुंडे तापसीरे ॥सा०॥ उघाड वेगे करी बार ॥ सु० ॥ १९ ॥ जय पाम्या तव बेहु जणांरे ॥ सा० ॥ इंद्र हुवो मिंजार ॥ सु० ॥ घर मांही नासी गयोरे ॥सा०॥ पेठो चूला मोझार ॥ सु० ॥ ॥ २० ॥ खंड बीजानी ढाल तेरमीरे ॥ सा० ॥ आगे जे होये वात ॥ सु० ॥ रंगविजय कविरायनोरे ॥ सा० ॥ नेमने हर्ष सुखसात ॥ सु० ॥ २१ ॥

## दुहा.

तव ध्रूजंती तापसी, बार उघाड्यो जाम ॥ महारंड रांडनी शुं कर्युं, गोतम पूछे ताम ॥ १ ॥ कोण पुरुष तें घालीयो, लंपट लुच्चो जार ॥ साचुं कहेरे पापणी, श्रापे करुं तुज छार ॥ २ ॥ कामनी कहे कंथ सांभलो, घरमां छे मिंजार ॥ भ्रांत पडी छे तुम घणी, नहीं कीधो व्यभिचार ॥ ३ ॥ गोतमे ज्ञान विचारीयुं, जाण्युं बेहुनुं पाप ॥ लीला कीध पापणी, अहिल्याने दीध श्राप ॥ ४ ॥ बिलाडो थइ नासतो, इंद्र

धरणी तेणी नार ॥ किट गारी मह्रा रंकना, तामसी कीध व्यभिचार ॥ ५ ॥ परनारी ने जोगरी, मैं उपर मुज रंग ॥ महम्म शरीरे नीकलो, नगाकार उत्तंग ॥ ६ ॥ ताप-मने भारे करी, जोनि हुइ ततकाल ॥ मघवा शरीर नवुं स्वरूं, अशुभ दीसे विक-राल ॥ ७ ॥ पाप लागी इंद्र चिन्वे, सांभल तुं ऋषिराज ॥ लोक हांसुं होशे घणुं, तामसे मोटोसी लाज ॥ ८ ॥ क्षमा करो स्वामि तुमे, जग टालो मुज अंग ॥ हुं अपराधी पापीयो, मुज उपर करो रंग ॥ ९ ॥ इंद्र वचने उपशम करी, गोतम बोल्या नाम ॥ होजो माहारी कृपा थकी, सहस्र लोचन अभिराम ॥ १० ॥ सहस्राक्ष नाम तेहनो हुवो, वेद पुराणे तेह ॥ लंपट पासे केम मेलीए, नाया पुत्री एह ॥ ११ ॥ नारदी कहे तापस सुणो, बृहस्पति विमानो वास ॥ सुर सघलानो गुरु जलो, पुत्री ल्यो तेह पास ॥ १२ ॥ तापस कहे सुण कामनी, तुं मोटी छे अजाण ॥ जाह्नवी जामिनी जोगनी, केम नवीए होय हाण ॥ १३ ॥

ढाल चौदमी.

पाता किशनपुरी, तुम विना मझिये उजड पडी–ए देशी.

नाम नारद कहे सुण नार, सुर सघला लंपट निरधार ॥ साजन वात सुणो, सां-

लही लहुको मत अवगुणो ॥ ए आंकणी ॥ ते पासे केम ठवीए बाल, नामनी सुण तुं पइ उजमाल ॥सा०॥सां०॥१॥ एक वात में हृदय विचार, जम जग मांहीं रुडो ते सार ॥ सा० ॥ जोइ धर्म विचारे तेह, ठाया पुत्री पासे मूकीए एह ॥सा०॥ सां०॥२॥ मंडपकौशीक तापस ताम, ठाया लाव्यो जमने गाम ॥ सा० ॥ कर जोडी कहे सुण महाराय, धर्माधर्म जाणो तुमे न्याय ॥सा०॥ सां० ॥ ३ ॥ शीलवंत स्वामि गुणवंत, महीपल मोटो तुं महांत ॥ सा० ॥ निकलंक तुं सुणीए महाराज, विनति माहरी सांभलो आज ॥ सा० ॥सां० ॥ ४ ॥ तीर्थजात्राए अमे जाउं देव, ठाया थापिण राखो हेव ॥ सा० ॥ तुम प्रासादे करुं अमे जात्र, पवित्र होशे अमारां गात्र ॥ सा०॥ सां० ॥ ५ ॥ जम कहे सुण तापस राज, ए अमने नहीं लागे लाज ॥ सा० ॥ ठेमी जाउं तुमे ठाया एह, अजोगत आवी लेजो तेह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ६ ॥ तापस तव रखि-पात पयो, जम पासे मूकीने गयो ॥ सा० ॥ अडसठ तीरथ करे फरी जाम, कृतांत पात सांभलजो ताम ॥ सा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ ठाया रूप देखी अभिराम, जम सर्वांगे व्याप्यो काम ॥ सा० ॥ मनमां चिंतवे जोगवुं एह, सफल जनम करुं मुज देह ॥ सा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जोसवी घर मांहे तेमी बाल, पाप करम मांड्यो विकराल ॥ सा० ॥

अघट काम कन्याशुं कीध, धर्मराज मदीगल परसीध ॥ सा० ॥ सा० ॥ ९ ॥ ...
अघट काम कन्याशुं कीध, भर्गराज मदीगल परसीध ॥ सा० ॥ सुर सघले तव जाणी नार,
सरसुं सुख जोगवे, रात दिवस ते अगम अनुजवे ॥ सा० ॥ इरवा हेरे पमीया देव, यम-
पदवी नहीं त्रिजुवन मोकार ॥ सा० ॥ सा० ॥ १० ॥ रात निगरा ते टाणे घणुं, ध्यान लाग्युं छे गाया तणुं
मंदिरनी मांकी देव ॥ सा० ॥ रात निगरा ते टाणे घणुं, ध्यान लाग्युं छे गाया तणुं
॥ सा० ॥ सा० ॥ ११ ॥ जमे जाण्यो तेहनो राग, सुर सघला मुज करशे पंच ॥ सा० ॥
उपाडीने गखी ततकाल, उदर मांहीं उतारी बाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ १२ ॥ देव देखे
नहीं गाया तेह, मायुं खंजोली गया निज गेह ॥ सा० ॥ धर्मराज विमासण करे,
सुर रखे मुज नारी हरे ॥ सा० ॥ सा० ॥ १३ ॥ एकलो निज मंदिरमां जइ, सघले
निरखे उभो थइ ॥ सा० ॥ जोता ध्यान भनि देखे कोण, उपनीने जग करे रोग ॥
साम ॥ सा० ॥ १४ ॥ पाप करता तेहनुं संचरे, काम कुतूहल एणी परे करे ॥ सा० ॥
काम धर्मे काढे ततकाल, जोग करीने गले ते बाल ॥ सा० ॥ सा० ॥ १५ ॥ इणी
परे काल घणुं तस जाय, जगतनी केहने जाणी न थाय ॥ सा० ॥ पवनदेव पृथ्वी
माहे सही, जगमां धरणी आकाशे ते रमे ॥सा०॥सा०॥१६॥ रूपवंत रूपे सघले संचरे,
... ते कारज करे ॥ सा० ॥ तेणे दीठी माया जाग, छल गिरने पर आजगो
॥ढाल॥

ताग ॥ सा० ॥ सां० ॥ १७ ॥ विश्वानल तुं सांजल थ्याज, जनम सफल करे महाराज ॥ सा० ॥ रूपवंत ढायानो संजोग, तेहशुं जम करे नित जोग ॥ सा० ॥ सां० ॥१८॥ उदर मांही राखे ते थाल, काज पडये काढे ततकाल ॥सा०॥ विश्वानल कहे सांजल जाय, त्रिभुवन मांहे तुं मोटो वाय ॥ सा० ॥ सां०॥ १९ ॥ खंड बीजानी चौदमी ढाल, नेमविजय कहे उजमाल ॥ सा० ॥ श्यागल सांजलजो सहु कोय, वायुकुमार करे ते होय ॥ सा० ॥ सां० ॥ २० ॥

उहा.

जोग मले तेहशुं करो, जीव जातो मुज राख ॥ सांजलजो वायु कहे, वचन थ्यमारां जाख ॥ १ ॥ जम जूठो कामी घणो, घडी एक न मेले वास ॥ केम मेलाप तेहशुं होये, उदरमां राखे ततकाल ॥ २ ॥ थ्याज एक वात विचारी में, पुण्ये सरशे काज ॥ गंगा स्नान करवा जणी, जम राजा करी साज ॥ ३ ॥ पोहोर एक जाय ध्यानमां, ढाया मेली एक ठाम ॥ संध्या जाप करे तिहां, थ्यापणो होशे काम ॥ ४ ॥ एक पोहोर थ्यवकाशमां, जम नावे ढाया पास ॥ तेणे समे तिहां जाइने, ढाया हरीप साम ॥ ५ ॥

## ढाल पंदरमी.

आसणरारे योगी—ए देशी.

विश्वानल आनंयो ताम, सांजल पवन अमारो कामरे ॥ सुणजो तमे नाइ ॥ जो एक पोहोर मलशे संजोग, तो नवि पमशे कांइ विजोगरे ॥सु०॥१॥ विरूप बोलीने चाल्यो जाम, अगनि गयो गंगातट तामरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा आव्यो जम जांहीं, विश्वानल ग्योसीयो त्यांहींरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जम आव्यो जमना तट जाम, सघले देखी निरंजन गामरे ॥ सु० ॥ वमन करी तव काढी नार, गया सांती कोतर मोफाररे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जम जल पेसी करे सनान, संध्या तरपण मांड्यो ध्यानरे ॥ सु० ॥ अगनि अपूरव रूपज लीध, आनूषण सघलां अंगे कीधरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ गया पासे आव्यो ताम, हास्य वचन बोल्यो अजिरामरे ॥ सु० ॥ सांजल सुंदरी आज, अमे साधुं तमारुं काजरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ त्रिजुवन मांहीं मोटो हुं देव, सुर नर किंनर करे मुज सेवरे ॥ सु० ॥ तेत्रीश कोम तणो हुं मुख, हुं देउं सघलाने सुखरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ होम हुताशन जे करे मुज, मारो नाम राखे ते गुजरे ॥ सु० ॥ मुजने जे वली दीये दान, तेहने वाधे सुख संतानरे ॥ सु० ॥७॥ आपण बेहु हुं रूप निधान, नावे दीजीए

भोगवुं शालरे ॥ सु० ॥ लापाने तव उपनो रंग, स्वाहा करीने आप्युं अंगरे ॥
सु० ॥ ८ ॥ काम क्रीडा कीधी ततकाल, जम आवतो दीठो विकरालरे ॥ सु० ॥
लापा कहे तुं सांजल कंत, कृतांत करशे तुमारो अंतरे ॥ सु० ॥ ९ ॥ जीवता जाउं
मुजे हवे आज, नहीं तो वेहुने लागशे लाजरे ॥ सु० ॥ कान नाक छेदे तव माहारो,
मारी करशे फोगलो ताहारोरे ॥ सु० ॥ १ ॥ कशी संख्या न करो ए वात, नहीं तो
आपणो होशे पातरे ॥ सु० ॥ आगे जीववधी यमराय, ते उपरे कीधो अन्यायरे ॥
सु० ॥ ११ ॥ विश्वानल कहे सांजल नार, हुं पग पांगलो तुं अपाररे ॥ सु० ॥ चरण
होय तो होमुं आज, यम आगलथी करुं हुं काजरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ यम जय पामी
लापा पास, अगनि देव गड्यो ततकालरे ॥ सु० ॥ धर्मराज आव्यो तेणी वार, उपाडी
गयो लापा नाररे ॥ सु० ॥ १३ ॥ घर आवीने उवके जेह, जोग करीने वली गये
तेहरे ॥ सु० ॥ स्नान करवा जम गंगा जाय, पोहोर एक तव जपने थायरे ॥ सु० ॥
॥ १४ ॥ लापा तव उवके छे आग, पोहोर एक आवे तसु लागरे ॥ सु० ॥ यम देखीने
गये आग लापा, नारीने लागी एम मायारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ एणी परे कामिनी
भोगवे तेह, अपर वात सांजलजो तेहरे ॥ सु० ॥ दिवस मास बहु जाये एह, अगनि

नाठो जग मांहीं तेहरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ लोक तणां तव रांधणां रहीयां, घर हाटे अंधारां थहीयांरे ॥ सु० ॥ काचो कोरो खाए लोक, पेटपीडे करी पाडे पोकारे ॥ सु० ॥ १७ ॥ सोनार लोहार पोकज पाडे, अगनि विना केम घाट घाडेरे ॥ सु० ॥ केम करे जगन जानी जाग, नहीं जाप विना कोइ लागरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जाप विना देव थया छे पेखा, इंद्र आगे पोकारे गया वेदेखारे ॥ सु० ॥ सुरपति चिंता उपनी जाम, पवनदेव पूछ्यो तेणे तामरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ वायु वदे सांभल मेघवान, अगनि जोयो में सघले ठामरे ॥ सु० ॥ एक जायगा छे तेह तणी वारु, जोइने कहेशुं हीडुंति[1] वारुरे ॥ सु० ॥ २० ॥ ढाल पंदरमी खंम बीजानी, आगे कहेशुं वात त्रीजानीरे ॥ सु० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम बोले, नेमविजय नवि वात खोलेरे ॥सु०॥

## दुहा.

पवने तव सहु नोतर्यां, सुर नर किन्नर देव ॥ जमने मांड्यां वेसणां, त्रण जणांनां देव ॥ १ ॥ जम मन मांहे चमकीयो, वायु कवण ए काम ॥ एकेको आसन सहु जणी, अमने केम त्रण ठाम ॥ २ ॥ वायु कहे साचुं कहुं, उदर मांहीं तुम तेह ॥ सहुना

१ पणो.

संदेह नांजशे, प्रत्यक्ष थाशे जेह ॥ ३ ॥ जमने काढी उचकी, ठायाने ततकाल ॥ पवन कहे नाजी सुणो, मित्र अमारो आल ॥ ४ ॥ ठायाए वमी करी, विश्वदेव कहाड्यो ताम ॥ जम जूठो कोप्यो घणुं, अग्निनो टालुं ठाम ॥ ५ ॥ विश्वानल नाठो तदा, कृतांत पुंठे धाय ॥ पग पांगलो अगनिदेव ते, पम्तो नाठो जाय ॥ ६ ॥ तरुो-पम नाग वेह्लु जणा, व्यनिचारी मारुं आज ॥ पेठो जइ पाषाणमां, विश्वानल तिण ताज ॥ ७ ॥

ढाल सोलमी.

सुण वेनी पीयुमो परदेशी—ए देशी.

अगनि अलोप न दीसे जाम, जम पाठो आव्यो ठामरे ॥ घरे लेइ गयो ठायाने सार, नोगवे कृतांत अपाररे ॥ सांजलजो साजन जे कहुं वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांजलो साच, वाक्य बोल्युं जे वाचरे ॥ वेद पुराणे ठे ए वात, साचुं जूठुं कहो ज्ञातरे ॥ सां० ॥ २ ॥ द्विजवर बोल्या सांजल वाच, वचन तुमारो साच-रे ॥ शास्त्र अमारे बोल्युं एम, अमे लोप्युं जाये केमरे ॥ सां० ॥ ३ ॥ मनोवेग बोल्यो वली ताम, सांजलो ब्राह्मण गुणधामरे ॥ जमदेव जाणे सद्गुण जगमां, अतीत

अनागत वर्तमानमांरे ॥ सां० ॥ ४ ॥ विश्वानल तस पेट मोझार, पोदोर एक नोगवे नारदे ॥ ज्ञाने करी जाण्यो नहीं तेह, जमे ढूकको आपणो देहरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ तो केम जाणे त्रिभुवन वात, दोष मोटो एक घातरे ॥ जम सघलो जाणे संसार, अगनि न जाण्यो उदर मोझाररे ॥ सां० ॥ ६ ॥ तेम मुज मीना गंधी जाय, चार जोजन उंदर न थाय रे ॥ जेम द्विज सद्गुण जमने मान्यो, तेम मिंजार गुणनो वानोरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ वली सांजलो ब्राह्मण तमे वात, एक दोषे गुण नोहे घातरे ॥ उमीया ईश्वरने अर्धांग, जटा मांही राखे गंगरे ॥ सां०॥८॥ पारवती गंगाशुं नेह, तारक केम कहीए तेहरे ॥ नारायण लंपट अपार, गोवालणीशुं कीधो व्यनिचाररे ॥ सां० ॥ ९ ॥ रीछमी सुताशुं कीधो संग, ब्रह्मचर्य ब्रह्मानो नंगरे ॥ सूरजने समरो तुमे सार, कुंतीशुं कीधो व्यनिचाररे ॥ सां० ॥ १० ॥ सोम सदा सद्गुण आराध्यो, गुरुपत्नीनो दोष वाध्यो-रे ॥ इंद्र देव जपे सहु कर जोड, अहिल्यानी लागी खोडरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ सुरगुरुने छे वहुनुं आल, जाणे छे बाल गोपालरे ॥ विश्वानल नर घणो व्यनिचारी, हवन होमनो अधिकारीरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ जमने सहु कहे धर्मनोराय, गया सरसो करे अन्यायरे ॥ ऋषि तापस मिथ्याती तेह, तेहनां छिद्र अति घणां जेहरे ॥ सां० ॥ १३ ॥

परनारी तणो दोप एक, वेद पुराणे जुओ विवेकरे ॥ जो देव तणा नहीं दीजे दोप, तो भीमजानो इशो रोपरे ॥ सां० ॥ १४ ॥ पाडव वचन बोल्या तत्र सार, तुं वादी मोटो गुणधाररे ॥ जयवाद पाम्या तुमे अपार, विप्र हार्या अमे वीशवाररे ॥ सां० ॥ १५ ॥ मनोवेग पछी बोल्यो ताम, पवनवेग सुणो अभिरामरे ॥ देव तणा गुण दीठा तुममे, काम विकार कह्या अममेरे ॥सां०॥१६॥ मदन महा सुभट जीत्यो जेह, देव करी मानो तुमे तेहरे ॥ नवी पडे रामा रूपने देखी, विपयने नाखे उवेखीरे ॥ सां० ॥ १७ ॥ सराग वचन जे बोले स्वाम, ते उपर न धरे मन कामरे ॥ इंद्रिनां सुख करे असार, ते देव कहीए निरधाररे ॥सां०॥१८॥ शील सहस्र पाले अढार, ते तारण तरण संसाररे ॥ एहवा जाणो जिनवर देव, नावे जगते करो सेवरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ त्रिभुवन नायक सेवे जेह, स्वर्ग मुक्ति पामे तेहरे ॥ जीती करी वादवने वेगे, वनमां आव्या परी तेगेरे ॥ सां० ॥ २० ॥ खंड बीजानी सोलमी ढाल, सांभलजो बाल गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य दयाल, नेम कहे थइ उजमालरे ॥ सां० ॥ २१ ॥

दुहा.

पवनवेग तब बोलीयो, सांभलो जाइ विचार ॥ देव दोप जे दाखव्या, सत्य वचन ते

मनोवेग महंत ॥ देव मांहिं जे गुण अछे, ते सहु
सार ॥ १ ॥ एक उत्तर आपो वली, मनोवेग महंत ॥ सुर सघलाना गुण कहुं,
कहो तुमे संत ॥ २ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग पवित्र ॥ तेह तणा गुण
मनमां विचारो चित्र ॥ ३ ॥ भुवन व्यंतर ज्योतषी, स्वर्गवासी जे देव ॥ लघिमा
सांभलो, आठ कहुं संखेव ॥४॥ अणिमा अणुं मात्रज करे, महिमा मेरु समान॥
लघुपणुं आचरे, गरिमा नारी जाण ॥५॥ प्राप्ति सर्व प्राक्रम करे, इस तणो गुण देव ॥
काम रूप चिंत्युं करे, वशीकरण वशी तेव ॥६॥ आठ गुणो छे एह भला, देव तणे जे
अंग, ब्रह्मादिकने ते नहीं, एक गुण छे उत्तंग ॥ ७ ॥ लघिमा गुण ते पामीया, जेणे हो·
ये वडोत्तर लाज ॥ लोक मांही हलवा हुवा, ते कहीशुं गुण आज ॥ ८ ॥ सहु पर्वत
मांहे भलो, केलास उत्तम ठाम ॥ शंकर तप जप तिहां करे, एकाकी गुणधाम ॥ ९ ॥
नारद ऋषि तिहां आवीया, हरने करी प्रमाण ॥ कर जोडी वदे विनति, सांभलो
हर मुज वाण ॥ १० ॥ पुत्र विना गति नथी होये, पहेले परणो नार ॥ पुत्र तणी उत्पत्ति
करी, पछी ऋषि व्रत धार ॥ ११ ॥ ईश्वर तव तिहां बोलीयो, सांभल तुं मुनिराज ॥
कन्या जुवो तमे रुयडी, वेगे करो अम काज ॥ १२ ॥ उत्पत्ति करुं संतानन्नी, वाधे मुज
तो वंश ॥ परणाव्यानुं पुण्य घणुं, तुम होशे सुख हंस ॥ १३ ॥ नारद तव ते सांभली,

नाह्रो कन्या काज ॥ हेमाचलने जइ मल्यो, सांजल तुं गिरिराज ॥ १४ ॥ तुम कुमरी छे रुयडी, शंकरने द्यो तेह ॥ वर कन्या ए योग्य छे, महादेवशुं करो नेह ॥ १५ ॥ हेमाचल कहे नारद सुणो, पारवती में दीध ॥ लगन लेइ ऋषि चालीयो, हरने जाण तव कीध ॥ १६ ॥

## ढाल सत्तरमी.

चरणाली चामुंमा रण चढे—ए देशी.

ईश्वर वर तव सज थइ, वृषज पलाणी चलीयोरे ॥ जैरव जूत जोटींग घणां, जान सहित पंथ पडीयोरे ॥ सुणजो साजन वातडी ॥ ए आंकणी ॥१॥ शंकर सासु छे मीनका, वर देखी होइ जांखीरे ॥ मीनका कहे सहु सांजलो, मुज बेटी इहां कुणे नाखीरे ॥ सु० ॥ २ ॥ जग जीरण गरडो ए अछे, चमशानो वलद छे वांकोरे ॥ गाम ठाम एहने नहीं, मात पिता नहीं रांडोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जात ने जात को नवि कहे, जस्म विजूपित देहरे ॥ कोटे छे साप वीहामणो, ठढण गजचर्म तेहरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नरमुंम माला गले अछे, जांग धंतुरो ते खायरे ॥ हस्त कपाल कांखे जोली, शिर जटा किन्नरी वायेरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एणे जमाइ मुज खप नहीं, जो देशो तो मरशुं आजरे ॥ जल मांहे

नामुं ए धाखिका, विण चाऊं नहीं हर काजरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ ब्रह्मा यकमाले आवीया,
मीनाने कहे सुणो मानरे ॥ नोखी चक्रवरती ईशनी, त्रिभुवन मांहिं विख्यातरे ॥
मु० ॥ ७ ॥ पारवती परणावो ईशने, विवाह म मोको ए आजरे ॥ जो रे कोपे महा
शंकरो, करशे अनरथ काजरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ सहुने आणी नस्म महा करे, तुम तणो
टाखे ए गामरे ॥ मीनाए मोन धर्युं तदा, विवाह तणो मांड्यो कामरे ॥ मु० ॥ ए ॥
वरराजा तोरण आवीयो, मखीयुं हे कामिनी थोक रे ॥ पोमादे हांसखदे नली, हर-
पादे सोमादे थोक रे ॥मु०॥१०॥ रंगादे नांमखदे देमादे, टहकादे खखके कर चुमीरे ॥
माणकदे आवी मखपती, रतनादे टचकादे हमीरे॥मु०॥११॥कमखादे काकी नामादे नानी,
मामी मोकखदे फुइ फाहुरे ॥ गोरी सखी चांकी चेटीका, जोगण सीकोतरी खाखुरे ॥
मु०॥१२॥ वर पासे जूत जोटींग घणां,दानव जंगम जोगीरे ॥ तेत्रीश कोम देव संचर्या,
ऋषि ब्रह्मा दामोदर जोगीरे ॥मु०॥१३॥ पोंखीने घर खीधो मांहरे,ब्रह्मा साधे खगन ते
सारे ॥ समय वरते सहु सावधान,पाणीयख अंतर नहीं वाररे ॥मु०॥१४॥ ब्रह्माए हर गोरी
तणो, हस्त मेखापक कीधरे॥ गीन गावे वर कामनी, हरूने खघु कन्या दीधरे॥मु०॥ १५ ॥
चोरी मांहे बेठां वर वहू, ब्रह्मा नणे वेद चाररे ॥ मंगख चार ते वरतीयां, हुवो तिहां

जय जयकाररे ॥ सु० ॥ १६ ॥ शंकर आगल संचरे, पाठलथी गौरी नारीरे ॥ फेरा दीये गोरी पाखसे, ब्रह्मा वांचे वेद उचारीरे ॥ सु० ॥ १७ ॥ हुताशन साखे अक्षत नाखे, पाणेतर गोरीए पहेर्योरे ॥ ठेमो लाग्यो उमीया तणो, उंचो लइ उंलवतां विहर्योरे ॥ सु० ॥ १८ ॥ जंघा दीठी तव रुयडी, विकल थयो ब्रह्मा तामरे ॥ काम कुतूहल चिंतवतां, खलण हुवो तेणे ठामरे ॥ सु० ॥ १९ ॥ देव सघला तिहां देखता, लाज्यो ब्रह्मा मन मांहिंरे ॥ वेलु वाली पगे मरदले, वीर्य ढांक्यो निज त्यांहिंरे ॥ सु० ॥२०॥ चुरी वेलु मांही उपन्या, सहस्र अठ्याशी ऋषिरायरे ॥ कमंडल मंड हाथे धर्या, उठीने लाग्या ते पायरे ॥सु०॥२१॥ वालुप नाम आदे करीरे, ब्रह्मा पुत्र पुराणे प्रसिद्धरे ॥ वालुखल रूपे ते रुयडा, तप जप तिहां थकी लीधरे ॥ सु० ॥ २२ ॥ खंड बीजानी ढाल ए कही, सत्तरमी सुणजो वालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता लालरे ॥ सु० ॥ २३ ॥

दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग विचार ॥ ब्रह्मचर्य ब्रह्मा तणुं, नानुं तिहां अपार ॥१॥

सुर नर सघला देखतां, लज्जा पाम्या तेह ॥ हलुपणुं ब्रह्मा हुओ, लघिमा गुण छे तेह ॥ २ ॥ ब्रह्म पुराणे जाखीयो, मिथ्या मत विचार ॥ जिनशासन नहीं मानीए, खोटुं एह असार ॥ ३ ॥ जगगुरु जिनवर जाणजो, निकलंक स्वामि देव ॥ दोष एक दीसे नहीं, तेह तणी करो सेव ॥ ४ ॥ ईश्वर लघुपणुं पामीयो, सांजलो तेह विचार ॥ कुशविप एम नाखीयुं, लिंग पुराण मोजार ॥ ५ ॥

## ढाल अढारमी.

तो चढीयो घण माण गजे—ए देशी.

हेमाचल कुमरी वरी ए, शंकर मन उल्लास तो ॥ हर केलासे आवी करी ए, गोरीशुं जोग विलास तो ॥ १ ॥ उमीया कहे शंकर सुणो ए, नृत्य करो मनोहार तो ॥ देवदार वनमां जइने, नाटिक मांड्यो सार तो ॥ २ ॥ मस्तक शेखर शशिकला ए, गले गरल[1] धारिं नाग तो ॥ नरमुंड माला शोनती ए, कटीमेखल करी नाग तो ॥ ३ ॥ जस्म विलेपन अंग रच्युं ए, घुघरीनो घमकार तो ॥ नव रस नाटिक नाचतां ए, झांझरनो झमकार तो ॥ ४ ॥ नृत्य करीने चालीयो ए, जिक्षा तापस वास तो ॥ तापस तरुणी विह्वल हुइ ए,

---

१ जेर.

मोह धरे विश्वास तो ॥ ५ ॥ लांबुं लिंग देखी करी ए, जिह्वा घाले सार तो ॥ कंदमुल वनफल घणां ए, हरने आपे नार तो ॥ ६ ॥ नरनार जगत ठोमी करी ए, हींडे ईश्वर साथ तो ॥ सुंदरी कहे शंभु सांभलो ए, लीजे आपण बाथ तो ॥ ७ ॥ एक कहे शंकर सुणो ए, उधरजो महाराज तो ॥ अंगे आलिंगन रुयको ए, कृपा करी द्यो आज तो ॥ ८ ॥ वनमां शंकर जइ रह्यो ए, ध्यान धरे अपार तो ॥ तापस कामनी तिहां गइ ए, ईश्वरशुं जोग विकार तो॥९॥ तापस तव दुःखीया थया ए,नारीए मूक्यो संग तो ॥ विचार करे सघला मली ए, केम रहेशे घर रंग तो ॥१०॥ देवपूजा रही आपणी ए, अंगे गयां सनान तो ॥ रांधण सिंधण सहु तज्यां ए, भूखे गया जीव ज्ञान तो ॥ ११ ॥ आपणने मूकी धरे ए, हरने सेवे नार तो ॥ शंकरने केम श्रापीए ए, ए छे त्रिभुवन तार तो ॥१२॥ नारी मोही आपणी ए, जेह देखीने अंग तो ॥ दंम करो तुमे तेहनो ए, श्रापीने करो जंग तो ॥ १३ ॥ तापस मलीने श्रापीयो ए, लिंग पड्युं ततकाल तो ॥ भुवन मांहे ते विस्तर्युं ए, कर्म करे विकराल तो ॥ १४ ॥ लिंगे लक्षण प्रगट कीयो ए, त्रिभुवन पाम्यो त्रास तो ॥ नर नारी संतावीया ए, लोक पामे बहु हास्य तो ॥ १५ ॥ रुद्र कोप्यो

ऋषि उपरे ए, लिंग छेद्युं मुज आज तो ॥ शंकरे ऋषि तब आपीया ए, लिंग पड्यां सव
काख तो ॥ १६ ॥ लिंग तुट्यां तापस तणां ए, वेदना व्यापी अंग तो ॥ वृद्धदत्त ऋषि
सघला हुआ ए, हर शरणे गया चंग तो ॥ १७ ॥ शंकर स्वामि सांजलो ए, तुं मोटो
महादेव तो ॥ कृपा करो अम उपरे ए, अमे करुं तुम सेव तो ॥ १८ ॥ हरि हर ब्रह्मा तुं
जलो ए, जुवन तणो तुं त्रात तो ॥ सरजी पाली पोषे घणुं ए, सेष्ट करे वली घात तो
॥ १९ ॥ अघट काम अमे आचर्युं ए, क्षमा करो तुमे एह तो ॥ ठोरु कठोरु होये घणुं ए,
मावाप नहीं दीए छेह तो ॥ २० ॥ ढाल कही अढारमी ए, खंड बीजानी एह तो ॥
रंगविजयनो शिष्य कहे ए, नेमविजयने नेह तो ॥ २१ ॥

दुहा.

जोलो शंकर बोलीयो, सांजलो तापस सार ॥ लिंग अमारो लेइ करी, ठवजो योनि
मोझार ॥ १ ॥ प्रतिष्ठा करो तुमे तेह तणी, पूजा रचो सुखकार ॥ जाव जगति करो घणी,
आराधो नित्य सार ॥ २ ॥ कामनीशुं सुख जोगवो, लिंग लागे तुम देह ॥ तापस तव
सघले मली, लिंग धर्युं तिण तेह ॥ ३ ॥ नाना दोरे लिंग बांधीयुं, घल करे तापस
विवेक ॥ हाल हाल करे घणुं, तव तुट्यां दोर अनेक ॥ ४ ॥ खांध जांग्या तापस तणा,

वेताव्यना गया प्राण ॥ दोहले थइने आणीयो, तापस आश्रम ताण ॥ ५ ॥ लिंग प्रतिष्ठा ऋषि करे, सुर नर मलीया ताम ॥ हवन होम मंत्री करी, योनि मांहीं ठव्युं जाम ॥ ६ ॥ कोटे बांधे नर केटला, राखे मस्तक मांहीं ॥ लिंगायत लोक हुवा घणा, लिंग बांध्यां बेहु बांहीं॥७॥तेह दिवस आदे करी,मूढ पूजे लिंग तेह॥आपे लिंग गली पड्युं, नांड विगोव्यो एह ॥ ८ ॥ शंकर लघुपणुं पामीयो, लिंग पुराणे सार॥ हरि इंद्र चंद्र वा सुरपति, पर रमणी लघुपणुं धार॥ ए ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे आज॥ सुर सघलाना गुण कह्या, जिणे पामीए बहु लाज ॥ १० ॥ परनारी जे जोगवे, तेहने मोटां पाप ॥ डुरगति डुःख पामे घणां, नरके लहे संताप ॥ ११ ॥ परनारी जे जोगवे, दोषवंत ते देव ॥ पूज्यपणुं तेने नहीं, किम कीजे तस सेव ॥ १२ ॥ निष्कलंक जिन जाणजो, दोष नहीय लगार ॥ पर तारक आपे तरे, देव जाणो ते सार ॥ १३ ॥ पवनवेग तुमे सांजलो, जैनशास्त्र विचार॥शंकर ब्रह्मा उत्पत्ति कहुं, सत्य वचन जिन सार ॥ १४॥

ढाल उंगणीशमी.

उजी वावाजीरी पोल, देवर आणे आवीयोरे लाल–ए देशी.

जरत देश मांहीं सार, गंधार देश रलीआमणोरे लाल ॥ वसीपुर नगर उदार,

सरयंधर राजा सोहामणोरे लाल ॥ १ ॥ सत्यवती राणी तास, सत्यकी सूत नामे नलोरे लाल ॥ सिंधु देश मांही जाण, विशाला नगरी नृपति नीलोरे लाल ॥ २ ॥ चेटक राय करे राज, सुनडाशुं सुख नोगवेरे लाल ॥ तेहने कन्या हुइ सात, प्रीत कारणी मीनुं नवेरे लाल ॥ ३ ॥ मृगावती सुप्रना पास, प्रनावती चेलणा गुणवतीरे लाल ॥ ज्येष्टा ठठी सार, चंदना लघु सातमी सतीरे लाल ॥ ४ ॥ राजग्रही श्रेणिक नूप, तस पुत्र बुद्धे आगलोरे लाल ॥ अनयकुमार गुणवंत, प्रधान पद नोगवे नलोरे लाल ॥५॥ पदन चितारो जेह, चेलणा पट लखी लावीउरे लाल ॥ रूप देखी अचंन्यो राय, श्रेणिक मनमां नावीयोरे लाल ॥ ६ ॥ श्रेणिक लेइ आदेश, अनयकुमार उद्यम करीरे लाल ॥ श्रेणिक पट लखी रूप, वणकारा वेशे घवद नरीरे लाल ॥ ७ ॥ विशाला नगरी उद्यान, जिन नुवने जइ उतर्यारे लाल ॥ चेलणा ज्येष्टा आवी ताम, जिन प्रतिमा वंदन कर्यांरे लाल ॥ ८ ॥ कुमरे प्रसार्यो पट ताम, रूप जोइ कन्या विह्वल हुइरे लाल ॥ आ नवे ए नरतार, चेलणा कुमरी गम लधीरे लाल ॥ ए ॥ अनयकुमर नणे ताम, तुम मेलुं श्रेणिक नूपतिरे लाल ॥ सुरंगमां थइ आवजो देव, अमे लेइ जाशुं तुम सतीरे लाल ॥ १० ॥ कुमरी घर गइ सोय, चिंतातुर थइ बालिकारे लाल ॥ श्रेणिक वर मन धार, शृंगार

पेहेरी उजमाळिकारे लाल ॥ ११ ॥ आवी वन विशाल, वीजे दिने वेहु वेनमीरे लाल ॥ टाळुं सोकनुं साल, चेलणाए चिंतव्युं तिण घमीरे लाल ॥ १२ ॥ अम विसरीयां वाइ, चेलणा कहे ज्येष्टा सुणोरे लाल ॥ उतावलां तुमे जाइ, आजरण लावो अम तणांरे लाल ॥ १३ ॥ लेवाने तव जाम, ज्येष्टा जव पाछी वलीरे लाल ॥ आवी सहीयरने गाम, चेलणा तव आवी मलीरे लाल ॥ १४ ॥ अपहरी अजयकुमार, लाव्यो निज पुर गाममांरे लाल ॥ श्रेणिक चेलणा दोय, परणाव्यां उछरंगमांरे लाल ॥ १५ ॥ आजरण ज्येष्टा लेय, आवी तेणे गामे वहीरे लाल ॥ चेलणाने वन मांहीं, जोइ जाम देखे नहींरे लाल ॥ १६ ॥ आवी जिनने गेह, दुःख करी पाछी वलीरे लाल ॥ एणे मुज देहनो नेम, परणेवा संयम जलीरे लाल ॥ १७ ॥ ज्येष्टाए तव जाम, दीक्षा लीधी रुयमीरे लाल ॥ शास्त्र शीखी ताम, जशोमती वाइ पासे खडीरे लाल ॥ १८ ॥ ज्येष्टानी जे वात, सातकी राजाए सांजलीरे लाल ॥ हुवो जोगनो घात, मुज देवी वोली हतीरे लाल ॥ १९ ॥ आव्यो ते मन मांहीं, परणवानो नेम करीरे लाल ॥ दीक्षा लीधी त्यांहिं, समाधि गुप्ति गुरु पय धरीरे लाल ॥ २० ॥ ठगणीशमी कही ढाल, खंम वीजानी ए सहीरे लाल ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेमविजय कहे में कहीरे लाल ॥ २१ ॥

## ढुहा.

सातकी मुनि तप आदरे, पाले पंचाचार ॥ ध्यान धरे अति निरमलुं, गिरि गुफा मोझार ॥१॥ महावीर चोवीशमो, तीर्थंकर ते स्वाम ॥ वाइ सघली ते वांदवा, आवे छे ते धाम ॥२॥ अकाल मेघ तव उमट्यो, गाज वीज अपार ॥ वरसाद वरसे सरवडे, हुवो घणो अंधकार ॥ ३ ॥ चिहुं दिशि नाठी आर्जिका, जय पामी तेणे ठार ॥ ज्येष्टा तव नाशी गइ, गिरि गुफा मोझार ॥ ४ ॥ अंधकार अधिको थयो, मुनि न दीठो जाम ॥ नीर्गा वस्त्र सूकी करी, नीचोवे तेणे ठाम ॥५॥ सातकीए देखी करी, ज्येष्टानो वली अंग ॥ चित्त चल्युं मुनिवर तणुं, कीधो शीलनो भंग ॥ ६ ॥ उदरे उंधान उपनो, ज्येष्टा गइ तव जाम ॥ पुनरपि दीक्षा गुरु कने, लीधी सातकी ताम ॥ ७ ॥ चिह्न जाण्यां ज्येष्टा तणां, जशोमतीए ताम ॥ चेलणा घर आणी करी, आपी तेहने नाम ॥ ८ ॥ उपासना अधिकी करे, राखी शासन लाज ॥ समकित शुधुं दृढ धरे, एह जविनां काज ॥ ९ ॥ नव मास पूरे जनमीयो, ज्येष्टाए सुत जाम ॥ चेलणाए सुत प्रसवीयो, राजा घोले ताम ॥ १० ॥

## ढाल वीशमी.

वे कोइ आण मेलावे साजना, साजना वेगले लागनां वे–ए देशी.

श्रेणिक तय महोछव कर्यो, दीधां वोहोलां दाम हो ॥ पुत्र जनम जणावीयो, लोक मांही ताम हो ॥ हो साजन वात सुणो इसी ॥ ए आंकणी ॥१॥ नंदन तव मोटो हुवो, हींडे ते अन्याय हो ॥ रुद्र भाव करे पर तणां, पुत्रने देइ थाय हो ॥हो०॥२॥ राणीए रुद्र नाम कह्युं, लोक ते जपे ताम हो॥ रुद्र नाम कहे ठोकरां, नासे गामो गाम हो ॥ हो०॥३॥ ढींके पाटु चाबखे, मारे तेह अपार हो ॥ डुष्टपणे दंडे हणे, लोक पाडे पोकार हो ॥ हो० ॥४॥ चेलणाने आवी कह्युं, बहु लोके मली ताम हो ॥ राणी मन मांही चिंतवे, एहने नहीं कोइ गाम हो ॥ हो० ॥ ५ ॥ अणाचारथी उपन्यो, केम होए ते संत हो ॥ दूधे सिंच्यो जेम लींबडो, केम होए ते महंत हो ॥ हो० ॥ ६ ॥ रीस करी राणी कहे, सांभल पापी जात हो॥ कुण तन कुणे जनमीयो, कोण ताहरो तात हो ॥ हो० ॥ ७ ॥ सांभलीने रुद्र चिंतवे, एह कारण ठे केशुं हो ॥ श्रेणिकने आवी कह्युं, अमे तो नहीं जमेशुं हो ॥ हो० ॥ ८ ॥ मुज माता पिता कहो, कारण शुं ठे एह हो ॥ राजाए मांडीने कह्युं, सहु वीत्युं तेह हो ॥ हो० ॥ ए ॥ तव रुद्र तिहां गयो, ज्यां ठे पिता गाम हो ॥ सातकी

मुनि पिता कने, लीधी दीक्षा ताम हो ॥ हो० ॥ १० ॥ सिद्धांत शास्त्र शिखे घणुं,
नणो अंग अग्यार हो ॥ दश पूरव पाठे कर्यां, लीधी विद्या सार हो ॥ हो० ॥ ११ ॥
वडी विद्या वसुधा नली, जाणे ते सत पंच हो ॥ लघु विद्या ठे सातसें, बोले ते वली
संच हो ॥ हो० ॥ १२ ॥ पुण्य प्रनावे तुम तणो, सिधां सहु अमे आज हो ॥ कर जोमी
विद्या नणे, कांइ दीयो अम काज हो ॥ हो० ॥ १३ ॥ रुड विद्या वश करी, राखी सहु
जाम हो ॥ गोकरण गिरि आवे घणा, श्रावक अनिराम हो ॥ हो० ॥ १४ ॥ सातकी मुनिवर
वांदवा, श्रावक बहु आव्या हो ॥ वाघ सिंह रूप रुड करी, घणो त्रास पडाव्यारे हो ॥
हो० ॥ १५ ॥ सातकी मुनिवर एम नणे, रुड सांनलो आज हो ॥ डुष्ट चेष्टा तुं कां करे,
नहीं तुजने लाज हो ॥ हो० ॥ १६ ॥ नारी निमित्त तुज तप तणो, होशे तेहनो नंग
हो ॥ सांनलीने रुड वेगे गयो, केलास गिरि उत्तंग हो ॥ हो० १७ ॥ आतापन जोगे
रह्यो, केलास गिरिए जाम हो ॥ अवर कथा तुमे सांनलो, कहेशुं ते अनिराम हो ॥
हो० ॥ १८ ॥ विजयारध पर्वत अठे, दक्षण श्रेणि जाणी हो ॥ त्रिपुर नगर राजा हेम-
रथ, तस मनोरमा राणी हो ॥ हो० ॥ १९ ॥ प्रथम पुत्र ते देवदारु, बीजा विद्युत नाम
हो ॥ राज्ये थापी देवदारुने, दीक्षा लीधी ताम हो ॥ हो० ॥ २० ॥ खरुं बीजानी

ढाल वीशमी, श्रोताजनने काज हो॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय लहे लाज हो ॥ हो० ॥ २१ ॥

## दुहा.

हेमरथ बहु तप करे, पाले पंचाचार ॥ राज करे ते रुअको, देवदारु कुमार ॥ १ ॥ विद्युते विश्वास करी, तब मांड्यो संग्राम ॥ वलो प्राइ ठंमावीयो, निज राज्यनो ठाम ॥ २ ॥ कैलासे नासी गयो, देवदारु कुमार ॥ डव्य कुटुंब विमान रची, आव्यो सहु परिवार ॥ ३ ॥ आठ कन्या तस रुयडी, रूपे रंजा समान ॥ रमल करती सरोवरे, गइ करवाने स्नान ॥ ४ ॥ आजरण वस्त्र मूकी करी, अंघोल करवा ताम ॥ रुडे दीठी रुयमी, कन्या रूप निधान ॥ ५ ॥ ते देखी विह्वल थयो, कामे पीड्यो अपार ॥ विद्याए वेगे करी, ह्यां वस्त्र शणगार ॥ ६ ॥ कन्या कहे मुनिवर सुणो, अम देहनो शणगार ॥ तुमे ठतां कोणे अपहर्यां, कीहां ठे स्वामि सार ॥ ७ ॥ रुड मुनि तब एम जणे, सांजलजो तुमे वाल ॥ अंगीकार करो अम तणो, तो आपुं सुविशाल ॥ ८ ॥ कन्या कहे मुनि सांजलो, केम लोपीए लाज ॥ अमे विद्याधर बेटडी, पिता अणपूठ्यां काज ॥ ९ ॥

रुद्र कहे कन्या सुणो, पिता नणी पूगो आज ॥ मन्न ।चभूषण तुम तणां, मेर करजो काज ॥ १० ॥

ढाळ एकवीशमी.

फरेखमां घर वेरो—ए देशी.

कुमरी ते तव तिहां गइ, पिता तणे ते पास ॥ वात विचारी सहु कही, विवाहनी ते आस ॥ सुगुण जन सांजळोरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विद्याधर देवदारुए, मोकल्या तव प्रधान ॥ रुद्र पासे आवी कहे, सांजळजो सावधान ॥ सु० ॥ २ ॥ विद्युत विद्याधर अम तणो, मोटो रिपु राज ॥ राज लीधुं ने अम तणुं, तेहने मारो आज ॥ सु० ॥ ३ ॥ काज करो जो अम तणो, कन्या देशुं तेह ॥ रुद्रे तव तेहने कणुं, काज करीशुं एह ॥ सु० ॥ ४ ॥ विद्याए विमान रची, करी कटक अपार ॥ विजयार्धे वेगे जइ, मांड्युं जुद्ध जुझार ॥ सु० ॥ ५ ॥ विद्युत तव सामो थयो, करे सुर संग्राम ॥ रुद्रे रूप घणां करी, फेड्यो तेहनो ठाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ विद्याए विजांजीयो, सहुनो कीधो घात ॥ त्रिपुर नगर तेणे जालीयुं, सघु मार्यो तिहां व्रात ॥ सु० ॥ ७ ॥ देवदारु राजे ठवी, कीधो अति उछाह ॥ विद्याधर सहु भेटीया, मांड्यो तिहां विवाह ॥ सु० ॥ ८ ॥ कुमरी परणी आठ ते, रुद्रे

रूपवंती नार ॥ अपर कन्या परणी घणी, नवि जाणुं तेहनो पार ॥ सु॰ ॥ ए ॥ सबल काम सेवा नणी, रुद्र नहीं संतोष ॥ जे जे कामनी जोगवे, ते ते पामे दोष ॥ सु॰ ॥ १० ॥ मरण पामी ते अति घणी, रुद्रे मांड्यो अन्याय ॥ विद्याधर मारी करी, परण्यो कन्या जाय ॥ सु॰ ॥ ११ ॥ कन्यानो तेणे क्षय कर्यो, नवि लाजे को पार ॥ हेमाचल राजा नलो, विद्याधरनो सार ॥ सु॰ ॥ १२ ॥ तस नारी ठे रुयमी, मीना तेहनो नाम ॥ पुत्री पारवती तस तणी, रूपे रंजा समान ॥ सु॰ ॥ १३ ॥ पारवती परणी करी, रुद्रे आणी ताम ॥ काम जोग तेहशुं करे, पामे सुख सुधाम ॥ सु॰ ॥ १४ ॥ पारवतीशुं संग करी, उठ्यो रुद्र ते जाम ॥ अपवित्र अंगे पूजतां, नाठी विद्या ताम ॥ सु॰ ॥ १५ ॥ भ्रमा नामे विद्या गइ, रुद्रे रच्यो उपाय ॥ प्रतिमा कीधी तसु तणी, मांमीने ते ध्याय ॥ सु॰ ॥ १६ ॥ भ्रमा विद्यानो जाप जपे, रुद्र रचीने ध्यान ॥ विघन करेवुं मांडीयुं, विद्याने बलतान ॥ सु॰ ॥ १७ ॥ नृत्यकी नारी रूप धरी, गीत गावे ते सार ॥ आकाशे उंची रही, नाचे विविध प्रकार ॥ सु॰ ॥ १८ ॥ नव रस नाटक सांजली, तव चलीयो ते ध्यान ॥ ईश्वर मुख उंचुं करी, जोयुं नृत्यकी तान ॥ सु॰ ॥ १९ ॥ ढाल ए एकवीशमी, खंम बीजानी एह ॥ रंगविजयनो शिष्य कहे, नेमविजयने नेह ॥ सु॰ ॥ २० ॥

मोह पाम्यो नृत्य देखतां, नाटकी नख जोइ ताम ॥ विद्याए विपरीत रूप कर्युं, पांचमुं मुख नीचुं रुद्रे दीठुं जाम ॥ १ ॥ प्रतिमास्थाने पुरुष एक, वदन चार दीसे तेह ॥ पांचमुं मुख ऊंचुं खर तणुं, झुंझुंकार झुंके जेह ॥ २ ॥ कठिण चित्त रुद्रे करी, कर नखे खुंट्युं कपाल ॥ ब्रह्मा विद्या नासी गइ, हस्त चोंट्युं विकराल ॥ ३ ॥ कपालिक नाम रुद्रनुं, ते त्रिनयी कहे लोक ॥ एकदा रुद्र गोरी वेलु, विमान वेसी तजी शोक ॥ ४ ॥ वणारसी वन जायतां, वीर ऊभा धरी ध्यान ॥ गोरी शंकरने कहे, तुम जाइ रह्यो मूकी मान ॥ ५ ॥ प्रिय कारणी सुत संजमी, तुमे अति लंपट भूर ॥ हास्य करी इम रुद्र भणे, ध्यान करुं पह भूर ॥ ६ ॥ रुद्रे उपसर्ग मांमीयो, मेघवृष्टि करी घोर ॥ गाज वीज घणुं गरगडे, वाघ सिंह सर्प घोर ॥ ७ ॥ वायु अने पाषाणनी, वृष्टि कीधी घणी वार ॥ रात सघली उपद्रव कर्यो, जिन मन न चढ्युं लगार ॥ ८ ॥ प्रभात हुवो शिव चिंतवे, में पापी कीध अकाज ॥ मेरु सरिखो निश्चल मुनि, क्षमावंत जिनराज ॥ ९ ॥ निंदा गुरु अति घणी करी, महावीर धर्युं नाम ॥ भक्ति भावे पाय चांपीया, खर मस्तक पड्युं ताम ॥ १० ॥

## ढाल बावीशमी.

वेनी प्रीत पूरव पुण्ये पामीए—ए देशी.

अज्ञानी मूढे आचर्युं, चतुर्मुख ब्रह्मा तेहहे ॥ साजन ॥ ब्रह्मविद्या नामे जाणजो, जिनशासन सत्य एहहे ॥ सा० ॥ १ ॥ सुणजो वात सोहामणी ॥ ए आंकणी ॥ जिन वांदी रुद्र घरे गयो, गौरीशुं अति बहु नेहहे ॥ सा० ॥ सांजलो काम शुं शुं करे, विद्यावले शंकर तेहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २ ॥ ससरो सालो घणुं पीजीया, माने गणे नहीं केहहे ॥ सा० ॥ त्राताए पारवतीने पूछीयुं, हरथी केम रहे विद्या तेहहे ॥सा०॥सु०॥३॥ गौरी कहे जाइ सांजलो, शरीर राखे विद्या पूरहे ॥ सा० ॥ काम सेवा शंकर करे, तप विद्या रहे दूरहे ॥सा०॥सु०॥४॥ जगनी संतोषी वचन रसे, कूड रच्यो उपायहे ॥ सा० ॥ हर गौरी शंकर समे, खड्ग हण्यां बेहु कायहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ५ ॥ ईश्वर अधोगति पामीयो, विद्याए विडंबीया लोकहे ॥ सा० ॥ मरकीए माणस मरे, राजभुवन प्रजा शोकहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ ६ ॥ निमित्त जोइ निमित्तिउं कहे, विद्या संतापे सारहे ॥ सा० ॥ आचरण जेने बेहु मुयां, लिंग उपर जलाधारहे ॥सा०॥ सु० ॥७॥ शिवा-मण पहवी करे, विद्या संतोषाए चंगहे ॥ सा० ॥ तव लोके सहु तिम कर्युं, जोनि

ऊपर कर्युं लिंगहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ ८ ॥ पूजी प्रतिष्ठी थंदीयो, तव रोग सोग गया दूरहे ॥ सा० ॥ विघ्नाए विघन निवारीयां, सुख संतान घर पूरहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ ए ॥ हस्त पाय मस्तक नहीं, जटाधारी मांहे लिंगहे ॥ सा० ॥ निर्लज लोक लाजे नहीं, वीली धंतुरो चढे थंगहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १० ॥ मूरख मूढ मिथ्यातीया, हस्त शिर गले यांधे तेहहे ॥ सा० ॥ हर हर मुख हडडे धरे, पूजे पखाले वली जेहहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ ११ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग तुमे सारहे ॥ सा० ॥ सत्य वचन जे जिन तणां, धरजो मन निरधारहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १२ ॥ सत्य धरम जिनवर तणो, जिहां जोइए तिहां सारहे ॥ सा० ॥ जे नर निश्चे चित्त धरे, ते पामे जव पारहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १३ ॥ मिथ्या मत जे मोहीया, वेला ते मूढ गमारहे ॥ सा० ॥ असत्य वचन वली आचरे, जव जव जमशे संसारहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १४ ॥ पवनवेग तव बोलीयो, सांजलो जाइ चंगहे ॥ सा० ॥ सत्य धरम जिनवर तणो, ते ऊपर मुज रंगहे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुदेव कुशास्त्र कुगुरु सहु, में परीहर्यां मिथ्या धर्महे ॥ सा० ॥ वचन तुमारां सांजली, जांग्यो सघलो मन जर्महे ॥ सा० ॥ मु० ॥ १६ ॥ सुदेव सुगुरुने आदर्यां, आदर्यो जैनतो धर्महे ॥ सा० ॥ मित्र मनोरथ मुज फट्या,

अशुज टल्यां मुज कर्महे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १७ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुज्ञविजय शिष्य तेहहे ॥ सा० ॥ जावविजय शिष्य तेहना, सिद्धिविजय शिष्य एहहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १७ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्णविजय कर जोमहे ॥ सा० ॥ रंगविजय कविराजनी, नावे कोइ होडहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ १९ ॥ खंम बीजो पूरो थयो, ढाल बावीशे सारहे ॥ सा० ॥ नेमविजयने नित्य प्रत्ये, जग मांहीं जयकारहे ॥ सा० ॥ सु० ॥ २० ॥

॥ इति श्री हरिहरब्रह्मार्कचंद्रयमसुरेंद्रसुरगुरु देवादिदूषणनामा द्वितीयोऽधिकारः॥

## खंड ३ जो.

### दुहा.

सकल जिनवर पय नमी, सद्गुरु चरण नमेव ॥ त्रीजो खंड कहेशुं हवे, नेमविजय कहे हेत ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे चंग ॥ मिथ्यात पुराण वली सांभलुं, फेरथी रूप उमंग ॥ २ ॥

### ढाल पहेली.

मन मधुकर मोही रह्यो—ए देशी.

विद्या प्रभावे रूप पालट्यां, बेहु हुआ साधु महंतरे ॥ पश्चिम पोले प्रवेश करी, द्विजशालाए आवी भंतरे॥ मनोवेग बुद्धि विचक्षणो॥ ए आंकणी ॥१॥ दंड धरी भेरी आवणी, कीधो घंटारव तामरे ॥ सिंहासन बेठा मुनि रुअडा, जोवा मल्युं सव गामरे ॥ म० ॥ २ ॥ शब्द सुणी द्विज आवीया, बोले विरुद अनेकरे ॥ देखी जति प्रते एम कहे, तणो मुनि प्रत्युत्तर एकरे ॥म०॥३॥ छ दर्शन छहुं मत तणा, करो अमपी वाद विशालरे ॥ कोण दर्शन कोण गुरु शिष्य, जवाब देजो दयापालरे ॥मा०॥४॥ विप्र

प्रते मनोवेग जणे, सांजलो विप्र सुजाणरे ॥ वाद विद्या अमे नवी लहु, केवां शास्त्र पुराणरे ॥ म० ॥ ५ ॥ जतिवेष आपणे पालीउं, गुरु नथी अम तणे शिषरे ॥ पाटलीपुर जोवा आवीआ, निगुरा ठइए द्विज धिषरे ॥ म० ॥ ६ ॥ कोप करी द्विज बोलीआ, सुणो मुनि मूढ गमाररे ॥ वाद विवाद जाण्यो नहीं, केम कीधो जेरी प्रहाररे ॥ म० ॥ ७ ॥ घंटारव बहु वार कर्यो, सिंहासन बेठा केमरे ॥ नवी गुरु विना चेला सांजल्या, नगर कोइ प्रेमरे ॥ म० ॥ ८ ॥ माया जति कहे सांजलो, हेलाए वजाव्या घंट जेरीरे ॥ सहजे सिंहासन चांपीआं, न गमे तो बेसीए फेरीरे ॥ म० ॥ ॥ ९ ॥ विप्र वचन एम उंचरे, क्षपणक मोटा धुताररे ॥ मुनि जणे बाम्हण तुमे सुणो, सत्य केतां लहीए माररे ॥ म० ॥ १० ॥ ते उपर कथा कहुं, सांजलजो सहु साथरे ॥ कोइक गामे एक शेठ रहे, घरमां छे बहु आथरे ॥ म० ॥ ११ ॥ पुत्र बेहु शेठने अछे, जिनपाल अने जिनदत्तरे ॥ गुरु मल्या जिनदत्तने, लीधुं समकित सतरे ॥ म० ॥ १२ ॥ साचुं बोले वणजतां, कूड कपट नवि राखेरे ॥ साचाबोलो सहु कहे, नगर लोक एम जाखेरे ॥ म० ॥ १३ ॥ हाटे बेठो नित्य रहे, आवे लोक अनेकरे ॥ साचो जाणी आवे घणा, बोले विनय विवेकरे ॥ म० ॥ १४ ॥

जाइ मोटो मन चिंतवे, मुजने कीधो नचिंतरे ॥ व्यापारी मोटो थयो, मात पिता मन खंतरे ॥ म० ॥ १५ ॥ साच बोले लाज केम होये, कूम कपट मांहिं लाजरे ॥ कूमो संसार सोए कह्यो, कूमो जलधर व्याजरे ॥ म० ॥ १६ ॥ व्यापार करतां दिन घणा, गया तव लाज न दीसेरे ॥ मात पिता जाइ सहु मली, आवी वेगा बोले रीसेरे ॥ म० ॥ १७ ॥ कहे जाइ तुं शुं करे, लोक आवी जेलां थायरे ॥ एहवो व्यापार किहां शीखीउ, ड्रव्य लेइ किहां खायरे ॥ म० ॥ १८ ॥ के लुब्ध्यो वेश्या नारीशुं, के गुप्त दान दीधोरे ॥ के कोइ व्यसन पड्यो अछे, तुं तो दीसे छे सीधोरे ॥ म० ॥ १९ ॥ नामां लेखां संजालीने, बोलावे लघु जाइरे ॥ लाज गमे खोट केम होये, ए शी कीधी कमाइरे ॥ म० ॥ २० ॥ ढाल पेली त्रीजा खंमनी, सांजलो बाल गोपालरे ॥ रंगविजय कविराय छे, नेमविजय उजमालरे ॥ म० ॥ २१ ॥

दुहा.

तव बोल्यो लघु ब्रात ए, तमने ड्रव्यनी हुंश ॥ कोटिध्वज थाउं तमे, कूम करी लो लुंस ॥ १ ॥ अमने ए तो नावडे, तुमने तो घणो लोज ॥ वेसो हाटे जइ हवे, घरना छो तमे मोज ॥ २ ॥ साचे मारे चालवुं, कहेवुं मारे साच ॥ देवुं लेवुं साचनुं, इणी परे पालुं

वाच ॥ ३ ॥ समकित मारे पालवुं, गुरु वयण केम लोपाय ॥ जीव जाये तो पण सही, किम करुं हुं अन्याय ॥ ४ ॥ एवुं वयण ते सांजली, रीस चमी वृद्ध जाय ॥ धर्मी थइ वेगो हवे, एने केम कहेवाय ॥ ५ ॥ पांच शेरी लइ हाथमां, नाखी सामे लघु ज्रात ॥ लागी मर्म ठामे तदा, मरण पाम्यो जीव जात ॥ ६ ॥ साच वोल्याथी ए थयो, मनोवेग कहे ताम ॥ पुनरपि वात कहुं वली, सांजलजो सहु आम ॥ ७ ॥

ढाल बीजी.

आणे पडवे ससरो सूता, पहेले पमवे वाइजी ॥ एक घमीनी ढील करो तो करशुं राजी, ठेडो नांजी—ए देशी.

पुरोहित हरिजट्ट जेम लहीउं, वंधन ताडन दंम ॥ जेहवुं होय तेहवुं जाखतां, तेम अमने थाये जंम ॥ सहुको सुणजो ॥ हांरे तुमे सांजलीने मत कोपो ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ द्विजवर जणे मुनि तमे सुणजो, हरिजट्ट तणी कहो वात ॥ आप वीती पठी परकाशजो, सांजलशुं तेह ख्यात ॥ स० ॥ २ ॥ वेशधारिक मनोवेग कहे तव, सुणजो विप्र सुजाण ॥ आडकथा निरमली हुं कहुं छुं, सांजलो सुखनी खाण ॥ स० ॥ ३ ॥ अंग देश चंपापुरी नगरी, गुणसागर महाराज ॥ हरि ब्राह्मण राजगर ठे तेहना, सेवे जूपति पाय

॥ स० ॥ ४ ॥ एक दिन अशूचि टालवा काजे, कारी नरी चाल्यो दूर ॥ मल मोचन करी चल्यो तव, दीठुं नदी आव्युं पूर ॥ स० ॥ ५ ॥ शिला तरती आवी जल पर, देखी अचंन्यो ताम ॥ वेगे जइने नृपने विनव्युं, सांनलो कौतक स्वाम ॥ स० ॥ ६ ॥ वाहिर नूमि गयो हुं वेगलो, नदी कीनारे जनो जाम ॥ मोटी शिला एक जलमां तरती, दीठी अमे अनिराम ॥ स० ॥ ७ ॥ पुरोहितनी वाणी सांनलीने, राजा कहे विख्यात ॥ नूत जोटिंग व्यंतरे नखीयो, असंनव बोले वात ॥ स० ॥ ८ ॥ हरिनट शाही हलतर बांध्यो, डीक पाडु घणी मूके ॥ जोषा आणा मंडप तव मांड्यो, चावल दोरी न चूके ॥ स० ॥ ए ॥ भूगे धंधोले अक्षत छांटे, हाथ पाय शिर कूटे ॥ बुंब करतो हरिनट चिंते, मरण आव्युं अणखूटे ॥ स० ॥ १० ॥ पुरोहित कहे सांनलो नृप लोका, जूतुं बोल्युं नोहे साच ॥ नूत जोटिंग वलग्यो नथी मुजने, खोटुं हास्युं हस्यो वाच ॥ स० ॥ ११ ॥ शिला तरंती नदीए न दीठी, छोडावो महाराज ॥ गुणसागरे ततखिण छोडाव्यो, हरिनट पाम्यो घणी लाज ॥ स० ॥ १२ ॥ घरे जइ पुरोहित चित्त चिंते, मुज मुख नूपे कर्युं कालुं ॥ सत्य वचन बोलतां मुने कूट्यो, हवे साटुं केम वालुं ॥ स० ॥ १३ ॥ एकदा हरिनट्ट वनमां चाल्यो, थालीमां वानर दीठा ॥ राजागुरुए शिखव्या नृत करवा, नव रस

नाटक करे भीग ॥ स० ॥ १४ ॥ रमवा राजा वनमां गयो तेहवे, राणीशुं प्रेम धरंतो ॥ एकलो वनवाडी जइ जोइ, दीठो वानर नृत्य करंतो ॥ स० ॥ १५ ॥ नव रस नाटक जोतां नहीं तृपति, आवो राणी जुउं एह ॥ साद सुणी राजा तणो वीना, वानर नाठा तव तेह ॥स०॥१६॥ राणीने आवी नृप कहे सुंदरी, वानरनृत्य देख्युं सार ॥ राजसज्ञा आवी नृप बेगो, प्रोहित सहु परिवार ॥स०॥१७॥ राजा कहे सहुको सांजलजो, कौतिक दीठुं में आज ॥ नव रस नाटिक वानर करता, जोतां थका सीजे काज ॥ स० ॥ १८ ॥ तव राणी कहे में नव दीठुं, सुणजो लोक विचार ॥ नवी दीठुं सांजल्युं आज पहेलुं, नृपति ऊंखे असार ॥ स० ॥ १९ ॥ हरि प्रोहित कहे सांजलो सज्ञान, राजाने वलगाड वन मांहीं ॥ ए वचने ताणी नृप वांध्यो, जोपा वैद मल्या त्यांहिं ॥ स० ॥ २० ॥ धूणे धंधोले अंग पछाडे, हरिज्ञट निवार्या तेह ॥ निज हस्ते राजाना वंध छोड्या, वस्त्र विज्ञूषित देह ॥ स० ॥ २१ ॥ प्रोहित जाणे नृपति सुणो लोका, वानर नाटिक जेम वारु ॥ नदी मांहे तरती थकी दीठी, तेम शिला सत्य मन धारुं ॥ स० ॥ २२ ॥

श्लोक—असंज्ञाव्यं न वक्तव्यं, प्रत्यक्षमपि यद्ज्ञवेत् ॥
यथा वानरसंगीतं, तथा सा तरति शिला ॥ १ ॥

वचन सुणी राजा तव हरख्यो, सत्य वाणी एह सार ॥ प्रत्यक्ष दीठुं तो नवि कहेतुं, नवि माने मूढ गमार ॥ स० ॥ २३ ॥ त्रीजा खंड तणी ढाल बीजी, कही श्रोताजन सारु ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पभणे, नेमविजय कहे वारु ॥ स० ॥ २४ ॥

दुहा.

हरिभट्टनी कथा रुयडी, विप्र सुणी तमे तेह ॥ अद्भुत वचन मुज बोलतां, तामस करशो देह ॥ १ ॥ ते ब्राह्मण तव बोलीया, सांभलो नाथ शूर ॥ सत्य वचन तुम बोलतां, अमे नवि थाशुं क्रूर ॥ २ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, मनोवेग वर वाण ॥ कथा कहुं वली मुज तणी, सुणजो तेह सुजाण ॥ ३ ॥

ढाल त्रीजी.

केसर वरणो हो के काढी कसुंबो मोरा लाल—ए देशी.

श्रीपुर नगरे हो वणिकोत्तम नाम ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्त शेठ हो श्रावक कुलख्यात ॥ मारा लाल ॥ जिनदत्ता नामे हो कहीए तस नारी ॥ मारा० ॥ तेहनो हुं पुत्र हो गुणवंत धारी ॥ मा० ॥ १ ॥ माहरो नाम दीधो हो जिनचरणदास ॥ मा० ॥ भणवा मूक्यो हो मुनिवर पास ॥ मा० ॥ भणी गणीने हो विद्या अनेक ॥ मा० ॥

गुरुने [illegible] दा विनय [illegible] ॥ मा० ॥ २ ॥ [illegible] ॥
मा० ॥ करमेल तणी श्रावा दो गुणना धाम ॥ मा० [illegible]
॥ मा० ॥ [illegible] दो दीजो नाम ॥ मा० ॥ ३ ॥ [illegible]
॥ मा० ॥ [illegible] [illegible]
पद दीजे ॥ मा० ॥ गुरुजी [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible]
हो गुरु [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible]
मो आलो दा [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ ६ ॥
पूंजी पीधी दो [illegible] पाप ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible]
गुरुने हो कंप देह ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ ७ ॥ नारी न
राखूं हो करिवर थाने ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible]
[illegible] हो मे दीजो जाम ॥ मा० ॥ [illegible] दा करमेल नाम ॥ मा० ॥ ८ ॥ करमेल-
ना गुणगो हो हूं जइ [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] दीजो ॥ मा० ॥ [illegible]

देरी हो जोवुं में जाम ॥ मा० ॥ हुं मांही पेठो हो वाग ताम ॥ मा० ॥
माहारी पुंठे हो पेठो ते नाग ॥ मा० ॥ हुं नासंतो हो नथी देखुं लाग ॥ मा० ॥
कर्मवश मांही हो करे घणु केम ॥ मा० ॥ उजावानी हो न करुं जेड ॥ मा० ॥ १० ॥
घात घणो मुजने हो नासंतां थयो ॥ मा० ॥ गजवर केडो हो छांडी न गयो ॥
मा० ॥ उजातां मारी हो तुटी काछडी ॥ मा० ॥ हस्तीशुं तव हो सुंढे धरी दृढी ॥ मा० ॥
॥ ११ ॥ नागो पहने हो नाठो हुं ताम ॥ मा० ॥ रीसे करिवर हो केडे जाम ॥ मा० ॥
नासुण नीकली हो जोउं तुं जेह ॥ मा० ॥ पुंठेथी हाथी हो नीकले छे तेह ॥ मा० ॥ १२ ॥
नाकुंजे तेरी हो नीकल्यो देह ॥ मा० ॥ पुंठनो केश हो वलग्यो छे तेह ॥ मा० ॥ कोप
करी में हो वीधी गाल ॥ मा० ॥ मर मर हाथी हो तुं अकाल ॥ मा० ॥ १३ पापी जे
नर हो पर पीडा करे ॥ मा० ॥ गजनी परे हो ते नहीं संचरे ॥ मा० ॥ अवकाश लहीने
हो नाठो हुं जाम ॥मा०॥ अपर नगर हो दीठुं में ताम ॥मा०॥१४॥ जिनवर भुवन हो
दीठुं में चंग ॥मा०॥ मुज मन उपनो हो परोलो रंग ॥मा०॥ नाव करीने हो वांद्या अरिहंत
॥ मा० ॥ निराभरण हो नासुर मार्दंत ॥मा०॥१५॥ वांदी करीने हो हुं बेठो जाम ॥ मा० ॥
नर नारी नवि देखुं ताम ॥मा०॥ शून्य भुवन छे हो जिनवर केरुं ॥मा०॥ नामे ठामे हो

जोउं अजिनेहं ॥मा०॥१६॥ उंची दृष्टि हो जायुं जाम ॥मा०॥ पींछी कमंडल हो दीठुं ताम ॥मा०॥ जतन करीने हो बांध्यां छे जेह ॥मा०॥ हस्ते करीने हो उतार्यां तेह ॥मा०॥१७॥ मन मांही हो विचार्युं एहवुं ॥मा०॥ वस्त्र विहुणा हो करशुं केहेवुं ॥मा०॥श्रावक सुतने हो जाचुं थई एम ॥मा०॥ पींछी कमंडल धरीयां तेह ॥मा०॥१८॥ गुरुजी पासे हो दीक्षा में लीध ॥मा०॥ देश विदेशे हो विहारज कीध ॥मा०॥ पाटलीपुरमां हो आव्यो हुं आज ॥मा०॥ कथा कही छे हो में मूकी लाज ॥मा०॥१९॥ संबंध कथानो हो कह्यो छे एह ॥मा०॥ द्विज-वर वातो हो विचारो तेह ॥ मा० ॥ साचां वचन हो कह्यां छे अमो ॥ मा० ॥ खोटां वचन हो म करशो तमो ॥ मा० ॥२०॥ खंड त्रीजानी हो ढाल कही त्रीजी ॥ मा० ॥ श्रोता सहुको हो करे जो जीजी ॥ मा० ॥ रंगविजयनो हो शिष्य एम बोले ॥मा०॥ नेमविजयने हो नहीं कोइ तोले ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा.

विप्र वचन तब बोलीया, सांभलरे अजाण ॥ जूठो किमही न बोलीए, कलि केम ठगे जाण ॥ १ ॥ खोटां वचन तमे उचर्यां, दीसो छोरे लबाड ॥ टिंग कोडयां छे अणघड्यां, तुमे धूरत महा धाड ॥ २ ॥ कमंडल मांही मयगल तुमो, पेठा छो एह

जूठ ॥ करि नीकलतां नाखुए, केश वलग्यो महा कूट ॥ ३ ॥ माया मुनि तव बोलीयो, सांजलो विप्र विचार ॥ वचन अमारां लंबीयां, असत्य कीयां अपार ॥४॥ जूठां वचन तुमे कां कयां, जो नहीं मानो एह ॥ वेद पुराणे जे कायां, सत्य करो कांइ तेह ॥ ५ ॥ ब्राह्मण तव ते बोलीया, सांजलो नाइ सार ॥ वेद पुराणे नहीं सुण्यां, एहवां वचन लगार ॥ ६ ॥ दीठां सांजल्यां जो होये, वेद पुराणो मांहीं ॥ कपटी केता कां नथी, विलंब करो ठो कांहीं ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सुणजो विप्र विचार ॥ सत्य वचन मुज बोलतां, शिक्षापात लहुं मार ॥ ८ ॥ ब्राह्मण वचन वलतो जणे, सांजल मूढ गमार ॥ योग्य वचन परकाशतां, कोइ नवि दीये प्रहार ॥ ९ ॥

ढाल चोथी.

एक दिन दासी दोमती, आवी श्रेणिक पास रे—ए देशी.

वेषधारी मुनि तव कहे, सांजलो द्विजवर जेहरे ॥ वेद पुराण सुण्युं एशुं, तुम पास नाखशुं तेहरे ॥ वेषधारी ॥ १ ॥ कुरुजांगल हस्तीनागपुरे, पांमव पांच ते ज्रातरे ॥ युधिष्टर नीम अर्जुन जलो, सहदेव नकुल प्रख्यातरे ॥ वे० ॥ २ ॥ धर्मराजाए मन चिंतव्युं, पुण्य कीजे अपाररे ॥ विनय करी तेमावीया, खेचर सुर नर साररे ॥ वे० ॥

लीधो सेन केडे फाररे ॥ वे० ॥ १२ ॥ वाण ठिंडे सहु नीकली, दश क्रोड ते सेनारे ॥ देत्य साथे संग्राम कर्यो, नाग्या दानव धीनारे ॥ वे० ॥ १३ ॥ जगन संपूरण तव थया, पांडव पांच ते हरख्यारे ॥ वेद पुराणे बोल्युं पहवुं, विप्र जुर्ज तमे परीक्षारे ॥ वे० ॥ १४ ॥ नह नणे मुनिवर सुणो, सत्य वचन ए मोटुंरे ॥ स्मृति पुराण वेदे कह्युं, केम थाये अम खोटुंरे ॥ वे० ॥ १५ ॥ माया मुनि कहे सांनलो, विप्र एहीज वातोरे ॥ हय गय पायक अद्दिपति, ऋषिवर चाल्या सातोरे ॥ वे० ॥ १६ ॥ वाण ठिंडे समाया सहु, वली नीकल्या जेमरे ॥ कमंडल मुखे हुंकरी, समया वेहु तेमरे ॥वे०॥१७॥ विप्र वचन नणे मुनि सुणो, घटतां दीसे ए दोयरे ॥ वली विचारी कहुं अमे, उत्तर देजो सोयरे ॥ वे० ॥ १८ ॥ कमंडल मांहीं हस्ती तुमे, माया एह संदेहरे ॥ घणो काल नमतां थका, केम न नांगी नींकी तेहरे ॥ वे० ॥ १९ ॥ नालुए कुंजर केम नीकल्यो, केम वलग्यो पुंछ वालरे ॥ चार संदेह पड्या अने नो, जुर्ज दयापालरे ॥ वे० ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल ए कही, चोथी सुणो सुविशालरे ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय उजमालरे ॥ वे० ॥ २१ ॥

## दुहा.

जिनचरणदास वोल्यो जति, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अगस्त्य ऋषिवर अजिनवो, पुराण प्रसिद्ध ए ख्यात ॥ १ ॥ उठ हस्तीनी देहमी, सायर समीपे वास ॥ तप जप ध्यान धरे वहु, सामग्री राखे पास ॥ २ ॥ झोली माजन पात्रने, स्नाने शुद्ध करे गात्र ॥ सायर तीरे वेसी करी, जोय मेल्यां सवि पात्र ॥ ३ ॥ चाल्यो करवा स्नान ते, समुद्रनी लागी लेहेर ॥ जल कलोले लीधी सहु, उपन्यो ऋषिने जेहेर ॥ ४ ॥ पूजा सामग्री माहरी, पापी जलधिए लीध ॥ तो संहारुं एहने, तव तिहां सागर पीध ॥ ५ ॥ एक चलुमें एटलो, पीधो सागर सर्व ॥ केटलोक काल पेटमां रह्यो, हुं कहुं मूकी गर्व ॥ ६ ॥ द्विज सहु को तमे सांजलो, पुराण प्रसिद्धो ताम ॥ इंद्रिमां समायो जो सही, तो हुं हस्ती वेहु गाम ॥ ७ ॥ अगस्त्य ऋषिए पीधो सहु, वहाण सायर मछ ॥ एह वात मानो खरी, तो माहरी वातो सच्च ॥ ८ ॥ विप्र वोल्या तव सहु मली, पुराणमां वात मनाय ॥ तुम वयण केम लोपीए, लाग्या तुमारे पाय ॥ ९ ॥ माया मुनि तव वोलीयो, ब्राह्मण सुणजो वात ॥ अपर वात पुराणे कही, सांजलजो विख्यात ॥ १० ॥

## ढाल पांचमी.

नंद सलुणा नंदनारे लोल, तें मुने लागी छे फंदमांरे लोल—ए देशी.

सृष्टि उपाइ ब्रह्माने कहीरे लोल, भूतल वायु वनस्पति महीरे लोल ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमांरे लोल, जीव उपाया उजमाललांरे लोल ॥ १ ॥ कहे कडूपणुं तव कयुंरे लोल, ब्रह्मा सृष्टि वेग संहरेरे लोल ॥ प्रलयकाल वरतावुं आजथीरे लोल, अमे ईश्वर पणुं काजथीरे लोल ॥ २ ॥ विष्णु वात विचारी गहचेरे लोल, भुवन चौद पालशुं तेहवेरे लोल ॥ विष्णु उदर मांही जग लीधो सहुरे लोल, जीवादिक तव राख्यो बहुरे लोल ॥ ३ ॥ बहु काल गयो पोढ्या जइ वड पानमेरे लोल, ब्रह्मा जोवे रान रानडेरे लोल ॥ तलसीनो छेक तव दीठकोरे जग जोवतांरे लोल, देखे नहीं अणखोवतांरे लोल ॥४॥ लोल, ब्रह्मा आव्यो दील करी मीलकोरे लोल ॥ अगस्त्य ऋषि दीठा गटलेरे लोल, वेहु तापस एकठा मलेरे लोल ॥ ५ ॥ अन्यादे अन्यादे करीरे लोल, फोटे वलग्या वांही धरीरे लोल ॥ सन्मान दीधुं ब्रह्मा जणीरे लोल, आसन उपर बेठा भणीरे लोल ॥ ६ ॥ अगस्त्य कहे ब्रह्मा सुणोरे लोल, केम पधार्या मुजने भणोरे लोल ॥ चिंतातुर
[illegible] ॥ ७ ॥ धाता तव बोल्या

स्यो महीरे लोल ॥ दीठा जाणी आव्या तुम कनेरे लोल, कहो स्वामि आशा अम कनेरे लोल ॥ १६ ॥ विष्णु तव बोल्या सहीरे लोल, सांजलो ब्रह्म रूषि वहीरे लोल ॥ चौद भुवन निपाया तुमेरे लोल, तेहनी रक्षा करवी अमे रे लोल ॥ १७ ॥ रुद्र जव मांड्यो संहारनोरे लोल, प्रलयकाल करे अपारनोरे लोल ॥ उदरमां तव वेगे करीरे लोल, सृष्टि तमारी में उधरीरे लोल ॥ १८ ॥ वचन सुणी रीज्या तदारे लोल, जलो कीधो तुमे अम मुदारे लोल ॥ स्वामि भुवन देखाको हवेरे लोल, जीव अमारो घणुं लवेरे लोल ॥ १९ ॥ हरि जणे सांजलो रूषि तमेरे लोल, मुखमां पेसो जइ उजमेरे लोल ॥ सृष्टि जुठ तमारी पहवी रे लोल, नागे मनना सहु संदेहवीरे लोल ॥ २० ॥ खंड त्रीजे ढाल पांचमीरे लोल, श्रोता सहु जनने गमीरे लोल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहेरे लोल, नेम ते जश जगमें लहेरे लोल ॥ २१ ॥

## दुहा.

ब्रह्मा मुखमां पेठा जइ, चौद भुवन दीठां त्यांहिं ॥ स्वर्ग मृत्यु नरकावासनो, पर्वत सागर मही मांहीं ॥ १ ॥ सुर नर किन्नर देवता, हय गय पंखी अनेक ॥ उदर माहिं दीठो सब जोतां आव्यो नेक ॥ २ ॥ अधोद्वारे नीकलया, ब्रह्माए विचारी वात ॥ मन

मूत्र अशुचि नंगारनो, डुर्गंध गंध उतपात ॥ ३ ॥ इहां नीकलवुं नवि घटे, वदने थाये पलु पर्व ॥ नाजिकमल जे विष्णुनी, तेमां काढुं देह तो हर्ष ॥ ४ ॥ पहेलो काज विचारीए, तेहने नावे कोइ लाज ॥ विष्णु नाजिने ठिडे करी, ब्रह्मा नीकल्या आज ॥ ५ ॥ कुंटी वलग्यो केश अंगनो, धाता न लहे लवलेश ॥ ब्रह्मा तिहां वलगी रह्या, माटु थया वलगे केश ॥ ६ ॥ नाजिकमल रचना करी, पांखमी अष्ट प्रकार ॥ उपर आसन पूरीयुं, नाम कमलासन सार ॥ ७ ॥ दिवस तेहज आदे करी, पदम जात तेह नाम ॥ नाजिकमले हरि उपन्या, कथा जाणो ब्रह्मानी ताम ॥ ८ ॥ माया मुनि हसी बोलीयो, विप्र विचारी जोय ॥ वेद पुराणे कथा कही, साची जूठी होय ॥ ९ ॥ विप्र वचन तव बोलीया, पुराण प्रसिद्धो एम ॥ सर्व शास्त्र मांहीं कह्युं, खोटुं कहीए केम ॥ १० ॥

ढाल ७ठी.

घमी एक थोने राणी सुंवरो, सुंवरो दरियोरे न जाय—ए देशी.

मनोवेग पवनवेग प्रणी, सामुं जोइ मित्त ॥ मित्र वचन मुज सांजलो, एक मनमां धरी चित्त ॥ साजन सहुको सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जेम कमंमल सरसव जेटले, मध्ये जग मापंत ॥ तो कमंमल मोटा मांही, गज अमे केम न पेसंत ॥ सा० ॥२॥ जेम चौद

त्रुवन त्तारे करी, तुलसी काल नवि जंग ॥ तेम मयगल मुज जारखी, नीडी काल न भंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ जेम विष्णु उदर मांही नम्यो, ब्रह्मा तिहां बहु काल ॥ अपणो जग जोतां थका, एम कहे बाल गोपाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ कमंडल मांही बेहु नम्या, साव कहुं गज जेम ॥ करि पुंठे नमे घणुं, नाठो जाउं तेम ॥ सा० ॥ ५ ॥ जेम नाभि-कमल छिद्र करी, आखो नीकल्यो देह ॥ आंकवाल वलगी रह्यो, ब्रह्मानो वली तेह ॥ सा० ॥ ६ ॥ तेम हस्ती नालुए नीकल्यो, पुंछनो वलग्यो केश ॥ बलवतरे बहु बल कर्यो, हाल्यो नहीं लवलेश ॥ सा० ॥ ७ ॥ वचन सुणी द्विज बोलीया, सांनलो साधु नरेश ॥ कर जोडी तुज पाय पड्या, उत्तर नोही लवलेश ॥ सा० ॥ ८ ॥ मनोवेग मन उलसी, बोल्यो मधुरी वाण ॥ पवनवेग सहु सांनलो, वचन विरोध पुराण ॥ सा० ॥ ९ ॥ जो विश्वलोक सघलो गल्यो, विष्णुए उदरज मांही ॥ तो कमंडल बाहेर केम रह्युं, कहो केम पेठा त्यांही ॥ सा० ॥ १० ॥ अगस्त्य तुलसी काडवे, कमंडल तुझ मोझार ॥ वड वृक्ष तणे पांदडे, पोढ्या देव मोरार ॥ सा० ॥ ११ ॥ ए सो जग बाहिर घटे, तिहां करजो विचार ॥ विप्र सहु पुराणनां, वचन विरोध अपार ॥ सा० ॥ १२ ॥ जे ब्रह्मा ध्याये थके, मूकाए नव पास ॥ विष्णुनी नाभिकमले रह्यो, पाम्यो दुःख निरास

॥ सा० ॥ १३ ॥ जो ज्ञानवंत ब्रह्मा होये, तो कां पूजे अगस्ति ॥ सृष्टि मारी को हरी गयो, कहो ऋषिवर किहां वस्ति ॥ सा० ॥ १४ ॥ ब्रह्माए सहु सरजीयुं, तो सरजी नहीं एक नार ॥ रींछणीने सेवे सदा, कामांध होये गमार ॥ सा० ॥ १५ ॥ नारायण जाणे सहु, सृष्टि तणो संहार ॥ तो सीताहरण नहीं जाणीयो, पूछ्यो सयल संसार ॥ १६ ॥ नाग-बंध बांध्या थका, छूटे सघला लोक ॥ रामचंद्र समरथ सदा, जांजे सहुनो शोक ॥ सा० ॥ १७ ॥ रावण पुत्र पराक्रमी, इंद्रजित जेहनुं नाम ॥ सकल सेन तेणे बांधीयो, लक्ष्मण ने वली राम ॥ सा० ॥ १८ ॥ शोक सहुने उपन्यो, रवि उगमते एह ॥ सल्य विसल्या औषधी, नावे तो मरे तेह ॥ सा० ॥ १९ ॥ हणुमंते वेगे करी, आणी सल्य विसल्य ॥ राम लक्ष्मण सेना तणां, जांज्या सघलां शल्य ॥ सा० ॥ २० ॥ निज बंधन जेणे नहीं टल्यां, नहीं टल्या शोक संताप ॥ परनां ते केम टालशे, विचारो महा पाप ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंम त्रीजे छठी ढालमां, जाख्या नवनवा जेद ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमने हर्ष उमेद ॥ सा० ॥ २२ ॥

## दुहा.

ब्राह्मण सहु छाना रह्या, नहीं उपजे ते बोल ॥ मनोवेग मन उलस्यो, विप्र हुवा

निर्दोष ॥ १ ॥ वाद जीती वनमां गया, विद्याधर बेहु मित्र ॥ मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग पवित्र ॥ २ ॥ पूर्वापर विरोध घणा, कहेतां लागे लाज ॥ देव तणा गुण सांजलो, जेम सरे तुम काज ॥ ३ ॥ क्षुधा तृषा जय द्वेष नहीं, राग क्रोध मद लोज ॥ मान मोह माया नहीं, जन्म जरा मृत्यु शोक ॥ ४ ॥ स्वेद खेद विषाद नहीं, निद्रा चिंता नहीं जेह ॥ अष्टादश दोष वेगला, आराधो वली तेह ॥ ५ ॥ अतिशय चोत्रीश जेहने, प्रातिहार्य अम सार ॥ अनंत चतुष्टय मंडीया, ते देव नवजल तार ॥ ६ ॥ ब्रह्मा हरि हर देवता, राग द्वेष नंमार ॥ दूषण नूषण नूपिता, पुत्र कलत्र परिवार ॥ ७ ॥ सुदेव कुदेव परीक्षा करो, धर्माधर्म विचार ॥ साचुं होय ते अंगी करो, हेम प्रकार जेम चार ॥ ८ ॥ ताप ताडन छेद घर्षण, दान दया तप जाप ॥ शस्त्री शास्त्र गुरु कुगुरुनो, परीक्षा धरो निःपाप ॥ ९ ॥

### ढाल सातमी.

राधा रूपे दीसे रुमी, हाथे खलके सोनानी चुमी, मारी सहरे समाणी—ए देशी.

कुगुरु कुदेव कुधर्म तणा जेह, दोष दाखव्या पूरवे घणा पहरे ॥ मारा साजन सुणजो. ग्रंथ वधवाने कारण जेह ॥ पालख कथा विचारो तेहरे ॥ मारा॰ साजन॰ ॥

॥ १ ॥ लोक अलोकाकाश मोजार, उंचो चौद राज विस्ताररे ॥ मा० ॥ सात राज हेठो अधो लोक, मेरु कंदथी गणजो थोकरे ॥ मा० ॥ २ ॥ मेरु समो उंचो मध्य लोक, तिहांथी सात राज मोक्ष रोकरे ॥ मा० ॥ अधो सात राज मध्य एक, पूर्वापर करजो विवेकरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ ब्रह्म लोक राज छे पांच, एक राज उपर वली खांचरे ॥ मा० ॥ दक्षिण उत्तर सघले तास, वायु त्रण विधो विख्यातरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ लोक मध्य उन्नी तस नाल, चौद राज उंची विशालरे ॥ मा० ॥ त्रस नालि त्रस थावर नरी छे, एक राज विस्तारे करी छेरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ बाहेर नरीया थावर पंच, आगम कहीए एहवो संचरे ॥ मा० ॥ धनराज जाणो त्रिलोक, त्रणसें तेंताली थोकरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ कटीकर कीधो पुरुषाकार, अथवा मादल दोढ आकाररे ॥ मा० ॥ अर्ध मादल धर्युं अधो लोक, आखुं मादल उपर कर्युं थोकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ अधो लोक छे नरकावास, छ राज मांहीं सात अवकासरे ॥ मा० ॥ एक राज अधो हेठो लोक, थावर पांच जर्यो ते थोकरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ लोक त्रणनो घणो विचार, सिद्धांत थकी सुणजो साररे ॥ मा० ॥ कोणे नहीं ए सृष्टि निपाइ, अनादि कालनी एह सदाइरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ मिथ्याती एम कहे छे केता, जल व्यास ब्रह्मांडे वहेतारे ॥

॥ मा० ॥ जल मांहीं उपन्यो पंपोट, तेहथी इंडुं जायुं म्हाटुं ॥ मा० ॥ १० ॥
कीधुं ब्रण खंम, तेथी उपन्यो मडु ब्रह्मांडरे ॥ मा० ॥ जलमां मूक्युं ब्रह्माण इंडुं, तेथी
नामुं ते वली रिंडुरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ सृष्टि नहोती किहां रह्या ब्रह्म, जल पोट इंडुं केम
नमारे ॥ मा० ॥ मिथ्या मतना कहुं विचार, सृष्टि उपनी घणे प्रकाररे ॥ मा० ॥
॥ १२ ॥ आदि हुं तुं एक अनादि, तेथी उपन्यो आदिता सादिरे ॥मा०॥ आदि-
नो उपन्यो ॐकार ॐकारनो वेद अपाररे ॥मा०॥१३॥ वेदनो द्रव्य द्रव्यनो धूम, धूमनो
मेघ जल रूमरे ॥ मा० ॥ जल व्याप्युं ऊंचुं अखंड, जड व्याप्युं एकवीश ब्रह्मांडरे ॥
मा० ॥ १४ ॥ तेणे काल आदि विष्णु जलसार, जल साइ पोढ्या अपाररे ॥
मा० ॥ पोढ्याथी गया बहु काल, वर्ष सहस्र वही गयां रसालरे ॥ मा० ॥१५॥ तदा
काल नहीं आदि अनादि, पृथ्वी अप तेउ नहीं वली सादिरे ॥ मा० ॥ वायु आकाश
तरुवर नहीं एक, चंद्र सुरज ग्रह नहीं वली तेहरे ॥ मा० ॥ १६ ॥ अग्नि आदि करी
नहीं एक, तदा आदि विष्णुए निपायो टेकरे ॥मा०॥ प्रथम पेहेलुं निपायुं तेज, तेज
थकी ज्योति उपन्यो हेजरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ ज्योति थकी उपन्यो वली फेन, फेनथी
उपन्यो अदबुद रेनरे ॥ मा० ॥ अदबुदथी उपन्यो वली थंक, अंड थकी उपन्यो

ब्रह्मा अरंगरे ॥मा०॥१८॥ ब्रह्मानो काश्यपी ऋषि जात, काश्यपथी काश्यपी ऋषि संघा-मरे ॥ मा० ॥ काश्यप ऋषि पतनी हुइ तेर, दीतीए जाया दैत्य दाणव ढेररे ॥ मा० ॥ ॥ १९ ॥ आदितिथी उपन्या अपार, तेत्रीश कोम देव सुत साररे ॥ मा० ॥ करुए जाया नवकुली नाग, वनिता सुत गरुम विपजागरे ॥ मा० ॥ २० ॥ सुप्रजाए पुत्री जणी सात, नवसें नवाणुं नदी विख्यातरे ॥ मा० ॥ एकीए जणीया द्वीपज सात, साते सागर जाया एकीए रातरे ॥ मा० ॥ २१ ॥ एकीए जाया पर्वत वृंद, सेना शालणी जणीया चंदरे ॥ मा० ॥ एकीए सहुए सूरज जाया, तारा ग्रह नक्षत्र बहु मायारे ॥ मा० ॥ २२ ॥ दृव्यकाए जाया ऋषिवर स्वाम, अठ्याशी सहस्र तणां छे नामरे ॥ मा० ॥ खडनेत्री जणीया चारे खाण, खेद थंम जरा अदवुद जाणरे ॥ मा० ॥ २३ ॥ चार खाणथी चोराशी लाख, जीव योनिनी उत्पत्ति नाखरे ॥ मा० ॥ पेंतालीश लाख पखचर जोय, जलचर नजचर बाकी होयरे ॥ मा० ॥ २४ ॥ जीव थकी उपन्या जुग चार, कृत त्रिता द्वापर कलि साररे ॥ मा० ॥ एणी परे सृष्टि तणो छे लाग, मिथ्यादृष्टि कह्यो विचारे ॥ मा० ॥ २५ ॥ खंम त्रीजानी सातमी

ढाल, सुणजो सहु बाल गोपालरे ॥ मा० ॥ रंगविजय शिष्य एम भाखे, नेमविजय गुण एम दाखेरे ॥ मा० ॥ २६ ॥

## दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग गुणवंत ॥ मूढ मिथ्यातनी वारता, आप विगोए एकंत ॥ १ ॥

## ढाल आठमी.

### वणजारानी देशी.

मारा नाथकरे,विष्णु ब्रह्मा वेद, वाद वदे सृष्टि कारणे ॥ मा० ॥ ब्रह्मा कहे सृष्टि एह, में सरजी सुख कारणे ॥मा०॥१॥मा०॥ विष्णु वदे मुज तणी सार, सृष्टि रक्षा करुं अमे खरी ॥ मा० ॥ मा० ॥ जुग काजे वलगता तेह, शंकर पासे गया मन धरी ॥ मा० ॥ २ ॥ मा० ॥ कहो ईश्वर महाराज, अमे बेहु मांहे सृष्टि केहु तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ शंकर कहे सुणो ब्रह्मा विष्णु, मुज लिंग छेडे जाए ते धणी ॥मा० ॥ ३ ॥मा० ॥ ब्रह्मा तुमे जाओ उर्ध्व लोक, मुज लिंगनो अंत ज्यां होये ॥ मा० ॥ मा० ॥ विष्णु जाओ अधो लोक, लिंग

ठेमो आवें सोइ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी ऊंचो चढे॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वलगी चाव्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाठो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नवि-लह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग ऊपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूमी साख देजो केवमी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ बेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग ऊपरथी एह, केवमी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवमी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि मगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी आपी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चमीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जांम, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

ग्रही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरि-राय, शुजविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ नावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कहा जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांहीं, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंम, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

---

छेहो आवे गोइ ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधार्युं लिंग, हस्त धरी ऊंचो चडे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वसगी चाल्यो कान, वेगे पाताळे हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां घणो थयो काळ, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वळी हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नवि-लह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीओ हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खरी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तेह यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, पूरी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ बेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं छेहे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो भयो ॥ मा० ॥ ९ ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम. ब्रह्मा वचन नवि डगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी धाणी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चमीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज केवडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मा० ॥ खोटा बोल्यो ब्रह्मा तुं आंम, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यधारी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मळती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

॥ ८० ॥

मही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासनना नेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरि-राय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ नावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कहा जाणो सही ॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांहीं, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥ रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम, नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥ मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंम, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

ठेमो आवे सोइ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधाव्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चढे ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वलगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नविलह्यो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडी पत्र, लिंग उपरथी तवे यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवकी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ वेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवकी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवकी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि डगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी आपी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥मा०॥११॥मा०॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जाम, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा०॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेन विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

॥ ८० ॥

जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥
मही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा० ॥ जिनशासनना भेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरि-
वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरि-
राय, शुभविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ भावविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय
शिष्य गहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही गह, शिष्य कया जाणो सही
॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांही, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा० ॥
रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम,
नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए
॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, हाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे
नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

---

ठेगो आवे सोइ॥ मा० ॥ ४ ॥ मा० ॥ ब्रह्माए वधार्व्युं लिंग, हस्त धरी उंचो चडे॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग वलगी चाल्यो कान, वेगे पाताले हरी जडे ॥ मा० ॥ ५ ॥ मा० ॥ जातां थयो घणो काल, लिंग अंत न पावीयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ नारायण थाक्यो ताम, पाछो वली हर कने आवीयो ॥ मा० ॥ ६ ॥ मा० ॥ विष्णु कहे सुण ईश, लिंग पार में नवि-लहो ॥ मा० ॥ मा० ॥ दुःखीउं हुवो ब्रह्मा वाट, मुख फीको करीने रह्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ मा० ॥ खसी पड्युं केवडा पत्र, लिंग उपरथी तले यदा ॥ मा० ॥ मा० पडतो झाल्यो कहे ब्रह्म, कूडी साख देजो केवडी तदा ॥ मा० ॥ ८ ॥ मा० ॥ बेहु आव्या ईश्वर पास, ब्रह्मा कहे हुं ठेठे गयो ॥ मा० ॥ मा० ॥ लिंग उपरथी एह, केवडी आणी साचो जयो ॥ मा० ॥ ए ॥ मा० ॥ कहे केवडी साची वात, ब्रह्मा आव्यो तुज लगे ॥ मा० ॥ मा० ॥ केवडी कहे सुण स्वाम, ब्रह्मा वचन नवि डगे ॥ मा० ॥ १० ॥ मा० ॥ ज्ञाने जोइ करी ईश, खोटुं जाणी थापी केवडी ॥ मा० ॥ मा० ॥ म चडीश माहरे लिंग, कांटा होजो तुज तेवडी ॥मा०॥११॥मा०॥ खोटा बोलो ब्रह्मा तुं जांड, सृष्टि न होशे तुज तणी ॥ मा० ॥ मा० ॥ सत्यवादी गोविंद, सृष्टि सहुनो ए धणी ॥ मा० १२ ॥ मा० ॥ पवनवेग विचारी जोय, मलती वात एके नहीं ॥ मा० ॥ मा० ॥ परीक्षा करी धरो चित्त, सुधुं समकित मन

मही ॥ मा० ॥ १३ ॥ मा०॥ जिनशासनना नेद, शास्त्र सिद्धांत विचारीए ॥ मा० ॥ मा० ॥
वीतराग देव आराध, जैन वाक्य हृदय धारीए॥ मा०॥१४॥ मा० ॥ श्री हीरविजय सूरि-
राय, शुन्नविजय शिष्य तेहना ॥ मा० ॥ मा० ॥ नाग्रविजय शिष्य तास, सिद्धिविजय
शिष्य एहना ॥ मा० ॥ १५ ॥ मा० ॥ रूपविजय सही एह, शिष्य कह्या जाणो सही
॥ मा० ॥ मा० ॥ कृष्णविजय कलि मांही, शिष्य नाम धराव्यो मही ॥ मा० ॥ १६ ॥ मा०॥
रंगविजय रंग लाय, शिष्य कहीए जगमें जदा ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय शिष्य नाम,
नित्य उदय होजो तदा ॥ मा० ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह संसारमां सार, धर्मपरीक्षा जाणीए
॥ मा० ॥ मा० ॥ मिथ्या मत तणो ध्वंस, त्रीजो अधिकार मन आणीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
मा० ॥ त्रीजो पूरो थयो खंड, ढाल आठे पूरण करी ॥ मा० ॥ मा० ॥ नेमविजय कहे
नित्य, गुरुनुं नाम हृदय धरी ॥ मा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षायां मिथ्यादेवशास्त्रपुराणगुरुदूषण नामा तृतीयोऽधिकारः

## खंड ४ थो.

### डुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं हुं गर्वने ठोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो जणे, पवनवेग जणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांजलजो तुमे ज्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज जणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि उंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां जलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

### ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

जेर वजाडी रुयडीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन बेठा चडीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अचंबीयारे, तह एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे आत घणारे, प्रथम वचन करुं भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा भंभोली अम तणीरे, बेर वजावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जबाप ॥ मा० ॥ को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां वाइयांरे, सिंहासन बेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ बेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, भण्या नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तव उच्चरेरे, सांभलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहां थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात ॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउ अम भ्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बोले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कर्यो मर्कट नाच ॥ मा० ॥ असंभव वाक्य खचता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥ मूरख मोटा होये घणारे, सभा मांहीं नर थवी जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

## खंड ४ थो.

### दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोम ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गर्वने ठोम ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो जणे, पवनवेग जणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांजलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज जणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि ओलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्या जलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्या, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

### ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

नेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे॥ सिंहासन वेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

॥ मा० ॥ वाद वदा तुम आत
तापस देखी अचंनीयारे, नद्द एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, नेर व-
घणारे, अथम वचन करुं नंग ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन देमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥
जावी वली आप ॥ मा० ॥ विनोद कारण वाजां
को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांजलो विप्र विचार ॥ मा० ॥ वेगा तुमने नवि गमेरे, उतरीए
वाड्यांरे, सिंहासन वेगा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, नण्या नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥
नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ किंहा थकी तुमे आवीयारे,
विप्र वचन तव उच्चरेरे, सांजलो तापस राज ॥ मा० ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण ठे तमारी जात
कोण उपन्यो ठे काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ मनो-
॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम व्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-
वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-
ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥
च ॥ मा० ॥ असंनव वाक्य लवता थकारे, विवेक विचार जाणे
मूरख मोटा होये घणारे, सना मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस
नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥

## खंड ४ थो.

### दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोम ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं हुं गर्पने गेम ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो जणे, पवनवेग जणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांजलजो तुमे ज्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज जणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्‌जुत रूप करी नवां, जइए आपण बेय ॥ एकांते नवि उंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां जलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्यां, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

### ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

नेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे ॥ सिंहासन बेग चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

तापस देखी अनंतीगारे, जइ एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे अति मगारे, प्रथम वचन करुं नंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोळी अम तणीरे, जेर व-जावी चढी आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ को० ॥ ३ ॥ मनोवेग नव बोलीयोरे, सांनलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां वाइयांरे, सिंहासन बेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ बेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए लीना ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, नण्या नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तव उचरेरे, सांनलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहां थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो ने काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण ने तमारी जात ॥ मा० ॥ वास नियागे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम भ्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-च ॥ मा० ॥ असंनव वायस वचना थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥ मूरख मोटा होवे घणारे, सना मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

## खंड ४ थो.

### दुहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोड ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गर्वने छोड ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो जणे, पवनवेग जणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांजलजो तुमे ज्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज जणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण बेय ॥ एकांते नवि उंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां जखां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्यां, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

### ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

जेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे॥ सिंहासन बेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

॥ ८१ ॥

तापस देखी अचंतीयारे, जट एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ वाद वदो तुमे अति
घणारे, प्रथम वचन करुं भंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, जेर व-
जावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमनुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥
को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांजलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां
वाइयांरे, सिंहासन बेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ बेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए
नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहयोरे, भण्या नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥
विप्र वचन तव उचरेरे, सांजलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहां थकी तुमे आवीयारे,
कोण उपन्यो छे काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण छे तमारी जात
॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउं अम व्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो-
वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ सार्चुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो-
ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना-
च ॥ मा० ॥ असंजव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥
मूरख मोटा होये घणारे, सत्ता मांहीं नर वसी जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे
नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

## खंड ४ थो.

### ऊहा.

जिनशासन समरी करी, प्रणमी बे कर जोम ॥ चोथा अधिकारनी कथा, कहुं तुं गपने ठोम ॥ १ ॥ मनोवेग वलतो नणे, पवनवेग नणी वात ॥ अवर पुराणनी वारता, सांनलजो तुमे भ्रात ॥ २ ॥ निरमल मन तुमे राखजो, जैन धर्म पर रंग ॥ समजावुं सहु द्विज नणी, विचार देखाडुं चंग ॥३॥ अद्भुत रूप करी नवां, जइए आपण वेय ॥ एकांते नवि ठंलखे, फरी आवशुं एणे गेह ॥ ४ ॥ तापस रूप धर्यां नलां, पाटलीपुर मनोहार ॥ उत्तर दिशि पोले संचर्यां, द्विजशालाए तेणी वार ॥ ५ ॥

### ढाल पहेली.

गोकुल गामने गोंदरेरे, म करो लुटालुट, मारा वालारे, हुं नहीं जाउं मटी वेचवारे—ए देशी.

नेर वजाडी रुयमीरे, घंटा तणो कीधो नाद ॥ मारा साजनरे॥ सिंहासन वेठा चमीरे, विप्र आव्या करवा वाद ॥ मा० ॥ कौतिक वात सुणजो सहुरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

॥ मा० ॥ वाद वदा तुम आत

तापस देखी अचंतीयारे, नइ एक बोल्यो मन रंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, नेर व- घणारे, प्रथम वचन करुं नंग ॥ मा० ॥ को० ॥ २ ॥ घंटा धंधोली अम तणीरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ जावी वली आप ॥ मा० ॥ चांप्युं सिंहासन हेमतुंरे, तेहनो देजो एम जवाप ॥ मा० ॥ विनोद कारण वाजां को० ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयोरे, सांजलो विप्र विचार ॥मा०॥ विनोद कारण वाजां वाड्यांरे, सिंहासन बेठा अमे सार ॥ मा० ॥ को० ॥ ४ ॥ वेठा तुमने नवि गमेरे, उतरीए नीचा ततकाल ॥ मा० ॥ वाद न जाणुं होय केहवोरे, जण्या नहीं निशाल ॥ मा० ॥ को० ॥ ५ ॥ विप्र वचन तव उच्चरेरे, सांजलो तापस राज ॥ मा० ॥ किहां थकी तुमे आवीयारे, कोण उपन्यो ठे काज ॥ मा० ॥ को० ॥ ६ ॥ कोण कुले तमे उपन्यारे, कोण ठे तमारी जात ॥ मा० ॥ वास निवासे किहां रहोरे, उत्तर देउ अम भ्रात ॥ मा० ॥ को० ॥ ७ ॥ मनो- वेग तव बोलीयोरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ साचुं कहेतां सुख नहींरे, जूठे बो- ले लहीए मार ॥ मा० ॥ को० ॥ ८ ॥ तरती शिला वली जेणे कहीरे, जेणे कह्यो मर्कट ना- च ॥ मा० ॥ असंजव वाक्य लवता थकारे, ताडन लह्युं तेणे घाट ॥ मा० ॥ को० ॥ ९ ॥ मूरख मोटा होये घणारे, सत्ता मांहीं नर वली जेह ॥ मा० ॥ विवेक विचार जाणे नहींरे, शुं कहीए आगल तेह ॥ मा० ॥ को० ॥ १० ॥ द्विजवर वाणी बोलीयारे, तापस

कहो तुमे सार ॥ मा० ॥ मोटा मूरख ते किसारे, बोलो तेह अधिकार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ ११ ॥ मनोवेग तव उचरेरे, सुणजो विप्र विचार ॥ मा० ॥ मूरख कथा तुमने कहुं रे, श्रुतसागर तुमे पार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १२ ॥ सभा मांहीं मूरख नरेरे, कोइ होशे द्विजवर आज ॥ मा० ॥ तो खोटी कथा करे मुज तणीरे, नवि सरे अमारो काज ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १३ ॥ मूरख होय ते शुं करेरे, सुणजो कथानो समाज ॥ मा० ॥ एक चित्ते मौनज धरीरे, हरख उपजे जेम आज ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ चार नर मारग सांचर्यारे, मूरख मोटा वली तेह ॥ मा० ॥ मुनिवर एक सामो मल्योरे, उत्तम चारित्र गेह ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १५ ॥ मौन धारी जोग आगलोरे, सुमति गुपति व्रत धार ॥ मा० ॥ नगन मुद्रा परिसह सहेरे, भव्य जीव भवजल तार ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ एहवो मुनिवर दीठोरे, तव मूरख चारे चंग ॥ मा० ॥ वांद्यो मुनिवर भाव धरीरे, तव जतिवर बोल्यो रंग ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ धर्मवृद्धि तुमने होजोरे, वचन सुणी चारे ताम ॥ मा० ॥ मारग चाल्या मलपतारे, जोजन दोढ गया जाम ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ चोथा खंड तणी कहीरे, प्रथम ढाल रसाल ॥ मा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥ मा० ॥ कौ० ॥ १९ ॥

## दुहा.

तव मूरख एक बोलीयो, आशिष दीधी मुनिराज ॥ धर्मवृद्धि मुजने कही, सरशे अमारो काज ॥ १ ॥ बीजो कहे मुजने कही, त्रीजो बोले तेणी वार ॥ चोथो कहे मूजने कह्यो, आशिष मुनि गुणधार ॥ २ ॥ मांहोमांहे वलगे घणुं, पात्रा आव्या तिणे गाम, मुनिवर तिहां दीठा नहीं, न्याय कारण अन्य ग्राम ॥३॥ बुद्धिवंत व्यवहारीआ, तेहने जइ मल्या ताम ॥ न्याय करो शेठ अम तणो, महा मूरख अम नाम ॥४॥ तव शेठे ते पूछीया, केशी मूरखाइ अंग ॥ चार मध्ये एक बोलीयो, मूरख मूरखाइ चंग ॥ ५ ॥

## ढाल बीजी.

हुंक अने टोका वचेरे, मेंदीनां दोय रूंख, मेंदी रंग लागो—ए देशी.

मारे मंदिर दो नारी अछेरे, चंगी निरंगी सुखखाण ॥ साजन सांभलो ॥ एक दिवस सूतो सज्यारे, थयो निद्रावश आण ॥ सा० ॥ १ ॥ तव भामनी थावी बेहुरे, सूती मावे जमणे पास ॥ सा० ॥ एकेको हाथ मारो ग्रहीरे, हृदय उपर करी आस ॥ सा० ॥ २ ॥ तेणे अवसर मुज मंदिररे, दीपक हतो एक चंग ॥ सा० ॥ तव उंदर वलग्यो आवीरे, दीवट ताणी चाल्यो रंग ॥ सा० ॥ ३ ॥ मुज उपर उंचो रहीरे,

मारग नेत्र पाडी वाट ॥ सा० ॥ में मनशुं विचारीयुं रे, इस्से फरी टालुं उतपात ॥
सा० ॥ ४ ॥ जो मायो हाथ चालवुं रे, तो रंगी करे मुज रीस ॥ सा० ॥ जमणो हाथ
जो फेरवुं रे, चंगी करेशे इणे शीश ॥ सा० ॥ ५ ॥ नारी नेह तुटे रखे रे, नेत्र तणो
नहीं काज ॥ सा० ॥ मायो चक्षु तव पड्यो रे, नाम दीधो शुक्रराज ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी
नेहने कारणे रे, नेत्र तणी करी हाण ॥ सा० ॥ महा मूरखपणुं माहरुं रे, विचारो तमे बुद्धि
जाण ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव बीजो नर एम भणे रे, मुज मूरखनी सुणो वात ॥ सा० ॥ मुज घर नारी
बे सही रे, खरी रीठमी नामे ख्यात ॥ सा० ॥ ८ ॥ जमणो पग खरीने दीयो रे, मायो
रीठमीने ताम ॥ सा० ॥ एणी परे सुख हुं भोगवुं रे, महीला सरसो काम ॥ सा० ॥
॥ ९ ॥ एक दिवस परे हुं गयो रे, खरी आवी जल लेय ॥ सा० ॥ जमणो पग पखाल-
वा रे, रीठमी जोय दृष्टि देय ॥ सा० ॥ १० ॥ जब खरी जमणो धोइ गइ रे, मायो
उपर में धर्यो पाय ॥ सा० ॥ तब रीठमी कोपे चढी रे, मुसल आणी कर्यो घाय ॥
सा० ॥ ११ ॥ जमणो पग मुज भांजीयो रे, तब खरी करी घणो रोष ॥ सा० ॥ हुं मोटी
कुलनी रीठमी रे, मान मत्सर अति शोष ॥ सा० ॥ १२ ॥ निज पतिने हुं नहि धरे रे,
अन्य पुरुषशुं रमे रात ॥ सा० ॥ तब रीठमी कहे मुने कह्यो रे, आपणी टांगो आ

चूंकी जात ॥ सा० ॥ १३ ॥ चोरे चोवटे तुं रमेरे, अन्य जाणे सहु लोक ॥ सा० ॥ नरतार आपको पाधरोरे, नाक कान वेदे बीजो रोक ॥ सा० ॥ १४ ॥ तव खरीने चमी रीसभीरे, सबलो मुसल कर लीध ॥ सा० ॥ प्रहार मेल्यो पग उपरेरे, चरण भाग्यो खोभो कीध ॥ सा० ॥ १५ ॥ मारो पग तें नांजीयोरे, तारो पग कयों में नंग ॥ सा० ॥ साट साटुं वल्युं आपणुंरे, हवे वेहु शोकयोमां रंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ पग वेहु फूटी नांजीयारे, नारी में डुहवी न लगार ॥ सा० ॥ मोटो मूरख मुज समोरे, कोइ नवि दीसे गमार ॥ सा० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी कहीरे, ढाल बीजी सुविशाल ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य नेमनेरे, होजो मंगल माल ॥ सा० ॥ १८ ॥

## दुहा.

तव त्रीजो एणी परे जणे, सांनलो बुद्धि निधान ॥ मुज सरीखो मूरख नहीं, श्री गुरु केरी आण ॥ १ ॥ नागर लोक पूछे तदा, कहे मूरख तुज वात ॥ जेम न्याय विचारी कीजीए, विनोद होये विख्यात ॥ २ ॥

## ढाल त्रीजी.

नाह गयो तो वाणीएरे, लाव्यो चंपानो फूल ॥ नानो नाहलोरे—ए देशी.

तव त्रीजो मूरख कहेरे, तुमे सहु सांजलो आज ॥ साजन सांजलोरे ॥ मुज मूरखपणुं वरणवुंरे, जेम सरशे मुज काज ॥ सा० ॥ १ ॥ एक दिवस नारी अमेरे, मलीयां एकण सेज ॥ सा० ॥ होड पाकी मौने रह्यांरे, एम बोली बहु हेज ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ जे हारे ते होडे दीएरे, घृत खांम जरी दश पोली ॥ सा० ॥ साकर साथे मिश्र करीरे, सुगंध घृतमां जबोली ॥ सा० ॥ ३ ॥ एम परठी मौन रह्यांरे, नर नारी बहु चंग ॥ सा० ॥ तेहवे तस्कर आवीयारे, धन हरवा उत्तंग ॥ सा० ॥ ४ ॥ खात्र देइ घरमां गयोरे, वित्त काढ्युं अपार ॥ सा० ॥ आजरण वस्त्र घणां लीयांरे, मोती लीयां दीनार ॥ सा० ॥ ५ ॥ तोही अमे नवि बोलीयांरे, होम हारवा माट ॥ सा० ॥ स्त्री शणगार उतारीनेरे, लेवा लाग्यो तव घाट ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी कहे कंत सांजलोरे, चोरे हर्युं द्रव्य कोम ॥ सा० ॥ हसी करी में ताली दीधीरे, नारी तुं हारी होम ॥ सा० ॥ ७ ॥ पोली घृत खांडे जरीरे, मुज आपो तुमे आज ॥ सा० ॥ तस्कर वित्त लेइ गयारे, लोक मांहीं लागी लाज ॥ सा० ॥ ८ ॥ एवी कथा ठे मुज तणीरे, महा मूरख मारो नाम ॥ सा० ॥ सकल लोक विचारजोरे, धर्म बुद्धिनो हुं वाम ॥ सा० ॥ ॥ ए ॥ चोथो नर तव बोलीयोरे, स्वकीय कथा परसंग ॥ सा० ॥ मुज मूरखपणुं

सांजलोरे, जेम होये तुमने रंग ॥ सा०॥ १० ॥ एक दिवस सासरे गयारे, त्री आणीम
काज ॥ सा० ॥ तव माता मुज शिखव्युंरे, सांजल पुत्र तुं आज ॥ सा० ॥ ११ ॥
सासरे नित्य जमीए नहींरे, उदर नरीने अपार ॥ सा० ॥ एक दिवस जूख्या रहोरे,
बीजे पण थोमो आहार ॥ सा० ॥ १२ ॥ शिखामण देइ मोकल्योरे, वहु लेवाने काज ॥
सा० ॥ सासरे गयो उलट धरीरे, सहुने मल्यो हुइ लाज ॥ सा० ॥ १३ ॥ खेम
कुशल पूछी सालकेरे, जमवा उठो जगनी घोर ॥ सा० ॥ अमे कह्युं तमे सांजलोरे,
जमी आव्यो हुं घोर ॥ सा० ॥ १४ ॥ बीजे दिन लोक आवीयारे, जमण तणो नहीं
लाग ॥ सा० ॥ रात पडी साला बोलीयारे, जमाइ आरोगो महा जाग ॥ सा० ॥
॥ १५ ॥ साला प्रते हुं बोलीयोरे, निशिजोजन नहीं चंग ॥ सा० ॥ जूख नथी मुज
अति घणीरे, अबाधा उपनी वली अंग ॥ सा० ॥ १६ ॥ सासुए मनशुं विचारीयुंरे,
हलुउं कीजे अन्न ॥ सा० ॥ चोखा जीजव्या वाटलीरे, कुर निपावाने मन्न ॥ सा० ॥
॥ १७ ॥ जव मागशे तव पीरसशुंरे, एवो करी सुविचार ॥ सा० ॥ कचोलुं जरी तंडुल
मूकीयोरे, ढोलीया हेठे आधार ॥ सा० ॥ १८ ॥ मुज महिला तव सांचरीरे, आंगणे
लघु नित काज ॥ सा० ॥ नवरुं देखी में चिंतव्युंरे, तेह सांजलो धनराज ॥ सा० ॥

॥ १९ ॥ क्षुधाए पीड्यो रही नव शकुंरे, दोय लांघण थइ मुज ॥ सा० ॥ तांडुल पेट में मुख नयुंरे, नहीं जाणे कोइ गुज ॥ सा० ॥ २० ॥ तव नारी आवी मुज तणीरे, मुख दीठुं विकराल ॥ सा० ॥ बोलाव्यो हुं बोलुं नहींरे, जामनी कीयो बुंवाल ॥ सा० ॥ २१ ॥ खंड चोथानी ए कहीरे, ढाल त्रीजी गुणखाण ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहीरे, नेमे उलट आण ॥ सा० ॥ २२ ॥

दुहा.

मुज स्वामी मुख शुं थयुं, धाजो जाइ बाप ॥ लोक बहु आवी मल्यो, कोलाहल संताप ॥ १ ॥ वेगे वैद बोलावीया, काह्या सात ने पांच ॥ ते आव्या उलट धरी, ओषध मेलो करी सांच ॥ २ ॥ रोग परखे लोक अति घणा, कर्णशूल गंमोल ॥ एक कहे पीत कोपीयो, जोग मंगावो मंमोल ॥३॥ उतारणां करो शक्तिनां, कुलदेवीने जोग ॥ गोगा गणेश जक्ष पुजतां, टले गलानो रोग ॥४॥ वेगे वैद निहालीयो, खाट हेठे जयों पाट ॥ तांडुले जयों कंठ समो, मध्ये दीठो घाट ॥ ५ ॥ मस्तक धूणी ते बोलीया, न जीवे जमाइ आज ॥ तांडुल व्याधि ए उपनी, गलामां रोग असाज ॥६॥ तांडुल सरिखा उपन्या, कीटक विषम छे अंग ॥ वित्त वस्त्र घणां आपजो, जमाइने करुं चंग ॥७॥

वस्त्र काढी गाल देईयो, साही रथा जण चार ॥ धुंधारव करता थका, काढ्या तांडुल तेणी वार ॥ ८ ॥ रुधिराला ते नीकव्या, वेदे सीधां वस्त्र दान ॥ गालस्फोटक मुज नाम दीयो, मूरख मोटो नहीं सान ॥ ९ ॥ मूरख चारे कथा कही, सांजली सघले लोक ॥ न्याय नहीं ए तुम तणो, शुं कहीए अमे फोक ॥ १० ॥ धर्मबुद्धि मुनीश्वरे कही, महा मूरख तमे चार ॥ वडयाक तजी जाउ मंदिरे, एकेक अक्षर लेयो तार ॥ ११ ॥ तव द्विजवर ते बोलीया, सांजलो तापस वात ॥ एवो मूरख अमसां नहीं, कहो हवे तमारी ख्यात ॥ १२ ॥

## ढाल चोथी.

एणे सरोवरी यारी पाली, उनी दोय नागरी मोरा लाल—ए देशी.

मनोवेग जणे द्विजराज, सुणो तमे सहु मली ॥ मारा लाल ॥ सु० ॥ साकेता नामे नगरी, अछे ते निरमली ॥ मारा लाल ॥ अ० ॥ विश्वजूति नामे ब्राह्मण, एक तिहां रहे ॥ मारा लाल ॥ ए० ॥ तेहने कन्या छे एक, जोबन वयमां वहे ॥ मारा लाल ॥ जो० ॥१॥ मुज पिता तणी ताम, विवाह ते मेलीयो ॥ मा० ॥ वि० ॥ मांडयो विवाह मोच्छव, मनोरंगे नेलीयो ॥ मा० ॥ म० ॥ कीधो हाथ मेलावो, वर कन्या बेहु तणो

क० ॥ पीहर ते रही कृष, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास वाडा,
पूरण थया आवीया ॥ मा० ॥ पू० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥
घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख ऊनो विनति,
करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पूछे तापस जणी ॥
मा० ॥ पू० ॥ भवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस
तमे सांभलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं डुकाल, थाशे सही
संनवी ॥ मा० ॥ था० ॥ ९ ॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट
मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, डुकाल
एम लागीए ॥ मा० ॥ डु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पाखीए ॥ मा० ॥ था० ॥
॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं
डुकाल मांहीं, तो मातुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदे-
शमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥
दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार,
सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

क० ॥ पीहर ते रही कुण, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास वाडा, पूरण थवा आवीया ॥ मा० ॥ पु० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख उनो विनति, करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां तात, पुछे तापस नणी ॥ मा० ॥ पु० ॥ भवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांभलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांहीं डुकाल, थाशे सही संभवी ॥ मा० ॥ था० ॥ ९ ॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांहीं, डुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ डु० ॥ बोल्या तापस वयण, थाशे एम पालीए ॥ मा० ॥ था० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं डुकाल मांहीं, तो मालुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

क० ॥ पीहर ते रही कुख, करे वात तेहनी ॥ मा० ॥ क० ॥ ७ ॥ नव मास वाडा, पूरण थया आवीया ॥ मा० ॥ पू० ॥ जमवा कारण तापस, घणा तेडावीया ॥ मा० ॥ घ० ॥ विश्वभूतिए अघरणी, करी जमाडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ सनमुख ऊनो विनति, करे हाथ जोडीया ॥ मा० ॥ क० ॥ ८ ॥ नारी तणो तिहां ताल, पूछे तापस जणी ॥ मा० ॥ पू० ॥ जवितव्यतानो विचार, कहो बुद्धिना धणी ॥ मा० ॥ क० ॥ कहे तापस तमे सांजलो, वात कहुं नवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ तुम देश मांही डुकाल, वाशे सही संजवी ॥ मा० ॥ वा० ॥ए॥ बार वरसांनो काल, सही करी जाणजो ॥ मा० ॥ स० ॥ पेट मांहींथी में सुणी, वाणी परमाणजो ॥ मा० ॥ वा० ॥ हुं हवे रहुं पेट मांही, डुकाल एम लागीए ॥ मा० ॥ डु० ॥ बोल्या तापस वयण, वाशे एम पालीए ॥मा०॥ वा० ॥ ॥ १० ॥ सुकाल थया पछी नीकलुं, तो सुखी थाइए ॥ मा० ॥ सु० ॥ जो नीकलुं डुकाल मांही, तो मातुं थाइए ॥ मा० ॥ तो० ॥ ते तापस तेणी वार, चाल्या परदेशमां ॥ मा० ॥ चा० ॥ बार वरस फरी आव्या, नवनवा देशमां ॥ मा० ॥ न० ॥ ११ ॥ दीधो आदरमान, आहार घणो आपीयो ॥ मा० ॥ आ० ॥ पाम्या हरख अपार, सुकाल नाम थापीयो ॥ मा० ॥ सु० ॥ उदर मांहींथी वात, सुणी में तेहवे ॥ मा० ॥

मु० ॥ नीकळो हुं गर्भ मांहींथी, शीघ्र थइ एहवे ॥ मा० ॥ शा० ॥ १२ ॥ खाउं ग्याउं वारोवार, करुं हुं तव जदा ॥ मा० ॥ क० ॥ जमण दीयो मुज मात, कहुं तुमने मुदा ॥ मा० ॥ क० ॥ तापस कहे तेणी वार, ए पुत्र कुलक्षणो ॥ मा० ॥ ए० ॥ धन धान्यनो संहार, करे कुल लक्षणो ॥ मा० ॥ क० ॥ १३ ॥ जे भूषणे तुटे कान, ते सोने शुं कीजीए ॥ मा० ॥ ते० ॥ कोरुं धान जो होय, वाडे नाखी दीजीए ॥ मा० ॥ धा० ॥ जा जारे मुज आगलथी, मुख लेइ पापीया ॥ मा० ॥ मु० ॥ नहीं तो फेडीश नाम, सही दुःख व्यापीया ॥ मा० ॥ स० ॥ १४ ॥ मंदिर माहरा मांहीं, हवे तुं मत रहे ॥ मा० ॥ ह० ॥ सांभळी मातानां वचण, कुमर तिहांथी वहे ॥ मा० ॥ कु० ॥ चाल्यो जाउं परदेश, तापस टोलामां भल्यो ॥ मा० ॥ ता० ॥ रूपिनो लीधो वेश, अयोध्या आवी मल्यो ॥ मा० ॥ अ० ॥ १५ ॥ तिहां परणी मुज माय, दीठी में ते-हवे ॥ मा० ॥ दी० ॥ तापस प्रणमी पाय, पूछ्या में एहवे ॥ मा० ॥ पू० ॥ तव तापस कहे एम, सांभल तुं वारता ॥ मा० ॥ सां० ॥ स्मृति पुराण जे शास्त्र, मांहीं अमे धारता ॥ मा० ॥ मां० ॥ १६ ॥ अक्षत योनि परणी ते, नहीं दोष एहमां ॥ मा० ॥ न० ॥ जे नारीनो नाथ, गयो परदेशमां ॥ मा० ॥ ग० ॥ चार वरष लगे वाट,

जो नरतार नाव्यो, करे बीजो लेशमां ॥ ते जुवे वेशमां ॥ मा० ॥ ते० ॥ मा० ॥ क० ॥ १७ ॥

स्मृत्युक्तं—सक्रियांचा प्रदत्ता या, यदि पूर्वतरो मृतः ॥
सा चेदक्षतयोनिः स्यात, पुनः संस्कारमर्हति ॥ १ ॥

पुत्रवती जे नार, मुळ धणी तेहनो ॥ मा० ॥ मु० ॥ वेठी रहे आठ वरस, लगे मान एहनो ॥ मा० ॥ ल० ॥ फरी बीजो नरतार, करे नारी वली ॥ मा० ॥ क० ॥ तो शास्त्रे कह्यो दोष, नारीने जाये टली ॥ मा० ॥ ना० ॥ १८ ॥

श्लोकः—अष्टौ वर्षाणि सपुत्रा, ब्राह्मणी पतितंपति ॥
अप्रसूता च चत्वारि, पुरतोन्यः समाचरेत् ॥ २ ॥

परणी ले तुम माय, विचार तेहनो नहीं ॥ मा० ॥ वि० ॥ ते सांभलीने हुं आव्यो, ब्रह्मशाला मही ॥ मा० ॥ ब्र० ॥ कौतिक कारण नेर, घंटानाद में कीयो ॥ मा० ॥ घं० ॥ घाल्यो तापस साथ, तिहां वेश में लीयो ॥ मा० ॥ ति० ॥ १९ ॥ चोथा खंडनी ढाल, चोथी ए सही ॥ मा० ॥ चो० ॥ रंगविजयना शिष्य, नेमविजये कही ॥

मा० ॥ ने० ॥ सांजलजो सहु कोय, आगल वात छे घणी ॥ मा० ॥ आ० ॥ वचनमां न करशो व्याघात, राखो रंग सहु मली ॥ मा० ॥ रा० ॥ २० ॥

दुहा.

तव ब्राह्मण एम बोलीया, असत्य वचन गमार ॥ पुरुष तुज लाग्या थकी, केम रहे गर्न आधार ॥ १ ॥ गर्न मांहीथी केम सांजले, तापस कह्यो जे विचार ॥ बार वरस कहो केम रहे, उदरमां गर्न ते सार ॥ २ ॥ जात मात्र बालक कहो, केम ते वेश धरंत ॥ तुज सरीखो खोटो नहीं, मही मंमल जोयंत ॥ ३ ॥ मनोवेग तव बोलीयो, सांजलो द्विजवर वाच ॥ स्मृति पुराणे जे कह्युं, ते शुं वचन असाच ? ॥ ४ ॥ तव बाडव कोपी कहे, रे तापस अजाण ॥ वेद पुराणे जे कह्युं, ते कहो अमने वाण ॥ ५ ॥

ढाल ७ मी.

मेडते नगारो वाजीयोरे ढोला, फकीरे दवा में गोर ढोला, साजी मत जाजोरे सगताउंत ढोला—ए देशी.

मनोवेग तव बोलीयोरे, साजन सांजलो ब्राह्मण वात ॥ साजन तुम जयथी शुं घणुंरे, सा० केम कहुं शास्त्र विख्यात ॥ सा० ॥ १ ॥ साजन सहु सुणजोरे, आगे जे होय

॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ तव द्विजवर बोल्या वलीरे, सा० सुणजो तापस ... ॥ ... शंका भय मेली करीरे, सा० पुराण कथा कहो रंग ॥ सा०॥ २ ॥ मनोवेग चित्त हरखीयोरे, सा० बोल्यो तव मनोहार॥सा०॥ वेद पुराण माने नहीरे,सा० ते नर जाणो गमार ॥सा०॥ ३ ॥ मनोवेग तापस तणीरे, सा० वाणी पुराणनी अनंग ॥सा०॥ अंग उपांग प्रसिद्ध छेरे, सा० वेद माने ते चंग ॥ सा०॥ ४ ॥ चिकित्सा वली वैद्यनीरे, सा० ज्योतिष शास्त्र देह आदि ॥ सा० ॥ लीधी आज्ञाए सहीरे, सा० शास्त्र वचन अनादि ॥ सा० ॥ ५ ॥

उक्तं च–पुराणमानवोधर्म–सांगोवेदचिकित्सितम् ॥
आज्ञासिद्धानि चत्वारि, न हंतव्यानि हेतुभिः ॥ १ ॥

सर्व वेद रीतीनी कहीरे, सा० वाणी करे अप्रमाण ॥ सा० ॥ ते मात्र हत्यारो कह्योरे, सा० नवनव होये अजाण ॥ सा० ॥६॥

उक्तं च–मंतव्यं व्यासवासिष्टं, वचनं वेदसंयुतम् ॥
अप्रमाणं तु यो ब्रूयात्, स भवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १ ॥

तव ते द्विजवर बोलीयारे, सा० कहो तापस ए सार ॥ सा० ॥ फोकट वचन मानीरे, सा० पाप न लागे लगार ॥ सा० ॥ ७ ॥ जेम अगनि ऊनो घणुंरे, सा० कहेतां न

वली अंग सार ॥ सा० ॥ तेम शास्त्र तणो दोष कहाम्तां, सा० कहेतां न पाप लगार ॥
सा० ॥ ८ ॥ तव वचन सुणीने एशुं रे, सा० जय तजी बोल्यो ऋषिदेव ॥ सा० ॥ हुं
तो वेद पुराणनारे, सा० दोष सुणो कहुं खेव ॥ सा० ॥ ९ ॥ एक नगर मांहीं रहेरे,
सा० नारी दोय अति सार ॥ सा० ॥ एक जागी बीजी रथीरे, सा० जोवनजर मनोहार
॥ सा० ॥ १० ॥ बाल कुंवारी ते बेहुरें, सा० बेहु सूती सेहेज मोफार ॥ सा० ॥ ते बेहु
नारी संजोगथीरे, सा० जायो सुत सुविचार ॥ सा० ॥ ११ ॥ नाम दीधुं तव तेहनोरे, सा०
जागीरथी पुत्र चंग ॥ सा० ॥ ए तो जारत पुराणमांरे, सा० वखाण्यो मनने रंग ॥ सा० ॥
॥ १२ ॥ जुठे नारीना जोगथीरे, सा० जायो पुत्र सुविचार ॥ सा० ॥ तो नारी नर संजो-
गथीरे, सा० हुं जनम्यो तेम सार ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवर दृष्टांत वली कहुंरे, सा० सांजलो
द्विजवर राज ॥ सा० ॥ जेम संदेह मन जांजशेरे, सा० सरशे तमारां काज ॥ सा० ॥ १४ ॥
गंधारी एक नारीएरे, सा० धृतराष्ट्र करे ए काज ॥ सा० ॥ एवो निश्चय कीधो तिहांरे,
सा० सांजलो तुमे द्विजराज ॥ सा० ॥ १५ ॥ तव नारी गंधारी सहीरे, सा० रोमांचित
हुइ जाम ॥ सा० ॥ तव नारी तणे धरमें हुइरे, सा० माथे हुइ ते ताम ॥ सा० ॥ १६ ॥
चोथे दिवसे नारीएरे, सा० स्नान कर्युं तेणी वार ॥ सा० ॥ पठी वस्त्र विहुणी हतीरे, सा०

फणस आलिंगन अपार ॥ सा० ॥ १७ ॥ तेह काल समे पत्नीरे, सा० मास गया जब एक ॥ सा० ॥ तेह नाथ परण्यो तिहांरे, सा० धृतराष्ट्र धरनो विवेक ॥ सा० ॥ १८ ॥ तव पुष्पवती नारी तणीरे, सा० नवि गइ मुखनी छांह ॥ सा० ॥ कंत नव थकी नारी-एरे, सा० नर विष्णुनी धरी चांह ॥ सा० ॥ १९ ॥ तेह वृत्तांत गर्भनोरे, सा० नाव कह्यो तेणी वार ॥ सा० ॥ नर नारायणे करीरे, सा० मनशुं करीय विचार ॥ सा० ॥२०॥ रंगविजय तस शिष्यनेरे, चोथा खंड तणी कहीरे, सा० पांचमी ढाल ए सार ॥ सा० ॥ सा० नेमविजय जयकार ॥ सा० ॥२१॥

दुहा.

तव कुटुंब तेमाश्रीया, अंधक विष्णु आदि सार ॥ धृतराष्ट्र चेसासीने, कह्यो तेहने सुविचार ॥ १ ॥ तव सहुने संतोषीया, दिवस गया तेणी वार ॥ एक दिवस गंधारीए, फणस माहींथी, सुत नीकल्या जात एक ॥ ए तो जारते फणरा जाणो उदार ॥ २ ॥ ते तो फणस माहींथी, सुत नीकल्या जात एक ॥ ए तो जारते जाणीशुं, तुम तणे शास्त्र विवेक ॥ ३ ॥ मुज माता ने तातने, संजोगे हुवो छुं सार ॥ तो मुज माता पिता तणो, केम कीजे ते विचार ॥४॥ तव पाडव बोल्या सहु, तुम तणां चननो रास ॥ तणे तापस मुडा नली, नवि नाख्यो असत्य ॥ ५ ॥ पण सांभलो एक वात-

में, बोल्यो खोटो जेम ॥ गर्ज थकी केम सांजल्युं, खोटुं वयणज एम ॥ ६ ॥ एह वचन केम मानीए, सांजलो तापस राय ॥ एह कथा अमने कहो, मन धरी बहु पसाय ॥७॥

## ढाल सातमी.

प्रीतकी न कीजेरे नारी परदेशीयारे—ए देशी.

वचन सुणी तव मनोवेग बोलीयोरे, सांजलो वाक्य तुमे विचार ॥ गर्ज मांहींथी साद ते में सुएयोरे, वाद निवारुं ते निरधार ॥ सुणजो साजन जे कहुं वातकीरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महाजारत मांहे वाणी जे कहीरे, ते नवि जाणो सुख अजंग ॥ एक मना थइ सुणजो सहु तमेरे, संदेह निवारण ए उत्तंग ॥ सु० ॥ २ ॥ जादव वंशे वसुदेव जाणीएरे, तेनी बेटी अमृत वाण ॥ रूप कला विभ्रम विलासनीरे. सुजड्रा नाम गुण-खाण ॥ सु० ॥३॥ विष्णु तणी ए जगनी जाणजोरे, अर्जुन वर कीधो जरतार ॥ गर्ज धर्यो सुजड्रा नारीएरे, पूरा मास हुवा जव त्यार ॥ सु० ॥ ४ ॥ असमाधि उपनी तव ते बालनेरे, कृष्ण कथा कहो जाइ विचार ॥ चक्रावो वर्णन करीने दाखव्योरे, सुजड्रा पामी निड्रा अपार ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रत्युत्तर नवि बोले को तिहांरे, गर्जे हुंकारो दीधो ताम ॥ नारायण तव मन विस्मय पड्योरे, ए कोइ पुरुष मोटो जाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ गर्ज

हुंकारो सुणीउं जेहवेरे, दामोदर चिंतवे तेह ॥ कथा सुणीने हुंकारा दीधार, [illegible]
वचन सही एह ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्विजवर कहे सहु साचुं कशुंरे, स्मृति पुराणे बोल्युं
जेह ॥ वली अमने एक विस्मय उपन्योरे, बार बरस रह्यो गर्भे तेह ॥ सु० ॥ ८ ॥
मनोवेग बोल्यो तव फरी वलीरे, ऋषि वचन न जाणो गमार ॥ मय नामा तापस छे
एक रुयडोरे, वनमें रहे निरधार ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक दिन रजनी सूतो छे तिहांरे, स्वप्न
दीठो निद्रामां ताम ॥ नारी सरसो जोग मनशुं करेरे, वीर्य स्खलित हुवो याम ॥ सु०
॥ १० ॥ ते वीर्य संग्रह्युं हाथ मांहीं जदारे, मनशुं कीधोरे विचार ॥ रखे मुज वीर्य फोक
जाये सहीरे, देखी हसशे नर नार ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोपीने वीर्यने लेइ पत्र कमल-
नुंरे, चीकुं वाली तेणी वार ॥ निरमल नदीना जल मांहीं तदारे, वेहेतुं मेल्युं
निराधार ॥ सु० ॥ १२ ॥ देडकीए ते खाधुं पांदकुंरे, गर्भ रह्यो उदर मांहीं ॥
तव तेहने ऋतुनो समो हतोरे, डुर्दरीने पेट रह्युं त्यांहीं ॥ सु० ॥ १३ ॥ स्त्रीनां लक्षण
प्रगट्यां अंगमेंरे, मास दिवस गया अपार ॥ जनम हुवो शुभ लगने करीरे,
उंच ग्रह उपन्या छे फार ॥ सु० ॥ १४ ॥ बेटीनुं नाम दीधुं मंदोदरीरे, रूप सोभागी
अभिराम ॥ माताने रूप जोवाथी होंश घणीरे, बोलावे लेइ नाम ॥ सु० ॥ १५ ॥

एहवुं रूप केनुं नवि होयरे, एहने देखतां सालस जाय ॥ कीधो विचार तेणे एम चिंत
धीरे, शोह कमलदले मेली माय ॥ सु० ॥ १६ ॥ स्नान करेवा निज जाये वहीरे,
नदीए थावे मय रुपि सार ॥ कमल उपर दीठी ते कुमारिकारे, तापस चिंतवे मन
मोझार ॥ सु० ॥ १७ ॥ मुज वीर्य थकी उपनी ए बालिकारे, ते कारण मुज बांधे
नेह ॥ मादरी पुत्री होइ संसारमारे रूप अद्भुत दीसे एह ॥ सु० ॥१८॥ नाम थाप्युं
बेटीनुं मंदोदरीरे, सहु आव्या निज स्थानक ताम ॥ जतन करीने जमाडे बालि-
कारे, जोबनवंती होइ जाम ॥ सु० ॥ १९ ॥ चोथा खंड तणी कही ढालमीरे, रंगवि-
जय कवि सार ॥ श्राता सांभळजो सहु एक मनारे, नेमविजय जयकार ॥ सु० ॥२०॥

दुहा

एक दिन ऋतुवंती हुइ, कांपीन तापसनी सार ॥ वीर्य तणी स्परशी थइ, पेहेरी पुत्रीए तेणी वार ॥ १ ॥ ते कांपीन परवेशथी गर्भ रह्यो तिहां मांही ॥ दिन दिन पामे अनुक्रमे, कुमरीने मुख छांहीं ॥ २ ॥ तापस जाणे चित्तमां, मुज वीर्य निरधार ॥ गर्भ धर्यो ए कुमरीए, होशे कोइक अवतार ॥ ३ ॥ जो अवर रूपि कोइ जाणशे, तो हसशे निश दिश ॥ लाज शरम जाशे खरी, श्ये मुख बोलीश जीह ॥ ४ ॥

पहेथी करी विचारणा, गर्नने राखुं गोप ॥ खीलुं मंत्र जंत्रे करी, कोइ नवि जाणे लोप ॥ ५ ॥ कमंडल लेइ हाथमां, जल छांटे नणो मंत्र ॥ जिहां लगे वर पामे नहीं, गर्न रहेजो मांही जंत्र ॥ ६ ॥ बेटी बोले बापने, गर्न खील्यो महा पाप ॥ तव मय तापस बोलीयो, नवितव्यताने प्रताप ॥ ७ ॥ राक्षस कुले लंकापति, विश्रवसु तात केके माय ॥ रावण परण्यो मंदोदरी, चार वरसनी अवधे थाय ॥ ८ ॥ रावणने पहेलो जाणजो, सात सहस गयां वर्ष ॥ रावणने पुत्र ए कलो, उपन्यो पाम्या हर्ष ॥ ए ॥ सात सहस वर्ष गये छते, इंद्रजित नाम कुमार ॥ चार वरस हुं रह्यो गर्नमें, तो शुं करो विचार ॥ १० ॥ सांनलीने द्विज बोलीया, सत्य वचन तुम सार ॥ जात मात्र थका तुमे, वेष लीधो निरधार ॥ ११ ॥ जे नारीए जनमीयो, फरी परणी ते नार ॥ तुम जनम थया पछी, केम परणी बीजी वार ॥ १२ ॥ दोय संदेह एवा थके, तेह निवारो आज ॥ जेम मत निश्चय अम तणा, सरे सहुनां काज ॥ १३ ॥

ढाल सातमी.

अमली लाल रंगावो वरनां मोलीयां—ए देशी.

मनोवेग कहे नाइ सांनलो, सूत्रकंठ तुमे छो सुजाणरे ॥ भ्रांति नाजे जेम

सपसी मन तणी, तेम बोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुर्ज ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिपिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अजागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, वीजुं नाम धर्यु वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोजव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ ऋषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउं कायानी साररे ॥ सुणो तपसी तव जणे कामनी, मुज तनु डुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुर्ज वेद व्यासरे ॥ मुछ कुंछने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख बोले जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोडी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो ऋपीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ ऋषि गयो, एकली

दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
रही वाखा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥ जेम कन्याए
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाख जण्यो तापस
वेद व्यास जाइउं, तास सरूप शुन्न देहरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
जेम हुवो, तेम मुजने क्रिज जाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उच्चरे, सुणो तापस
मुज जननी वखाणोरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
तुमे गो सुजाणरे ॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांनलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोनागी अनिरामरे ॥ घर छिद्र किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्न थयाे तव ते सूरज तणो, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
पछे पांकु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणो उमायोरे ॥स्मृ०॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांनलो बे कर जोमरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंम तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांनलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ०॥ ॥१८॥

सपसी मन तणी, तेम घोखुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुर्ड ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिपिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो, कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, वीजुं नाम धयुं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे बेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोजव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रुपि कहे अमशुं कृपा करो, दान देर्ड कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव जणे कामनी, मुज तनु डुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुर्ड वेद व्यासरे ॥ मुठ कुंठने कमंकल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख वोले जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोमी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रुपीश्वर थछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ रुपि गयो, एकली

दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
रही पाया जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, दीठी जोजनगंधा तामरे ॥ जेम कन्याए
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जायो तापस
वेद व्यास जाहर्‍ने, तास सरूप सुन तेहरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
तेम हुयो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस
मुज जननी वखाणोरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
तुमे छो सुजाणरे ॥ पछी विप्र सांनलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ कुंती नामे तेहनी
वृष्णि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोनागी अनिरामरे ॥ घर क्रिडे किरण सूरज तणां, पेगं कुंता काने
नामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्भ धयों तव ते सूरज तणो, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणो उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांनलो बे कर जोमरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंम तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांनलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ० ॥ ॥१८॥

सपसी मन तणी, तेम वोलुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुर्ज ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो, एक दिवस कीधो विहाररे ॥ गंगा नदी उपकंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम ठे तेहनो, कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे, वीजुं नाम धर्युं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे, नावे वेठो जोइ तस रूपरे ॥ जाग्यो मनोजव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रुषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउ कायानी सारीरे ॥ सुणो तपसी तव जणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध धारीरे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ जोग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुर्ज वेद व्यासरे ॥ मुठ कुंठने कमंमल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख वोले जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्संगरे ॥ कर जोमी लाग्यो तापस रूपे, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रुषीश्वर अठे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ए ॥ वनमां शिख देइ रुषि गयो, एकली

दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
रही घाखा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, तत्काल जण्यो तापस
वेद व्यास जाइउं, तास सरूप शुभ देहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ वखता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस
मुज जननी वखाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
तुमे छो सुजाणरे ॥ वली विप्र सांभलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ कुंती नामे तेहनी
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ पेटां कुंता काने
कुमारिका, रूप सोभागी अभिरामरे ॥ घर ठिड्ड किरण सूरज तणां, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्भ धर्यो तव ते सूरज तणो, करण तणी
पछे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणे उमायोरे ॥स्मृ० ॥१६॥ तेम हुं हुवो, वली
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांभलो बे कर जोडरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंड तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांभलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ०॥ ॥१८॥

सघली मन तणी. तेम थोभुं हुं हवे वाणरे ॥ स्मृति पुराण वेदमां जुउ ॥ ९. आंकणी ॥ १ ॥ मोटो पारासर रिषिमां कह्यो. एक दिवस कीधा विहाररे ॥ गंगा नदी उप-कंठे रही तिहां, नाव खेडे कन्या एक साररे ॥स्मृ०॥२॥ मछगंधा नाम छे तेहनो. कुरूप अनागणी देहरे ॥ गंधाय शरीर जोजन लगे. बीजुं नाम थयुं वली तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ॥ ३ ॥ दीठी एकली कन्या पारासरे. नाव वेहो जाइ नग्न रूपरे ॥ जाग्यो मनोभव तव स्तन देखीने, विकल थयुं तव स्वरूपरे ॥ स्मृ० ॥ ४ ॥ रुषि कहे अमशुं कृपा करो, दान देउ कायानी साररे ॥ सुणो तपसी तव तेणे कामनी, मुज तनु दुर्गंध धाररे ॥ स्मृ० ॥ ५ ॥ अजुआले लोक देखे सहु, अघटतुं केम कीजे काजरे ॥ देह कीधो सुगंध हाथ फेरीने, धुंयर केरी लोपी लाजरे ॥ स्मृ० ॥ ६ ॥ नेग विलास करतां अनुक्रमे, जनम हुउ वेद व्यासरे ॥ मुठ कुंठने कमंडल धर्यो हाथमें, वेद पुराण मुख पोखे जासरे ॥ स्मृ० ॥ ७ ॥ कोटे जनोइ कर जपमालिका, मृगचर्म दंड उत्तंगरे ॥ कर जोडी माग्यो तापस रूप, मात तात पाय मन रंगरे ॥ स्मृ० ॥ ८ ॥ आदेश पारासुरनो लही, तप मांड्यो गंगाने तीररे ॥ वेद व्यास मोटो रुषीश्वर अछे, ध्यान धरे महावंत धीररे ॥ स्मृ० ॥ ९ ॥ वनमां शिख देइ रुषि गयो, एकली

दीठी जोजनगंधा तामरे ॥
रही वाखा जामरे ॥ सांत राजा क्रीडा करवा आवीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ जेम कन्याए
स्मृ० ॥ १० ॥ सुगंध शरीर देखी रंजीयो, विवाह विधे परणी तेहरे ॥ स्मृ० ॥ ११ ॥ ततकाल जणो तापस
वेद व्यास जाइउं, तास सरूप शुज देहरे ॥ जेम परणी जोजनगंधा वली, तेम
जेम हुवो, तेम मुजने द्विज जाणोरे ॥ स्मृ० ॥ १२ ॥ वलता विप्र फरी एम उचरे, सुणो तापस
मुज जननी वखाणोरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, ते सहु वेद पुराणरे
तुमे ठो सुजाणरे ॥ सत्य वचन तुमे जे अमने कह्यां, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ अंधक-
॥ स्मृ० ॥ १३ ॥ वली विप्र सांजलो वारता, मनोवेग कहे अवर विचाररे ॥ कुंती नामे तेहनी
वृष्टि जादव रायनो, हरिवंशी नर सेवे पायरे ॥ स्मृ० ॥ १४ ॥ कुंती नामे तेहनी
कुमारिका, रूप सोजागी अजिरामरे ॥ घर ठिडे किरण सूरज तणां, पेठां कुंता काने
तामरे ॥ स्मृ० ॥ १५ ॥ गर्ज धर्यो तब ते सूरज तणो, काने करण ते बेटो जायोरे ॥
पठे पांडु राजाने परणावीने, अक्षत जोनि तणो उमायोरे ॥स्मृ०॥१६॥ करण तणी
माता कन्या कही, तो मुज जननीमां शी खोडरे ॥ जेम करण हुवो तेम हुं हुवो, वली
सांजलो बे कर जोमरे ॥ स्मृ० ॥ १७ ॥ चोथा खंम तणी ढाल सातमी, कही विशेष
करी विगताइरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, सांजलजो सहु चित्त लाइरे ॥ स्मृ०॥ ॥१८॥

दुहा.

उदायिन तापस अछे. तप जप करे उदार ॥ क्लेश करावे कायथी. तेणे वीहे नर नार ॥ १ ॥ एक दिवस सूता थका. स्वप्नमां जागवे काम ॥ वीर्य स्खलित हुवो तदा. मनशुं विचारे ताम ॥ २ ॥ वीर्य मूकवाने कारणे. गंगा गया ततखेव ॥ कमलमां वीर्य मूकीने. स्नान कर्युं तेणे हेव ॥ ३ ॥ रघुराजानी पुत्रिका. चंद्रमती नाम विवेक ॥ गंगा नदीए झीलवा, आवी एकाएक ॥ ४ ॥ पुष्पवती ते बालिका. कमलशुं कीधी पास ॥ पदम लइ नाके धर्युं. गर्भ रह्यो तेणे काल ॥ ५ ॥

ढाल आठमी.

बाघाना जावनीरे—ए देशी.

सगर्भा बेटी देखी मात. सांजल बेटीना तातहे ॥ ससनेही सुंदर ॥ अनाचार पुत्रीए कीधो, गर्भ पारको लीधोहे ॥स०॥ साजन सहुको सांजलो ॥ ए आंकणी ॥१॥ रघु राजाए लाज धरी मनमां, बेटी मूकी वन मांहे ॥स० ॥ बाघ सिंहना शब्द घणा थाय, दुःखे करीने जरायेहे ॥स०॥सा०॥२॥ ते वन मांहे तापस वास, बांहु तापस मोटा आसहे ॥स०॥ पशु करे जतन तापस तेहनो, नारीने मन पहनोहे ॥स०॥सा० ॥३॥ नागकुमर तेणीए

जण्यो सार, रूपे जाणे नागकुमारहे ॥ स० ॥ तव चंडमती एम कहे माय, पुत्र तुं तात जोवाने जायहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मजूस मांहे सुत घाल्यो जाम, गंगा प्रवाहे मेल्यो तामहे ॥ स० ॥ प्रवाह मांहे मजूस ते चाली, उदायिने दीठी कालीहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ आणी ठाम उघाडी जाम, पिताए पुत्र दीठो अभिरामहे ॥ स० ॥ सुत देखी उपन्यो बहु नेह, चंडमती आवी तव गेहहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ६ ॥ कुंवरी कन्या कहे छे सार, उदायिन तुं मुज भरतारहे ॥ स० ॥ विवाह करी तुमे परणो आज, जेम सरे वेहुनां काजहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ७ ॥ उदायिन तव बोल्यो जति, ए वात अमने नहीं घटतीहे ॥ स० ॥ तुज पिता परणावे सोय, तेह तारो भरतारज होय ॥ स० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तापसे जइ माग्यो रघु राय, वेटी अमने करो पसायहे ॥ स० ॥ नहींतो आपीने भस्मज करुं, के तुज मारुं के हुं मरुंहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ए ॥ राजा कहे वेटीने वरो, उदायिन तमे कोप परिहरोहे ॥ स० ॥ तापस तव जमाइ कर्यो, चंडमतीने वेगे वर्योहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १० ॥ वेद पुराणे बोल्यो एम, चंडमती परणी ते केमहे ॥ स० ॥ पुत्र जणे कन्या जे होय, पछी विवाह करो ते जोयहे ॥ स० ॥ सा० ॥ ११ ॥ जेम चंडमती कन्या कही सार, तेम मुज मातानो कशो विचारहे ॥ स० ॥ सूत्रकंठ कहे साची वात, तुमे कह्युं

से अंग विरचावशे ॥ स० ॥ सा० ॥ १२ ॥ मनोवेग वाहया गुणराज, पवनवेग संबोधन वाअहे ॥ स० ॥ वेद पुराण कथा कही सार, तुम आगम कहो विस्तारीहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १३ ॥ पुत्र अणी कन्या विवाह, श्रीमजाग उपजे गत ज्वारहे ॥ स० ॥ फागस श्राविगन नारी सार, शत वेगानी हुवा अवतारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १४ ॥ मुनद्धाना गर्भ सोजर्या शहर नारायण हुकारा उत्थहे ॥ स० ॥ दृढ़काय जणी मदादरी नार, गर्भ रह्या पिताना सारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १५ ॥ मास सहस्र थया त्रण वर्ष, पुत्र इद्रजित रावण हुवे ॥ स० ॥ पाराशुर आगवना नार, वेद व्यास सुत उपन्या सारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १६ ॥ कानें कर्ण जण्या दातार, कमठ सुगंधना गत थपारहे ॥ स० ॥ पूर्वापर हे विरोध अपार, तुम पुराण साचा न जगारहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १७ ॥ वासनां वसु साचे खेद, तुम पुराण नहीं साचा वेदहे ॥ स० ॥ सुधर्म आराधो जो वली तमे, जिन वाण्यु ते कहीए अमेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १८ ॥ चाया स्वरूनी आठमी ढाल, कहे श्रावक शात रसालहे ॥ स० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम जंपे, नेमविजय एम पयंपेहे ॥ स० ॥ सा० ॥ १९ ॥

### दुहा.

मनोवेग कहे सांभलो, पवनवेग तुमे आज ॥ स्मृति वेद पुराणनां, वयण विपरीत अकाज ॥ १ ॥ उपगार आपण जइ करी, कहेशुं तुमने सार ॥ जिनशासन मत रागनुं, सुणजो सार विचार ॥ २ ॥ पूर्व वनमां तव गया, रह्या अपूरव ठाम ॥ कर्ण कथा पांमव तणी, मनोवेग कहे ताम ॥ ३ ॥

### ढाल नवमी.

भण समरथ पीयु नानडो—ए देशी.

मित्र पवन सुण सांभलो, होजी पवनवेग गुणधार ॥ कुरुजांगल देशज लसो, होजी हस्तीनागपुर सार ॥ साजन सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुरु वंशी राजा हुवो, होजी सोमप्रभ श्रेयांस ॥ तेह परंपरा उपन्या, होजी नृपति घणा अगतंस ॥ सा० ॥ २ ॥ सांतनु सुत सोहामणो, होजी व्यास नाम गुणवंत ॥ रूपणी नामा नागनी, होजी पुत्र त्रण हुवा संत ॥ सा० ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र पहेलो नलो, होजी पांडु बीजो जेह ॥ त्रीजो विदुर मनोहरु, होजी करे राज्य सहु तेह ॥ सा० ॥ ४ ॥ पांडु कुंवर चिंता जयां, होजी गयो वन अभिराम ॥ कुसुम

जाजो वली तुमे सार ॥ रूपवंत थइ विलसजो, होजी कुंतीशुं घरबार ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नवमी ढाल चोथा खंमनी, होजी सांजलो बाल गोपाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, होजी नेमने मंगल माल ॥ सा० ॥ १६ ॥

## दुहा.

मुद्रकी लीधी रुयडी, चाल्यो सुरीपुर वास ॥ अदृश्य रूप लेइ करी, गयो कुंती आवास ॥ १ ॥ काम कुतूहल करी रमे, कुंतीशुं करे वात॥ रात्रि दिवस एम जोगवे, गया वासर सात ॥ २ ॥ पांडु कुमर निज घर गयो, गर्भ धर्यो कुंती कुमार॥ सुजद्रा जननीए जाणीयो, प्रगट गर्भ आकार॥ ३॥ गुप्तपणे घरमां रही, पुत्र जण्यो विख्यात॥ कुटुंब वेसी विचारीयुं, वाधशे अपवादपात ॥ ४ ॥ मंजूस मांही घाली करी, मूक्यो जमुना मांही ॥ चंपापुरी गइ वाधरी, आदित्य राजा छे त्यांही ॥ ५ ॥

## ढाल दशमी.

काली पीली वादली राज, वरसण लाग्यो मेह, साहीबोरे, मारो कवहीक घर आवे हो रंग लाय—ए देशी.

निज मंदिर आणी करी राज, मजूस उघाडी जाम ॥ बालक दीठो रुयडो राज,

संतोष पयो वली ताम ॥ मारा साजनरे ॥ सुणजो एक मना थइ, वात चित्त लाय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ उत्तम लक्षण एह तणां राज, कर दोय कीधा कान ॥ गात्र पवित्र देखी करीरे राज, करण धर्युं अभिधान ॥ मा० ॥ २ ॥ अपुत्रीयो राजा रवि राज, रतनादे राणी तास ॥ तेहने हस्त समर्पीयो राज, हुवो ते सुख निवास ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांडु पुत्र पावन नलोरे राज, करण ते महा राय ॥ काने सुत ते कम जण्यो राज, धातु रहित रवि राय ॥ मा० ॥ ४ ॥ अंधकवृष्टिए तेमी करी राज, पांडु कीधो विवाह ॥ कुंती मुंद्री परणावीया राज, कीधा अति उत्साह ॥ मा० ॥ ५ ॥ अंधकवृष्टि जाइ जलो राज, नरपति विष्टि नाम ॥ गंधारी पुत्री रुयडी राज, धृतराष्ट्र परणी ताम ॥ मा० ॥ ६ ॥ पांडु कुंतीए पुत्र जण्या राज, युधिष्टर भीम ने पार्थ ॥ मुंद्रीए वे जनमीया राज, नकुल सहदेव सार्थ ॥ मा० ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्र राजा थकी राज, गंधारी अभिराम ॥ शत पुत्र कुखे उपन्या राज, दुर्योधनादिक नाम ॥ मा० ॥ ॥ ८ ॥ पांडव करण उत्पत्ति कही राज, कौरवनी वात एह ॥ जरासंध चक्री जलो राज, उत्तम नर ते तेह ॥ मा० ॥ ९ ॥ अघट मान तुमे परिहरो राज, रवि सुत नोहे करण ॥ युधिष्टर नोहे जम तणो राज, उत्तम नर ए वरण ॥ मा० ॥ १० ॥

वायु पुत्र नंदे भीमदो राज, नंदे शक्रनो अर्जुन ॥ अश्वनीकुमारथी नही उपन्या राज, सहदेव नकुल बे धन ॥ मा० ॥ ११ ॥ अर्जुन नारी रुक्मी राज, सती द्रुपदी ने भार ॥ शिक्षा वचन नवि मानीए राज, जे खोटां बे असार ॥ मा० ॥१२॥ तेम विद्याधर मद्रीपति राज, मदनसुंदरी नार ॥ तस बेटी मंदोदरी राज, सती शिरोमणि भार ॥ मा० ॥ १३ ॥ रावण रंगे परणीउं राज, मंदोदरी गुन नार ॥ इंद्रजित गुण उपन्यो राज, मोक्षगामी नवकार ॥ मा० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल चोथा खंडनी राज, सांभलजो नर नार ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे राज, नेमने जयजयकार ॥मा० ॥१५॥

दुहा.

शिक्षा वचन न मानीए, परनवेग मगेल ॥ ज्यारे महाभारत रच्यो, सत्य गणो नही खेल ॥ १ ॥

ढाल अगीयारमी.

नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीया—ए देशी.

सांभलो नाद गाग जे वेद पुराणनी, ज्यारे रच्यो ग्रंथ खास ॥ सनाइ पुराणनी में न निपार्थु, एम भूरख सहु लोकमां ॥ महाभारतनी वात करजो सहु लोकमां ॥ १ ॥

किंवा सत्य करशे एह किंवा नहीं करे, ए वातनो संदेह ते मनमां अति धरे ॥ पुस्तक छेइने चाल्यो व्यास जात्रा भणी, गंगा आव्यो शुभ गात्र करवा हुंश घणी ॥ २ ॥ ताम्र तणुं एक भाजन भसुं ठे माहरुं, रखे तस्कर लेइ जाय इहांथी परुं ॥ वेलुनो कीधो पुंज गंगा तटमां जइ, ते मांही घाल्यो भाजन शंका मननी गइ ॥ ३ ॥ गंगा नदी मांही व्यास पेठो आवी वही, हरि हरि करी मुख जंपे उठाले जल रही ॥ जात्रा करण बहु लोक मली सहु आवीया, व्यासे कीधो वेलु थांक देखी मन भावीया ॥ ॥ ४ ॥ कोइ कहे एवुं लिंग होये ईश्वर तणुं, हुं पण थापुं एहवुं करीने अतिपणुं ॥ जे आव्या हता लोक तेणे पुंज थापीया, वेलु तणा हुवा गंज अन्योअन्य व्यापीया॥ ॥५॥ स्नान तर्पण करी व्यास नीकल्यो उतावलो, ताम्र भाजनना पुंज देखी थयो भां-भलो॥पोता तणो कीधो पुंज ते नवि ओलख्यो, सरखा सरखुं रूप देखी मनमां धस्यो ॥ ६ ॥ जो भांजुं सवि पुंज तो अपजश सहु करे, ईश्वर देवना लिंग तणो रूप केम फिरे ॥ ताम्र तणुं मुज भाजन जाउ तो जाउ परुं, अपजश बोले लोक तेहथी हुं करुं ॥ ७ ॥ तेम माहरी कथा फोक ते केम होये वली,जेम एक ढगली देखी कर्या सहुए मली ॥ एक करे तेम सर्व करे लोक एणी परे, परमारथनी बुद्ध कोइ मन नहीं

परे ॥ ७ ॥ मूरख लोक मल्या ते ए सहु आरथी, ताम्र नाजन खोयुं ताम गणी परे
हारथी ॥ महाजारतनी वात विस्तारे थापशे, साचुं खोटुं परीक्षा करीने जापशे ॥ ए ॥

श्लोक—गतानुगतिको लोको, न लोकः परमार्थिकः ॥
पश्य लोकस्य मूर्खत्वं, हारितं ताम्रनाजनम् ॥ १ ॥

पवनवेग सुणो मित्र विचार जे एटला, मिथ्या वचन विचार कहुं लकु केटला ॥ जिनशासननो धर्म साकर सम जाणीए, खाइए जे वारे तेह मीठो परमाणीए ॥१०॥ आठ करमना वारक देवता वे खरा, तरण तारण गुरु नाम कहीए जे नरा ॥ केवली नाषित धर्म कहीए ते खरो, अवर मिथ्या नर्म तेहने कां वरो ॥ ११ ॥ सूत्र सिद्धांत ने शास्त्र नाख्यां जे जिन तणां, तेहमां विनय विवेक गहन अर्थ ठे घणा ॥ जिनवाणीनी वात साची करी मानीए, तो सरशे तुम काज शिवसुखने जाणीए ॥ ॥ १२ ॥ सांजली पवनवेग कहे पावन थया, द्विज सघला मली ताम कहे संदेह गया ॥ जगमां जोतां जेने धरमनो आधार ठे, नूला जे नवि लोक तेहने ए पार ठे ॥ १३ ॥ हे नाइ तुम वात हृदये मारे वसी, पाम्यो शुद्ध आचार फिकर नहीं कसी ॥ मनोवेग तुमे नाइ साचा ठो सही, एटला दिवस गम मुजने रही नहीं ॥ १४ ॥ ब्राह्मण

बोले तव वाणी मनोवेग सांजलो, धर्म परीक्षा कीध नथी कांइ आंमलो ॥ पूरण चोथो खंम ढाल अग्यारमी, श्रोता सुघड होये तो दिल तेहने रमी ॥ १५ ॥ हीरविजय सूरिराय तपगछनो धणी, अकबर शाह प्रतिवोधित अमार पमावी घणी ॥ शुजविजय तस शिष्य जावविजय कवि, सिद्धिविजय तस शिष्य वात हुइ तेवी ॥ १६ ॥ रूपविजय रंग लाय कृष्णविजय कहुं, रंगविजयने नित्य हुं प्रणिपति वहुं ॥ नेमविजय कहे एम ढाल अग्यारमी, पूरण चोथो खंम कर्यो ते सहुने गमी ॥ १७ ॥

इति धर्मपरीक्षारासे मिथ्यातपुराणदूषणे मिथ्यामतध्वंसनो नामा चतुर्थोऽधिकारः

## खंम ८ मो.

### उहा.

पवनवेग नाइ सांजलो, मनोवेग कहे सार ॥ अवर पुराण वली दाखवुं, जेम लहो विवेक विचार ॥ १ ॥ शुद्धो जिन धर्म कीजीए, नहीं विरुद्ध लगार ॥ मिथ्या मारग परिहरो, जेम तरो संसार ॥ २ ॥ बोध रूप वेहु जणे धर्यां, पहेर्यां रक्त सुवस्त्र ॥ शिर मुंका झोली धांही वे, कर दंम धरीने शस्त्र ॥ ३ ॥ पाटलीपुर प्रवेश करी, वादशालाए गया चंग ॥ नेर घंटारव तव कीयो, बेठा सिंहासन रंग ॥ ४ ॥ नाद सुणी विप्र आवीया, देखी बोल्या ताम ॥ खट् दर्शन विवाद करो, उंचा बेठा अम गाम ॥ ५ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, विप्र तमो बो सुजाण ॥ वाद शास्त्र जाणुं नहीं, अमे खरे तुं अजाण ॥ ६ ॥ विप्र कहे मूरख सुणो, केम कर्यो घंटानाद ॥ केम सिंहासन चांपीयुं, जो नहीं नण्या विवाद ॥ ७ ॥ कुण गाम ठामथी आवीया, कुण दीक्षा धरी अंग ॥ कपट तजी साचुं कहो, नहींतो लहेशो नंग ॥ ८ ॥ बोध रूपे मनोवेग वदे, सुणो नट्ट नाइ सार ॥ साचुं कहेतां अमे एकला, कुटाइए निराधार ॥ ए ॥ तुम

तेहने दीधुं ए ॥ जब मन जाणे तेह तणुं, तव लांच आपे ते भन घणुं, एणी परे बुद्धि घसे काम निगमे ए ॥ ४ ॥ लुब्धनी देहे उपन्यो, पाप प्रनावे रोग उपन्यो, ओषध अनेक कर्यां तोही नवि टसे ए ॥ नूमि घाल्यो लुब्धदत्त जेहवे, आयुकर्म तुब हुतुं तेहवे, आरतध्यान पाम्यो ते तरफडे ए ॥ ५ ॥ पुत्र कहे पिताजी सांजलो, चिंतातुर कांइ टलवलो, दान पुण्य जे कहो ते कीजीए ए ॥ घूरू पापी ते कहे ताम, धर्म दान नहीं मुज काम, पुत्र तमे सांजलजो जे हुं कहुं ए ॥६॥ नेम मांग्यो एक मुज तणो, कार्य करो तुमे अति घणो, तो वली प्राण जाये सुख माहरो ए ॥ सकल लोक वंकावीया, तुंगजड दंरू नहीं फावीया, लांच आपीने एणे हुं वारीयो ए ॥ ७ ॥ लाजे काज एहनो सिद्धो, राजदंरू शिरमें नवि कीधो, गो महिषी धण कण एहने ने घणु ए ॥ माहरी बुद्धि हइडे धरो, ठकनी वात रखे कंइए करो, रोउं तो आण देउं तुं मुज तणी ए ॥ ७ ॥ प्राण गया पठी मुज वली, वस्त्र शृंगार पहेरावो वली, पाठली रात्रि मुज लेइ ठनो राखजो ए ॥ तुंगजड खेत्र सेढे रही, मुज हस्ते काढी ग्रही, गाय जेंस चाली तुमे ठलवी रहो ए ॥ ए ॥ कणवी आवी मुज लकयकशे, जीव रहित अंग नूमि पकशे, बूम पाकी तुमे लोक घणु मेलजो ए ॥ मुज तातनो कीधो

त्यारो ए लोक सुणो वात, पोकारी राजा कने दंभावजो ए ॥ १० ॥ मुज हस्ते ल देउं, शिख सघली पाली लेउं, तव पुत्र बोल दीधो पिता करे ए ॥ प्राण गया लुब्धदत्तना, नरक द्वारे पहोंच्या ततंना, शिख सहु करी पुत्रे तुंगभद्र दंडावीयो ए ॥ ११ ॥ पर विघन संतोषीयो, नर होये जो एहवो राशीयो, तो केम विप्र सभामां बोलीए ए ॥ बाडव कहे तुमे सांभलो, अममां एहवो मा बोलो, साचां ते वचन बोलो तुमे आपणां ए ॥ १२ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल पहेली ए सही, श्रोता सांभलजो तुमे सहु मली ए ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय ते सद्दहे, निरवहे साचो नर संसारमां ए ॥ १३ ॥

दुहा.

खगपति कहे द्विजवर सुणो, पूरव दिशि सुखखाण ॥ विक्रमपुर सोहामणुं, चतुर नर नारी वखाण ॥ १ ॥ तात मात मुज तिहां वसे, बोध भक्ति करे तेह ॥ बोध पासे अम मूकीया, लेवा विद्यानो छेह ॥ २ ॥ भणुं गणुं शास्त्रज घणां, गुरुनां करुं बहु काम ॥ एक वार गुरु लुगडां, नदीए धोइ सुकाव्यां ताम ॥ ३ ॥

## ढाल बीजी.

मारी अरज सुणजो हो, गछरा नायक, विनति अवधारी गुजर पधारजोजी—ए देशी.

पाणी वाहिर नवी भूमि हो, गुण नायक, सुकवीए रतांबर अमे बेहु जणाजी ॥ राता शियाल बे आव्यां ताम हो, गु० नय उपन्या अमने अति घणाजी ॥ १ ॥ पुंठे धायां ते शियाल लुगमां लेइ दोय हो, गु० नाह अमे दोय नाठा उतावलाजी ॥ २ ॥ भूम पाडी अमे बेहु नाथ हो, गु० नव गिरि उपर चढ्या अमे वलाजी ॥ डुंगर उचेली ताम हो, गु० अम हो, गु० धाड लोक अम रक्षा करोजी ॥ ३ ॥ लेइ गया शियाल हो, गु० जोजन चार बेहु सहित आकाशे परोजी ॥ मूकी वन मोझार हो, गु० नक्षण लाग्यां शियाल बे चकीजी विक्रमपुर थकीजी ॥ अमने खाशे क्षुधा वश पड्याजी ॥ पारधी ॥ ४ ॥ बेहु जंबुक मवी जाम हो, गु० श्वान सहित पापे नड्याजी ॥ ५ ॥ श्वान नयथी तेह हो, आव्या ताम हो, गु० डुंगरथी उतर्यां बेह हो, गु० पारधी पुंठे गु० नाठां बेहु ते शियालीयांजी ॥ भूमि जोइ तव अति घणीजी ॥ नालीयाजी ॥ ६ ॥ नयनीत थया अमे बेह हो, गु०

संवर रहित अपार हो, गु० वार नहीं वली केह तणीजी ॥ ७ ॥ वली विचार्युं एम हो, गु० बोध धर्म ठे अम तणोजी ॥ लेइए दीक्षा वेह हो, गु० रक्त वस्त्र ठे गुरु गुणाजी ॥ ८ ॥ वेहु जाइ चिंतवी एम हो, गु० मस्तक मुंमाव्यां वेहु जणाजी ॥ रातां वस्त्र पहेरेय हो, गु० बौध धर्म मुखे जण्योजी ॥ ए ॥ काठी कर धरेव हो, गु० घर घर जिक्षा वेहु जमुंजी ॥ पात्र पडे ते लेय हो, गु० सात सात घरी मांहे जमुंजी ॥१०॥ जमतां देश विदेश हो, गु० तुम नगरे आवीयाजी ॥ तव बोल्या द्विजराज हो, गु० असत्य वचन तुमे लावीयाजी ॥ ११ ॥ जे सहु खोटुं संसार हो, गु० तोली करी तुने घड्याजी ॥ तव बोल्यो मनोवेग हो, गु० ए सहु तुम पुराणे जड्याजी ॥ १२ ॥ सांजलजो द्विजराज हो, गु० देखाडुं जेजे जिहां कह्युंजी ॥ रामायण पुराण हो, गु० वाल्मिके जाख्युं ते लह्युंजी ॥ १३ ॥ एक वार श्रीराम हो, गु० सीताशुं वनवासे गयाजी ॥ खरदूषण मारी जाम हो, गु० लक्ष्मण सहु वन मांही रह्याजी ॥ १४ ॥ सुर्पनखा गइ ताम हो, गु० रावण राजा उपाइउंजी ॥ सीता लेवाने काज हो, गु० धसमस्यो रावण धाइयोजी ॥ १५ ॥ सीता लेइ गयो तेह हो, गु० मोहथी राम डुःखीयो हुवोजी ॥ एहवे

सुग्रीवनो विचार सुणोजी ॥ १६ ॥ सुग्रीव तणी जे नार हो, वानर राज हो, गु० सुग्रीवनो विचार सुणोजी ॥ तव श्रीरामे तेह हो, गु० वाली वानर ते गु० वाली वानर क्षेह हारीयोजी ॥ तव श्रीरामे तेह हो, गु० नारी आवी तारा रंग नरीजी ॥ मारीयोजी ॥ १७ ॥ सुग्रीव आपीयो राज हो, गु० कार्य कह्यो स्वामि कृपा करीजी ॥ १८ ॥ तुमे परउ- तव बोल्यो सुग्रीव राय हो, गु० कीधो स्वामि मुज अति घणोजी ॥ नेह थकी तुमे देव हो, गु० पकारी हो, गु० कीधो स्वामि मुज अति घणोजी ॥ राम कहे सुणो मित्र हो, गु० नारी गइ छे सेवक हुं तुं स्वामि तुम तणोजी ॥ १९ ॥ राम कहे सुणो मित्र हो, गु० किहां छे सीता वल्लन घणीजी ॥ २० ॥ मुज तणीजी ॥ तेहनो करो संजास हो, गु० किहां छे सीता वल्लन घणीजी ॥ रंगविजयनो शिष्य हो, पांचमा खंड तणी ढाल हो, गु० वीजीए कही निरमलीजी ॥ रंगविजयनो शिष्य हो, गु० नेमविजय कहे अति नलीजी ॥ २१ ॥

## दुहा सोरठी.

सुग्रीवे तेड्यो ताम, हनुमंत वीर सोहामणो ॥ ते गयो लंकाए सार, शुद्ध करेवा नामणो ॥१॥ मुद्रिका आपी सार, संदेशा कह्या श्रीराम तणा ॥ प्रशंसी सीता नार, कह्यो कुशल छे वेहु जणा ॥ २ ॥ लंका वाली हनुए, शुद्ध आणी सीता तणी ॥ श्रीराम हुयो संतोष, सैन्य चाह्युं लंका नणी ॥३॥ वानर सहु मिलेव, परवत उचेली

आणीया ॥ बांधी समुद्रमां पाज, पाणी उपर तर्या पाहाणीया ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मणना सेन, सागर पाजे उतारीया ॥ लंका जइ कीधुं युद्ध, रावण राक्षस मारीया ॥ ५ ॥ सल्य विसल्या काज, ऑषधिगिरि उचेली धरीय ॥ आण्यो लंकापुरी मांही, हनुमंत सेन चेतो करीय ॥ ६ ॥ रामायण वाल्मिक रिषि, ज्ञापित ते मांही कह्युं ॥ जो साचुं होय एह, मुज जाण्युं खोटुं केम लह्युं ॥ ७ ॥ तव बोल्या द्विजराज, ए खोटुं केम जाखीए ॥ वली मनोवेग कहे वात, एक वयण तुम दाखीए ॥ ८ ॥ वानर पांचे मिलेय, डुंगर मोटा उचेलीया ॥ लाव्या जोजन लाख, सागर बांध्यो ज्युं भेलीया ॥ ॥ ९ ॥ तो लघु डुंगर तेह, शियाल वे केम नवि धरे ॥ वचन सुणी द्विजराज, सत्य सत्य कही गया घरे ॥ १० ॥ वाद जीपी वन मांही, आव्या पूर्वली परे ॥ मनोवेग कहे सुणो भाय, सुग्रीव हनुमंत वानर करे ॥११॥ विद्याधर हुवा राम, रावण राक्षस नवि होये॥ खगपति तणो वंश चंग, पवनवेग तुमे सांभलो ॥ १२ ॥

## ढाल त्रीजी.

राम पुरा बजारमां—ए देशी.

कोशल देश अयोध्यापुरी, राज पाळे नाभि नरिंद ॥ मोरी वलीहारीरे आदि जिणंदनी॥

ए. आंकणी ॥ छाजी मरुदेवी उदरे उपन्या, रिषभदेव प्रथम जिणंद ॥ तो० ॥ १ ॥
त्यासी लाख पूरव गया पछी, भरतने आप्युं निज राज ॥ तो० ॥ आदि देवे दीक्षा
ते अनुसरी, कायोत्सर्ग धरी करे काज ॥ तो० ॥ २ ॥ ध्यान धरे जिन जेहवे, तेहवे
आव्या साला बेह ॥ तो० ॥ नमि विनमी नामे भला, आदि देव प्रते कहे तेह ॥
तो० ॥ ३ ॥ पुत्र सहुने व्हेंची आपीया, देश नगर तुमे देव ॥ तो०॥ अमने कांइ नहीं
आपीयुं, तुमारी घणी कीधी सेव ॥तो०॥४॥ एणी परे मागे साला होय, दृढ लेइ धरी
रह्या वाद ॥ तो० ॥ ध्यान विघन स्वामीने करे, दीन वचने कृपा थाय ॥ तो० ॥ ५ ॥
आसन कंप्युं धरणेंद्रनुं, नागराज आवी करे काज ॥ तो०॥ विद्या आपी बेहुने घणी,
रूप धरी जिनराज ॥ तो० ॥ ६ ॥ विजयारध लेइ चालीयो, दक्षिण श्रेण नगर पचास
॥ तो० ॥ पचास कोडी गाम तिहां भलां, नमि थाप्यो चक्रवालपुर वास ॥ तो० ॥
७ ॥ उत्तर श्रेणि नगर साठ, तेटला क्रोड छे वली गाम ॥ तो० ॥ रयनोपुर स्वामी
विनमी करी, नागराज गयो निज ठाम ॥ तो० ॥ ८ ॥ नमिवंशे विद्याधर घणा
हुवा, चक्रवालपुर तणा ईश ॥ तो० ॥ अनुक्रमे पूर्णमेघ नृप हुवो, दक्षिण श्रेण तणो
सहीश ॥ तो० ॥ ९ ॥ विनमी अनुक्रमे नृप हुवा, उत्तर श्रेणना राय ॥ तो० ॥ शत-

लोचन खगपति नलो, रथनुपुर सेवे नर पाय ॥ तो० ॥ १० ॥ चक्रवालपुर जइ वीटीयो, शतलोचने तेणी वार ॥ तो० ॥ पूर्णमेघ रणवट करी, हणीयो शतलोचन मार ॥ तो० ॥ ११ ॥ सहस्रलोचन तिहां आवीयो, पिता तणो सांनली मरण ॥ तो० ॥ विषम संग्राम ताम तव तेणे कर्या, पूर्णमेघ गयो जम शरण ॥ तो० ॥ १२ ॥ तेह तणो सुत मेघवाहन, सहस्रलोचन साथे संग्राम ॥ तो० ॥ मेघवाहन नागो नाजीने, विमाने वेसी निज जाम ॥ तो० ॥ १३ ॥ सहस्रलोचन पुंठे थयो, समोसरण दीतुं मनोहार ॥ तो० ॥ मेघवाहने प्रवेश कर्यो, अजितनाथ वांद्या नवतार ॥ तो० ॥ १४ ॥ पाठलथी शत्रु आवीयो, सहस्रलोचन वली फाल ॥ तो० ॥ मानस्थंन दीठे मानज गल्युं, शांत रूप थइ वांद्या दयाल ॥ तो० ॥ १५ ॥ वयर मूकी दोय जण मल्या, नर कोठे वेठा ठे जाम ॥ तो० ॥ पूर्वे नवांतर जिनेश्वर कह्या, सांनली हरखीया ताम ॥ तो० ॥ १६ ॥ पांचमा खंम तणी नली, ढाल त्रीजी कही सुविशाल ॥ तो० ॥ रंगविजयनो शिष्य एम नणे, नेमविजयने मंगल माल ॥ तो० ॥ १७ ॥

दुहा.

राक्षस इंद्र नीम महानीम, व्यंतर कोटी सुण तेह ॥ मेघवाहन नवांतर जा-

गीयो, पूर्वे श्रम पुत्र पह ॥ १ ॥ राक्षसने गेह उपन्यो, राक्षसी विद्या दीध ॥ नव-सर हार श्राप्यो जलो, नव मुख दीसे मांही सीध ॥ २ ॥ मेघवाहन लंका द्वीप, सातसें जोजन मान ॥ त्रिकुट गढ नव जोजन लगे, बत्रीश जोजन पुर थांन ॥ ३ ॥ वत्र मुगट धजादिक शीरे, राक्षस लांबन सोय ॥ नीम महाजीमे सहु दीयो, मेघ-वाहन लंकापति मोय ॥ ४ ॥

## ढाल चोथी.

ए केम विसरेरे मुखडां, वालाजीना जोवा मुखका ॥ मुखडे मोह्यारे इंदा, वदन कमल जाणे शारद चंदा—ए देशी.

मेघवाहन राणी तनुमती, महा राक्षस सुत हुवो शुज मति ॥ गुणवंती राणीना पुत्र जेह, जानु राक्षस देव राक्षस तेह ॥ १ ॥ समुद्र मांही द्वीप अनेक, लोक व-साव्या तेणे विवेक ॥ जानु राक्षस देव राक्षस केडे, एकसठ राजा गया ठे तेडे ॥ २ ॥ कीर्तिधवल राजानो वंश, लंका राज करे परशंस ॥ लक्ष्मीमती ठे राणी तास, सुख जोगवे करेय विलास ॥ ३ ॥ रतनसंचय पुर दक्षिण श्रेण, श्रीकंठ खगपति

राजा आनंद, सालाने आलिंग्या जन वृंद ॥ लक्ष्मीमती मली जाइने, मान सनमान दीधां धाइने ॥ ५ ॥ कीर्तिधवल कहे सांजलो सार, तुज साथे मुज स्नेह अपार ॥ जे जे लक्ष्मी ठे अमारे, ते ते श्रीकंठ ठे तुमारे ॥ ६ ॥ द्वीप देश पुर पाटण जाणो, जे आपणे ठे ते तुमे माणो ॥ जे जोइए ते मागो आज, रत्नद्वीपादिक जोगवो राज ॥ ७ ॥ वानरद्वीप माग्युं अजिराम, श्रीकंठ सालाने आप्युं ताम ॥ वेन बनेवीने मोकलावी, वानरद्वीपे आण पलावी ॥ ८ ॥ कुटुंब सेनादिक परिवार, द्वीपे आणी वास्या नर नार ॥ वानरद्वीप मध्ये ठे सार, कीष्कंध पर्वत उंचो अपार ॥ ९ ॥ कंधपुर वास्यो श्रीकंठ, राज्य जोगवे मन उत्कंठ ॥ खगे विद्या वानरी साधी, ते माटे कहेवाय हरिवांधी ॥ १० ॥ वानरद्वीपे घणा वानर, विनोद क्रीमा करे ते फरफर ॥ श्रीकंठ विद्याधर नरवरेश, वानर रमत करे विशेष ॥ ११ ॥ मुगट ठत्र धजादिक गेह, सघले वानर लीखीया तेह ॥ वानर कहे लोक अजाण, विद्याधर राजाए सुजाण ॥ १२ ॥ एणी परे मेघवाहन लंकेश, मुगट ध्वज ठत्रे राक्षस ॥ मेघवाहन कुले उपन्या राय, त्रिखंम पति रावण ते थाय ॥ १३ ॥ श्रीकंठ खगेश परंपरा जाण, वाली सुग्रीव पवनादिक जाण ॥ नमि विनमी वंशे विख्यात, वानर राक्षस नोहि

पशु व्यंतर
वात ॥ १४ ॥ वानर तो तिर्यंचनी जाति, व्यंतर राक्षस होये जाति ॥ विद्याधर विद्यावल चाले, गिरि
केम होय गुरू, ए सहु जाणो महा विरुद्ध ॥ १५ ॥ सागर बंधन घटतुं जोय ॥१६॥
उचलतां ततक्षिण झाले ॥ कदाचित् होये तो सवली होय, जिनवर वचन कर्यां अं-
मनोवेगे कथा कही साची, पवनवेग मनमां रह्यो राची ॥ चोथी कहीए
गीकार, मिथ्या वचन कीधां परिहार ॥ १७ ॥ पांचमा खंड तणी ढाल, कोइ तोले ॥ १८ ॥
निपट रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम बोले, नेमविजयने नहीं

दुहा.

पवनवेग कहे भाइने, रावण केरो वृत्तांत ॥ के मिथ्यातिए थठे, के जिनशासन
सांत ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांजलो, रावण केरी वात ॥ जेम निश्चय तुमने पडे,
जांगे मननी भ्रांत ॥ २ ॥ त्रिकुट गढ लंका तणो, मोटो महीयल मांहीं ॥ रावण
राज तिहां जोगवे, हार तणे महीमांहीं ॥ ३ ॥ त्रिखंड राज्य तणो धणी, नव ग्रह
वांध्या पाय ॥ वीश भुजा तेणे करी, सुर नर सेवे पाय ॥ ४ ॥ त्रीश सहस वर्षां
तणी, आयुस्थिति कहेवाय ॥ नव धनुष काया तणो, मान कह्यो जिनराय ॥ ५ ॥
पत्रीश सहस नारी थठे, पुत्र पुत्री परिवार ॥ जामाताए जस घणा, कहेतां नावे

पार ॥ ६ ॥ लाख बेंतालीश गज तुरी, लाख बेंतालीश रथ ॥ क्रोड अडतालीश पायक तणा, आयुध उत्रीश मछ ॥ ७ ॥ सोल सहस सामंत छे, क्रोड अडतालीश गाम ॥ अढार क्षोणी कटक तणो, राजा रावण नाम ॥ ८ ॥

## ढाल पांचमी.

### वयरागी थयो–ए देशी.

लंका परिसर एकदारे, मुनिसुव्रत जिनराय ॥ विहार करंता आवीयारे, साधु तणो समुदायोरे ॥ सुगुण सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ खरदूषण नृपति जलोरे, रावण पनेथी तेह ॥ चंद्रनखा नारी तणोरे, पति कहेवाये एहोरे ॥ सु० ॥ २ ॥ समोसरण देवे रच्युंरे, गामंमले करी सार ॥ त्रगडे बेठा देशनारे, करे जविक जन निस्तारोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ वनपालक जइ विनवेरे, सांजलो स्वामिरे वात ॥ आज आव्या छे आपणेरे, त्रिजुवन स्वामी विख्यातोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ वारु दीध वधामणीरे, थयो मन उछरंग ॥ चतुरंग सेना लेइ करीरे, वाजते ढोल मृदंगोरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ बेठा जिन वांदी करीरे, अजिगम सांचवी पांच ॥ देशना सांजली जिन

नणीरे, मूकी मन मल म्यांचोरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ दीजे अमने सुखासिकारे, स्वामि आपो मेल ॥ अरण सरे अमने घणोरे, तुमने लाज विशेषोरे ॥सु०॥७॥ तव त्रिजुवन स्वामी कहेरे, सांजलो राय सुजाण ॥ जोग करम तुमने घणोरे, केम पालशो पच-स्वाणोरे ॥ ७ ॥ तव रावण फरी विनवेरे, मुजथी थाये जेह ॥ तेह उपाय कहो ह-वेरे, पालुं निश्चय तेहोरे ॥ सु० ॥ ए ॥ वीशमा स्वामी तव कहेरे, तुमथी थाशे जेह ॥ नव मेरे जे दीक्ष ठेरे, तेहनो नांगो एहोरे ॥ सु० ॥ १० ॥ जे स्त्री राजी थइ कहेरे, तेहशुं जोग विलास ॥ राजी विना अरुशो नहीरे, एहवो व्रत उल्लासोरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ तव व्रत लीधो जिनने मुखेरे, रावण मनने रंग ॥ तव खरदूषण एम कहेरे, व्रत लेवा उछरंगोरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ जिननी मूरति नित्य प्रतेरे, पूजीने लेउं ग्रास ॥ न करुं नातण पूज्या विनारे, त्रिकरण राखुं मनरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ व्रत लीधो ए जणे तिहांरे, आव्या आपणे वास ॥ मन शुद्धे पाले तिहांरे, पाम्या हरख उल्लासोरे ॥ सु० ॥ १४ ॥ विद्यानी शक्तिए करीरे, चाले अंबर वेग ॥ तीर्थयात्रा करता फरेरे, सघली जेहनी तेगोरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ विहार कर्यो जिनवरे तिहांरे, फरता देश विदेश ॥ नविजनने प्रतिबोधवारे, तरण तारण विशेषोरे ॥ १६ ॥ पांचमा

खंड तणी कहीरे, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने मंगल मालोरे ॥ सु० ॥ १७ ॥

## दुहा.

सवि सामग्री सज करी, रावण राजा जाय ॥ मंदोदरी राणी सहित, अष्टापद तीरथ आय ॥ १ ॥ विद्या तणी शक्ते करी, चढी उंचा ततकाल ॥ प्रणम्या रिषभदेवने, पहेरावी मंगल माल ॥ २ ॥ धूप दीप आरती करी, सवि सजी शणगार ॥ मंदोदरी अधर रही, नाचे देवल मोझार ॥३॥ रावण जंत्री लेइने, गाये वाये गीत ॥ भावे भावे भावना, बत्रीश बद्धनां नृत्य ॥ ४ ॥ श्रीमंगलने सज करी, तांत बत्रीशे तार ॥ उल्लट आणी अंगमें, तान मान झणकार ॥ ५ ॥ अढलिक भावे जे भवि, भावे अधिक जे भाव ॥ तेहने सागर संसारनो, उतारे भव नाव ॥६॥ भाव वधे करी भावतां, वातां तांतनो तार ॥ तुट्यो तेण समे रावणे, नस काढी तेणी वार ॥ ७ ॥ सांधी तांत तेणे समे, खंडित न कर्यो लगार ॥ नहींतो मंदोदरी नारीनो, मरण होत तेणी वार ॥ ८ ॥ लाभ उपायो अति घणो, लीधो तीर्थंकर पाट ॥ आवती चोवीशीमां होशे, जिनरूपी सम घाट ॥ ९ ॥

## ढाल छठी.

द्रौपदीनी बे कर जोडी तामरे नड विनवे—ए देशी.

तिहांथी आव्या निज घरेरे, रावणनो परिवार, चंडनखा जगनी सही ए ॥ तेहनो पुत्र छे एकरे, विघनपति नामे, नित्य जाये छे वन वही ए ॥ १ ॥ पर विघननी विद्यारे, साधवाने काजे, वंशजाल गुफा मांही ए ॥ साधे नित्य प्रते तेहरे, एकाकी वन मांहे, नवी देखे कोइ तांहे ए ॥ २ ॥ तेहने जोजन काजरे, माता तेहनी, लइ आवे छे नित्य प्रते ए ॥ एम करतां एक दिनरे, राम ने लक्ष्मण, सीता साथे लेइ छते ए ॥ ३ ॥ आव्या छे वनवासरे, तेह निज ठामे, लक्ष्मण चोकी करता फरे ए ॥ चिंतवी मनमां एमरे, डुर्धर कोइक जीव, उपद्रव आवीने करे ए ॥ ४ ॥ ते माटे लेइ खडगरे, वांसनी जालमां, छेदे ते खड्गे करी ए ॥ ते कुंवर विघनपतिरे, बेठो छे ध्याने, घा वाग्ये गयो मरी ए ॥ ५ ॥ दीठो लक्ष्मणे तामरे, छंरतो कर्यो घणो, निमित्त मात्र मिटे नहीं ए ॥ पाछा फरी वली आवेरे, कुंवरनी माता तिहां ॥ जोजन लेइ आवी वही ए ॥६॥ देखी कलेवर तामरे, रुदन करे घणुं, पुत्र कोणे मारो मारीयो ए ॥ शीश कुटे लट तोडेरे, हृदये आस्फाले, नयणे आंसु डारीयो ए ॥ ७ ॥ मनमां चिंतवे एमरे, कोण होशे डु-

रमन, जइ नीहालुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे पहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव बोलरे, अहो अहो सोभागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो भरताररे, माहरे इण भवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम भोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एवुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि जोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरू वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, जननी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे भाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घमी जाये जुग समी ए ॥ सांभली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत भेला कर्या भमी ए ॥ १५ ॥ खरदूपण परिवाररे, लश्कर करी भेलो, चढ्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी फेरा दीधारे,

सायरने काठ, प्रतिमा घरे विसरी गइ प. ॥ १६ ॥ दातण करवा नीसरे, लीधो पच्च-
ग्वाण, जिनवचन केम चांगीए प. ॥ ठाण वेलु करी नेलोरे, विंब कीधो नवो, पूजा
करी पगे लागीए प. ॥ १७ ॥ अनुक्रमे दरशन कीधोरे, प्रतिमा कुपक मांही, मूकीने
सहु चालीया प. ॥ घणा काल लगी मांहीरे, अधिष्ठाता तिहां, धरणेंद्र तिहां ना-
लीया प. ॥ १८ ॥ आवी काळ्यो विंचरे, अंधर अधर राखी, अंतरिक नाम थापीयो प. ॥ १९ ॥
प. ॥ आगे गहनो विस्तारे, बहुश्रुत ते जाणे, माहरी मत सारु व्यापीयो प. ॥ रंगविज-
पांचमा खंड तणीरे, ढाल ठठी प. कही, श्रोता सुगुण जणी गमी प. ॥
यनो शिष्यरे, नेमविजय कहे, माहरा दिलमां प. रमी प. ॥ २० ॥

दुहा.

लश्कर सहु भेलो मली, आव्या वन वंशजाल ॥ रामचंद्र लक्ष्मण बेने, खबर
थइ ततकाल ॥ १ ॥ लक्ष्मण कहे रामचंद्रने, तुमे सीताने पास ॥ रहेजो सावधान
... ॥ २ ॥ जो हुं नाद करुं सिंहनो, तो मुज करजो वार ॥
... ... कुळवा, लश्कर सन-

रगन, जइ नीद्राशुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव बोलरे, अहो अहो सोजागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो जरताररे, माहरे इण जवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम जोगवुं ए ॥ मीठुं पण थयुं एवुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि जोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंद्रनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरू वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, जननी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे जाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घमी जाये जुग समी ए ॥ सांजली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत जेला कर्या जमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी जेलो, चल्या कटक गेडी थइ ए ॥ आवी फेरा दीधारे,

सायरने कांठे, प्रतिमा घरे विसरी गइ ए ॥ १६ ॥ दातण करवा नीसर, लावी ... पूजा
खाण, जिनवचन केम नांगीए ए ॥ ठाण वेलु करी नेसोरे, बिंब कीधो नवो, मूकीने
करी पगे लागीए ए ॥ १७ ॥ अनुक्रमे दरशन कीधोरे, प्रतिमा कुपक मांही, धरणेंद्र तिहां ना-
सहु चालीया ए ॥ घणा काल लगी मांहीरे, अधिष्टाता तिहां, अंतरिक नाम थापीयो
लीया ए ॥ १८ ॥ आवी काढ्यो बिंबरे, अंबर अधर राखी, माहरी मत सारु व्यापीयो ए ॥ १९॥
ए ॥ आगे गहनो विस्ताररे, बहुश्रुत ते जाणे, श्रोता सुगुण जणी गमी ए ॥ रंगविज-
पांचमा खंड तणीरे, ढाल ठही ए कही, माहरा दिलमां ए रमी ए ॥ २० ॥
यनो शिष्यरे, नेमविजय कहे,

## दुहा.

लश्कर सहु भेलो मली, आव्या वन वंशजाल ॥ रामचंद्र लक्ष्मण बेने, खबर
थइ ततकाल ॥ १ ॥ लक्ष्मण कहे रामचंद्रने, तुमे सीताने पास ॥ रहेजो सावधान
... हुं जाउं लडवा तास ॥ २ ॥ जो हुं नाद करुं सिंहनो, तो मुज करजो वार ॥
... ॥ ३ ॥ लक्ष्मण चाल्या क्रूकवा, लश्कर सन-

स्मन, जइ नीहाळुं तेहने ए ॥ आवे पग जोती तामरे, दीठो लखमण, आवीने कहे एहने ए ॥ ८ ॥ देखी लक्ष्मण रूपरे, विकल थइ मने, पुत्र चिंता मटी गइ ए ॥ कहे मुखथी तव वोलरे, अहो अहो सोजागी, हुं तुम पर राजी थइ ए ॥ ए ॥ तुं माहरो जरताररे, माहरे इण जवे, एम निश्चय करी जाणजो ए ॥ ताहरी उत्तम प्रजातरे, जो होये तो सही, नाकारो मत आणजो ए ॥ १० ॥ लक्ष्मण कहे तव वातरे, ए काम हुं नवि करुं, परनी स्त्री केम जोगवुं ए ॥ मीतुं पण थयुं एवुंरे, परनुं जे चाख्युं, ते तो हुं नवि जोगवुं ए ॥ ११ ॥ चंडनखा कहे वातरे, माहरे में कह्युं, मत उथापे तुं हवे ए ॥ जो सुख वांछे एमरे, तो मन धारजे, कुरु वयण तुं मत लवे ए ॥ १२ ॥ लक्ष्मण कहे हवे एमरे, जगनी माहरी, धर्मनी माता तुं अछे ए ॥ क्रोधातुर थइ एमरे, खबर राखे माहरी, एम कहीने पाछी गछे ए ॥१३॥ तुज सरीखो छे जाइरे, तो चिंता कशी, एम हुं नित्य जाणती हती ए ॥ माहरो विघनपति पुत्ररे, मार्यो लक्ष्मणे, तो हुं नारी अछती छती ए ॥ १४ ॥ वार करो हवे मारीरे, ढील न करो कशी, जे घमी जाये जुग समी ए ॥ सांजली रावण तामरे, दूत एक मोकल्यो, सामंत जेला कर्या जमी ए ॥ १५ ॥ खरदूषण परिवाररे, लश्कर करी जेलो, चढ्या कटक गेढी थइ ए ॥ आवी फेरा दीधारे,

## ढाल सातमी.

शियालो हे नंद आवीयो-ए देशी.

सीता रोती एकली, चिंतवे मन मांही रावण विचार के ॥ कोइक बुद्धि हवे केलवुं, जेम आवे हे माहरे हाथे नार के ॥ सुगुण सोभागी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अतिन रूप करी अति नलो, तिहां कारण हे आव्यो ततकाल के ॥ अशोक वनमां आवीयो, सीता आगी हे उनी उजमाल के ॥ सु० ॥ २ ॥ केम स्वामि तुमे आवीया, तव जोगी हे बोले सुण वाण के ॥ ताहरे पीयु मने मोकल्यो, तेडवा आव्यो हे तुमने तिण ठाण के ॥ सु० ॥ ३ ॥ लश्कर आव्यो छे घणो, कोइ दुश्मन हे तुमने लेइ जाय के ॥ ते माटे बोलावतां, तुमे बेसो हे आ विमान मांय के ॥ सु० ॥ ४ ॥ सीताए जाण्युं ए सही, मांहे बेठी हे चलाव्युं विमान के ॥ आगल जातां सामो मिल्यो, विद्याधर हे एकलो तेणे स्थान के ॥ सु० ॥५॥ पूछ्युं रावणने तिहां, कुण नारी हे के- हनी कहेवाय के ॥ तव रावण कहे रामनी, सीता नारी हे कहेने लेइ जाय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ ते विद्याधरे रामने, संभलावी हे सीतानी वात के ॥ रामने लक्ष्मण बे मली, दुःख पाम्या हे कहेतां नावे पार के ॥ सु० ॥ ७ ॥ राम रोइ घणुं टळवळे, सुण

जंपे हे तरुवर जणी एम के ॥ कहो मुजने तुम इहां रह्या, केम मलशे हे सीता मुज जेम के ॥ सु० ॥ ७ ॥ तरुवर वाये मोलतां, राम जाणे हे कहे धुणीने शीश के ॥ अमे न जाणुं किहां गइ, एम धारी हे मुजने करे रीस के ॥ सु० ॥ ए ॥ तव केकी पंखी प्रते, राम बोले हे तुमे उमो आकाश के ॥ सीता माहरीनी वातमी, बतावो हे हुं आपुं शाबाश के ॥ सु० ॥ १० ॥ तव पंखी बोले मुख थकी, क्यां वा क्यां वाहे न जाणुं अमे आप के ॥ राम जाणे ए जे कहे, किम खोवे हे आपनो माप के ॥ सु० ॥ ११ ॥ पशु चोपगने पूछे वली, जातां वलतां हे दीठी सीता नार के ॥ शियाल बोल्यां ततक्षणे, सांजलीने हे रामे कीधो विचार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ उंउंउंउं जे मुखथी कहे, तेइ जातां हे न दीठी उण ठाण के ॥ लक्ष्मण राम जणी कहे, जंजालनां हे बोलो मुख वाण के ॥ सु० ॥ १३ ॥ जाइ तुमने केम घटे, स्त्री माटे हे श्यो करो वेखास के ॥ जो विद्यमान बेठा तुमे, काले लावशुं हे राखो वि-श्वास के ॥ सु० ॥ १४ ॥ रोयां राज न पामीए, राखो धीरज हे आवे आपण लाज के ॥ लाजे काज वगाडीए, जाइ तुमने हे केम घटे आज के ॥ सु० ॥ १५ ॥ धीरा धीरा राउता, धीरां धीरां हे सर्वे काज होय के ॥ चार पहोरने आंतरे, दूध फीटी

सायर केम उतराय ॥ सात मास ने नव दिने, सायर पाज बंधाय ॥६॥ सीताने लेइ गयो, रावण लंका मांय ॥ फुलवाडी आवासमां, राखी छे तेणे ठाय ॥७॥ नित्य आवे सीता प्रते, पूछे वारंवार ॥ पट्टराणी थापुं करी, मान वचन निरधार ॥ ८ ॥

## ढाल आठमी.

वेरुले चार घणो छे राज—ए देशी.

जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतर जामी ॥ पल्लो अमारो छोडी दे पापी, कुलमां लागशे खामी ॥ मुजने अडसो मां जो राज, नाहलीयो दुहवाशे ॥ ए आंकणी ॥१॥ मरु महीधर ठाम तजे जो, पथ्थर पंकज उगे ॥ सायर जो मरजादा मूके, पांगलो अंबर पुगे ॥ मु० ॥ २ ॥ तोपण तुं सांभलरे रावण, निश्चे हुं शील न खंडुं ॥ प्राण अमारा परलोके जाये, तोपण सत न छंडुं ॥ मु० ॥ ३ ॥ हुं धणीयाती पीयु गुणराती, हाथ छे माहरे छाती ॥ रहे अलगो न चलुं तुज वयणे, कां कुल वाये काती ॥ मु० ॥ ४ ॥ कोण मणिधरनी मणि लेवाने, हडके घाले हाम ॥ सतीय संघाते स्नेह धरीने, कहो कोण साधे काम ॥ मु० ॥५॥ कहो परदारा संग करीने, आखो कोण उगरीयो ॥ छंडुं तुं तो जोय आलोची, सही तुज वहालो फरीयो ॥ मु० ॥६॥ अभिकंकमां निज

तनु होमे, वाम्युं विष कोण लेवे ॥ जेह अगंजित कुलना जोगी, ते केम फरी विष सेवे ॥मु०
॥७॥ लोक हसे निज गुण सवि नीकसे, विकसे डुरगति वारी ॥ एम जाणीने कहो कोण
सेवे, पाप पंक पर-नारी ॥मु०॥८॥ वलीय विशेषे स्त्रीने संगे, बोध बीज वली जावे ॥
लोको मांही अपजश थावे, तो केम मरण न आवे ॥मु०॥९॥ कोइ मूरख चंदन काजे,
ठारके कोयला आणे ॥ विष हलाहल पीधा थकी जे, कोण चिरंजीवित माणे ॥ मु०
॥ १० ॥ सीता बोली वचन रसालां, जेम अंकुश गुंडाल ॥ तोपण रावण न मेले चाला, ए-
हनां कर्मनां काला ॥ मु० ॥ ११ ॥ एहवी सीतानी जे वाणी, सांजले नित्य एम जा-
णी ॥ सती जाणीने न कहे ताणी, आणतां शुं तो आणी ॥ मु० ॥१२॥ लीधा मेली
वात थइ ते, अहिप छछुंदरी पकडी ॥ मेले तो थाय आंखे अंधो, खाये मरे पन्नो
जकडी ॥ मु० ॥ १३ ॥ एणी परे मनमां जाणे रावण, करतां शुं तो कीधी ॥ वानारो
आशे जे आगल, लेतां शुं जे लीधी ॥ मु० ॥१४॥ पांचमा खंड तणी ए ढाल, आठमी
सही करी जाणो ॥ रंगविजयनो शिष्य एम पभणे, नेमनी वात वखाणो ॥ मु०॥१५॥

दुहा.

सात मास नव दिन लगे, पूज्या धंतरणपास ॥ अधिष्ठाता शेषनागजी, पसाय

कीधो तार ॥ १ ॥ लश्कर पाजे उतर्यो, लंका नेडी लीध ॥ खबर थइ रावण जणी, नगरमां वात प्रसिद्ध ॥ २ ॥ विज्ञीषण जाइने कहे, राम चकी आव्या आज ॥ जाइ करीने पाचीए, सरवे सरशे काज ॥ ३ ॥ रावण कहे जाइ सुणो, राम ते दुश्मन जात॥ बनेवी आपणो मारीयो, विपनपति नाम सुजात ॥ ४ ॥ एवो वेरी मेलीए, तो अपजश जग होय ॥ घर आंगण आव्यो थको, जावा दे कहो कोय ॥ ५ ॥ विज्ञीषण कहे रामशुं, जाइजी म करो वेर ॥ वेध पकशे ए वातमां, थाशे ए कामे फेर ॥ ६ ॥ तव रावण कहे जाइने, न गमे तुजने एम ॥ तो तुं राम जेलो जइ, थापे जाइ करी जेम ॥ ७ ॥ विज्ञीषण राम जेलो मल्यो, रावणने चड्यो मान ॥ सेना सरवे सज करी, डेरा दीधा रण थान॥ ८ ॥

## ढाल नवमी.

### करखानी देशी.

दल बादल चड्या मेह सम गाजीया, वाजित्रनी ध्वंस आकाश लागी ॥ उत्रीश आयुध सज्यां आमुहा सामुहा, जूजनी हुय उमंग जागी ॥ द० ॥१॥ सिंदूरीया गज दल आगल कर्या, अश्व तणी पाखरे रोल जाकी ॥ नाख पोखा तणी धमधम पडे

घणी, आवी अख्या घणा शूरमांजी ॥ द० ॥ २ ॥ सिंधूडे राग सरणाइए टलुकीयो,
थंदीए सरस गाया पवाडा ॥ चारणे चरचीया विरुद बुदृाला, मेली नेजा कर्या
मल्ल अखाडा ॥द०॥ ३ ॥ शक्ति विद्या तणी अंबर चमी झकता, रूप करी कारीमा झूझ
मांडे ॥ आयुध आकाशमां घन जेम गडगडे,वीज झलका सम ज्योति खांडे ॥द०॥४॥
भीलीयो परठीयो पार निरठीयो, सणण वहे बाण अरि वेग हरवा ॥ चणण गोली
वहे ढाल तिहां खलखडे, कडकडे तुंड रहमांही फरवा ॥ द० ॥ ५ ॥ गोलीए केइ
मुआ बाण लाग्यां घणा, केइ पड्या हय गय पय पसारी ॥ आरडे केइ आकुल व्याकुल
थका, जाणे वणजारनी पोठ उतारी ॥ द० ॥ ६ ॥ जम लोहा थकी जे नर नागीया,
लडथडता धड उठे पली एम ॥ शूर झूझे तिहां कायर कंपे घणा, थरथरे काय मुख
तृण लीधां जेम ॥ द० ॥७॥ केइ रथ चूरीया नालशुं पूरीया, केइ उमी गया छत्रधारी
॥ केइ सुखासन मांहे बेठा थका, अकाल मरणे गया वणुंज हारी ॥ द० ॥ ८ ॥ दश
मस्तकी तणी तत्र आवी वनी, वासुदेव उपरे चक्र फेर्यो ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष ते
उपरे, सहस पचवीश ते देवे घेर्यो ॥ द० ॥ ए ॥ अवरना मारीया केम मरे पडवा,
तेहवे चक्र पाछो चलायो ॥ लक्ष्मणे रावण मारवा कारणे, शीश दश छेदी धराशुं

नलायो ॥ द० ॥ १० ॥ तेहवे तिहां हाहाकार वरत्यो घणो, रामनी जीत जगति प्रसिद्धी ॥ लक्ष्मण विभीषण बेहु भेला मली, नगरी लंका ततकाल लीधी ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ पाट थाप्यो विभीषणने वक्षीसमां, त्रिकूट गढमे आण फेरी ॥ तेहवे राम ने लक्ष्मण बेहु जणे, तेमावी नारी सीताजी आप केरी ॥ द० ॥ १२ ॥ दंपती बेहु मल्यां हर्षमां सहु भल्या, विभीषणे तिहां बहु भक्ति कीधी ॥ घणा दिवस रही रिद्ध समृद्धि लही, शीख दीधी वल्या पाज सिसि ॥ द०॥ १३॥ अनुक्रमे आवीया थंभण-पासे देवले, मास चोमास रह्या तेह गामे॥ पूजा प्रभावना मोछव कीधा घणा, थापना कीधी थंभणोपास नामे ॥ द० ॥ १४ ॥ पांचमा खंम तणी ढाल नवमी भली, रंगविजय गणि शिष्य भाखी ॥ नेमविजय कहे श्रोता सहु सांभलो, रावण रायनी वात आखी ॥ द० ॥ १५ ॥

## दुहा.

अनुक्रमे सीता नारीने, स्वकीय उदर मांय॥ गर्भ वाधे दिन दिन भलो, हइडे हरख न माय ॥ १ ॥ एक दिन लक्ष्मण सीता बंने, सूतां छे बे जण पास ॥ लक्ष्मणने माता समी; सीता नारी तास ॥ २ ॥ निद्रावश सूतां थकां, वस्त्र रहित थयां बेह ॥

दीगां रामचंद्र तिहां, शंका उपनी तेह ॥ ३ ॥ लक्ष्मण सरिखो नाइ मुज, मारवो न घटे मुज ॥ सीताने हुं जाणतो, सीतानां लक्षण शुद्ध ॥ ४ ॥ ए तो वगकी हे सही, मारे अपजश थाय ॥ तो केम हुं हवे करुं, काढी मेलुं वन मांय ॥ ५ ॥ लक्ष्मणने वातो कही, एहने मेलो वनवास ॥ तव लक्ष्मण बोल्या तिहां, नाइ तुमने स्यावास ॥ ६ ॥ कष्ट उपजावी लावीया, सीता सुलक्षणी नार ॥ एहने वनवासे मेलतां, लाज जाये संसार ॥ ७ ॥ रामचंद्र माने नहीं, मनमां पडी बहु भ्रांत ॥ साचे साचुं चालशे, कर्म न जाणे नाति जात ॥ ८ ॥

## ढाल दशमी.

निद्रकी वेरण हुइ रही—ए देशी.

रामे मेली सीता वनवासमां, तिहांथी आवी हो तापसने आवास के ॥ गिरि कं-दर गुफा जिहां, तापसनां हो आश्रम निवास के ॥ सुगुण सोजागी सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतराय कर्मना योगथी, आवी लाग्यां हो कर्मनां फल एह के ॥ राम गया घर आपणे, सीता नारी हो विसारी मेली तेह के ॥ सु० ॥ २ ॥ अनुक्रमे मास पूरण थया, दोय कुमर हो जनम्या श्रीकार के ॥ लव ने कुश नाम थापीयां,

जखायो ॥ द० ॥ १० ॥ तेहवे तिहां हाहाकार वरत्यो घणो, रामनी जीत जगति प्रसिद्धी ॥ लक्ष्मण विजीषण बेहु जेला मेंली, नगरी लंका ततकाल लीधी ॥ द० ॥ ॥ ११ ॥ पाट थाप्यो विजीषणने वक्षीसमां, त्रिकूट गढमे श्राण फेरी ॥ तेहवे राम ने लक्ष्मण बेहु जणे, तेडावी नारी सीताजी श्राप केरी ॥ द० ॥ १२ ॥ दंपती बेहु मख्यां हर्षमां सहु जव्या, विजीषणे तिहां बहु जक्ति कीधी ॥ घणा दिवस रही रिद्ध समृद्धि लही, शीख दीधी वव्या पाज सिसि ॥ द०॥ १३॥ अनुक्रमे श्रावीया थंजणपासे देवले, मास चोमास रह्या तेह गामे॥ पूजा प्रजावना मोछव कीधा घणा, थापना कीधी थंजणोपास नामे ॥ द० ॥ १४ ॥ पांचमा खंम तणी ढाल नवमी जली, रंगविजय गणि शिष्य जाखी ॥ नेमविजय कहे श्रोता सहु सांजलो, रावण रायनी वात श्राखी ॥ द० ॥ १५ ॥

## डुहा.

अनुक्रमे सीता नारीने, स्वकीय उदर मांय॥ गर्ज वाधे दिन दिन जलो, हइडे हरख न माय ॥ १ ॥ एक दिन लक्ष्मण सीता बंने, सूतां ठे बे जण पास ॥ लक्ष्मणने माता समी, सीता नारी तास ॥ २ ॥ निद्रावश सूतां थकां, वस्त्र रहित थयां बेह ॥

दीगं रामचंड तिहां, शंका उपनी तेह ॥ ३ ॥ लक्ष्मण सरिखो नाइ मुज, मारवो न घटे मुज ॥ सीताने हुं जाणतो, सीतानां लक्षण शुक्र ॥ ४ ॥ ए तो वगरकी वे सही, मायें अपजश थाय ॥ तो केम हुं हवे करुं, काढी मेलुं वन मांय ॥ ५ ॥ लक्ष्मणने घातो कही, गहने मेलो वनवास ॥ तव लक्ष्मण बोल्या तिहां, नाइ तुमने स्यावास ॥ ६ ॥ कष्ट उपजावी लाबीया, सीता सुलक्षणी नार ॥ गहने वनवासे मेलतां, लाज जाये संसार ॥ ७ ॥ रामचंड माने नहीं, मनमां पकी बहु ब्रांत ॥ साचे साचुं चालशे, कर्म न जाणे नाति जात ॥ ८ ॥

## ढाल दशमी.

निद्रकी वेरण हुइ रही—ए देशी.

रामे मेली सीता वनवासमां, तिहांथी आवी हो तापसने आवास के ॥ गिरि कंदर गुफा जिहां, तापसनां हो आश्रम निवास के ॥ सुगुण सोजागी सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अंतराय कर्मना योगथी, आवी लाग्यां हो कर्मनां फल एह के ॥ राम गया घर आपणे, सीता नारी हो विसारी मेली तेह के ॥ सु० ॥ २ ॥ अनुक्रमे मास पुरण थया, दोय कुमर हो जनम्या श्रीकार के ॥ लव ने कुश नाम थापीयां,

वेश धारकरी हो फरे तापस नार के ॥ सु० ॥ ३ ॥ विणसिणमां करे आवीने, पुण्य जोगे हो सर्व विधि व्यवहार के ॥ अनुक्रमे कुंवर मोटा थया, जर जोवन हो पाम्या तेणी वार के ॥ सु० ॥ ४ ॥ करम जोगे आवी मल्यो, लश्कर लेइ हो कीधो अपार के ॥ वनिता नगरी उपरे, चडी आव्या हो लमवाने तेणी वार के ॥ सु० ॥ ५ ॥ कोइ विद्याधर आवी विनवे, तुम जनक हो रामचंदर राय के ॥ ते साथे तुम लमतां थका, जगमां अपजश हो तुमने घणो थाय के ॥ सु० ॥ ६ ॥ वली विद्याधर जइ कहे, राम आगल हो विनवे महाराज के ॥ ए कुंवर दोय तुम तणा, तेहने तेमी हो मनावो आज के ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव राम ने लक्ष्मण बे मली, दोय कुमर हो तेमाव्या तेणी वार के ॥ साजन सहु आवी मल्या, अंग उलट हो उपन्यो अपार के ॥ सु० ॥ ८ ॥ सीता तेमावी ततक्षणे, शंका टाली हो मननी ततकाल के ॥ उजम अंगमें अति घणा, सुख विलसे हो दंपती उजमाल के ॥ सु० ॥ ९ ॥ सीतानी शोक ते एम कहे, राम आगल हो कुड कपटनी वात के ॥ सीता नारी जे तुम तणी, रावणे राखी हो लंपट कुजात के ॥ सु० ॥ १० ॥ वगडी नारी जे तेहने, केम राखवी हो पडे पर मोंघ के ॥ निश पाप छे नासिमां, काढी मेलो हो धीज कोप नाथ के ॥

लागे मनमा [illegible] के ॥ ते

सु० ॥ ११ ॥ तव राम मनमां चिंतवे, शोकनो संबंध हो लागे मनमा [illegible] के ॥ ते मुज न घटे हो काढवी घर बार के ॥ सु० ॥ १२ ॥ एक दिन वस्त्र माटे सहु एम कहे, मुज न घटे हो काढवी घर बार के ॥ राते पखाळी मूकीयां, प्रभात ते धोयवा, धोबीने दीधां हो रामचंद्र तेणी वार के ॥ सु० ॥१३॥ उठरे रांड तुं मुज रही, राजा करशे हो आपणी हो जगाडे नार के ॥ सु० ॥१३॥ उठरे रांड तुं मुज रही, राजा करशे हो आपणने रीस के ॥ वेहेलां वस्त्र जो आपीए, तो नृपति हो आपे आशीष के ॥ सु० ॥ १४ ॥ तव धोबण मुखथी कहे, ठे मूरख हो शुं लव करे आज के ॥ तुं ने राजाचे ॥ १४ ॥ तव धोबण मुखथी कहे, ठे मूरख हो शुं लव करे आज के ॥ सु० ॥१५॥ राजानो सेवक एक जणो, जण मली, जाउं उंचा हो ज्यां ठे जमराज के ॥ सु० ॥१५॥ राजानो सेवक एक जणो, सांजले धोबीनी वातमी, कहे नारीने हो तुं सांभल सूनी याचा हो वेळो तेणे गाम के ॥ सांजले धोबीनी वातमी, कहे नारीने हो तुं सांभळ आम के ॥ सु० ॥ १६ ॥ ताहरा नाक कान वाडुं हुं तो, राजाने घरे हो पहवा आये आम के ॥ सु० ॥ १६ ॥ ताहरा नाक कान वाडुं हुं तो, राजाने घरे हो पहवा आये चयन के ॥ रावणे चार वरस लगे, सीता राखी हो कीधां मोटां कयन के ॥ सु० ॥ १७ ॥ ते वगरी घर मांय ठे, हुं तो नवि राखुं हो एहवी जे नार के ॥ ते सेवके वात सांभली, राय पासे हो विनवे तेणी वार के ॥ सु० ॥ १७ ॥ रामचंद्र मन चिंतवे, नारी माथे हो कलंक चढ्यो जेह के ॥ सीता सती माहरी खरी, पण एहनो हो उतारुं एह

के ॥ सु० ॥ १९ ॥ पांचमा खंड तणी कही, ढाल दशमी हो सुणजो नर नारी के ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय हो नित्य नित्य जयकारी के ॥ सु० ॥२०॥

दुहा.

रामचंद्र सीता प्रते, कहे एक दिन वात ॥ निंदा करे छे लोक सहु, कलंक चडावे नात ॥ १ ॥ तेहनो साच करो तुमे, पावकमां द्यो पग ॥ निंदा न थाये नातमां, वातो आवे पग ॥ २ ॥ सीता कहे साचुं कथुं, लोकापवाद न जाय ॥ साहेब करशो ते सही, धानारो ते थाय ॥ ३ ॥ अणमें दाघ खाइ खणी, जयों खेर अंगार ॥ राउ राणा जोवा मळ्या, आव्या जोवा नर नार ॥ ४ ॥ नाइ धोइ सीता सती, पहेरी उत्तम चीर ॥ समरण करी साहेब तणो, संभार्यो इष्ट वीर ॥ ५ ॥ पावक मांही प्रवेश कर्यो, अगन फीटी थयो नीर ॥ अचरिज पाम्यां आदमी, धन धन एहनी धीर ॥ ६ ॥ धन धन एहना शीलने, धन धन एहनी जाति ॥ धन एहना मावित्रने, धन कुंवरी सुजाति ॥ ७ ॥ पावक मांहेथी नीकळी, प्रगटी अगननी झाळ ॥ सती सती मुख सहु कहे, देव थाणी ममराळ ॥ ८ ॥ पुष्पवृष्टि थइ तदा, जयजयकारनी वाण ॥ चरम शरीरी ते कहे, मुक्तिरूप निरवाण ॥ ९ ॥

ढाल अगीयारमी.

मयणरे हो सती—ए देशी.

उछरंगे सीता नणीरे हो,रामचंद्र रंग लाय॥गुणा सांनळो॥ पामा दाशी अणगारीया
रे हो, गीत गान गवराय ॥ सु० ॥ १ ॥ सुखासने बेसाडीनेरे हो, आव्या निज
घर मांय ॥ सु० ॥ शोक सरवे दीने मलीरे हो, नीचुं मुख करी जाय ॥ सु० ॥ २ ॥
तेणे अवसर सीता सतीरे हो, विनवे निज पति पास ॥ सु० ॥ जो आज्ञा
आपो तुमेरे हो, दीक्षा हरख उल्लास ॥ सु० ॥ ३ ॥ रामचंद्र सीता नणीरे हो, कहे
वचन अमोल ॥ सु० ॥ न घटे एवुं बोलवारे हो, राखो मोटो तोल ॥ सु० ॥ ४ ॥
नामि कर्म घणां अछेरे हो, ते क्षय करवा काज ॥ सु० ॥ तप जप करुं एक ध्यान-
धीरे हो, आज्ञा आपो आज ॥ सु० ॥ ५ ॥ आज्ञा लीधी निज पतिरे हो, सद्गुरु
पासे जइरे हो, उछरंगे लीधी दीख ॥ सु० ॥ ६ ॥ विहार
कीधो दीख॥ सु०॥ साधुना संजोगथीरे हो, उछरंगे लीधी दीख ॥ सु० ॥ ६ ॥ विहार
करयां अन्य देशमांरे हो, पाळे चारित्र पांच ॥ सु० ॥ पांच महाव्रत पालतांरे हो, पांच सुम-
तिना संच ॥ सु० ॥ ७ ॥ त्रण गुपतिने गोपवीरे हो, चार कषायने वार ॥ सु० ॥ राग द्वेषने
टालीनेरे हो, उतार्यां कर्मनो भार ॥ सु० ॥ ८ ॥ आयुस्थिति पूरी करीरे हो, मास

... ॥ सु० ॥ अंते अणसण आदरीरे हां, पहोता शिवपुर सीध ॥ सु० ॥ ए ॥ रामचंद्र पण जावथीरे हां, पोहोता सिद्धने ठाम ॥ सु० ॥ लक्ष्मणनो जीव नारकीरे हां, कर्म तणां एह काम ॥ सु० ॥ १० ॥ लव ने कुश राज थापीयारे हां, सुख विलसे संसार ॥ सु० ॥ ए अधिकार एम जाणजोरे हां, सूत्र थकी निरधार ॥ सु० ॥ ११ ॥ बहु श्रुत होशे ते जाणशेरे हां, निर्बुद्धि शुं जाणे लोक ॥ सु० ॥ शास्त्र प्रमाणे कथा कहीरे हां, वांची जोजो थोक ॥ सु० ॥ १२ ॥ हीरविजय सूरिसरुरे हां, शुजविजय तस शिष्य ॥ सु० ॥ जावविजय जगते करीरे हां, सिद्धि नमुं निश दिस ॥ सु० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करीरे हां, कृष्णविजय कर जोम ॥ सु० ॥ रंगविजयना रूपनेरे हां, नावे अवर कोइ होम ॥ सु० ॥ १४ ॥ पांचमो खंम पूरो थयोरे हां, ढाल अग्यारे रसाल ॥ सु० ॥ नेमविजयने नित्य प्रतेरे हां, होजो मंगल माल ॥ सु० ॥ १५ ॥

इति श्रीमिथ्यात्वखंमन, रावणोत्पत्ति, सीताहरण, रामचंद्रमिलण, धर्मपरीक्षारासे पांचमो खंड संपूर्ण.

खंम ६ ठो.

दुहा.

मनोवेग कहे सांजलो, पवनवेग सुजाण ॥ उठो अधिकार दाखवुं, मिथ्यामत अवर पुराण ॥ १ ॥

ढाल पहेली.

जाटणनी देशी.

विद्याधर कुंवर वेहु जणे, कीधां जोगीनां रूप ॥ पाटलीपुर मांहे सांचर्या, लोक जोवे अकल सरूप ॥ १ ॥ जाइ तुमे जोजो मिथ्यात वातडी ॥ ए आंकणी ॥ ब्रह्मशालाए वेहु जण आवीया, कीधो जेरी घंटानाद ॥ कनक सिंहासन आरोहीयुं, द्विज आव्या करवा वाद ॥ जा० ॥ २ ॥ जोगी सिंहासन देखीने, विप्र कहे सुणो तमे वात ॥ वाद जीती वेसो आसने, नहींतो थाशे तुम तणो घात ॥ जा० ॥ ३ ॥ मनोवेग तिहां वोलीयो, नहीं गमे जो तुमने एम ॥ तो अमे उतरी हेठा वेसशुं, सहु सुख पामो द्विज तेम ॥ जा० ॥ ४ ॥ नट वोले सुणजो जाइ तुमे, कोण वाद

करशो सुजाण ॥ शिव सौख्य बोध जननी, जे जाणी ते वाली वाणी ॥ जा० ॥ ५ ॥ कोण देश कोण तुम गाम छे, कोण जातिना कोण गोर ॥ कोण कारण इहां आवीया, सत्य कहो मांजीने धूर ॥ जा० ॥ ६ ॥ जोगी रूपे खगपति ते जणे, सांजलो द्विजवर तुमे सार ॥ वाद विवाद अमे जाणुं नहीं, केवा कहीए शास्त्र प्रकार ॥ जा० ॥ ७ ॥ आपणपो वेष अमे धर्यो, गुरु नवि दीठो कोय जोय ॥ गाम ठाम कुल जाति हुं कहुं, सुणजो द्विजवर वातो सोय ॥ जा० ॥ ८ ॥ छठा खंम तणी ए में कही, पहेली ढाल ए सोय ॥ रंगविजयनो शिष्य ते एम कहे, नेमनी आशा पूरण होय ॥ जा० ॥ ए ॥

## ढाल बीजी.

आ चित्रशाली आ सुख सज्यांरे—ए देशी.

गुर्जर देश वंशवाडे सुणो गामरे, नरवाम वासो वसे अभिरामरे ॥ अम तणो पिता मांकण नरवामरे, ठालां ठाली गामर बहु धामरे ॥ १ ॥ ठालां गामरनो घणो डुऊाणोरे, सकल कुटुंब सुखीयो तुमे जाणोरे ॥ अमो गाडर रक्षक गोवालरे, गामर सहु राखुं वनमालरे ॥ २ ॥ एक दिवस पिता मांदो पमीयोरे, पुत्र सांजलो अमने ज्वर

चडीयोरे ॥ ठाठा गाडर ॰॰॰ तुमे जाओरे, सुखे करो घर निरवाहरे
॥ ३ ॥ मांकण घरडे गम शीख दीधीरे, तात आज्ञा अमे मस्तक कीधीरे ॥
गाडर रखण गया अमे चेयरे, वडो नाइ हुं लघु नाइ एहरे ॥ ४ ॥ वन मांहीं गाडर
राखुं नुं जेहरे, वनक्रीडा करीए वली नाइ बेहरे ॥ कोठ वृक्ष दीठो तिहां साररे, पा-
कां कोठ दीठां अपाररे ॥ ५ ॥ लघु नाइने कयुं में तामरे, गाडर मेढां राखो तुमे जा-
मरे ॥ कोठ तणां फल खाउं गइरे, तिहां लगे राखो ठालां तेहरे ॥ ६ ॥
फलीत फल खाउं घणां तुमनेरे, क्षुधा तणी वेदन जाये अमनेरे ॥ गाडर वन तणी
हांकी जागरे, तेम चारे जेम सुखीयां थायरे ॥ ७ ॥ मढां ठालां चारी लावजे इहांरे,
गउ आपण वे मलशुं तिहांरे ॥ गाडर हांकी चाल्यो वन मांहींरे, कोठ खावाने रह्यो
हुं त्यांहींरे ॥ ८ ॥ कोठ वृक्ष दीठो उत्तंगरे, चडवा शक्ति नहीं मुज अंगरे ॥ विचार्यो
में वृक्ष घणो उंचोरे, चडाय नहीं हुं तुं नीचोरे ॥ ए ॥ कटी मांहींथी कातुं काढीरे,
मस्तक निज हाथेशुं वाढीरे ॥ उंचुं ठेलीने मूक्युं हाथेरे, चडी बेठुं कोठा तणे माथेरे
॥१०॥ दांते त्रोमी खाधां घणां कोठरे, मुख नरायुं नवि आवे बेठरे ॥ जेम जेम माथे
खाधुं कोठ ठेठरे, तेम तेम पेट भरायुं हेठरे ॥ ११ ॥ तृप्ति पाम्यां मुज मस्तक देहरे,

आराधीएरे, तो आपे त्रिजुवन राजरे॥ एम मनमां विचारीने गयोरे, हर प्रासादे करवा
॥११०॥ काजरे ॥ द० ॥ ३ ॥ एक दिन ईश्वरनी पूजा करीरे, आराधे अतिही चंगरे ॥ नव
मस्तक हस्ते छेदी करीरे, पूज्युं ईश्वरनुं लिंगरे ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मस्तक राख्युं धड
उपरेरे, नवि कीधी एह तणी पूजरे॥ ईश्वर तो मुजने त्रूठो नहींरे, केशुं करुंरे अवुजरे॥ द०
॥५॥ नव शिरकमले शंकर अरचीयारे, लोचनकमल अढाररे॥ ईश्वरे वरदान नहीं आपी-
योरे, कशो वली करुं हुं विचाररे ॥ द० ॥ ६ ॥ रावणे निज वांही सघला छेदीयारे, नस
काढी वली देहरे॥ रावणहथो वांधो तेणे कीयोरे, नसा जाली गुंथी तेहरे॥ द० ॥ ७ ॥
सा री ग म प ध नी सरस जलीरे, तान मान ध्यान उल्लासरे ॥ गीत गान गाये
अति घणुं रे, छ राग छत्रीशे जासरे ॥ द० ॥ ८ ॥ तांडव नाटिक नृत्य करे वलीरे,
गीत तणो उठ्ठे घोपरे ॥ ईश्वर तव मनमां उलस्यारे, पाम्या अतिही संतोषरे ॥
द० ॥ ए ॥ चौद चोकमी राज जोगवोरे, मस्तक मखजो ठामरे ॥ रामायण वाल्मिके
एम बोलीयुंरे, अन्य पुराणे वली तामरे ॥ द० ॥ १० ॥ विप्र वचन वलतुं बोलीयारे,
सांजल जाइ अम तणी वाचरे ॥ पुराण प्रसिद्ध रावण तणीरे, कथा कही ते साचरे

॥ द० ॥ ११ ॥ नव मस्तक छेदी हस्ते करीरे, पूज्युं ईश्वर तणुं लिंगरे ॥ चाव चो-
कडी राज्य आप्युं खरुं रे, माथां वलग्यां तेह तणां अंगरे ॥ द० ॥ १२ ॥ रावणहयो रा-
जाए करीरे, गीत गान नृत्य कीधरे ॥ हर तुठ्या ते अमे सुण्युं वाणुंरे, पुराण मांही
ते प्रसिद्धरे ॥ द० ॥ १३ ॥ मनोवेग तव एवुं बोलीयोरे, सांभलो द्विजवर गहरे ॥
नव शिर चोढ्यां जो रावण तणां रे, तो एक शिर लाग्यो मुज देहरे ॥ द० ॥ १४ ॥
मनोवेग वली एम बोलीयोरे, सांभलो विप्र विचाररे ॥ तापस सघले ईश्वर आपी-
योरे, लिंग पड्युं तेहज साररे ॥ द० ॥ १५ ॥ ईश्वरे वलता रुधिर आपीयारे, तापस
लिंग पड्यां साररे ॥ पर मरणादिक दुःख टालीएरे, आपण सहीए अपाररे ॥ द०
॥ १६ ॥ अपर कथा पुराणनी सांभलोरे, विप्र करोरे विचाररे ॥ मस्तक मात्रज जे
वली उपन्योरे, दधिमुख नामे कुमाररे ॥ द० ॥ १७ ॥ छठा खंड तणी ढाल त्रीजी-
एरे, वात कही सुविचाररे ॥ आगल सहुको साजन सांभलोरे, नेमविजय कहे वि-
स्ताररे ॥ द० ॥ १८ ॥

दुहा.

श्रीकंठ नगर सोहामणुं, विप्र वसे तिहां एक ॥ तेहनी ब्राह्मणी रुयडी, दधिमुख

तणे, नगर प्रसिद्ध कुमार ॥ २ ॥ पुण्य दान दिन दिन करे, पिता तणे घर रहे रंग ॥ अगस्त्य रुषि तव आवीयो, दधिमुख मंदिर चंग ॥ ३ ॥ मान सनमान दीधां घणां, अत्यादे करीय प्रणाम ॥ पवित्र मंदिर आज अम तणो, बोले दधिमुख जाम ॥ ४ ॥ विनय करी कहे पग धुर्ड, जोजन करो रुषिराय ॥ जनम सफल होये अम तणो, तुम दरशने सुख थाय ॥ ५ ॥

## ढाल चोथी.

आज हजारी ढोलो प्राहुणो—ए देशी.

अगस्त्य रुषि बोल्या एशुं, सांजलो दधिमुख तुमे वाण ॥ साजन मारा हे ॥ विनय विवेकी तुज समो, नहीं दीठो कोइ सुजाण ॥ साजन मारा हे ॥ श्रोता सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ दधिमुख तुं ठे कुंवारडो, नारी परएयो नहीं सार ॥ सा० ॥ कुंवाराने घेर जमवो नहीं घटे, अघटतो दीसे आचार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ २ ॥ दान देवा नर योग्य ते, जेहने घरे नारी होय ॥ सा० ॥ स्त्री विना दान पुएय नहीं, स्मृति श्लोक एहवो जोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ३ ॥

श्लोकः—दानयोग्यो गृहस्थश्च, कुमारो न क्षमो नवेत् ॥
दानधर्मक्षमः साधु– र्गृहीणी गृहमुच्यते ॥ १ ॥

एम कहीने अगस्ति गया, दधिमुख तव निज गेह ॥ सा० ॥ आदर कर्यो विवाह तणो, मात तात परणावे वेह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ पिता कहे पुत्र तुमे सुणो, कन्या नवि दीए विप्र कोय ॥ सा० ॥ परण्या विना जोजन तणो, दधिमुख निम लीधो सोय ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ मातपिता शोक उपन्यो, तेह नगरे विप्रज एक ॥ सा० ॥ दुर्बलने धन आप्युं घणुं, तेहनी पुत्री परणी विवेक ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ विवाह करी घरे आवीया, घरे द्रव्य नहींरे लगार ॥ सा० ॥ चार माणस घर खरच घणो, पिता तव कहे तेणी वार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ दधिमुख सुत तमे सांजलो, वित्त खरच्युं अमे विवाह ॥ सा० ॥ अमे उद्यम हवे नहीं थाये, तुमे करो खर्च निर्वाह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ दधिमुख कहे कामनी सुणो, मातपितानो अपमान ॥ सा० ॥ घर रहेवा घटतुं नथी, जो होय हइडामां सान ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ९ ॥ दधिमुख शिर सीके धर्युं, तेह नारी लेइ चाली ताम ॥ सा० ॥ देश नगर गामे संचरे, पतिव्रता नारीनो नाम ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १० ॥ जरतार जगति घणी करे, सती

आणीने सहु लोक ॥ सा० ॥ धण कण दान दीये घणुं, मुख पाम्यां दोये गयो शोक ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ ११ ॥ भमतां भमतां उजेणी गया, इतनी शाखा मोझार ॥ सा० ॥ जुआरी घणा जुवटे रमे, तिहां साखी तेह भरतार ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ सीकुं खुंटे बांधीने गइ, सती हाट शेरी जिहां काज ॥ सा० ॥ एहवे जुआरीने कुरु थयो, सहु हएयो इतराज ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १३ ॥ शिर तुटी भूमिए पड्युं, सीकुं ठेदाणुं परी ताम ॥ सा० ॥ दधिमुख पुएय प्रगट थयुं, मस्तक लाग्युं धड ठाम ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १४ ॥ अन्य कबंध शिरपर तणुं, दधिमुख निपन्यो एह ॥ सा० ॥ विप्र कहो केम नवि मिले, मुज शिर मुज तणो देह ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १५ ॥ ठठा खंडनी ढाल चोथीए, विवेक तणी कही वात ॥ सा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयने सुख सात ॥ सा० ॥ श्रो० ॥ १६ ॥

## दुहा.

ब्राह्मण कहे जोगी सुणो, सत्य वचन तुम एह ॥ स्मृति पुराणे अमे सांभल्युं, खोटुं कहीए केम तेह ॥ १ ॥ खग कहे अपर वली सुणो, रावण लाव्यो हरी सीत ॥ हनुमंत अंगद मोकल्यो, गये विरटाखी प्रीत ॥ २ ॥ वाली पुत्र अंगद जशो. बोल्यो

मोटा बोल ॥ रावणे रीसे मारीयो, खड्गे कीधो बे तोल ॥ ३ ॥ अंगद फाडी वाघ फाडीयां, हनुमंते लीधां वेह ॥ वनमां आणी सांधीयां, लाग्यो तेहनो देह ॥ ४ ॥ पुनरपि ते वली जीवीयो, अंगद अपूरव जेह ॥ माहरूं मस्तक मुज धड चढ्युं, केम न मले मुज तेह ॥ ५ ॥

ढाल पांचमी.

चोपाइनी देशी.

अपर कथा ब्राह्मण तुमे सुणो, संबंध कहुं पुराण तुम तणो ॥ दानवपति ते दशरथ नाम, बे नारी तेहने अभिराम ॥ १ ॥ पुत्र पाखे ते दुःखीयां थया, ईश्वर भणी ते बणे गयां ॥ महादेवनी मांडी भक्ति, आराधे पूजे बहु जुक्ति ॥ २ ॥ महादेव तव तुठ्या तेह, पुत्र होशे तुमारे देह ॥ मुज लाडु चर्चीयो छे एक, भामनी करो विवेक ॥ ३ ॥ मैं वरदान दीधो छे आज, पुत्र होशे तुमारे काज ॥ घर निज लइ गया लाडु तेह, बे फाडी कीधो वली एह ॥ ४ ॥ भामनी बेहुने वेंची दीध, भार्याए ते भक्षण कीध ॥ गर्भ रह्या बेहुने वली ताम, नव मास वाडा गया ते जाम ॥ ५ ॥ एके दिवसे ते बेहु जण्या, अरधो अरध अंग तेहज भण्यां ॥ जइ

संजलाव्यो दशरथ तात, पुत्र एक दोय खंमज जात ॥ ६ ॥ बापे दीधी आज्ञा तेह, लेइ नाखो वनमां एह ॥ माताने तव उपन्यो नेह, जोर करी संधाड्यो देह ॥ ७ ॥ जरासंध परठ्यो वली तेह, जोरे बंधाणो तेहज देह ॥ जरासंध ते नामज थयुं, नारायणाशुं वेरज कयुं ॥ ८ ॥ सबल संग्रामे ते जुफार, शरीर मध्युं वे खंम अपार ॥ तेम मुज माथुं माहरे देह, एह वातनो नहीं संदेह ॥ ९ ॥ अपर वली कहुं सांजलो वात, शास्त्र पुराणे तेह विख्यात ॥ ईश्वर मोटो सबलो देव, पारवती नारीशुं टेव ॥ १० ॥ उमीयाने जोगवतां गयां, सहस वरस देवतानां थयां ॥ सुर सघलाने चिंता थाय, केम करीशुं आपण जाय ॥ ११ ॥ पुत्र उपजशे एहनो जेह, सबल संतापी होशे तेह ॥ देव दानवने करशे ताफ, जगत् जगफशे ते महा पाप ॥ १२ ॥ तो आपण हवे करीए एम, जोग विजोग उपाइए तेम ॥ देव मली विचार ए कीध, गोरी बांधवने आज्ञा दीध ॥ १३ ॥ विश्वानर तुमे विश्वना देव, सुर नर करे तुमारी सेव ॥ पार्वतीना जाइ जणी, काज आवो सहु देवज तणी ॥ १४ ॥ ईश्वर जोग करो अंतराय, तो सहुने सुख हर्षज थाय ॥ अग्निदेव तेणे मान्यो बोल, उमीया ईश तिहां गयो निटोल ॥ १५ ॥ जइ खोंखारो बाहीर जाम, विघन उपन्युं बीएँ खमतां

ताम ॥ पार्वती ऊठी तेणी वार, जाइ देखी लाजी अपार ॥ १६ ॥ ईश्वरने बहु कोपज चड्यो, लहि मुष्टि विश्वानर पड्यो ॥ लाला माटे मार्यो नहीं, मुख धररे वीर्य मूकुं सही ॥ १७ ॥ वीर्य पृथ्वी रेलाइ सहु, ते माटे मुख धररे कहुं ॥ तव विश्वानरे मुख ते धर्युं, उदरे वीर्य सघलुं सांचर्युं ॥ १८ ॥ वीर्य वले तव कोढी थयो, अग्निदेव ते दुःखीयो नयो ॥ ऋषिपत्नी तव गंगा जइ, स्नान करी आवे ते सही ॥ १९ ॥ नारी कार्तिका तेहनो नाम, अग्नि सगकीण तापे ठे ताम ॥ वीर्य काढ्युं मुख मांही थुंक, योनि संचार्युं मांही फुंक ॥ २० ॥ गर्भ वाधे हुवे नारी तणो, ऋषिए जाण्यो नहीं आपणो ॥ पेट मांहींथी काढी करी, सर्वण वनमां मूक्यो धरी ॥ २१ ॥ गर्भ तणा ठ कटका तेह, एकठा मेली कीधो देह ॥ कार्तिकेय हुवो तस नाम, पड्जनमा बीजो अभिराम ॥ २२ ॥ षड्मुख नाम कहे ते सहु, षड्मातुर जाणे ते बहु ॥ ठ कटका तस देहज मले, तो मुज शिर धडसें नवि मले ॥ २३ ॥ ठठा खंडनी पांचमी ढाल, सांभलजो तमे बाल गोपाल ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजयनो वयण सद्दहे ॥ २४ ॥

## डुहा.

अपर कथा तुमे सांजलो, गोरीनंदन गणपत ॥ पार्वती एक अवसरे, मज्जन करवा निमित्त ॥ १ ॥ अंग मेल उतारवा, सखी संघाते तेह ॥ अंग उगटणो घणो, पुरुष निपायो तेह ॥ २ ॥ गणेश रूप करी थापीयो, जीवतो कीधो तेह ॥ खड्ग आप्यो निज हाथमें, समजावे वली जेह ॥ ३ ॥ वेसाड्यो ते वारणे, चोकी करवा काज ॥ अवर म देजे आववा, नावा वेठी आज ॥ ४ ॥ ईश्वर आव्या उतावला, वेठो दीठो तेह ॥ अन्योअन्य पूछे फरी, कोण तुं माहरे गेह ॥ ५ ॥

## ढाल छठी.

### चोपाइनी देशी.

गणेश बोल्यो तव कोण छे तुं, घरमां पेसण नहीं देउं हुं ॥ तव ते लाग्यो जुद्ध अपार, गणेश ईश्वर कुके कुकार ॥ १ ॥ तव ते ईश्वर कोपे करी, खड्गे मार्युं मस्तक धरी ॥ उमी गयुं मस्तक ते तणुं, ब्यासी जोजन पोच्युं घणुं ॥ २ ॥ ईश्वर तव आव्या घर मांहीं, पार्वती नाहे छे त्यांहीं ॥ केम स्वामि आव्या इहां ईश, द्वारपाल मार्यो में रीस ॥ ३ ॥ पार्वती बोल्यां जगदीश, एह पाप शुं कीधुं ईश ॥ पुत्र माहरो

मार्यो तुमे, नहीं वोलुं हवे तुमशुं श्रमे ॥ ४ ॥ पुत्र हत्या लागी तुज हाथ, ए श्रघ-टतुं कीधुं काज ॥ पुत्र हत्यारा घरथी जाय, काला मुखवालो केम थाय ॥ ५ ॥ जो जीवंतो करशो एह, तो तुमशुं धरीशुं नेह ॥ ईश्वर तव श्रावी जोये वार, धरू दीठुं एकलुं तेणी वार ॥ ६ ॥ खेत्रपालने तव दीधी शीख, जोइ लावो गणपतिनुं शीश ॥ खेत्रपाल जोवे जग मांहीं, नवि देखे मस्तक वली क्यांहीं ॥ ७ ॥ गाम गाम जोयुं ते मुंरू, नवि दीसे गणपतिनुं तुंरू ॥ मुश्रा हस्तीनी श्राणी सुंढ, चोडी गणेश तणे जे रुंरू ॥ ८ ॥ गजवदन हुवो तसु नाम, जीवतो हुवो तेहज ताम ॥ मिथ्याति सहु पूजे लोक, एह वचन साचां के फोक ॥ ए ॥ विप्र सांजलो एहज साच, श्रमारी नहीं मानो तुमे वाच ॥ श्रापणुं वचन श्रापणने गमे, वाकी सहु ते फोके धमे ॥१०॥ शूद्र श्रन्य श्रप्राय एम कहे, घृत पक्क ते सहुने ग्रहे ॥ द्विजवर सहु ते फांखा थया, मौन धरीने वलता रह्या ॥११॥ ब्राह्मण एक वोल्यो वली एम, धूर्त वेडु दीसो छो तेम ॥ तुमे कह्या ते मान्या सहु, एक संदेह छे श्रमने वहु ॥ १२ ॥ कोठ उपरथी लाधां मुंरू, देहुं केम धरायुं रुंरू ॥ पर खाय ने पर केम धाय, एह वात केम घटती थाय ॥ १३ ॥ मनोवेग तव वोल्यो वाण, सांजलो वारुव तुमे श्रजाण ॥ इह लोके विप्र

जोजन करे, परलोके पूर्वज तृप्ति धरे ॥ १४ ॥ मातपिता सहु मुवा घणां, चोराशी लाख जोनिए जएयां ॥ काल घणो हुवो ठे तेह, न जाणीए अवतरीया केह ॥ १५ ॥ अर्ध पखना पंदर दीस, संवछरी छमासी त्रीस ॥ ब्राह्मण सगां जमे ठे सहु, ते पामे पुरवज मली घहु ॥ १६ ॥ पितर जवांतर पाम्या जेह, विप्र सगां जमतां पामे तेह ॥ तो मुज गाधुं कोठां खाय, मारुं पेट कहो केम न जराय ॥ १७ ॥ ठठी ढाल खंम ठठा तणी, एहवी वात ते द्विजवर सुणी ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेम-विजयनी वात एम रहे ॥ १८ ॥

## दुहा.

ब्राह्मण सहु हाथ जोमीया, बोले वचन अनाथ ॥ जीत्यो जीत्यो मुखथी वदे, हार्या अमे जगनाथ ॥ १ ॥ तुम साथे अमे बोलतां, नथी पुरवतो कोय ॥ साचा संपाते केम घटे, स्मृति पुराणे होय ॥ २ ॥ वाद जीती वननां गया, मित्र बेहु आणंद ॥ पवनवेग कहे जाइ सुणो, मिथ्या पुराण कह्यो वृंद ॥ ३ ॥ ते में खोटां जाणीयां, जिनवचननो नहीं जेद ॥ तेह कथा कहो निरमली, मिथ्या कथा करो छेद ॥ ४ ॥

## ढाल सातमी

आंगण वानुं एकलीरे, पमंर्वे नागरवेल, धणरा ढोला–ए देशी.

मनोवेग नय बोलीयोरे, सांनलो मित्र सुजाण ॥ मतरा सोनी ॥ रावण आदे देह कहुंरे, जिन नाषित मुख वाण ॥ म० ॥ १ ॥ मानो मानोरे सुगुण कहीयो मानो, माहारी एक अरदास ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ मेघवाहन अनुक्रमे हुवारे, लंकापति नरेश ॥ म० ॥ संख्या पार न पामीएरे, कहुं शास्त्र लवलेशरे ॥ म० ॥ मा० ॥ २ ॥ रत्नश्रवा लंका धणीरे, केके जसी राणी राय ॥ म० ॥ रावण पुत्र ते अवतर्योरे, सुर नर सेवे पाय ॥ म० ॥ मा० ॥ ३ ॥ मय विद्याधर पुत्री नलीरे, मंदोदरी रूपनी खाणी ॥ म० ॥ ते आदे रावण परणीयोरे, अढार सहस्र घर राणी ॥ म० ॥ मा० ॥ ४ ॥ हय गय रथ सुनट घणोरे, चक्रीनो अरधो मान ॥ म० ॥ प्रतिनारायण आठमोरे, जिन पूजे दीये दान ॥ म० ॥ मा० ॥ ५ ॥ हार प्रतावे नव मुख होयेरे, मुखगुं एकज देह ॥ म० ॥ दशमुख नाम हारे करीरे, लोक मांही हुवो तेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ६ ॥ राम नारी सीता हरीरे, राम रावण हुवो संग्राम ॥ म० ॥ रावणनुं दल नांजीयुंरे, राम सुनटे फेल्यो नाम ॥ म० ॥ मा० ॥ ७ ॥ लक्ष्मणे मार्यो लंकापतिरे, नरक चोथी

गयो तेह ॥ म० ॥ अनागत चोवीशीए जिन होशेरे, पंच कल्याणक गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ ८ ॥ जैन रामायण मांही कहीरे, विस्तारपूर्वक कथा राम ॥ म० ॥ दधिमुख कथा तिहां जाणजोरे, बीजा अधिकार मांही ताम ॥ म० ॥ मा० ॥ ९ ॥ ईश्वर लिंग तणी कथारे, बीजे अधिकारे कह्यो भेद ॥ म० ॥ जिन-मत शिवमत बेहु तणेरे, ते जोइ करजो छेद ॥ म० ॥ मा० ॥ १० ॥ जरासंधनी उत्पत्ति सुणोरे, संखेप कहुंरे विचार ॥ म० ॥ मगध देश राजग्रहीरे, नृप हुवा संख्या न पार ॥ म० ॥ मा० ॥ ११ ॥ हरिवंश मुनिसुव्रत हुवारे, तेहज अनुक्रमे जाण ॥ म० वृहद्रथ राजा रुयडोरे, श्रीमती राणी गुणखाण ॥ म० ॥ मा० ॥ १२ ॥ जरासंध सुत उपन्योरे, अरध चक्री तुमे एह ॥ म० ॥ कालिंदी आदि करीरे, सोल सहस्र गुण गेह ॥ म० ॥ मा० ॥ १३ ॥ कालयवन आदे करीरे, पुत्र हुवा महा शूर ॥ म० ॥ अश्व करि रथ सुभट भलारे, त्रिखंड लक्ष्मी भरपूर ॥ म० ॥ मा० ॥ १४ ॥ आठ विद्याधर प्रतिहरिरे, जूवर नवमो जरासंध ॥ म० ॥ कुरुक्षेत्रे संग्राम हुउरे, नारा-यणे छेद्यो कंध ॥ म० ॥ मा० ॥ १५ ॥ त्रीजी पृथ्वी गया ते दोइरे, होशे तीर्थंकर देव ॥ म० ॥ पवनवेग विचारजोरे, शास्त्र कह्यं में संखेव ॥ म० ॥ मा० ॥ १६ ॥

सातमी ढाल ठहा संभलीरे, सुणजो सहु नर नार ॥ म० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहेरे, नेमने हर्ष अपार ॥ म० ॥ जा० ॥ १७ ॥

## दुहा.

गणेश कर्यो देहमेलनो, केम आव्यो जीव मांही ॥ सत धात केम नीपजे, समजाओ मुज आंही ॥ १ ॥ मनोवेग कहे सांभलो, गणेश संबंध अधिकार ॥ जिनशासन मतमां घणो, सुणजो ते सुविचार ॥ २ ॥ अयोध्या नगरी अनोपम कही, रामचंद नामे राय ॥ तेहनो हस्ती मद भर्यो, मुनि पुंठे मारण धाय ॥ ३ ॥ समीपे आव्यो जेहवे, मुनि देखी उपसंत ॥ पूरव भव मुनीश्वरे कह्यो, सुणतां उपनी खंत ॥ ४ ॥ जातिस्मरण गज उपन्यो, वैराग पाम्यो अभिराम ॥ मुनि पासे व्रत उच्चर्यां, द्वादश जिनमत ताम ॥५॥ फासु आहार करे निरमलो, फासु जल पीए ताम ॥ लोक मांही जस वाध्यो घणो, वेलो रहे एक ठाम ॥ ६ ॥ धर्मश्री सामी सहु कर्यां, आप्यो विनायक नाम ॥ संयम पाली निरमलो, गज मरी देवलोक ठाम ॥ ७ ॥ ते लोक मांही व्यापीयो, गणेश विनायक नाम ॥ विपरीत रूप करी सहु, पूजे राखी भाम ॥ ८ ॥ सिद्धि बुद्धि नामे नारी दो, लख लाज दो पुत्र ॥ मूढ मिथ्याति मानवी,

मागे घरनां मूत्र ॥ ए ॥ अढार दोषथी वेगला, वीतराग गुणवंत ॥ तेहने पूज्ये पामीए, सुगति सुख अनंत ॥ १० ॥ पवनवेग तुमे सांजलो, कार्तिकेय वृत्तांत ॥ जिनवचने जेम जाखीयुं, एक मना सुणो शांत ॥ ११ ॥

ढाल आठमी.

सुविवेक विचारी जुउ, जुउ वस्तु स्वजाव—ए देशी.

कार्तिकपुर नगर जलुंजी, अगनिक्श नामे ठे राय ॥ जिमलमति ते जामनीजी, उमीया सरखी काय ॥ पवनवेग जाणजो जैन विचार, करजो मिथ्यात परिहार, पवनवेग ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कृतिका पुत्री रूपक्षीजी, रूपे रंज समान ॥ अष्टानिका व्रत आचरीजी, महोत्सव नृत्यज ग्यान ॥ प० ॥ २ ॥ श्रावक साथे सहु घणाजी, राजा गयो वन मांहीं ॥ न्हवण कीधां जिनवर तणांजी, उपवास अष्टमी त्यांहीं ॥ प० ॥ ३ ॥ कार्तिका गंधोदक सेश्जी, पिता जणी आवी ताम ॥ तात वांदो ए निरमलुंजी, शेष लेजो जिन स्वाम ॥ प० ॥ ४ ॥ शरीर देखी पुत्री तणुंजी, रूपे मोह्योरे राय ॥ कामबाणे करी ताकीयोजी, नृपचित्त विह्वल थाय ॥ प० ॥ ५ ॥ राजसजाए आवी करीजी, खट् दर्शन तेडी लोक ॥ शैव सांख्य बौध पूछीयाजी, जट्ट सन्यासीना थोक ॥ प० ॥ ६ ॥ मुज

मंदिर रतन उपज्युंजी, कहेजो केनुंरे तेह ॥ प्रत्येक पंच दरशनी कहूजा, ५।जा तणुं होय पद ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि पूछ्या जिन दरशनीजी, कहो जति केहनो ग्रीरत्न ॥ मुनिवर बोल्या नृप सुणोजी, जैन मारग कथां यत्न ॥ प० ॥ ८ ॥ चौद रतन विचार वणोजी, सात चेतन शुन होय ॥ अचेतन सात जाणजोजी, घर उपन्युं ग्रीरतन जोय ॥ प० ॥ ९ ॥ वचन सुणी नृप कोपीयोजी, निंद्या तिहां मुनि तेह ॥ देशे न रहेवुं अम तणोजी, जाजो सहु जैन देह ॥ प० ॥ १० ॥ मुनिवर तिहांथी चालीयाजी, दक्षिण देश मोझार ॥ पापी राजा परणीयोजी, पुत्री कीधी घर नार ॥ प० ॥ ११ ॥ अधीश कामांधो थयोजी, पुत्रीशुं नोगवे नोग ॥ गर्न रह्यो कृत्तिका उदरेजी, जनक तणो संनोग ॥ प० ॥ १२ ॥ पूरे मासे सुत जनमीयोजी, कार्तिकेय तेहनुं नाम ॥ पुत्री जणी एक रूपे सहु लोक रंजीयाजी, महोत्सव कीधो अनिराम ॥ प० ॥ १३ ॥ निरमलीजी, वीरमति नामे सार ॥ रूप सोनागे आगलीजी, कार्तिकेय सम मनोहार ॥ प० ॥ १४ ॥ क्रौंच नाम नरपति नलोजी, रोहीड नयरनो राय ॥ वीरमती परणावी तेहनेजी, महोत्सव करी उछाह ॥ प० ॥१५॥ क्रौंच परणी निज गामे गयोजी, वीरमतीने लेइ ताम ॥ कार्तिकेय नणवा मूकीयोजी, गुरु पासे पढी शास्त्र जाम

मागे घरनां सूत्र ॥ ए ॥ अढार दोषथी वेगला, वीतराग गुणवंत ॥ तेहने पूज्ये पामीए, सुगति सुख अनंत ॥ १० ॥ पवनवेग तुमे सांजलो, कार्तिकेय वृत्तांत ॥ जिनवचने जेम जाखीयुं, एक मना सुणो शांत ॥ ११ ॥

ढाल आठमी.

सुविवेक विचारी जुर्ठ, जुर्ठ वस्तु स्वजाव—ए देशी.

कार्तिकपुर नगर जलुंजी, अगनिइश नामे ठे राय ॥ विमलमति ते जामनीजी, उमीया सरखी काय ॥ पवनवेग जाणजो जैन विचार, करजो मिथ्यात परिहार, पवनवेग ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कृतिका पुत्री रूयमीजी, रूपे रंज समान ॥ अष्टानिका व्रत आचरीजी, महोत्सव नृत्यज ग्यान ॥ प० ॥ २ ॥ श्रावक साथे सहु घणाजी, राजा गयो वन मांहीं ॥ नवण कीधां जिनवर तणांजी, उपवास अष्टमी त्यांहीं ॥ प० ॥ ३ ॥ कार्तिका गंधोदक लेइजी, पिता जणी आवी ताम ॥ तात वांदो ए निरमलुंजी, शेष लेजो जिन स्वाम ॥ प० ॥ ४ ॥ शरीर देखी पुत्री तणुंजी, रूपे मोह्योरे राय ॥ कामबाणे करी तामीयोजी, नृपचित्त विह्वल थाय ॥ प० ॥ ५ ॥ राजसजाए आवी करीजी, [illegible]

मंदिर रतन उपज्युंजी, कहेजो केहुंरे तेह ॥ प्रत्येक पंच दरशनी कहेजी, राजा तणुं होय पह ॥ प० ॥ ७ ॥ मुनि पूछ्या जिन दरशनीजी, कहो जति केहनो ख्रीरत्न ॥ मुनिवर बोल्या नृप सुणोजी, जैन मारग कह्यां यत्न ॥ प० ॥ ८ ॥ चौद रतन विचार घणोजी, सात चेतन शुन होय ॥ अचेतन सात जाणजोजी, घर उपन्युं स्त्रीरतन जोय ॥ प० ॥ ९ ॥ वचन सुणी नृप कोपीयोजी, निंद्या तिहां मुनि तेह ॥ देशे न रहेवुं अम तणोजी, जाजो सहु जैन तेह ॥ प० ॥ १० ॥ मुनिवर तिहांथी चालीयाजी, दक्षिण देश मोझार ॥ पापी राजा परणीयोजी, पुत्री कीधी घर नार ॥ प० ॥ ११ ॥ अधीश कामांधो थकोजी, पुत्रीशुं नोगवे नोग ॥ गर्न रह्यो कृतिका उदरेजी, जनक तणे संनोग ॥ प० ॥ १२ ॥ पूरे मासे सुत जनमीयोजी, कार्तिकेय तेहनुं नाम ॥ रूपे सहु लोक रंजीयाजी, महोत्सव कीधो अनिराम ॥ प० ॥ १३ ॥ पुत्री जणी एक निरमलीजी, वीरमति नामे सार ॥ रूप सोनागे आगलीजी, कार्तिकेय सम मनोहार ॥ प० ॥ १४ ॥ क्रोंच नाम नरपति नलोजी, रोहीत नयरनो राय ॥ वीरमती परणावी तेहनेजी, महोत्सव करी उत्साह ॥ प० ॥१५॥ क्रोंच परणी निज गामे गयोजी, वीरमतीने लेइ ताम ॥ कार्तिकेय नणवा मूकीयोजी, गुरु पासे पढी शास्त्र जाम

॥ प० ॥ १६ ॥ नीशालीआने अनेक नाणजी. सहु साथे रमे वली तेह ॥ एक दिवस
सुखकी आवीजी माशालथी घणी नेह ॥ प० ॥ १७ ॥ लाड खाजां अति घणांजी.
मेवा मीठाइ अपार ॥ रत्न आभूषण उपनां तो पहेर्यां सघलं तेणी वार ॥ प० ॥ १८ ॥
सुखडी वहेंची आप आपणीजी नीशालीए अनेक ॥ कांतिकय नाठ तुमे छेउजी.
माशालनो ते प्रत्यक्ष ॥ प० ॥ १९ ॥ कांतिकय कामामणोजी. रथ चोदनो कुमार ॥
घर आवी वेग पूछीयुंजी मुज कहो मात विचार ॥ प० ॥ २० ॥ अमने मोशालनी
सुखडीजी. नवि आव काइ माय ॥ अश्रुपात माताए कर्याजी. मन मांहे दुःख घणुं
थाय ॥ प० ॥ २१ ॥ कनिका वात्र पुन मानताजी. कर्म कार्णी कहुं केम ॥ घाट न
आवे कहेतां घणुंजी. पर्मोश मां वली तेम ॥ प० ॥ २२ ॥ पुन बोल्या माता सुणोजी,
तो जमशुं अमे आज ॥ जेवु होय तेहवु कहोजी. मुज आगल नाखो लाज ॥ प०
॥ २३ ॥ माता कहे तुज तणा पिताजी, मुज बाप तेहज होय ॥ अन्याय कीधो
राजाए घणोजी, बाप वेहुनो सोय ॥ प० ॥ २४ ॥ छठा खंडनी आठमीजी, ढाल
कही सुविशाल ॥ रंगविजयनो शिष्य कहेजी, नेमविजय मंगल माल ॥ प० ॥ २५ ॥

कार्तिकेय नंदन कहे, सांजलो मोरी माय ॥ काम निवार्यां कोणे नहीं, एहवो जे अन्याय ॥ १ ॥ अघट मान एणे कीयो, को नहीं हुवो तव धर्म ॥ पापी अन्यायी जीवमा, ते बांधे निज कर्म ॥ २ ॥ मात कहे सुत सांजलो, मुनिवर जे गुरुराय ॥ तेणे घणी परे प्रीछव्यो, तोही कीधो अन्याय ॥ ३ ॥

## ढाल नवमी.

वर चाघेलो वाकीए उतर्यो—ए देशी.

कार्तिकेयरे कहे माता सुणो, किहां ठे मुनिवर वली तेहरे ॥ जननी थाहरे सुतजी सांजलो, जेन मुनिवर हता जेहरे ॥ साजन सहुकोरे सुणजो एक मना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुज पिताएरे ते निरघाटीया, इहांथी गया दक्षिण देशरे ॥ जिहां तुज तातनी आण फरे नहीं, लोक सहु जिनधर्म शीशरे ॥ सा० ॥ २ ॥ मात कहो ते आचार केहवो, जेहनो आवो निरमल धर्मरे ॥ राजा अन्यायेरे जेणे वारीयो, दूषण रहित करे ठे कर्मरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कुमरने मात कहे तुमे सुणो, चोवीश परिग्रहथी ते

ऊररे ॥ निग्रंथ साचा ते गुरु जाणीए, मोह मद टाळण ते कहा शूररे ॥ सा० ॥४॥ ऊंघो मुहपत्ति मासा कर धरे, तप जप संजमनां ते गेहरे ॥ दोष बेंतालीश टाली आहार करे, अंतराय बत्रीश पाळे तेहरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ वचन एहवांरे सुणी माता तणां, वैराग उपन्यो सुतने अंगरे ॥ क्षमा करीने तिहांथी नीकल्यो, मुनिवर गुरुने जोवा रंगरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ दक्षिण देश कार्तिकेय गयो, वांद्या जइने मुनिना चरणरे ॥ दीक्षा मागे श्रीगुरुनी कने, संसारसागर स्वामि तरणरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु तव बोल्या वछ तुमे सांभळो, दीक्षा मारग दुक्कर तेहरे॥ तुमे छो बालक लघुमतिना धणी, नवि संचवाए साधुपंथ जेहरे ॥ सा०॥ ८॥ अति आग्रह करी संजम लीयो, चारित्र आचर्युं पांच प्रकाररे ॥ गुरुनी सेवा शास्त्र जणे घणां, राग द्वेष तजीने अहंकाररे ॥ सा० ॥९॥ कृत्तिका नारी पुत्रविजोगथी, आरत ध्याने तजीने देहरे ॥ व्यंतर गतिमां जीव जइ उपन्यो, सुख विलसे तिहां तेहरे ॥ सा० ॥ १० ॥ विहार करंता कार्तिकेय मुनि, रोहिक नगरे पोत्या जामरे ॥ ज्येष्ठ मास अमावास्याने दिने, पारणुं करवाने ते ठामरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ इर्यापथिकी भूमिका शोधता, मौनव्रती मुनि अधीशरे ॥ क्रोध राजानी सस भूमि तखे, मुतो राणी खोळे शीशरे ॥ सा०॥ १२ ॥ भगिनीए भाइ

तिहां देखीयो, मुनिवर साधुनो रूपरे ॥ नाह जाणीने मोह व्यापीयो, ढंसीसे मस्तक धरी भूपरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ वीरमती राणी हेठी उतरी, बांधवने कर्यो रे प्रणामरे ॥ आलिंगन देइ घणुं भीजीयो, पोहोंचो नाह आपणे धामरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ क्रोच राजा तिहां तव जागीयो, राणी किहां गइ कहो आजरे ॥ दुष्ट मंत्री तिहां तव एम भणे, जुठ जुठ राणीने महाराजरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ खमणो वलग्यो तुम राणी भणी, छले करी देखाडे तेहरे ॥ क्रोच राजाए कोपी धनुष्य धर्युं, बाणे भेद्यो मुनिवर देहरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ विषम बाण लाग्युं मुनिने घणुं, भूमि पडीयो मुनिवर स्वामरे ॥ राग द्वेष मोह मान परिहरी, मन धरी जिनवरना गुणग्रामरे ॥ १७ ॥ वीरमती ते देखी दुःख भयो, नाह तणो उपन्यो सोगरे ॥ विलाप करे अति घणुं वलवले, घाजो सहु श्रावक-लोकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ छठा खंडनी नवमी ढालमां, सुणजो सहुको बाल-गोपालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य गुणी परे भणे, नेमविजयने हर्ष उजमालरे॥सा०॥१९॥

### दुहा.

वीरमति विलाप करे अति, मुख करे हाहाकार ॥ बांधव ए मुज सोहामणो,

मुनिवर ए व्रतधार ॥ १ ॥ वह्लभ आइ उगो तमे, मुज घर लेजो आहार ॥ निराधार छुं बेनमी, एक वार दीउ आधार ॥ २ ॥ जो वीरा तमे बोलशो, तो डुःख सुख कहुं वात ॥ पापी राजाए शुं कयुं, हणीयो मारो भ्रात ॥ ३ ॥ लघु वेशे संयम ग्रह्यो, मूकी माप ने बाप ॥ राज रिद्धि सुख परिहरी, खम्यो परिसह ताप ॥४॥ मास पारणे पहोत्या मुज परे, बाणे वींध्यो शुभ अंग ॥ वेदना व्यापी हशे घणी, देव कीधो रंगनो जंग ॥ ५ ॥

## ढाल दशमी.

उठ कलालणी भर घडो रे—ए देशी.

एम विलपंती कूटे हैयुं हे, शिर फोडे पाडे पोक ॥ हाहाकार हुवो घणो हे, मलीया नगरना लोक ॥ साजन सांजलो हे, कर्म तणी ए वात ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ महीपति पासे आवीयो हे, जाण्यो सहु वृत्तांत ॥ काम कीधो में पाडुउं ए, डुःख धरेरे एकांत ॥ सा० ॥ २ ॥ पापी मंत्रीए आज तो हे, कराव्यो वृथा पाप ॥ नरक निदान बंधावीयो हे, मुनि हत्यानो संताप ॥ सा० ॥ ३ ॥ व्यंतरीए तव जाणीयो हे, पुत्रने कष्ट अपार ॥ वेगे करी आवी तिहां हे, प्रत्न माय [illegible] ॥ सा० ॥ ४ ॥

रूप रच्युं मयूर तणुं हे, ऊजी कार्तिकेय पास ॥ मूर्छा पामी मुनिवर पड्यो हे, लीधो वृद्धि निवास ॥ सा० ॥ ५ ॥ मयूर चाल्यो सामी लेइने हे, वन मांही ते प्रासाद ॥ शीतल जिनवरदेवनो हे, दीठे टले विषवाद ॥ सा० ॥ ६ ॥ तिहां मूक्यो जति निरमलो हे, श्रावक करे बहु सेव ॥ मूर्छा गइ सावधान थइ हे, मुनि ध्याये जिनदेव ॥ सा० ॥ ७ ॥ करीय संन्यासी मन चिंतवे हे, अनुपेक्षा ते बार ॥ पवनवेग तुमे सांनलो हे, जावना संखेप विचार ॥ सा० ॥ ८ ॥ धण कण शरीर अथिर ठे हे, नहीं थिर कुटुंब परिवार ॥ राज रिद्ध सहु अथिर अठे हे, जेसो वीज ऊबकार ॥ सा० ॥ ९ ॥ शक्र सचीवने राखवा हे, समरथ नोहीं स्वछ ॥ मरण काले प्राणीने जया हे, सिंह धर्यो मृग वत्र ॥ सा० ॥ १० ॥ चार गति जीव डुःख सहे हे, कहेतां न लहुं पार ॥ ड्रव्य खेत्र जव जावे जम्यो हे, काल ते पंच संसार ॥ सा० ॥ ११ ॥ चार गते जीव एकलो हे, साथे नहीं तिहां कोय ॥ डुःख सुख सहे ते एकलो हे, चोराशी लाख जोनि जोय ॥ सा० ॥ १२ ॥ अन्य कलेवर अन्य जीवडो हे, अन्य सहु परिवार ॥ जनम जनम ते जुजुया हे, मोह म करशो लगार ॥ सा० ॥ १३ ॥ शरीर अठे सात धातुमें हे, मल मुत्र तणो जंकार ॥ रेत ने रुधिरे उपन्युं हे, अशुचि देह मोकार ॥

सा० ॥ १४ ॥ मिथ्या मत अविरत कषायना हे, तेहना जेद अपार ॥ पन्नर प्रमाद वली जोगना हे, कर्माश्रव ए धार ॥ सा० ॥ १५ ॥ समकित सुधे संजम हे, सुमति गुपति पर धर्म ॥ परिसर संवर उपजे हे, सुगति मुगति होय शर्म ॥ सा० ॥ १६ ॥ चार गतिना जीवने हे, निर्जरा होये सविपाक ॥ मुनिवर स्वामी तपवसे हे, निर्जरा करे अविपाक ॥ सा० ॥ १७ ॥ अधो मध्य ऊर्ध्व कह्यो हे, त्रण प्रकारे लोक ॥ उंचो राज चौद तणो हे, त्रणसें त्रितालां थोक ॥ सा० ॥ १८ ॥ नरजव दुलहो जाणवो हे, डुलहो श्रावक धर्म ॥ रतन त्रय व्रत डुलहो हे, मुगति गमन जिहां शर्म ॥ सा० ॥ १९ ॥ क्षमा मार्दव आर्जव गुणे हे, संजम शौच तप त्याग ॥ सत्य निर्ग्रंथ व्रत पालवुं हे, एह धर्म तणा दश जाग ॥ सा० ॥ २० ॥ ढाल दशमी छठा खंमनी हे, सांजलजो सहु कोय ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे हे, नेमविजय सुख होय ॥ सा० ॥ २१ ॥

### उहा सोरठी.

कार्तिकेय मुनि नाम, शुज ध्यान मनमां धरी ॥ आतम ध्याये सुख, होय सुगति मुगति जीवे वरी ॥ १ ॥ जेयो जेयो नवि जाय, तेह शरीर छेदन जेदन सहे ॥ अप्पा

श्यपे जावजो तेम, जेम पासे मुगति रहे ॥ २ ॥ पाषाण हेम घृत दूध, तिल मांहीं जम तेल रह्यो ॥ करमे वींट्यो ए जीव, शरीर मेल जिनजीए कह्यो ॥ ३ ॥

ढाल अगीआरमी.

मोरा साहेब हो श्री शीतलनाथके विनति सुणो एक मोरडी—ए देशी.

पुरुषाकारे हो ध्याउं आतमा सारके, शरीर मांहे तेज पुतलो ॥ जेम कोस मांहि हो रहे तरवारके, तेम आतमा अति उजलो ॥ १ ॥ सासो सासे हो रुंधी करी ताम-के, दशमे डुआरे चली लीजीए ॥ टालीए एम हो संकल्प विकल्प विचारके, मन निश्चल दृढ कीजीए ॥ २ ॥ शुध बुध हो चेतन चिदानंदके, केवलज्ञान सरूप छे ॥ शुद्ध चिद्रूप हो हुं वली सिद्धके, परम जोति सुख रूप छे ॥ ३ ॥ एम चिंतवी हो आतम ध्यानके, कार्तिकेय स्वामी मन रली ॥ समाधिमरणे हो साधी हुवो कालके, सर्वार्थ सिद्धि विमन फली ॥४॥ तेत्रीश सागर हो भोगवी आपके, मध्य लोके नरजव लही ॥ कर्म हणीने हो लही केवलज्ञानके, शीवरमणे वरशे सही ॥ ५ ॥ देव सहु तिहां हो आव्या ततकालके, पूजा महोछव घणो कर्यो ॥ लोक सहुए हो ए आवर्युं तीर्थके, प्रसिद्ध सामी महिमा विस्तर्यो ॥ ६ ॥ माता व्यंतरी हो तेणे उपाइ व्याधके,

लोक पाका घणी करे ॥ आवे जात्राए हो जे नर नारके, तेहनां रोग संकट हरे ॥ ७ ॥ मयुरवाहनो हो स्वामी कार्तिकेयके, नाम कही लोक तीर्थ जाये ॥ वीरमती ज्ञगिनीथी होये ज्ञावला बीजके, पर्व हवुं ते दिनथी थाये ॥ ८ ॥ श्रीजिनवरदेवे हो कह्या सकल विचारके, कुमार स्वामी कार्तिकेय तणो ॥ पवनवेग तुम हो ए जाणजो सत्यके, अपर ग्रंथ विस्तार घणो ॥ ए ॥ मिथ्यात्वीनां हो ए वचन असारके, मन मांही थकी ए टालजो ॥ ज्ञोला लोकज हो ज्रूला ज्रमे गमारके, जिनवर वचनज पालजो ॥ १० ॥ पवनवेगने हो आणंद ज्ञयो तामके, समकितधारी श्रावक थयो ॥ मनोवेग मित्रने हो करी प्रणामके, विमान रची लेइ निज गामे गयो ॥ ११ ॥ मनोवेग कहे हो सांज्ञलो मित्रके, श्रावकनो धर्म हुं कहुं ॥ आदि समकित हो सुधुं धरे चित्तके, सात व्यसनथी दूरे रहुं ॥ १२ ॥ मूल गुण हो पाले आठज नेमके, कंदमूल सहु परिहरे ॥ व्रत पाले हो श्रावकनां बारके, सामायिक त्रण काल करे ॥ १३ ॥ तिथि पर्वणी हो पोसो करे शुद्धके, सचित वस्तु दूरे तजो ॥ रात्रिज्ञोजन हो निवारो ब्रह्मचर्यके, पालो नव ज्ञेद शील ज्ञजो ॥ १४ ॥ गृह व्यापारे हो टालो पापारंजके, परिग्रह दूरे टालीए ॥ विवाह आदे हो अनुमत नवि देयके, उदेस्यो आहारने

सांनळीने निहाळीए ॥ १५ ॥ एकादश हो प्रतिमा ए सारके, श्रावकनी शुद्धि कही ॥ सांनळीने हो हरख्यो कुमारके, पवनवेगे मन दृढ मही ॥ १६ ॥ पवनवेग हो पवित्र व्रतधारके, जव्य जीव धर्म नेद जैनधर्म लीधो खरो ॥ दोय मित्रज हो आनंद हुवो सारके, वेहु मित्र स्वर्गे गया ॥ पाम्या अति घरो ॥ १७ ॥ व्रत पालीने हो आयुषा अंतके, वेहु मित्र स्वर्गे गया ॥ १८ ॥ अवतरीने हो पामशे घणी हो देवीनी रिद्धके, देवीशुं नोग सुखीया थया ॥ अष्ट करमनो हो वली करीने घातके, मोक्ष मनुष्यनो जन्मके, चारित्र पाली जिन तणुं ॥ १९ ॥ हीरविजय सूरि हो तपगच्छ मंमाणके, शुनविजय शिष्य लक्ष्मी पामशे घणुं ॥ २० ॥ रूपवि जाणीए ॥ नायविजय हो जगमें जयवंतके, सिद्धिविजय परमाणीए ॥ रंगविजयने हो प्रणमुं निश- जाणीए ॥ रूपवंत कल्याणके, कृष्णविजय कर जोमीने ॥ २१ ॥ खंम ठठो हो पूरो थयो आजके, ढाल दीसके, अंग ठठे अंग मोमीने ॥ नेमविजये हो उलट मन आणके, वात अनोपममें कही ॥२२॥ अग्यारे सुणो सही ॥

इति धर्मपरीक्षारासे षष्ठोऽधिकारः संपूर्णः ॥

## खंम ७ मो.

### डुहा.

एकदा पाटलीपुर जणी, विहार करंता एम ॥ आव्या आर्यसुहस्ती सूरि, परिवारे करी तेम ॥ १ ॥ वनपालक दे वधामणी, संप्रति राजा जणी जाय ॥ सघलो साथ लेइ करी, वंदण आव्यो राय ॥ २ ॥ द्विज आव्या सघला मली, सुणवाने उपदेश ॥ गुरु कहे मूल ठे धर्मनो, समकित मर्म विशेष ॥ ३ ॥ समकित विण शिवपद नहीं, सांजलजो सहु कोय ॥ आण सहित क्रिया अलप, बहु फलदायक होय ॥ ४ ॥ जिनवरदेव सुसाधु गुरु, केवली जाषित धर्म ॥ सद्दहीए सुधां सहित, ए समकितनो मर्म ॥ ५ ॥ तेणे कारण जवियण तुमे, वारी विकथा वात ॥ एक मना अवधारजो, समकितनां अवदात ॥ ६ ॥

### ढाल पहेली.

समुड्पाल मुनिवर जयो—ए देशी.

जंबुद्वीप जरत क्षेत्रमां, ए तो मगध देश मनोहार ॥ सनेही ॥ राजग्रही नयरी राजा

संप्रति राजा सांनलो, स...
तिहां, ए तो श्रेणिक चेलणा नार॥ सनेही ॥ १ ॥ संप्रति राजा सांनलो, ए तो नामे अनयकुमार॥
कथा सुजाण सनेही॥ए आंकणी॥बुद्धिनिधान वडो पुत्र छे, ए तो राजधुरंधर धार ॥ स० सं० ॥ २ ॥ अर्हद्दास
सनेही॥सर्व कला करी पुरुषनी, ए तो राजधुरंधर धार ॥ स० ॥ चित्त उदार जिन च्रचीने, दुःखी
शेठ तिहां वसे, जेहने घर वित्त नरपूर ॥ स० ॥ चित्त उदार जिन चरचीने, पासे ते नव चाडे
जन करे दुःख दूर ॥ स० सं० ॥ ३ ॥ आठ रमणीशुं सुख नोगवे, पासे ते नव चाडे
शील ॥ स० ॥ समकित सुधुं सद्दहे, धर्म करतो न करे ढील ॥ स० सं० ॥ ४ ॥
गिरि वेनारे एकदा, समोसर्या श्रीमहावीर ॥ स० ॥ वनपालके वधामणी, पासे
गौतमस्वामी वजीर ॥ स० सं० ॥ ५ ॥ सांनली संतोष्यो शुन परे, पृथ्वीपतिए पर-
नात ॥ स० ॥ महा मोछव करी वांदवा, आव्यो आणंद अंग न मात ॥स० सं०॥६॥
पांच अनिगम साचवी, नगवंत उपर धरी नाव ॥ स० ॥ वांदी वेठा विधिपूर्वके,
कहे नवजल तारण नाव ॥ स० सं० ॥ ७ ॥ पूजानाव आणे चित्तमें, ए तो चोथ
तणो फल जोय ॥ स० ॥ पूजोपगरण हाथे ग्रहे, छठ तणो फल होय ॥ स० सं०
॥ ८ ॥ गमणागमणे फल अठमे, पासे आव्यो दशम फल जाण ॥ स० ॥ डुवालस
फल जिन परपेखे, प्रदक्षिणे पद्द फल आण ॥ स० सं० ॥ ए ॥ मास फल जिन-

विध देखीए, पमजणे शत उपवास ॥ स० ॥ सहस्र फल विशेषने कह्यो, फुलमाळाए लाख फल तास ॥ स० सं० ॥ १० ॥ अनंत फल गीत नृत्यथी, एहवां फल सुणी शेठ तास ॥ स० ॥ नीम धार्यो त्रण कालनो, जिनपूजा विना उपवास ॥ स० सं० ॥ ११ ॥ आव्यो उत्सव एहवे, कौमुदी कौतिककार ॥ स० ॥ सुंदर वेश सजी सवे, नगर बहार आवे नर नार ॥ स० सं० ॥ १२ ॥ खेलो हसो मन खांतशुं, हुकम करे राजान ॥ स० ॥ कार्तिक पुनेमने दिने, गाउ वजाउ तान ॥ स० सं० ॥ १३ ॥ चार वरसने अंतरे, पमहो वजाके एम ॥ स० ॥ अर्हदास शेठ मन चिंतवे, मुज व्रत रहेशे हवे केम ॥ स० सं० ॥ १४ ॥ उंडुं मनमां आलोचीने, आव्यो शेठ नृपने पासे ॥ स० ॥ मोती आगल मूकीने, उभो अरज करे उल्लासे ॥ स० सं० ॥ १५ ॥ में लीधुं छे व्रत नेम जे, ते तुमे जाणो छो स्वाम ॥ स० ॥ आज आदेश हुवो एसो, केवुं करवुं हवे काम ॥ स० सं० ॥ १६ ॥ धन देइ धन धन कही, ए तो पणुं प्रशंसे राज ॥ स० ॥ जिनधरमी जयवंत तुं, करो जइ घरनां काज ॥ स० सं० ॥ १७ ॥ चोकी मेली चिहुं दसे, ए तो सुभट रह्या सावधान ॥ स० ॥ रात पडी राजा कहे, ए तो सांभल तुं परधान ॥ स० सं० ॥ १८ ॥ पहेली ढाल खंड

सातमे, सांभलजो सहु नर नार ॥ स० ॥ रंगविजय कविराजनो, नेमविजय अण-
गार ॥ स० सं० ॥ १९ ॥

## दुहा.

चालो जोवा जाइए, बोले श्रेणिक राय ॥ अजयकुमार बलतुं कहे, नावे मारे दाय ॥ १ ॥ नारी जाति मली तिहां, पुरुष नहीं छे लेक ॥ आपण केम जइए तिहां, मनमां धरो विवेक ॥ २ ॥ इंद्रि पांच जीती जीके, ते विनयी कहेवाय ॥ गुणवंत कहीए ते नरा, सहु जनमां पूजाय ॥ ३ ॥ राजा कहे परधानने, हुं तुं इंद्र समान ॥ लोको शुं करशे मने, बलवंत हुं राजान ॥ ४ ॥ प्रधान बलतुं एम कहे, अनिमान न कीजे फोक ॥ परजा थकी सुख पामीए, दुःख न दीजे लोक ॥ ५ ॥ वली नरपति एम उचरे, घणे न सीजे काज ॥ सूरज उग्यो एकलो, तारा जाये नाज ॥ ६ ॥ प्रधान कहे नरपति तमे, बहुशुं न करो वेर ॥ घणां मली कल्याण करे, घणांथी उपजे जेर ॥ ७ ॥ ते उपरे कथा कहुं, सुजोधन नृपनी वात ॥ वातो मन शीतल करे, वात करे उतपात ॥ ८ ॥

## ढाल बीजी.

फोस्या कामनी कहे चांदला, चांदा तुं छे परउपगारीरे—ए देशी.

हस्तीनागपुर वर जलो, राजा सुजोधन तिहां रायरे ॥ मंत्री पुरुषोत्तम तेहने, राजा पुरोहित कापिल कहेवायरे ॥ १ ॥ जमदंड नामे कोटवाल छे, राजा वेग सजा मोझाररे ॥ दूत आवी एक एम कहे, राजा अरिदल आव्युं अपाररे ॥ २ ॥ दूतनुं वयण सुणी एहवुं, राजा त्रकुटी चढावी जालरे ॥ घाउ निसाणे घमकीया, राजा कोप्यो रिपुनो कालरे ॥ ३ ॥ हय गय रथ पायक सजी, राजा राये प्रयाणज कीधरे ॥ राज नगरनी रक्षा करे, राजा जमदंडने जलामण दीधरे ॥ ४ ॥ लश्कर लेइ अरि उपरे, राजा वेहु दल जुझे अपाररे ॥ दिवस घणा तिहां लागीया, राजा सांजलो वात विचाररे ॥ ५ ॥ जमदंडे जस उपराजीउं, राजा रुडी परे प्रजा राखेरे ॥ राजकुंयर लोक वश थया, राजा यमदंड वयण जे जाखेरे ॥ ६ ॥ अरि जीती नृप आवीउं, राजा सनमुख सहु लोक जायरे ॥ राजा पूछे कुशल सहु, राजा कहे यमदंड पसायरे ॥ ७ ॥ विलंब करी पूछे वली, राजा तुमने अछे समाधिरे ॥ यमदंडना परसादथी, राजा कशी नथी असमाधिरे ॥ ८ ॥ चिंतवे नृपति चित्तमें, राजा राज्य

मुखे जे जायरे ॥ दूध विलामी राखवा, राजा पठे ते पस्तायरे ॥ ए ॥ कूड राखी मनमां घणो, राजा मोन करे नूपालरे ॥ इंगित आकारे उंलखे, राजा जाणे मनमें कोटवालरे ॥ १० ॥ मंत्री पुरोहित नृपति, राजा त्रणे मली एक ठायरे ॥ यमदंमने यमघर नणी, राजा मूकण विचार करायरे ॥ ११ ॥ देखो डुर-जन डुरमति, राजा पर जश देख्यो न सुहायरे ॥ राजा परधान पुरोहित मली, राजा कुकरम एह कमायरे ॥ १२ ॥ खजानो निज खोसवा, राजा मध्य रात्रे पेठो तेहरे ॥ कूम कपट करे घणां, राजा अंते पडी मुख खेहरे ॥ १३ ॥ मुड्रा जनोइ पाडुका, राजा मुखे मूके लेइ खात्ररे ॥ धन काढे ते धसमसी, राजा काम करे एह कुपात्ररे ॥ १४ ॥ खात्र मुखे विसरी गया, राजा पाडुका मुड्रा जनोइरे ॥ प्रातः समे यमदंमने, राजा तेडीने नाखे सोइरे ॥ १५ ॥ रे निर्लज्ज तुं नगरने, राजा राखे ठे रुडी रीतरे ॥ आज नंडार फाडी गया, राजा तुं सुइ रह्यो निचिंतरे ॥ १६ ॥ वस्तु सहित जो चोरने, राजा नहीं लावे माहरी पासरे ॥ चोर तणो दंम तुजने, राजा थाशे सही एम विमासरे ॥ १७ ॥ तुरत गयो मुख खात्रने, राजा पाडुकादिक पड्या दीठरे ॥ पाम्या चोर ते पापीया, राजा मन मांहीं हरख पइठरे ॥ १८ ॥ कोटवाल

चित्त चिंतवे, राजा जुवे राय एम करंतरे ॥ तो कहीए केहने जइ, राजा सुणजो सर्व जनांतरे ॥ १९ ॥ राजा आगल आवीने, राजा चोर न लाध्यो सामरे ॥ कोपे करी राय एम कहे, राजा एहने मारो तस ठामरे ॥ २० ॥ मली महाजन विनवे, राजा अवध दीजे दिन सातरे ॥ चोर वस्तु आणे नहीं, राजा मनमानी करजो वातरे ॥२१॥ कष्टे नृपे कह्युं कयुं, राजा परजानुं राख्युं मन्नरे ॥ यमदंड सहु आगल कहे, राजा सुणजो एक वचनरे ॥ २२ ॥ राजानुं मन एहवुं, राजा कहोने हवे कीजे केमरे ॥ महाजन कहे वीजो रखे, राजा न्यायीने थाशे खेमरे ॥ २३ ॥ परमेश्वर पद न्यायनो, राजा करशे सही जाणो साचरे ॥ ढाल वीजी खंड सातमे, राजा नेमविजयनी वाचरे ॥ २४ ॥

## दुहा.

शठपणे सघले फरे, चोर गवेषण काज ॥ पहेले दिवस सजा गयो, तव पूछे महाराज ॥ १ ॥ चोर न लाध्यो चोरटा, जमदंड कहे नरनाथ ॥ गाम गाम में जोइयो, चोर न आव्यो हाथ ॥ २ ॥ एवडी वार किहां रह्यो, कहे कोटवाल ते वार ॥ कथा

एक कहेतो हतो, सांजलतां थइ धार ॥ ३ ॥ जेणे मरण तुज विसर्युं, ते कहे मुजने वात ॥ उत्पातकी बुद्धे करी, कया कहेशे सात ॥ ४ ॥

## ढाल त्रीजी.

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी–ए देशी.

कहे कथा यमदंन मुनिशुं, सांजल राय सुजोधरे ॥ मन मांहीं जाणे यमदंन जो वली, पामे किमही प्रतिबोधरे ॥ कहे कथा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वन मांहीं एक मोटो सरोवर, सजल कमल विस्ताररे ॥ तेहनी पाले सरलो अति उंचो, तरुवर अठे उदाररे ॥ क० ॥ २ ॥ हंस घणा रहे ठे तरु उपरे, व्याध तणो नहीं लागरे ॥ वेल्ले अंकुर तस मूले देखी, वमो हंस कहे महाजागरे ॥ क० ॥ ३ ॥ चंचुपुटे करी अंकुर त्रोमो, तो तुमने सुख थायरे ॥ वधती वधती एहज वेलना, थाशे तुम डुःखदायरे ॥क० ॥४॥ तरुना हंस हस्या सवि तेहने, धीकण मोटो तुं शूरूरे ॥ एम सांजली मौन कर्युं तेणे, पामशो आपणुं कीधुं रे ॥ क० ॥ ५ ॥ काले वधी ते सघली वेलमी, जइ लागी तरु शीशरे ॥ ते व्याध चढीउं ते अवलंबीने, नाख्यो पास जगीशरे ॥ क० ॥६॥ चुण करीने सांजे हंस सघला, पासे पमीया आयरे ॥ आक्रंद करतारे पूठे शरूने,

वुटण मणो उपायरे ॥ क० ॥ ७ ॥ जोबन मद मतवाला मुरख जे, नवि मान्युं मुज वयणरे ॥ तेह तणां फल ए ठे प्रत्यक्ष, देखो आपणे नयणरे ॥ क० ॥ ८ ॥ थण-जाणे श्रयवा परमादे, कारज विणतुं संजालरे ॥ पठे प्रयास होये विफल सघलो, जल गये बांधी पालरे ॥ क० ॥ ए ॥ दीन वचने बोले ठे दादाजी, तुमे ठो वुद्धि-निधानरे ॥ दया करी निज पालक उपरे, दीजे वंछित दानरे ॥ क० ॥ १० ॥ प्राण रहित सरीखा थइ रहेजो, सघले मानी शीखरे ॥ परजाते देखी ते पापीयो, चिंते जाणी जीखरे ॥ क० ॥ ११ ॥ हंस सकलने हेठा नाखीया, उड्या ते समकालरे ॥ मान्युं वचन यमानुं तेमणे, पाम्या सुख विशालरे ॥ १२ ॥

गाथा—दीह्कालंठीया जत्त, पायवे निरुवदवे ।
मुलाउ उठीयावल्ली, जायं सरणं उजयं ॥ १ ॥

गाथा एह कही ठे वडे हंसे, समजो राय मयालरे ॥ कथा पदेसी संपूरण ए कही, समजो श्रोता दयालरे ॥ क० ॥ १३ ॥ सातमा खंड तणी ढाल श्रीजीए, समजाव्यो राय मुजालरे ॥ रंगविजयनो शिष्य एम कहे, नेमविजय परमाणरे ॥ क० ॥ १४ ॥

अनिप्राय पूछ्यो नहीं, कुरायलहयंत नरिंद ॥ मगसेलीयो नीजे नहीं, वरसे पुष्कर
वृंद ॥ १ ॥ वीजो दिन आव्यो वली, पूछे तेम महीराय ॥ कथा एक कहेतो हतो, ते
सुन आवी दाय ॥ २ ॥ कोइक नगर कुंनार एक, खाण खणी मन खंत ॥ नाजन
निपजावी नलां, वेची थयो धनवंत ॥ ३ ॥ नुवन करावुं अति नलुं, पुत्र विवाहज की-
ध ॥ जाचक जन संतोपीया, नगर थयो प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ माटी खणवा एक दिन, गयो
खाण मोकार ॥ तड तुटी उपर पमी, गाथा कहे कुंनार ॥ ५ ॥

गाथा—जेण निखं वलिंदमि । जेण पोसेमीनायर्ठ ॥
तेण मे पढिया नगा । जायं सरणं उनयं ॥ १ ॥

कथा कही निज घर गयो, समज्यो नहीं राजान ॥ त्रीजे दिन कथा कहे, ते
सुणजो सावधान ॥ ६ ॥

## ढाल चोथी.

वंगालो राग.

देश पांचाल कांपिलपुर सार, सुधरमा राजा सिरदार ॥ सुणो वारता ॥ जेन धरम

उपरे तसु राग, मंत्री जयदेव ठे चार्वाक ॥ सु० ॥ १ ॥ शत्रु तणो पराजव जाण, चाल्यो नरपति निग्रह जाण ॥ सु० ॥ जीती नगरमां आवे जाम, पोल वडी पडी आगल ताम ॥ सु० ॥ २ ॥ अपशुकन जाणी निरधार, बहार रह्यो राजा तेणी वार ॥ सु० ॥ उतावली कीधी ते पोल, पेसे बीजे दिन करत कलोल ॥ सु० ॥ ३ ॥ पडी वली तिमहीज ते पोल, मंत्री करावी देइ बहु मोल ॥सु०॥ त्रीजे दिने पेसे जव नृप, पुनरपि थयो तेह सरूप ॥सु०॥४॥ मंत्री कहे राजन अवधार, कोइक सुर कोप्यो सुविचार ॥सु०॥ निज हाथे माणस एक मार, तेहने रुधिरे जो दीजे धार ॥ सु० ॥ ५ ॥ तो निश्चय ए थाये साम, अवर पूजा बलि नावे काम ॥सु०॥ नृप नणे हिंसा जिहां होय, तेह नगरशुं काम न कोय ॥ सु० ॥ ६ ॥ जे सुवरणे तुटे कान, पहेरे तेने कोण अजाण ॥ सु० ॥ जिहां हुं तिहां नगर विशाल, कोण करे एहवो जंजाल ॥ सु० ॥ ७ ॥ निश्चय राजानो ए जाण, मंत्री महाजनशुं करे वाण ॥सु०॥ राजा नवि माने ए वात, निज नगर केम ठोड्यो जात ॥ सु० ॥ ८ ॥ सहु मली विनवीउं राय, अमे करशुं एह उपाय ॥सु०॥ पुण्य तणो जेम वहो विजाग, पामे नरपति पाप विजाग ॥ सु० ॥ ९ ॥ पाप तणुं फल अमने देव, तमे पुण्यवंत प्रजु नित्यमेव ॥ कंचन पुरुष कराव्यो एक, अलंकर्यो तेने सुविवेक ॥ सु०

॥ १० ॥ एम आनन्द करी नव लेय, नाखे पुत्र आवे सो श्रेय ॥ सु० ॥ ११ ॥ सातमो रुद्रदत्त देइने दान, सोनुं
ब्राह्मण रंक, रुद्रदत्तासुं कहे निःशंक ॥ सु० ॥ एम आलोच करी निज वाच, दीधो कनक लीधो तत-
क्षीण तेम याचे यान ॥ सु० ॥ १२ ॥ चिंते रुद्रदत्त मन मोझार, अहो स्वारथी मीठो संसार ॥ सु० ॥
काम ॥ सु० ॥ १२ ॥ चिंते रुद्रदत्त मन मोझार, अहो स्वारथी मीठो संसार ॥ सु० ॥ १३ ॥ बच्चा मरणथी
आव्यो कुंवर राजाने पास, हस्यो कुंवर पूछे नृप तास ॥ सु० ॥ माता मारे सुतने जाम, पिता
नहीं मुज बीह, कारण हसवानुं कहे सीह ॥ सु० ॥ मात पिता पीड्यो नृप पास, नृप पीड्यो महाजन
पने पुत्र जाये ताम ॥ सु० ॥ १४ ॥ मात पिता पीड्यो नृप पास, नृप पीड्यो महाजन
आगार ॥ सु० ॥ जो माता हाथे विष देय, तात गले ठरी वाहेय ॥ सु० ॥ १५ ॥

श्लोक—माता यदि विषं दद्यात् । पिता विक्रयते सुतम् ॥
राजा हरति सर्वस्वं । का तत्र प्रतिवेदना ॥ १ ॥

... गेरे लेइने पछी, मारण महाजन धन दे मली ॥ सु० ॥ तो कहो केहवो
... लोग, ... करम तणो कोण जोग ॥ सु० ॥ १६ ॥ पोल नगरशुं नहीं मुज काज,
... करे महाराज ॥ सु० ॥ धराधवनुं धीरज देख, नयर देवी तुठी सुवि-

शेष ॥ सु० ॥ १७ ॥ कीधी फूल तणी तिहां वृष्टि, धरापतिने थइ सुख सृष्टि ॥ सु० ॥ सातमा खंडनी चोथी ढाल, नेमविजय कहे रंग रसाल ॥ सु० ॥ १८ ॥

## दुहा.

आरक्षक वली आवीउं, चोथे दिवस अकाल ॥ रे नवि लाव्यो चोरने, एम पूछे नरपाल ॥ १ ॥ मारग मांहीं आवतां, आज अपूरव नाथ ॥ कथा एक में सांभली, सहु सांभलजो साथ ॥ २ ॥

## ढाल पांचमी.

रे जाया तुज विण घडीय न जाय–ए देशी.

वन मांहीं एक हरणलीजी, निज वालकने संग ॥ हरी चरे निझरण तणांजी, जल पीए मनरंग ॥ सुजोधन सांभलजो मुज वात, मत करजो व्याघात ॥ सुजोधन० ए आंकणी ॥१॥ वनने पासे ढुंकडुंजी, नयर वसे मनोहार ॥ नयर तणा राजाननेजी, वहोला वाल कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ आहेडे वन एकदाजी, जइने मांड्यो जाल ॥ बीजा मृग नासी गयाजी, पास पड्यो एक वाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ कोइक नृपना कुंवरनेजी, आपीने ते दीध ॥ बीजाने रमवा नवि दीएजी, तेणे सघले रड कीध ॥ सु० ॥ ४ ॥

पारधी तेमी पूछीयुंजी, कुरंग घणां छे केथ ॥ वन तेण तहवलावीयुंजी, ... पीछे मृगने
लेथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ व्याध वेप राये पहेरीयोजी, पारधीनो परिवार ॥ खणी अजाकी खांतशुंजी, फोमी
पापीयोजी, व्याप्यो मोह अंधकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ काढ्यां मृगनां वास ॥ सु० ॥ ७ ॥
सरोवर पाल ॥ बंधन सघले मांकीनेजी, कोश्क पंकित देखीनेजी, गाथा एम
पारधीने परशंसतोजी, हरुहड नृप हसंत ॥
नणंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

गाथा–सबदिसंजहिं सलीलं । सवारणं च कुवसंथत्रं ॥
राया य सयंवाहो । तहमियाणं कह वासो ॥ १ ॥

मूरख नृप समज्यो नहींजी, बुद्धि वमी संसार ॥ धन पामवुं ते सोहेलुंजी, सम-
जण दोहिली नर नार ॥ सु० ॥ ९ ॥ पूछे वली दिन पांचमेजी, तिणहीज परे नृपाल ॥
आज कथा में सांजलीजी, कहे वलतुं कोटवाल ॥ सु० ॥ १० ॥ देश नेपाल पाटली-
पुरेजी, वस्तुपाल महीपाल ॥ कवित कला शुद्धि लहेजी, जाणे बालगोपाल ॥ सु०
॥ ११ ॥ जारतीजूषण तेहनोजी, मंत्रीश्वर कहेवाय ॥ राय कवित तेणे दुःखीयोजी,
वेगा महा कविराय ॥ सु० ॥ १२ ॥ रीसे नृपति धमहव्योजी, मंत्री बंधाव्यो ताम ॥

गंगा मांहीं नखावीयोजी, वहेतो जाये जाम ॥ सु० ॥ १३ ॥ पुण्य जोगे थल पामीनेजी, ल्ये विश्राम जे वार ॥ अकस्मात् पुर आवीयोजी, कहेवे करी पोकार ॥ सु० ॥ १४ ॥

यतः—जेण वीयावरोहन्ति । जेण सिञ्चंति पायवा ॥
तस्स मज्झे मरिस्सांमि । जायं सरणं ज्जयं ॥ १ ॥

शीतल जल गुण ताहरोजी, निरमल ठे तुज देह ॥ अशुचि शुचि संगत हरेजी, थाये नहीं संदेह ॥ सु० ॥ १५ ॥ ताहरा गुण केता कहुंजी, तुं जीवन आधार ॥ नीच पंथ तुं आवरेजी, तो कोण तारणहार ॥ सु० ॥ १६ ॥ ठाना चर मूक्या हताजी, सांजल्युं तेणे सर्व ॥ राजाने आवी कहेजी, गिरुआ न करे गर्व ॥ सु० ॥ १७ ॥ निंदा करतो आपणीजी, कोमल करी प्रणाम ॥ जलथी तुरत कढावीनेजी, थाप्यो पहेले ठाम ॥ सु० ॥ १८ ॥ वात सुणावी एहवीजी, गयो जमदंम निज गेह ॥ सातमा खंमनी पांचमीजी, ढाल कही नेमे एह ॥ सु० ॥ १९ ॥

दुहा.

जब आव्यो तब पूठीयो, ठठे दिन जूपाल ॥ तस्कर खबर नवि करे, दीसे वमो बाचाल ॥ १ ॥ सूनां मंदिर शोधीयां, वेश्या तणां निवास ॥ जूआरी घर जोइयां पण

नवि पामुं नास ॥ २ ॥ सरस कथा में सांनली, लाग्यो तेणे मन्न ॥ प्रनु पासे मुज
आरनां, अधिको आव्यो वन्न ॥ ३ ॥

## ढाल ठठी.

में तोजी खणावी वावडी—ए देशी.

आज कथा में सांनली, सुणजो सहु सावधानरे; राज ॥ गजपुर नयर कुरु देशमां, नर कुबेर नगर समानरे ॥ रा० आ० ॥ ए आं० ॥१॥ राज करे तिहां रंगशुं, नामे सुजड नरिंदरे ॥ रा० ॥ यमयका राणा राजीया, वांदे चरण अरिवृंदरे ॥ रा० आ० ॥ २ ॥ दीपे फुल जेम सहु धरे, दिन परिणागे रवि सारिखो, कोइ न खंडे आणरे ॥ रा० ॥ शीपे फुल जेम सहु धरे, दिन दिन पगते वानरे ॥ रा० आ० ॥३॥ क्रीडा वानर तेहना, निरजय नगर ज्रमंतरे ॥ रा० ॥ उपद्रव अति घणो करे, नवि कोइ वरजंतरे ॥ रा० आ० ॥ ४ ॥ त्रिविध जातिनां वृक्ष तिहां, वेल अनेक प्रकाररे ॥ रा० ॥ पान फुल फले नर्युं, उद्यान ठे सुखकाररे ॥ रा० ॥ रक्षके वार्या नवि आ० ॥ ५ ॥ वनमां आवी वांदरा, तारुपी थया मत्तवालरे ॥ रा० ॥ रक्षके वार्या नवि रहे, तोडे तरुवर मालरे ॥ रा० आ० ॥ ६ ॥ वनपालक आवी कहे, विनतमी अवधारोरे ॥ रा० ॥ वाग विणासे वांदरा, वनचर वेगे वारोरे ॥ रा० आ० ॥ ७ ॥ क्रीका

कपि राये मूकीया, तेहने जीतण काजेरे ॥ रा॰ ॥ जइ मलीया निज जातिशुं, वृद्ध विशेष नांजेरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ ८ ॥ असमंजस देखी एशुं, एम चिंते रखवालरे ॥ रा॰ ॥ गाथा एक तिहां भणी, सुणो ते कहुं प्रजापालरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ ए ॥

आमरण्यया जथ्थ मक्कडा । सुरारण्यया मुंका ॥
अजारस्याविजया जथ । मूल विणठंतु कज्जं ॥ १ ॥

अपूरव वात संभलावीने, कही यमदंड गयो घेररे ॥रा॰॥ अणसमजु समजे नहीं, तेहनी शी करवी पेररे ॥रा॰श्रा॰॥१०॥ सातमे दिन सविशेषथी, मोडो आव्यो मांडरे ॥ रा॰ ॥ भ्रकुटी भाले चडावीने, भडक्यो भूत भराडरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ ११ ॥ रे निर्लज्ज निरलक्षणा, सांभल माहरी वातरे ॥ रा॰ ॥ पारिपंथक पाम्या विना, केम छूटीश तरजातरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ १२ ॥ त्रिक चाचर ने चोवटा, धूरत लंपटनां ठामरे ॥ वन गहवर में जोइआं, चोर न लाध्यो स्वामरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ १३ ॥ पासे तुमारे आवतां, सुण्यो में एक विरतंतरे ॥ रा॰ ॥ कहुं हुं ते तुमने कथा, मन धरजो मतिवंतरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ १४ ॥ देश सकलमां दीपतो, मोटो मालव देशरे ॥ रा॰ ॥ उज्जेणी नगरी भली, जितशत्रु नामे नरेशरे ॥ रा॰ श्रा॰ ॥ १५ ॥ गढ मठ मंदिर गोरडी, नदी

॥ रा० आ०
निर्वाण अनुपरे ॥ रा० ॥ शिव मंदिर जिन देहरां, सरगपुरी सम रूपरे ॥ रा० आ० ॥ १६ ॥ देवदत्त नामे कापडी, तीरथ करे सुविवेकरे ॥रा०॥ देश नगर बहोला नमी, अचरिज देखी अनेकरे ॥ रा० ॥ रा० आ० ॥ १७ ॥ जरा पहोती जाणीने, उजेणी थिर वासरे ॥ रा० ॥ अरुसठ तीरथ गणी कर्यां, सेवे बहु जन तासरे ॥ रा०आ०॥१८॥ आव्यो पर्व हवे एकदा, पाम्यो सरस आहाररे ॥ रा० ॥ लालचपणे लीधो घणो, निशि थयो उदर विकाररे ॥ रा० आ० ॥ १९ ॥ जीरण तने जरे नहीं, नारी सबलुं अन्नरे ॥ रा० ॥ मंदानल जेम मोटके, इंधणे शमे अगनरे ॥ रा० आ० ॥ २० ॥ उपचार कीधा अति घणा, नवि उपशमीउं रोगरे ॥ रा० ॥ गाथा एक कहे कापडी, सांभलजो सहु लोगरे ॥ रा० आ० ॥ २१ ॥

गाथा–जया जीवंति विप्रानि, जया तुष्यन्ति देवता ।
तयाहं मारितो लोका, जातं सरणतोजयं ॥ १ ॥

एम नृपति प्रतिबोधवा, कही कथा करी बुद्धरे ॥ रा० ॥ समस्या मांही समज्यो नहीं, मोटो राजा मूढरे ॥ रा० आ० ॥ २२ ॥ सातमा खंडनी ए कही, ढाल

छठीए आव्यो आवासरे ॥ रा० ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजयनी पूरवा आशरे ॥ रा० आ० ॥ २३ ॥

दुहा.

आव्यो वासर आठमे, यमदंड सन्ना मोझार ॥ तेमज नृप पूछ्यो तुरत, तस्कर तणो विचार ॥ १ ॥ देव न लाध्यो एम सुणी, नरपति कीधो रोप ॥ परजाने कहे सांजलो, मारो नहीं कांइ दोप ॥ २ ॥ कथा कही मुज वंचीयो, सात दिवस पर्यंत ॥ दंड चोरनो देइने, एहनो करशुं अंत ॥ ३ ॥ कहे माजन यमदंडने, चोर तणुं कोइ चिह्न ॥ देख्युं होय तो दाखवो, मत करजो नय मन्न ॥ ४ ॥

ढाल सातमी.

वांगरीयानी वाइरे गरवडो–ए देशी.

वयण सुणी महाजन तणुंरे, एम बोले यमदंडरे ॥ परज सुणो ॥ अहिनाणी आण्या पछीरे, श्यो करशो तस दंडरे ॥ प० ॥ १ ॥ राजसुतादिक सहु कहेरे, जो होशे नरराजरे ॥ प० ॥ चोर तणो दंड एहनेरे, करशुं मूकी लाजरे ॥ ॥ प० ॥ २ ॥ निश्चय एहवो जाणीनेरे, काढ्या त्रणे वस्तरे ॥ प० ॥ सन्ना मांहे मेली

कहेरे, ए चोर मोटो मस्तरे ॥ प० ॥ ३ ॥ पावकीए नृप परखीउर, घाटा...
भानरे ॥ प०॥ यमभूमि करी जाणीउरे, पुरोहित पापनिधानरे ॥ प० ॥४॥ ओलावो
चोरी करेरे, धान चीतमां खायरे ॥ प०॥ दांत विणासे जीननेरे, तिहां कोण आगो
आयरे ॥ प० ॥ ५ ॥ चमक्या देखी चित्तमेंरे, चोर तणां अहिनाणरे ॥ प० ॥ जे मन
माने ते करोरे, जेम न करे ए कामरे ॥ प० ॥ ६ ॥ नृपति कपिल प्रधाननांरे, तुरत
थयां गुम श्यामरे ॥ प० ॥ सहुको कहे हवे तेम करोरे, आणोह आमयवानरे ॥ प०
॥ ७ ॥ नगर थकी ते काढीनेरे, पाटीए निज निज पुत्ररे ॥ प० ॥ थाप्या महाजन
मली करीरे, सहु राख्युं एम सूत्ररे ॥ प० ॥ ८ ॥

यतः–मित्रं शाठ्यपदं कलत्रमसतीं पुत्रं कुलध्वंसिनम् ।
मूर्खंमंत्रिणमुत्सुकं नरपतिं वैद्यं प्रमादास्पदम् ॥
देवं रागयुतं गुरुं विषयिणं धर्मं दयावर्जितम् ।
यो नैवं त्यजति प्रमादवशतः स त्यज्यते श्रेयसा ॥ १ ॥

सुणी सुजोधन वारतारे, श्रेणिक करे प्रशंसरे ॥ प० ॥ धन्य प्रधान मति ताहरीरे,
तुं मुज कुल अवतंसरे ॥ प० ॥ ९ ॥ राजा कहे रजनी घणीरे, ठे हजी अन्नयकुमा-

ररे ॥प०॥ कांइक अचरिज जोइएरे, जमीए नगर मोकाररे ॥प०॥१०॥ जमतां एकण चाचरेरे, दीठो माणस ठांहरे ॥ प० ॥ पुरुष नारी दीसे नहींरे, अचरिज थयुं मन मांहीरे ॥ प० ॥ ११ ॥ कहो प्रधान दीसे किशुंरे, लोहपुरो प्रजु चोररे ॥ प०॥ अंजन वल अदृश्य थइरे, नगर पडावे सोररे ॥ प० ॥१२॥ जोइए ए किहां जाय छेरे, कौतके चाल्या पीठरे ॥ प० ॥ अर्हदास घर आंगणेरे, वडे चमी वेगो धीठरे ॥ प० ॥ ॥ १३ ॥ अलक्ष थका वेहु जणारे, आवी वेठा हेठरे ॥ प० ॥ एहवे कुंदलता कहेरे, सुणो वयण मुज शेठरे ॥ प० ॥ १४ ॥ महोछव मूकी कौमुदीरे, देव पूजादिक कर्मरे ॥ प० ॥मांमी वेठा मेहेलमांरे, केणे लगाड्यो जर्मरे॥ प० ॥ १५॥ परलोकार्थी कीजीएरे, ए करणी सुणी वामरे ॥ प० ॥ केणे दीठो परलोकनेरे, इहलोके सुख कामरे ॥ प० ॥ १६ ॥ परलोके सही पामीएरे, धर्म थकी सुख लक्षरे ॥ प० ॥ इहलोके फल एहवुंरे, में दीठुं प्रत्यक्षरे ॥ प० ॥ १७ ॥ कांता ते तुजने कहुंरे, धर्म तणां अवदातरे ॥ प० ॥ खंम सातमानी ए थइरे, ढाल सातमी नेम विख्यातरे ॥ प० ॥ १८ ॥

उहा.

इणहीज नगरे राजवी, थयो प्रसेनजीत नाम ॥ तास पुत्र राजा अछे,

श्रेणिक गुणनो धाम ॥ १ ॥ जिनदत्त शेठ हुवा इ॰, .... चोर एम, कोइक मारी नंदन रूपपुरा तणो, लोहपुरो ते तेह ॥ २ ॥ सांजली चिंते चोर एम, कोइक मारी वात ॥ करशे तेणो निश्चय मुणो, राजा ते पण धात ॥ ३ ॥

ढाल आठमी.

रामचंद्रके बाग चांपो मोरी रह्योरी–ए देशी.

शेठ कहे मुण नार, रूपपुरो जे तस्कर ॥ चोरी करे अपार, साथे कोइ न लस्कर ॥ १ ॥ अंजन विद्या सिद्ध, नगर मांही परसीधो ॥ हाथ न आवे तेह, नृप उपाय बहु कीधो ॥ २ ॥ जाणी ते दुःख साध्य, राजा एम पयंपे ॥ घरघर दीठ दीनार, दीजे तसु एम जंपे ॥ ३ ॥ मांरुयीए वली तास, एक विश्वो करी दीधो ॥ नृतिए थयो निचिंत, वानरने मद पीधो ॥ ४ ॥ काकण चडीय जरख, कोण तेहने कहो पाले ॥ नगरे फरे निःशंक, मन गमते पंथ माले ॥ ५ ॥ नट विटने रहे साथ, सात व्यसनने सेवे ॥ द्यूत मांस परदार, मदिरा चोरी लेवे ॥६॥ जइ आहेडे जीव, जात जातना मारे ॥ वेश्याशुं बहु प्रीत, रात दिवस चित्त धारे ॥ ७ ॥ रूपपुरो एक दिन, नृप घर परिसर जावे ॥ रसवती सरस सुगंध, परिमल

[illegible] ॥ [illegible] श्रद्दा श्रद्दा ॥ [illegible] जन ॥ करी काइ दाय उपाय. [illegible] दिन ॥ [illegible] मात्रा [illegible] गाय. नान नानना व्यंजन ॥ वर्मा [illegible] श्रम नयन [illegible] थया चार. स्वाद ते न मू-काय ॥ [illegible] म तिमागार परधान, पूर्व नयन [illegible] ॥ श्रव श्रवि तुम [illegible] श्रथवा धोंजी चिन्ता ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ तु जथा गनी वात, मार नदा [illegible] तेह सरूप ॥ १४ ॥ पणं जमु दिन दिन [illegible] वचन [illegible] माट्टे कन्नु न जाये तेह ॥ १५ ॥ सांजली ॥ [illegible] श्रदृश्य थका नर काय. ना-जन नकी करेरी ॥ १६ ॥ [illegible] श्राग ॥ मूका श्रकनां पान, कूप विलेपों विजाग ॥ [illegible] श्रवसर श्राया ॥ चरण धोण्या पान, मंत्री [illegible] ॥ [illegible] वार मुनइ चिहुं दिश मू-पत ॥ करीश तणा ज नाम पुम श्रय ते पूछया ॥ १९ ॥ नृप तणे संजाग, नयन श्रंजन सवि जाणो ॥ रूपपुरा प्रत्यक्ष, सघला सुनंद दीठो ॥२०॥ पाठवाइ धांप, श्राण्यां

## ढाळ नवमी.

नमणी खमणी ने मनगमणी ए देशी.

चोर कहे सांभळ व्यवहारी, तुं तो भाग्य परउपगारी ॥ शियाळे न्हाया मुज न-
रग, आगे मस्तके पाड्या वरण ॥ १ ॥ पूरव हम कमाया पाते, ते सवि उदय आव्यां
ओते ॥ पाणी माग्युं बहु जण पास, कोइ न पाये मरुका नामे ॥ २ ॥ त्रण दीव-
सनो तरस्यो हुं तुं, तुजथी पाणी पाका वाहुं ॥ तुं धरमी पाणी जो पाये तो मुज
प्राण सुखे सही जाये ॥ ३ ॥ उपगार [illegible] कहे [illegible] हमणां तुजने पाशुं
पाणी ॥ हुं सेवा जउं तुं आप पच परमे[illegible] जाप [illegible] ॥ ४ ॥ एम कहीने नम
[illegible], मुजने तेने धानक [illegible] जब सडने आवे वहेला चोर प्राण
[illegible] ते पहेला ॥ ५ ॥ मह्रा मंत्र मन निश्चल ध्याया पहेले देवलोके देवगति पा-
यो ॥ जब उडने आव्यो भुज नाम चोर तणो [illegible] ते घात ॥ ६ ॥ मुजने घरनो
दुर्ग दीधो, पोते देहरे काउस्सग्ग कीधो ॥ माणस ज मूक्यानां ठाने, तेणे वात कही
राजाने ॥ ७ ॥ शेठ तणे घर मूक्या पारा कोप्या नृप कहे जइने मारो ॥ दोड्या से-
वक मारण तही, अवधिनाण दीठो सुर तवही ॥ ८ ॥ आप सांनो ठे उपकारी,

गणो माहरी दुरगति वारी ॥ मारा गुरुने ए दुःख देशे, ठारे रह्यो दंभ धरीने वेगे ॥ ९ ॥ एटले जण राजाना आव्या, हांक्या पेसण मांहि नव पाव्या ॥ रोष करी हणवा ते मुंक्या, देवे निज दंभे ते कुट्या ॥ १० ॥ पछी नृपे मूक्यो कोटवाल, तेहने पण सुरे देइ गाल ॥ दंडे हणीने वली ते पाड्यो, नृप सुणीने अति घणुं आव्यो ॥ ११ ॥ पोते दल बादल लेइ चाल्यो, जब नजरे ते देवे निहाल्यो ॥ मारी हांक कटक सवी भागो, प्राण लेइने राजा नाठो ॥ १२ ॥ एकले सकल नगर एम जीत्युं, मति-सागर मंत्रीसरे चिंत्युं ॥ माणस रूप नहीं सुण नृप, ए तो दीसे देव सरूप ॥ १३ ॥ भूप देप दल वाकुल दीधो, विनति करीने परगट कीधो ॥ केणे अपराध कर्यो तुज स्वामि, नाखो नाम कहुं शीर नामी ॥ १४ ॥ अविवेक ए राजा ताहारो, सज्जन शि-रोमण धर्मगुरु माहारो ॥ जिनदत्त शेठने निरापराध, करवा मांगी अति आबाध ॥ १५ ॥ तेणे हुं नगर लोकने मारुं, माहारा गुरुनी पीडा वारुं ॥ तुम गुरु शेठ थयो केम देव, पूरव भव दाख्यो तव देव ॥ १६ ॥ धन्य तुं देव मंत्रीसर बोले, जन्मांतर उपगारी तुं तोले ॥ पहेली वय पाणी जे पीधुं, अंतकाले श्रीफल ते दीधुं ॥ १७ ॥

यतः–प्रथमवयसि पीतं तोयमल्पं स्मरंतः ।
शिरसि निहितभारा नालिकेरा नराणाम् ॥
उदकममृतकल्पं दद्युराजीवितांतं ।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति ॥ १ ॥

नगर तणुं टालो डुःख देव, जे कहो ते हवे कीजे सेव ॥ सहुको शरण करो जिनदत्तनुं, जो मन छे तुमने जीवितनुं ॥ १७ ॥ राजा प्रजा सहु देहरे आवे, पगे लागी अपराध खमावे ॥ हाथीपर वेसारी शीपे, नगर मांही आएयो अवनीशे ॥ १ए ॥ उच्या सुभट थयो जयकार, सोवन वृष्टि करी अति सार ॥ रतन त्रण अमुलक दीधां, शेठ तणां मनवंछित सीधां ॥ २० ॥ सहुको लोक करे परशंसा, धर्म तणी न करे कोइ खींसा ॥ देखो धर्म तणां फल वीर, नवमी ढाल नेमे कही सधीर ॥२१॥

डुहा.

रतन लेइ ते भुज पिता, शेत्रुंजय गिरनार ॥ चैत्य करावी अजिनवां, तिलक चमाव्यां सार ॥ १ ॥ प्रसेनजीतने आपीयां, रतन त्रण उदार ॥ माहरा गुरुनो भक्त ए, ए मन करी विचार ॥ २ ॥ लोहपुराने वली दीयां, रतन त्रण सुखकार ॥ तेणे वृते ते

हारीयां, सुर गयो स्वर्ग मोझार ॥ ३ ॥ केणे दीक्षा केणे बार व्रत, केणे समकित सु- विशेष ॥ बालपणे दृढ हुं थयो, धरम तणां फल देख ॥ ४ ॥ कहे सघली साचुं कह्युं, कुंदलता कहे जूठ ॥ राजा श्रेणिक चिंतवे, अहो नारी ए डूठ ॥ ५ ॥ मुज पि- ताना राजमां, ए थइ सघली वात ॥ पापण ए माने नहीं, पूछीश हुं परभात ॥ ६ ॥ शेठ कहे जयश्री प्रते, सुण गोरी गुणराश ॥ तें दीठुं कंइ सांभल्युं, धर्मफल तेह प्रकाश ॥ ७ ॥

## ढाल दशमी.

### चोपाइनी देशी.

कहे पहेली नारी सुणो कंत, नगरी उज्जेणीए नृप गुणवंत ॥ संग्रामसुर नामे जयकारी, शेठ रिषभसेन समकितधारी ॥ १ ॥ तेहने घर जयसेना नारी, शील गुणे सीता अवतारी ॥ समकितवंत सदा सत्य संधा, कर्म वशे करी ते छे वंध्या ॥ २ ॥ एकदा नाइ जणी ते भाखे, पुत्र विना कोण वंशने राखे ॥ एक घडीमां घडी जल बुडे, नंदन विण नाम क्षणमां डुबे ॥ ३ ॥ बीजी नारी तणो विवाह, कंत करो करी मन उच्छाह ॥ वय परिणत थइ सुण नारी, वात म काढे ए मुख बहारी ॥

४ ॥ लोक हसे कहे बुढो वेश, वरघोडे चढीत थइ ठेस ॥ संतति काजे नहीं कोइ दूषण, पुत्र थया पठी थाशे नूषण ॥ ५ ॥ जोरे इन्य तणी एक वेटी, परणावी सुंदरी गुण पेटी ॥ सुंदरीने सोंपी घर नार, जयसेना करे धर्म व्यापार ॥ ६ ॥ सुंदरीने जन्म्यो सुत सार, वांजीयानां उघड्यां घरवार ॥ पीहर सुंदरी पहोती जाम, वंधूसरी माता पूछे ताम ॥ ७ ॥ सुखणी तुं छे माहरी जाइ, शोक्य संकटमां केशो सुख माइ ॥ शोक उपर दीधी तुमे जाणी, पूठवुं घर पीने पाणी ॥ ८ ॥ शोक मांही वाली सुख इच्छा, माथुं मुंकावी नक्षत्रनी प्रीछा ॥ जयसेना मुज घणुं संतापे, माहारी ठांक देखे तिहां कापे ॥ ९ ॥ नंजेरी मूक्यो नरतार, दासीथी अवगणे अपार ॥ वंधूसरी सुणी ए वचन्न, जंपे पुत्री धीरज धर मन्न ॥ १० ॥ जयसेनानुं जीवित हरशुं, तुजने सुख थाशे तेम करशुं ॥ एहवे एक जोगी तिहां आव्यो, वंधूसरी मन अधिको सोहाव्यो ॥ ११ ॥ उठी उन्नी थइ चरणे लागी, सरस निक्षा दीधी अनुरागी ॥ संतोष्यो आसन वेसारी, मुज घर निक्षा लेजो हितकारी ॥ १२ ॥ आवे ते दिन दिन आवासे, नवि रसवती आपे उल्लासे ॥ नगते रीझयो जोगी बोले, ताहरे

कोइ न माइ तोले ॥ १३ ॥ मन माने ते हवे तुं माग, चंद्रसरी चिंते मुज लाग ॥ गद्गद साद पुत्री विरतंत, जयसेनाने मारो महंत ॥ १४ ॥ कालीचोदश कहे कपाली, विद्या साधीश समरीश वाली ॥ हरखी चंद्रसरी मन कूमी, दशमी ढाल नेमे कही रुमी ॥ १५ ॥

## दुहा.

कालीचोदशने दिने, जोगी जइ मसाण ॥ वेताली देवी तणुं, समरण करे सुजाण ॥ १ ॥ प्रत्यक्ष थइ देवी कहे, वच्छ समरी श्ये काज ॥ जयसेनाने मारो जइ, करो वेगे ए काज ॥ २ ॥ देवी आवी मारवा, कर साही करवाल ॥ सामुं जोइ नवि शकी, पोसह व्रत रखवाल ॥ ३ ॥ त्रण प्रदक्षणा देइने, आवी जोगी पास ॥ तिम हिज पाठी मोकली, जयसेना आवास ॥ ४ ॥ वार त्रण एम देवता, आवी फरी मसाण ॥ जोगी चिंते मुजने, मारे हवे निदान ॥ ५ ॥ जयसेना अथ सुंदरी, बेहुमां विरुइ जेह ॥ मारो माता तेहने, म करो कोइ संदेह ॥ ६ ॥ जइने मारी सुंदरी, देवीए ततकाल ॥ परने चिंते पाडुर्ड, तेना एवा हाल ॥ ७ ॥

## ढाल अगीआरमी.

एगीला जादव हव करी हरीय मनावीए हो लाल—ए देशी.

जयसेनाए लारीयोरे लाल, पोसह व्रत परजातरे॥ शासनदेवी॥ मूइ दीठी सुंदरीरे लाल, ए केणे कीधी घातरे ॥ शा० ॥ सार करो मुज सामनीरे लाल॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साच जूठ कोण जाणशेरे लाल, शोक्या तणो व्यवहाररे ॥शा०॥ सहु कहेशे मारी होशेरे लाल, कलंक तणो अवताररे ॥ शा० सा०॥ ॥२॥ शासनसुरी आराधवारे लाल, काउस्सग्ग कीधो साररे ॥ शा० ॥ परगट थइ देवी कहेरे लाल, म करो दुःख लगाररे ॥ शा० सा० ॥ ३ ॥ वंधूसरी हरखित थकीरे लाल, जमाइने घर जायरे ॥ शा० ॥ जाण्युं जयसेना मूइ हशेरे लाल, सुंदरी देखी दुःख थायरे ॥ शा० सा० ॥ ४ ॥ रोती माथुं कूटतीरे लाल, आक्रंद करती अपाररे ॥ शा० ॥ जयसेनाए मारी सुंदरीरे लाल, जइ पोकारी दरबाररे ॥ शा० सा० ॥ ५ ॥ जयसेनाने तेडवारे लाल, माणस मूके रायरे ॥ शा० ॥ तव शासन रखवालीकारे लाल, जोगीने उपायरे ॥ शा० सा० ॥ ६ ॥ जयसेना मोटी सतीरे लाल, एहवां न करे कामरे ॥ शा० ॥ राय आगल जोगी कहेरे लाल, सोने न लागे श्यामरे ॥ शा० सा० ॥ ७ ॥ वंधूसरीए मु-

जनेरे लाल, जमाली नली जातरे ॥ शा० ॥ प्रारथना पहवी करीरे लाल, जयसेना
करो घातरे ॥ शा० सा० ॥ ८ ॥ मैं वेताली आराधीनेरे लाल, मूकी मारण तासरे ॥
शा० ॥ कोण मारे पुण्यवंतनेरे लाल, सुंदरी मारी पापराशरे ॥ शा० सा० ॥ ए॥ पहवे
शासनदेवतारे लाल, आवी नाखे सासरे ॥ शा० ॥ वचन मळ्यां वेउ सारिखांरे
लाल, चलतुं राजा नाखरे ॥ शा० सा० ॥ १० ॥ चंभूसरी देश बाहरेरे लाल, काढो करे
हुकमरे ॥ शा० ॥ आज पछी कोइ पहवांरे लाल, न करे अशुभ कामरे ॥ शा० सा०
॥ ११ ॥ रिपनसेननी नारीनेरे लाल, महोच्छव करे महाराजरे ॥ शा० ॥ निज मं-
दिर पोहोती करीरे लाल, सिध्यां वंछित काजरे ॥ शा० सा० ॥ १२॥ सोवन वृष्टि करी
तिहांरे लाल, महिमा कीधो देवरे ॥ शा० ॥ साचो धरम संसारमांरे लाल, सहु क-
रजो नित्यमेवरे ॥ शा० सा० ॥ १३ ॥ राजा समकित पामीउंरे लाल, धरम तणां
फल देखरे ॥ शा० ॥ हुं धरमे निश्चल थइरे लाल, ते देखी सुविशेषरे ॥ शा० सा०
॥ १४ ॥ शेठ सहित ठ जामनीरे लाल, कहे साचुं कह्युं पहरे ॥ शा० ॥ लता कहे
मानुं नहींरे लाल, नाख्युं कूडुं तेहरे ॥ शा० सा० ॥ १५ ॥ श्रेणिकादिक चिंतवेरे
लाल, मुज हवीसी नारदे ॥ शा० ॥ सातमो खंम पूरो थयोरे लाल, नेमविजय सुख-

कारने ॥ शा० सा० ॥ १६ ॥ हीरविजय सूरि तणोरे लाल, शुजविजय तस शिष्यरे ॥ शा० ॥ जावविजय कवि दीपतारे लाल, सिद्धि नमुं निशदिसरे ॥ शा० सा० ॥ १७ ॥ रूपविजय रंगे करीरे लाल, कृष्णविजय कर जोडरे ॥ शा० ॥ रंगविजय गुरु माहरारे लाल, नावे कोइ पहनी होमरे ॥ शा० सा० ॥ १८ ॥ सातमा खंड तणी कहीरे लाल, अग्यारमी ढाल रसालरे ॥ शा० ॥ नेम कहे जविपण तुमेरे लाल, सांजलो बालगोपालरे ॥ शा० सा० ॥ १९ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे सप्तम खंड संपूर्ण.

## खंड ८ मो.

### दुहा.

पुछे चंदनश्री प्रते, अर्हदास उल्लास ॥ नामनी तें नगवंतनो, लाधो धर्म तेम त्रास ॥ १ ॥ कहे नारी कपीश्यपुरे, अरिमर्दन राजान ॥ सोमदत्त ब्राह्मण वसे, दारिद्र तणो निधान ॥ २ ॥ तेहनी नारी सोमीला, ताप थकी मूढ सोय ॥ रति नवि पामे द्विज किहां, करे दुःख बहु रोय ॥ ३ ॥ सोमदत्त वनमां गयो, मल्यो साधु महाजाग ॥ तेहने वचने उपन्यो, निर्मल मन वैराग ॥ ४ ॥

यतः— नवश्रोतचिलेऽमुष्मिन् । कलेवरगृहे किल ॥
जीवस्य वसतः काल—व्यालतः कुशलं कियत् ॥ १ ॥

श्रावकनां व्रत आदरी, आव्यो नगर मोकार ॥ धर्म प्रभावे धन मल्युं, तज्या पाप व्यापार ॥ ५ ॥ वालवने माने घणुं, व्यवहारी धनपाल ॥ स्वामी जाणी आपणो, करे सार संभाल ॥ ६ ॥ रोगाकुल थयो एकदा, ब्राह्मण ते सोमदत्त ॥ तेमाथी धनपालने, कहे बांधव सुण वत्त ॥ ७ ॥

## ढाल पहेली.

मुज लाज वधारो रे—ए देशी.

ब्राह्मण कहे वातरे, सुण शेठ सुजातरे, दिन रयणी न जात चिंता छे मुजनेरे ॥ ते टालो नाइरे, जेम सद्गति थाइरे, तुं परम सखाइ कहुं हुं तुजनेरे ॥ १ ॥ चिंता हेतु दाखोरे, कांइ मनमां न राखो, जे मुजने नाखो ते करशुं सहीरे ॥ सोमदत्त वली बोलेरे, तुं पुरुष अमोलेरे, तारे कोण तोले आवे इण महीरे ॥ २ ॥ सोमा मुज कन्यारे, गुण लक्षणे धन्यारे, नहीं एवी अन्या सोपुं तुज नणीरे ॥ ब्राह्मण नहीं खीणोरे, जिन धर्मे लीणोरे, जोइ प्रवीणो करजो एहनो धणीरे ॥ ३ ॥ शेठे कह्युं वालरे, परमेसर सारुरे, एम करशुं विचारी आणी निज मंदिरेरे ॥ द्विज सरगे पहोतरे, जिहां सुख बहोतरे, शेठ गुणयुत पाले पुत्रीनी परेरे ॥ ४ ॥ संगति साध्वीनीरे, साते धाते नीनीरे, जिन धरमे लीनी करती जिन पूजनारे ॥ दीठी रुद्रदत्तेरे, लागी तस चित्तेरे, निज मित्रने पूछे ए केहनी धूयारे ॥ ५ ॥ मित्र कहे सुण नाइरे, सोमदत्तनी जाइरे, धनपाल घरे आइ वाधे सुंदरीरे ॥ रुद्रदत्त कहे परणीरे, करीश हुं घरणीरे, ए अनोपम तरुणी सोवन मुद्रडीरे ॥ ६ ॥ हुती वमजागीरे, दीक्षिता-

नहीरे ॥ तुं तो जुआरार, सात व्यस-
निक मागीरे,हुआ बहु रागी जिन विण यइ नहीरे ॥ तुं तो जुआरार, सात व्यस-
ननो धारीरे, कणी परे अविचारी पामशो पहुनेरे ॥ ७ ॥ बोले अहंकारीरे, जो जो
मति मारीरे, न परणुं ए नारी तो कहेजो पशुरे ॥ चाल्यो पर द्वीपेरे, एक
साधु समीपेरे, सघली विधि शीखे जेम श्रावक शिशुरे ॥ ८ ॥ फरी आव्यो
ग्रेगेरे, मनने उद्वेगेरे, देहरे संवेगे आवी पूजा करीरे ॥ गाये गीत रसा-
क्षरे, चोखी कहे वाक्षरे, देखी धनपाल पूछे उलट धरीरे ॥ ९ ॥ किहांथी तुमे
आव्यारे, कोण जाते कहाव्यारे, मनमां बहु नाव्या वाणारसी नयरे वसुंरे ॥ मा-
याये कालरे, कीधो अकालरे, ब्राह्मण दयाल थतुं कहुं केशुंरे ॥ १० ॥ धीरज मन
भरतारे, तीरथ जात्रा करतारे, एणी परे फरतां एक दिन मुनिवर मल्योरे ॥ तेणे
नाख्यो धर्मरे, जेहथी शिव शर्मरे, सुणी जिनधर्म मुज मिथ्या मत टल्योरे ॥ ११ ॥
वेसवंतन काजरे, आव्यो इहां आजरे, अवधारो महाराज शेठ कहे अशुंरे ॥ घर
आवो देवरे, करशुं तुम सेवरे, सोमा ततखेव तुजने परणावशुंरे ॥ १२ ॥ विप सरी-
खी वामरे, तेहशुं नहीं कामरे, तस लीजे नहीं नाम ठग एम कहेरे ॥ आग्रहथति
कीधरे, जाण्यं कारज सीधरे, परणीने परसीध संधा निरवहीरे ॥ १३ ॥ जुवारी जेयरे,

जाइ जाखे तेथरे, सहु आवो एथ कंकण वांधी आवीउरे ॥ कीधो परपंचरे, हुवो रोमंचरे, जुउं मुज संच सोमा घर लावीउरे ॥ १४ ॥ करे के तव प्रशंसारे, कर जोमी नमस्यारे, न करे कोइ खींसा ते सुख जोगवेरे ॥ पूरे मन आशरे, नरनारी आवासरे, सवि विलास रयणी दिन जोगवेरे ॥ १५ ॥ गयो केतो कालरे, वली तेहज हवालरे, नवि जाये ढाल जेहने जे पमीरे ॥ प्रकृति जासरीररे, विचले नवि धीररे, पहेली सुणो वीर ढाल खंम आठमे जमीरे ॥ १६ ॥

दुहा.

मरजादा पाली जली, दिवस केटला सीम ॥ द्यूतासक्त वली थयो, श्यो कपटीनो नीम ॥ १ ॥ सुमित्रा वेश्या सुता, कामलता तसु नाम ॥ तेहशुं विलसे रातदिन, तजी आपणी वाम ॥ २ ॥ सोमा मनमां दुःख धरे, नयणे मूके नीर ॥ सुणी वात शेठे सहु, दे पुत्रीने धीर ॥ ३ ॥ वेटी दुःख कीजे नहीं, दीजे कर्मने दोप ॥ सुख दुःख सरज्यां पामीए, श्यो कीजे हवे शोप ॥ ४ ॥ आशा तजी जरतारनी, धरी वेठी धर्म ध्यान ॥ इह जव परजव जेहथी, सुख पामशे निरवाण ॥ ५ ॥ मानी वात पिता तणी, एक प्रासाद कराव ॥ प्रतिमा श्री शांतिनाथनी, थापी मनने जाव ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठा कीधी

पछी, संघ जगत करी सार ॥ सुमित्रा कामलता सहित, तेड्यो रुद्र जुवार ॥ ७ ॥ जोजन जलां करावीने, दीधां फोफल पान ॥ जजे न उत्तम अधम पाप, चंद्र तणो अहिनाण ॥ ८ ॥

यतः—निर्गुणेष्वपि सत्वेषु । दयां कुर्वंति साधवः ॥
न हि संहरति ज्योत्स्नां । चंद्रश्चांडालवेश्मनि ॥ २ ॥

ढाल बीजी.

काची कलीय म तोड लविंगरी मालीयां, पीयु चाल्या परदेश वेली होती मालीयां—ए देशी.

सोमानुं रूप देखी सुमित्रा शिर धूणे, चिंते चित्त मांही एम अहो ए किम बने ॥ एहवी सुंदर नारी तजी केम पापीए, अथवा के तव बुद्धि विचारे नवि हीये ॥ १ ॥ काम एह कर्युं जे पुत्रीने जायगे, जो रहे जीवती एह थाये शल्य जायगे ॥ एम विचारी फूल सर्प घाली घडे, कामलता लेइ साथ आवी आदर वडे ॥ २ ॥ सरस कुसुमनी माल आणी में जोवती, पूजी एणे जिनराज पापमल धोवती ॥ सरलपणे करस्पर्श कर्यो घटे जेटले, भुजंगम फूलमाल थयो ते तेटले ॥ ३ ॥ लेइ सुगंधी

फूल जिनेश्वर अरचीया, केसर चंदन अगर कपूरे चरचीया ॥ कामलता गले हार घाल्यो रमत मिषे, नाग डस्यो ततकाल पमी जोंय तसे ॥ ४ ॥ मृत पुत्रीने देख अचा गृहे देयुं, आक्रंद करे अपार देव तें शुं कीयुं ॥ करे विलाप अनेक नयणे आंसु झरे, घट सरप लेइ वेगे आवी नृप मंदिरे ॥ ५ ॥ करती हाहाकार कहे पोकार करी, देव सुणो अरदास सोमा अति मद जरी ॥ माहरी लाल हवे हुं केम करुं, हुं झोशी निराधार जीवित केणी परे धरुं ॥ ६ ॥ सोमा तेमावी राय कहे कुल खांपणी, कामलताने कांइ मारी तें पापिणी ॥ कहे सोमा महाराज वचन अवधारीए, जयणा सूक्ष्म जीव शूल केम मारीए ॥ ७ ॥ मांमी पूरव वात सोमाए सवी कही, देखाड्यो घट साप मित्रा अवसर लही ॥ पंच वरण फूलमाल सोमा हाथे धरी, मित्रा कासे हाय अहि थाये फरी ॥ ८ ॥ वार त्रण एम नाग कुसुममाला हुवो, कहे सजा सहु कोय सोमा साची जुर्ज ॥ देखी चमक्यो नृप नहीं ए मानवी, प्रत्यक्ष देवी तेह एम मन आलवी ॥ ९ ॥ कर जोमी करे राय सोमाशुं विनति, कामलता जीवामो अजो तुम महा सती ॥ मंत्र नवकार प्रजाव मूर्छा मटी गइ, सती तणे करस्पर्शे उठी बेठी थइ ॥ १० ॥ सुमित्रा निज करतूक प्रकाशी शुज मते, धर्म तणां फल देख लह्यो धर्म नृप ते ॥

कडूदत्तादिक अवर तिहां श्रावक थया, तेणे वामे मुणी स्वामि पाप साथ मुज थया॥ ११ ॥ शेठ शेठाणी सर्व कहे साचुं कह्युं, कुंदलता कहे जूठ में नवि सद्दह्युं ॥ श्रेणिक अनयकुमार वचन ते सांनली, चिंते दुर्बुद्धि नार न दीसे ए नली ॥ १२ ॥ आदेशुं दंम प्रनात राते नवि बोलीए, वेचीने निज डंघ उजागरो कोण लीए ॥ आगमे खंडे ढाल बीजी ए सोहती, कहेशे मित्रश्री वात नेम मन मोहती ॥ १३ ॥

दुहा.

अर्हदास मित्रश्री प्रते, पूछे बहु धरी प्रेम ॥ केम प्राप्ति थइ धर्मनी, सा पामी कहे तेम ॥ १ ॥ वत्स देशे नगरी वसी, कोसंबी सुख थान ॥ धनंजय राजा तिहां, सोमशर्मा परधान ॥ २ ॥ मासोपवासी एकदा, आव्यो साधु उद्यान ॥ तास प्रनावे पन थयां, नवां फूल फल पान ॥ ३ ॥ मासखमणने पारणे, नगरमां ऋषिराय ॥ आव्या घोढ़ोरण देखीने, प्रणमे मंत्री पाय ॥ ४ ॥ शुद्ध पान असने करी, प्रतिलान्यो धरी नाव ॥ पंच दिव्य प्रगट थयां, पात्र दान प्रस्ताव ॥ ५ ॥ विस्मय पाम्यो वेगशुं, आव्यो जिहां अणगार ॥ पूछे बे कर जोडीने, नगवन् कहो विचार ॥ ६ ॥ अग्निहोत्री द्विजित नणी, दीधां में बहु दान ॥ कनक नाग तिल अश्व रथ, दासी मही

परधान ॥ ७ ॥ कन्या कपिला धेनु वली, महादान दश एह ॥ पण अतिशय दीठो नहीं, शुं कारण छे तेह ॥ ८ ॥

## ढाल त्रीजी.

### नणदलनी देशी.

मुनिवर कहे महेता सुणो, असंजति एह अजाण ॥ शुन मन ॥ छ कायनी हिंसा करे, तेणे फल नहीं मन आण ॥ शु० मु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ऊखर खेत्रे वावीयो, जेम निष्फल थाये वीज ॥ शु० ॥ तेम दीधुं कुपात्रने, ते पण गणो तिमहीज ॥ शु० मु० ॥ २ ॥ ज्ञानवंत क्रिया करे, ते जाणीजे सुपात्र ॥ शु० ॥ तेहने दीधुं बहु फले, तप करे निरमल गात्र ॥ शु० मु० ॥ ३ ॥

यतः—एकवापीजलं सिक्त—मात्रे मधुरतां व्रजेत् ।
निंबे च कटुतां याति । पात्रापात्रनियोजनात् ॥ १ ॥

पूछे मंत्री मुनि प्रते, चित्त कोमल नहीं धीठ ॥ शु० ॥ माहारी परे बीजे केणे, दान तणां फल दीठ ॥ शु० मु० ॥ ४ ॥ विश्वभूति ब्राह्मण तणी, कथा कहे मुनिराज ॥ शु० ॥ देश वैराट दक्षिण दिशे, सोमप्रज तिहां राज ॥ शु० मु० ॥ ५ ॥ ब्राह्मणने माने घणुं,

नक्ति करे नित्यमेव ॥ शु० ॥ वेलो सत्ता मांहे एम कहे, वाजव जगमा देव ॥ शु० मु० ॥ ६ ॥ वित्त सफल करवा नणी, बहु सुवरण नामे जाग ॥ शु० ॥ ब्राह्मण पासे मंका- वीयो, पुण्य ऊपर धरी राग ॥ शु० मु० ॥ ७ ॥ जगन करे तिहां ढुकडो, विश्वनूति रहे विप्र ॥ शु० ॥ खले जइ जव जाचीने, सांनुं करे ते लिप्र ॥ शु० मु० ॥ ८ ॥ चार पींमी करे तेहनी, पहेली हुतवह पोख ॥ शु० ॥ बीजी अतिथि त्रीजी पोते, चोथी नारी संतोष ॥ शु० मु० ॥ ९ ॥ आव्यो मुनिवर गोचरी, विश्वनूतिने वार ॥ शु० ॥ बीजे पिंमे निमंत्रीयो, नवि लीधो अणगार ॥ शु० मु० ॥ १० ॥ मुज पिंमो ल्यो स्वा- मिजी, सचित्ते मिश्रित दीठ ॥ शु० ॥ ते पण मुनि लीधी नहीं, नारी बोले मीठ ॥ शु० मु० ॥ ११ ॥ आहार माहारो प्रजु दीजीए, ए ठे मोटुं पात्र ॥ शु० ॥ आज सफल दिन आपणो, जंगम तीरथ जात्र ॥ शु० मु० ॥ १२ ॥ आहार लीधो मुनिए सूजतो, हेम रतन थइ वृष्टि ॥ शु० ॥ नर नारी बेहु थयां, सुधां समकितदृष्टि ॥ शु० मु० ॥ १३ ॥ नरपतिने जइ द्विज कहे, देखो जगन फल देव ॥ शु० ॥ कनक धारा वूठी घणी, नृप नणी ततखेव ॥ शु० मु० ॥ १४ ॥ में धन दीधुं तुम नणी, जइने ल्यो तुमे तेह ॥ शु० ॥ त्रीजी ढाल खंम आठमे, नेमविजय कहे एह ॥ शु० मु० ॥ १५ ॥

डुहा.

धन लेवा ब्राह्मण गया, तव ते थया अंगार ॥ क्षण एक रहीने वली ग्रहे, जव थाये ते व्याल ॥ १ ॥ पूछे नृपतिने कहुं, नहीं जगन फल नाथ ॥ विश्वभूति कृत दान फल, इह नव परभव साथ ॥ २ ॥ नृप नणे विश्वभूतिने, हुं आव्यो तुज गेह ॥ जगन्य आध फल लेइने, दान आध फल देह ॥ ३ ॥ विश्वभूति बोले हसी, दान फल न देवाय ॥ देव तणुं वित्त द्यो तमे, अध फल यो कहे राय ॥ ४ ॥ विश्वभूति वलतुं कहे, सांजल राय सुजाण ॥ स्वर्ग मुक्ति सुख जेहथी, ते कोण वेचे दान ॥ ५ ॥ देखी सत्य नृप द्विज तणुं, तुठ्यो आपे रिद्ध ॥ दलिद्र गयुं विश्वभूतिनुं, जिहां साहस तिहां सिद्ध ॥ ६ ॥ नृपति पूछे मुनि प्रते, दान केतां कहो स्वाम ॥ त्रिधा दान मुनिवर कहे, दीधे सीजे काम ॥ ७ ॥

ढाल चोथी.

नयरो नगीनो मारो, हाररो हीरो मारो, केसररो नीनो मारो साहेबो,
राजेंद्र मारा, घडी एक रहो जूकाय हो–ए देशी.
शास्त्रे दान ते जाणीए, राजेंद्र मारा, रा० लिख लिखायी ग्रंथ हो ॥ साध नणी

ते दीजीए, रा० पावे मुक्तिनो पंथ हो ॥१॥ ए आंकणी ॥ दान जाचकजन दीजीए, रा० दाने दोलत थाय हो ॥ जश कीरति इह जव लहे, रा० परजव मुगति जाय हो ॥ दा० ॥ २ ॥ अजयदान नर जे दीए, रा० तेहने जय नवि कोय हो ॥ इह जव परजव जाणजो, रा० शिवपुरनां सुख होय हो ॥ दा० ॥ ३॥ आहार उंपध वस्त्र करी, रा० थिर धरमे थापीजे हो ॥ धरम थयो जाव दानथी, रा० आठ करम कापीजे हो ॥ दा० ॥ ४ ॥ कर नीचा जिनवर करे, रा० अन्नदान परधान हो ॥ तेहनी उपम कुण कहुं, रा० दीजे देइ मान हो ॥ दा० ॥ ५ ॥

यतः—ददस्वान्नं ददस्वान्नं । ददस्वान्नं युधिष्ठिर ॥

अन्नदः प्राणदो लोके । प्राणदः सर्वकामदः ॥ १ ॥

रोगिच्यो जेषजं देयं । रोगा देहविनाशकाः ॥

देहनाशे कुतो ज्ञानं । ज्ञानाजावे न निवृत्तिः ॥ २ ॥

वस्त्र विविध प्रकारनां, रा० हित करी आपे हाथे हो ॥ तेहनुं फल सद्गुरु कहे, रा० उत्र धरावे माथे हो ॥ दा० ॥ ६ ॥ दान त्रण एम सांजली, रा० पृथ्वीपति प्रतिबुरू हो ॥ विश्वजूति पण तिहां थयो, रा० व्रतधर श्रावक शुरू हो ॥

दा० ॥ ७ ॥ सोमशर्मा मंत्रीश्वरे, रा० कथा सुणी नीम लीध हो ॥ लोहायुध धरुं नहीं, रा० काठ कृपाणज कीध हो ॥ दा० ॥ ८ ॥ पिशुने काठ कृपाणनी, रा० नृपतिने वात ते नापी हो ॥ सजा मांहे नृप वेसीने, रा० असिनी वात प्रकाशी हो ॥ दा० ॥९॥ खड्ग जोइ क्षत्रिय तणां, रा० मंत्रीनो असि माग्यो हो ॥ खल विलसित जाएयुं खरुं, रा० नरम सही मुज नांग्यो हो ॥ दा० ॥ १० ॥

यतः–परवादे दशवदनः । पररंध्रनिरीक्षणे सहस्राक्षः ॥
सधृती वित्तहरणे । बाहुसहस्रार्जुन पिशुनः ॥ १ ॥

सानो धरम जो माहरो, रा० तो लोहमय असि थाजो हो ॥ एम कही राजाने दीधो, रा० संकट दूरे जाजो हो ॥ दा० ॥ ११ ॥ कोश थकी राये काढीउं, रा० लोह फलहलतो दीठ हो ॥ खल साहमुं जोइ कहे, रा० केम जूठुं कह्युं धीठ हो ॥दा०॥१२॥

यतः–सर्वदेवमयो राजा । वदंति विवुधा जनाः ॥
तस्मात्तत्पुरो नैव । वदेन्मृषा कथंचन ॥ १ ॥

फाखो चुगलने नृप वदे, रा० तव मंत्री एम आखे हो ॥ कोप प्रजुजी मत करो, रा० ए जूठुं नवि नाखे हो ॥ दा० ॥१३॥ में जिनधर्मज आदर्यो, रा० जाएयो लोहनो

दोष हो ॥ काष्ठ कृपाण करावीयो, रा० पुण्य तणो थयो पोष हो ॥ दा० ॥ १४ ॥
हमणां धर्म प्रजावथी, रा० लोह खड्ग ए दीसे हो ॥ सांजले राजा प्रजा सहु,
रा० धरम करो निशदिसे हो ॥ दा० ॥ १५ ॥ हुं धरमे निश्चल थइ, रा० प्रत्यक्ष
प्रत्यय जोय हो ॥ शेठ प्रमुख साचुं कहे, रा० लता न माने सोय हो ॥ दा० ॥ १६ ॥
चोर मंत्री राजा कहे, रा० तजे न डुरजन चाल हो ॥ खंरु आठमे चोथी ढली, रा०
नेमविजय कहे ढाल हो ॥ दा० ॥ १७ ॥

डुहा.

नागश्री पूछे यकी, जंपे मधुरी वाण ॥ में एम समकित पामीयुं, प्रीतम हृयडे आण ॥ १ ॥ नगरी नाम वणारसी, जीतारि तिहां नृप ॥ कनकचित्रा राणी रतन, रंजा सरखी रूप ॥ २ ॥ सुता सुमित्रा तेहनी, माटी वहोली खाय ॥ पांडु रोग तेथी थयो, आर्यां मली एक आय ॥ ३ ॥ तस उपदेशे तिणे तज्यां, अनंतकाय अजक्ष ॥ निरुज थइ ते कन्यका, फल्यो नियम प्रत्यक्ष ॥ ४ ॥ जोवन आवी जाणीने, नृप विवाह निमित्त ॥ पट अनेक देखामीया, कोइ न आव्यो चित्त ॥ ५ ॥

## ढाल पांचमी.

सुरसा संदेशो कहे मारा पूज्यनेरे, मानीश तुज उपगाररे–ए देशी.

पहवे अंगदेशनो धणीरे, जवदत्त नामे नृपालरे ॥ जीतारि नृप प्रते एम कहेरे, मुजशुं करो विवसालरे ॥ ए० ॥ १ ॥ दासीना पुत्र तुज केम देउंरे, जाति हीण मनमां जाणरे ॥ राजकन्या जोग ए केम होयेरे, बोलजे विमासी वाणरे ॥ ए० ॥ २ ॥ जवदत्त कहे जाति शुं करेरे, जो मांहि गुण नवि होयरे ॥ गुणने आदर सहु करेरे, जाति न माने कोयरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ गुणवंत तो पिण तुज जणीरे, कन्या केम देवायरे ॥ जो लाखिणी तोपण वाणहीरे, तेहिज पेहेरवी पायरे ॥ ए० ॥ ४ ॥ राज्य तणी करे कामनारे, तो पुत्री परणावरे ॥ नहिंतर वेवे लेयशुंरे, मुज वचन मन लावरे ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीतारि कहे जीतशेरे, संग्रामे मुज जेहरे ॥ मुजथी अधिको जे होशेरे, कुंवरी पति गणे तेहरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ घर आवी सेना सजीरे, जव चाले जवदत्तरे ॥ राणी कहे तिणे अवसरेरे, एक सुणो प्रजु वत्तरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ कन्या काजे कलह किशोरे, सरखे कुले विवाहरे ॥ नृप कहे वचन जीतारिनुंरे, कारण करण उच्छाहरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ जवदत्त आव्यो उतावलोरे, अरिनी सीम नजीकरे ॥

जीतारिए ते सांनलीरे, वदे वचन निर्गलीकरे ॥ ए० ॥ ए ॥ मूषक जेम मंजारी तणारे, दिल करे पाकण दंतरे ॥ मृगलो सिंहने जेम मारवारे, खरी धरे मन खंतरे ॥ ए० ॥ १० ॥ वींटी नगरी ते चिहुं दिसेरे, मंत्री कहे तेणी वाररे ॥ कन्या स्वामि आपणी दीजीएरे, नीति वचन संनाररे ॥ ए० ॥ ११ ॥

यतः—त्यजेदेकं कुलस्यार्थे । ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ॥
ग्रामं जनपदार्थे च । आत्मार्थे पृथ्वीं त्यजेत् ॥ १ ॥

बोले जीतारि रखे बीहोरे, अरि बल नाखुं तोमरे ॥ साचुं कह्युं तुमे स्वामिजीरे, पण परदल बहु जोररे ॥ ए० ॥ १२ ॥ साहस सिद्धि होशे सहीरे, नेली करो बहु नेडरे ॥ सत धरी राम लक्ष्मणेरे, रावण नाख्यो उवेमरे ॥ ए० ॥ १३ ॥ दूत मूकीने कहावीयोरे, जयदत्ते नली जातरे ॥ सुता देइने सुखे रहोरे, कां पमो मृत्युनी पांतरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ वचन सुणीने परजल्योरे, दूतने कीधो दूररे ॥ रणरुंका वजमावीनेरे, चमीउ प्रबल पमुररे ॥ ए० ॥ १५ ॥ मेला सुनट मली नव्यारे, नारी थयो नारथरे ॥ नाठी सेना जीतारिनीरे, बोले मंत्रीसर तथरे ॥ ए० ॥ १६ ॥ राजन इहां र-

देवुं नहींरे, जीतारि कहे तामरे ॥ जीत्यो नर लक्ष्मी लहेरे, वरे मृतने सुरवामरे ॥ ए० ॥ १७ ॥

जीवे च लन्यते लक्ष्मीः । मृते चापि सुरांगना ॥
कायोऽयं क्षणविध्वंसी । का चिंता मरणे रणे ॥ १ ॥

पामे शिवसुख जीवतोरे, एम समजाव्यो नरेंदरे ॥ आठमा खंमनी पांचमीरे, ढाल कही नेमे आणंदरे ॥ ए० ॥ १८ ॥

## दुहा.

जीतारि गढमां रह्यो, नवदत्त नांजी पोल ॥ नगर लुंटवा मांडीयो, थयो हाल कल्लोल ॥ १ ॥ मुज कारण अनरथ होये, सुमित्रा देख सरूप ॥ सागारी अणसण करी, जाइ पमी जल कूप ॥ २ ॥ पुण्य प्रनावे थल थयुं, आवी सुरवर कोड ॥ सती थापी सिंहासने, उना ये कर जोम ॥३॥ राजजुवनमां पेसतां, देवे थंन्यो नवदत्त॥ एहवे किणही आवीने, कहे सुमित्रा वत्त ॥ ४ ॥ तज्यो क्रोध अहंकार सुण, पाम्यो परम समाध ॥ सुमित्राने आवी कहे, नगिनी खम अपराध ॥ ५ ॥ जीतारि नवदत्त

वे, मलीया मांहो मांह ॥ पाटे थापी निज पुत्रने, लीधी दीक्षा उछांह ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष पुण्य फल देखीने, हुं थइ समकित धार ॥ कुंदलता कहे ए असत्य, तें नाणुं निरधार ॥ ७ ॥

## ढाल ७ मी.

रसीया रानोरे दान तणे रसे—ए देशी.

पुछे पदमलताने शेठजी, केम थइ समकित प्राप्ति ॥ सोभागी ॥ सा कहे स्वामि कंपिलपुरवरे, हरिवाहन राजा शुभ मति ॥ सो० पु० ॥ १ ॥ रिषभदास शेठ तिहां वसे, पदमावती प्रिया आधार ॥ सो० ॥ पदमश्री पुत्री छे तेहने, प्रत्यक्ष लक्ष्मीनो अवतार ॥ सो० पु० ॥ २ ॥ नवजोवन युवति आवी चली, एक दिन देहरे जातां दीठ ॥ सो० ॥ बुधदास शेठ तणे सुते वली, बुद्धसिंह घरे आव्यो नीठ ॥ सो० पु० ॥ ३ ॥ काम तणे बाणे करी पीडीयो, पडीयो जाइ जुने खाट ॥ सो० ॥ जमणवेला थइ पुछे शेठजी, जमे नहीं नंदन इणा माट ॥ सो० पु० ॥ ४ ॥ लाज तजीने वात कही तेणे, बेटा जूठो न कीजे जक्ष ॥ सो० ॥ मदिरा मांस तजी जे आपणे, पंचाक्षथी तिण गणे अधिक ॥ सो० पु० ॥ ५ ॥ तेहनी पुत्रीनी आशा

कीसी, वलतुं बोले बुद्धसिंह बोल ॥ सो० ॥ के परणुं के सरणुं आगनुं, ए मुज जाणो वचन अमोल ॥ सो० पु० ॥ ६ ॥ आश्वासीने तेह जमाडीयो, करशुं ताहरुं वेगुं काम ॥ सो० ॥ दिन दिन देहरे जाइ उपासरे, श्रावक थयो कपट परणाम ॥ सो० पु० ॥ ७ ॥ बुद्धसिंहे परणी रिषन सुता, पदमश्री आणी आवास ॥ सो० ॥ मिथ्या करणी देखी तेहनी, दिल मांही ते रही विमास ॥ सो० पु० ॥ ८ ॥ पदमश्रीने बुध गुरु एम कहे, पुत्री सिध्यां वंछित काम ॥ सो० ॥ सर्व धर्म मांहे बोध धर्म वडो, जिहां डुःख तणुं नहीं नाम ॥ सो० पु० ॥ ए ॥ उत्तर वलतो पदमश्री दीए, हंस सरिखा जे नर होय ॥ सो० ॥ पाणी दूध पटंतर ते करे, अरिहंत धर्म समो नहीं कोय ॥ सो० पु० ॥ १० ॥ रिषनदास अणसण करी आराधना, काळे पहोतो मुगति मोझार ॥ सो० ॥ सासु ससरो नणंद विशेषथी, संतापे वली तस जरतार ॥ सो० पु० ॥ ११ ॥ तोपण धरम न मूके मानिनी, ससरो कहे वहु सांजल वात ॥ सो० ॥ तारो बाप मरी मृगलो थयो, वनमां मुज गुरु लही अवदात ॥ सो० ॥ १२ ॥ जो तुम गुरु एवा ज्ञानी अछे, तो परजाते तेह जमाड ॥ सो० ॥ हुं पण साचो धरम समाचरुं, नाखुं मिथ्यामति सवि छांड ॥ सो० पु० ॥ १३ ॥ वहुनुं वचन सु-

पीने हरखीयो, तेड्यो भोजन करवा बुध ॥ सो० ॥ पग धायानुं गुरुनुं पगरखुं, छानुं लीधुं न जाणे मूढ ॥ सो० पु० ॥ १४ ॥ सुकुम खंड करी वधारीयुं, नहींनो दीधो छाको छोल ॥ सो० ॥ शाक करी पीरसे निज हाथशुं, गुरु शिष्य जमतां करे कलोल ॥ सो०पु०॥ १५ ॥ अद्भुत व्यंजन शाक समारीयो, पद्मश्रीने दे स्याबास ॥ सो० ॥ आठमा खंडनी ढाल छठी कही, नेमविजयनी बुद्धि प्रकाश ॥ सो० पु० ॥ १६ ॥

### दुहा.

भोजन करीने उठीया, दीधां फोफल पान ॥ आज कृतारथ हुं थयो, गणुं जनम सुप्रमाण ॥ १ ॥ बाहिर आवी वाणही, जोवे गुरुजी जाम ॥ एक अछे बीजी नहीं, पूछे सेवक ताम ॥ २ ॥ शोध करी सघले कह्युं, अमे न जाणुं पूज्य ॥ पद्मश्री आवीने कहे, तुमने न पडे सूज ॥ ३ ॥ गति जाणो मुज तातनी, पेट पड्युं पगत्राण ॥ पोताने भीत्रो नहीं, अहो भलुं तुम ज्ञान ॥ ४ ॥ बुध गुरु रीसे धडधड्यो, मुखथी बोले गाल ॥ खाधुं अमे शुं गासकुं, पापिणी बोल संभाल ॥ ५ ॥

पीती, वसतुं बोले बुद्धसिंह बोल ॥ सो० ॥ के परणुं के सरणुं आगनुं, ए मुज जाणो वचन अमोल ॥ सो० पु० ॥ ६ ॥ आश्वासीने तेह जमामीयो, करशुं तारुं वेगुं काम ॥ सो० ॥ दिन दिन देहरे जाइ उपासरे, श्रावक थयो कपट परणाम ॥ सो० पु० ॥ ७ ॥ बुद्धसिंहे परणी रिषभ सुता, पदमश्री आणी आवास ॥ सो० ॥ मिथ्या करणी देखी तेहनी, दिल मांही ते रही विमास ॥ सो० पु० ॥ ८ ॥ पदमश्रीने बुध गुरु एम कहे, पुत्री सिध्यां वंछित काम ॥ सो० ॥ सर्व धर्म मांहे बोध धर्म वडो, जिहां दुःख तणुं नहीं नाम ॥ सो० पु० ॥ ९ ॥ उत्तर वलतो पदमश्री दीए, हंस सरिखा जे नर होय ॥ सो० ॥ पाणी दूध परंतर ते करे, अरिहंत धर्म समो नहीं कोय ॥ सो० पु० ॥ १० ॥ रिषभदास अणसण करी आराधना, काळे पहोतो मुगति मोजार ॥ सो० ॥ सासु ससरो नणंद विशेषथी, संतापे वली तस नरनार ॥ सो० पु० ॥ ११ ॥ तोपण धरम न मूके मानिनी, ससरो कहे वहु सांभल वात ॥ सो० ॥ तारो बाप मरी मृगलो थयो, वनमां मुज गुरु लही अवदात ॥ सो० ॥ १२ ॥ जो तुम गुरु एवा ज्ञानी अछे, तो परनाते तेह जमाक ॥ सो० ॥ हुं पण साचो धरम समाचरुं, नाखुं मिथ्यामति सवि दांक ॥ सो० प० ॥ १३ ॥ वलतुं वचन म-

णीने हरखीयो, तेड्यो नोजन करवा बुध ॥ सो० ॥ पग मायानुं गुरुनुं पगरखुं, ढानुं लीधुं न जाणे मूढ ॥ सो० पु० ॥ १४ ॥ मुह्म खंड करी वघारीयुं, वहीनो दीधो छाको छोक ॥ सो० ॥ शाक करी पीरसे निज हाथशुं, गुरु शिष्य जमतां करे कलोल ॥ सो० ॥ ॥ सो० पु० ॥ १५ ॥ अद्भुत व्यंजन शाक समारीयो, पदमश्रीने दे स्याबास ॥ सो० ॥ आतमा खंडनी ढाल ठठी कही, नेमविजयनी बुद्धि प्रकाश ॥ सो० पु० ॥ १६ ॥

## डुहा.

नोजन करीने उठीया, दीधां फोफल पान ॥ आज कृतारथ हुं थयो, गणुं जनम सुप्रमाण ॥ १ ॥ बाहिर आवी वाणही, जोवे गुरुजी जाम ॥ एक अठे बीजी नहीं, पूछे सेवक ताम ॥ २ ॥ शोध करी सघले कह्युं, अमे न जाणुं पूज्य ॥ पदमश्री आवीने कहे, तुमने न पडे सूज ॥ ३ ॥ गति जाणो मुज तातनी, पेट पड्युं पगत्राण ॥ पोताने प्रीछो नहीं, अहो नसुं तुम ज्ञान ॥ ४ ॥ बुध गुरु रीसे धडधड्यो, मुखथी बोले गाल ॥ खाधुं अमे शुं खासडुं, पापिणी बोल संनाल ॥ ५ ॥

## ढाल सातमी.

विंदलीनी देशी.

रिखजी रीस न कीजे, क्रोधे करी संजम ठीजे हो ॥ नारी मति निरखोजी ॥ हुं नवि चोलुं मरखा, प्रत्यक्ष देखाडुं परीक्षा हो ॥ ना॰ ॥ १ ॥ जो कुम्न थइ रंक, देवो तुज एहवो दंक हो ॥ ना॰ ॥ मुंमी मस्तक खर चामी, तुजने मूकीशुं कहामी हो ॥ ना॰ ॥ २ ॥ जो हुं थाउं साची, तुमे जैन धरमे रहो राची हो ॥ ना॰ ॥ एम मांहो मांहे भाखी, पामोशी राख्या साखी हो ॥ ना॰ ॥ ३ ॥ उचकाव्या ते मोगा, मिंढलना करी प्रयोगा हो ॥ ना॰ ॥ खंम चरमना कीणा, देखामी कीधा दीणा हो ॥ ना॰ ॥ ४ ॥ मठ पोताने आव्यो, बुधदास शेठ तेमाव्यो हो ॥ ना॰ ॥ कहे वहुने काढ घरथी, कुटुंबनो जो होये अरथी हो ॥ ना॰ ॥ ५ ॥ काढी वहु काली हाथे, बुद्धसिंह निसरीयो साथे हो ॥ ना॰ ॥ मान जिहां नवि लहीए, ते नगरी मांहे नवि रहीए हो ॥ ना॰ ॥ ६ ॥ एम चिंतवी नीकलीयां, सारथवाहने जइ मलीयां हो ॥ ना॰ ॥ पदमश्री देखी ठलीयो, सारथवाहनो मन चलीयो हो ॥ ना॰ ॥ ७ ॥ आदर वहोलो

१ मूर्ख.

नग दीधां, अत्यागम वेराग लीधो हो ॥ ना० ॥ जो ए जम घर जावे, तो नारी मु-
ज घर आवे हो ॥ ना० ॥ ८ ॥ विनवी एम रसोइ, विष सहित करावे सोइ हो ॥
ना० ॥ भोजनवेला सुविसाले, जमवा वेठा एक थाले हो ॥ ना० ॥ ९ ॥ रसवती
पीरसी गुरु, बुद्धसिंह मन शंका हुइ हो ॥ ना० ॥ जमवा वेठा जाइ, एक थाल किसी
गुराइ हो ॥ ना० ॥ १० ॥ एम कही नेयुं अन्न, कीधुं जम्या विण मन्न हो ॥ ना० ॥
वत्स मूरछा आइ, लोक कहुं शेठने जाइ हो ॥ ना० ॥ ११ ॥ शोकाकुल तिहां आवे,
पद्मश्री एम बोलावे हो ॥ ना० ॥ पुत्र सारथवाह प्राणी, मैं साकणी तुं सही जाणी
हो ॥ ना० ॥ १२ ॥ पहुने तुं जीवाके, नहींतर घासुं तुज खांडे हो ॥ ना० ॥ संकट
ए कोण आव्युं, पद्मश्री मनमां लाव्युं हो ॥ ना० ॥ १३ ॥ सतीए जपी नवकार,
गुणाणां निवनो नार हो ॥ ना० ॥ पंच विषय तिहां गया, शासननी देवा तुठा हो ॥
ना० ॥ १४ ॥ पद्मश्री विष नाये, नगरे आनी नगनाये हो ॥ ना० ॥ बोध जति
नृपराय, करे जैन धरम उल्लास हो ॥ ना० ॥ १५ ॥ कुं तिहां समकित पामी, प्रत्यक्ष
फल देखी नामि हो ॥ ना० ॥ कुंदननानी कसोटी, ए गातां सपती रोटी हो ॥ ना०

॥ १६ ॥ आठमा खंमनी ढाल, सातमी कही निपट रसाल हो ॥ ना० ॥ रंगविजयनो शिष्य, नेम प्रणति करे निशदिस हो ॥ ना० ॥ १७ ॥

## डुहा.

हवे कनकमाला प्रते, पूछे शेठ विचार ॥ तुज समकितनी वात कहे, रे गुणवंती नार ॥ १ ॥ ते बोली पीउ सांजलो, सूर्यपुरे नरपाल ॥ जूपति शेठ समुद्रदत्त, सागरदत्ता सुकुमाल ॥ २ ॥ तेहनी कुखे उपनो, सागर नामे कुमार ॥ जिनदत्ता बेटी वली, मातपिता सुखकार ॥ ३ ॥ शेठ कोसंबी नगरने, जिनदत्ते परणी तेह ॥ सागर करम वशे करे, व्यसन सातशुं नेह ॥ ४ ॥ वचन न माने बापनुं, घणी वार तलार ॥ जाली मूक्यो तेहने, गणी शेठ सुत सार ॥ ५ ॥ आरक्षक वली एकदा, जाली सोंप्यो राय ॥ कोमी जतन जो कीजीए, मूरख स्वजाव न जाय ॥ ६ ॥ तेडी तेहना तातने, राजा जाखे एम ॥ काढ एहने घर थकी, जो तुं वांछे खेम ॥ ७ ॥

दुर्जनजनसंसर्गात् । साधोरपि जवंति विपदो वा ॥
दशमुखकृतेऽपराधे । वारिधिरपि बंधनं प्राप्तः ॥ १ ॥

## ढाल आठमी.

कोयलो परवत धुंधलोरे लोल—ए देशी.

मंदिरथी सुत काढीयोरे लोल, सांजली नृपनी वाणरे ॥ सुगुण नर ॥ सागर कोसंबी गयोरे लोल, जिन जगिनीने जाणरे ॥ सु० ॥ १ ॥ व्यसन निवारो वेगलां रे लोल, (ए आं०) व्यसन थकी दुःखदायरे ॥सु०॥ व्यसन संगति वारजोरे लोल, जेम तुमने सुख थायरे ॥ सु० व्य० ॥२॥ व्यसनी सांजली तेहनेरे लोल, वेहेने न दीधो मानरे ॥ सु०॥ नागपक्षिण जाये जिहांरे लोल, तिहां पामे अपमानरे ॥ सु० व्य० ॥ ३ ॥ नगर मांही सागर जमेरे लोल, कोइ न पूछे वातरे ॥ सु०॥ मुनि दीठो एक तेहवेरे लोल, चरणकमल नमी तेहनां रे लोल, सुणे एणे धरम न मातरे ॥ सु० व्य० ॥ ४ ॥ चरणकमल नमी तेहनां रे लोल, सुणे वाणेवा सुजाणरे ॥ सु०॥ अनंतकाय अनक्ष्य तजयांरे लोल, व्यसन तणां पच्चरकाणरे ॥ सु० व्य०॥५॥ एरणी जिनवच हृयमखेरे लोल, धरमी सांजली जायरे ॥ सु०॥ माणस मूकी तेडावीयोरे लोल, संगति करे मन लायरे ॥ सु० व्य०॥ ६ ॥ आपीने धन आपणोरे लोल, मंडाव्यो व्यापाररे ॥ सु०॥ हलवे हलवे पामीयोरे लोल, शोना द्रव्य अपाररे ॥ सु० व्य० ॥ ७ ॥ तिणे व्यापारे आवीयारे लोल, सूरजपुरना शाहरे ॥ सु० ॥

तेहने देखी तातनेरे लोल, मलवा करे उमाहरे ॥ सु० व्य० ॥ ८ ॥ गामां उंट ने पोठीयारे लोल, जलां जरी क्रयाणरे ॥ सु०॥ वेहेन तणी अनुमति लेइरे लोल, सागर कीध प्रयाणरे ॥ सु० व्य० ॥ ९ ॥ नगर थकी जब ढूकडुंरे लोल, निसरीया साथ मूकरे ॥ सु०॥ उतावला घर जाइएरे लोल, राते गया वाट चूकरे ॥ सु० व्य० ॥ १० ॥ अटवी मांही जइ पड्योरे लोल, जूखे अति पीडायरे ॥ सु०॥ फल पाकां ने फूटरांरे लोल, सहुने आव्यां दायरे ॥ सु० व्य० ॥ ११ ॥ सागर पूछे तेहनेरे लोल, कहो एहनुं तुमे नामरे ॥सु०॥ नाम अमे जाणुं नहींरे लोल, एशुं नहीं मुज कामरे ॥ सु० व्य० ॥ १२ ॥ जेणे फल खाधां ते ढल्यारे लोल, धरणी तले भसकायरे ॥ सु० ॥ स्त्रीरूप धरी वनदेवतारे लोल, नियम परीक्षा आयरे ॥ सु० व्य० ॥१३॥ सरस सुगंध फल आगलेरे लोल, मूकी भाखे नारीरे ॥ सु० ॥ ए फल सुंदर जे जखेरे लोल, रोग जरा दे निवारीरे ॥ सु० व्य० ॥ १४ ॥ जरा जाजरी हुं हतीरे लोल, तरुणी थइ फल खायरे ॥ सु० ॥ सागर कहे नाम एहनुंरे लोल, मुजने सुणावो मायरे ॥ सु० व्य० ॥ १५ ॥ नाम नथी हुं जाणतीरे लोल, तो मुजने छे निमरे ॥ सु० ॥ व्रतनो भंग करुं नहींरे लोल, ज्यां जीवुं त्यां सीमरे ॥ सु० व्य० ॥ १६ ॥ दृढपणुं देखी

देवतारे लोल, छुठी कहे वर मागरे ॥ सु०॥ मित्र ठगाको माहरारे लोल, जेम दुःख जाये जागरे ॥ सु० व्य० ॥ १७ ॥ टाली मूरछा तेहनीरे लोल, आण्या सूरजपुर पासरे ॥ सु० ॥ रतनमंरुपे सागर ठवेरे लोल, नाटक करे उल्लासरे ॥ सु० व्य० ॥ १८ ॥ राजा अचरिज सांजलीरे लोल, आव्यो जोवा काजरे ॥ सु० ॥ मातपिता आवी मल्यांरे लोल, धर्मथी सीध्यां काजरे ॥ सु० व्य० ॥ १९ ॥ धर्म जिनेश्वरनो तिहांरे लोल, में पाम्यो मन जावरे ॥ सु० ॥ कुंदलता माने नहीरे लोल, तुमे कहो वात बनावरे ॥ सु० व्य० ॥ २० ॥ नृप सचिव मन चिंतवेरे लोल, पापणी न माने साचरे ॥सु०॥ आठमा खंरुनी आठमीरे लोल, ढाल कही नेमे वाचरे ॥सु० व्य० ॥२१॥

दुहा.

विद्युल्लता प्रते वारता, हवे शेठ पूछंत ॥ तुजने प्राप्ति धर्मनी, केम थइ कहो विरतंत ॥ १ ॥ बोले ते विद्युल्लता, चंपापुरे सुरंग ॥ नृपति राज करे जलो, वरते आण अखंड ॥ २ ॥ शेठ नाम सुरदेव छे, गयो व्यापारे विदेश ॥ अश्वरतन लेइ आवीयो, कुशल आपणे देश ॥ ३ ॥ मूल देइ राजा लीया, घोरा घणा प्रधान ॥ वधी प्रीति नृप शेठने, ते दिनथी बहु मान ॥ ४ ॥ मासखमणने पारणे, शेठ घरे

एक साध ॥ आव्यो देखी चिंतवे, चिंतामणि में लाध ॥ ५ ॥ मोदक तस प्रतिलाभीने, वांदे बे कर जोम ॥ देवे करी घर आंगणे, वृष्टि कनकनी कोड ॥ ६ ॥ समुद्रदत्त नामे वणिक, दान तणां फल देख ॥ निंदे निज निरधनपणुं, शेठ प्रशंस विशेख ॥७॥

ढाल नवमी.

सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे–ए देशी.

हुं हवे परदेशे जइ धन लावुंरे, दलिद्री तणुं नाम दूरे दावुंरे ॥ चार मित्रशुं समुद्रदत्त चाल्योरे, सिंहलद्वीप जइ नयणे निहाल्योरे ॥ १ ॥ पलास गाम अनुक्रमे पहोतारे, मांहो मांही कहे गहगहतारे ॥ समुद्रदत्त कहे रहेशुं अहींयारे, मन माने ते जाओ तिहांरे ॥ २ ॥ सहुको वली इहां एकठा थाशुंरे, पछी आपणी दिशे जाशुंरे ॥ बीजो साथ नगरमां पेठोरे, सरोवर पाळे समुद्रदत्त बेठोरे ॥ ३ ॥ अशोक नामे सोदागर आव्योरे, समुद्रदत्तने तेणे बोलाव्योरे ॥ जो तुं माहरा घोडा पालेरे, ताहरुं माग्युं करुं हवालेरे ॥ ४ ॥ दिन मांहे दोय वेला जूतिरे, खट मास अंतरे कंचल जूतिरे ॥ त्रण वरसनी अवधि कीजेरे, अश्व युगल मन गमता लीजेरे ॥ ५ ॥ एम परठीने रह्यो समुद्रदत्तरे, अशोक पुत्रीशुं लाग्युं चित्तरे ॥ मीठां फल

तस आणी आपेरे, कमलश्री पति तेहने आपेरे ॥ ६ ॥ एक दिन कमलश्री प्रते चाल्युंरे, निज देश जवा मैं मन राख्युंरे ॥ ते कहे हुं तुज आधीन साथेरे, लगीगो पति तुं माहरे माथेरे ॥ ७ ॥ ईश्वर पुत्री तुं मृड अंगीरे, सिंहण लंकी नयण कुरंगीरे ॥ हुं निरधनने पंथिक विदेशीरे, केम तुं माहरे साथ आवेशीरे ॥ ८ ॥ तुज गुण राती प्रीतम मोरारे, वचन न बोलो एवां कठोरारे ॥ रागे महिला संपिरे प्राणरे, वीरवी रामा करे तस हाणरे ॥ ९ ॥

ददाति रागिणी प्राणान् । हन्ति द्वेषिणं पुनः ॥
ग्राह्यो रागो विरागो वा । कोपि लोकोत्तरः स्त्रियः ॥ १ ॥

जब मुज तात देखाडे घोडारे, तव डुचला ने लेजो सजोडारे ॥ जे धोलो ते आकाशे उडेरे, रातो ते जलमां नवि बुडेरे ॥ १० ॥ एम संकेत करी ते रहीयारे, चारे मित्र आव्या उमीहारे ॥ चालो आपणे देशे जइएरे, कुटुंबशुं मली सुखीया थइएरे ॥ ११ ॥ समुद्रदत्त आवी अशोकने आगेरे, त्रण वर्षनी मस्तुकी मागेरे ॥ मंडुरा मोटी

१ चाकरी. २ अश्वशाला.

ते देखाडेरे, अश्व युगल लो जे दाय आवेरे ॥१२॥ ऊबला दीठा ते वे लीधारे, समुद्र-दत्तनां वांछित सिधारे ॥ आठमा खंडनी नवमी ढालरे, नेमविजये कही उजमालरे ॥१३॥

## दुहा.

अशोक कहेरे मूढ तुं, आज कालमां प्राण ॥ मूके एहवा अश्वने, कां ले ए अंध आण ॥ १ ॥ कनकाजरण अलंकर्यो, माता उंचा वाह ॥ बीजा ले तुं वापडा, ठांमी एहनी चाह ॥ २ ॥ समुद्रदत्त कहे एणे सर्युं, नहीं अवरशुं काम ॥ पासे ऊजा ते कहे, जग दुराग्रही नाम ॥ ३ ॥ हित उपदेश एहने विषे, दीधो निष्फल थाय ॥ मूरखनुं औषध नहीं, कहे महा कविराय ॥ ४ ॥

यतः— मूर्खस्य षड्चिह्नानि । गर्व दुर्वचनं मुखम् ॥
विवादी विरोधी च । कृत्याकृत्यं न मन्यते ॥ १ ॥

मुज पुत्री आसक्त छे, कहो हवे एह जेद ॥ गहन चरित्र छे नारीनो, किसो करुं मन खेद ॥ ५ ॥ जो ए अश्व आपुं नहीं, थाय प्रतिज्ञा जंग ॥ कमलश्री परणावीने, दीधा लेह तुरंग ॥ ६ ॥

ढाल दशमी.

उदया ते पुरो मांग्योरे, गढ अरबुदरी जान महाराजा, अमा मोरी, केसरीयो वर रूमोजी लागे–ए देशी.

समुद्रदत्त हवे चालीयोरे, साथे कमलश्री लेय ॥ जन जोजो ॥ अशोक नौवाहक शिखव्यारे, उतरतां कहे तेय ॥ जन जोजो सहु कोय ॥ वात अपूरव जे होय ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जिनधर्म सखाइ जीवनेरे, इण भव परभव जोय ॥ जन० ॥ धर्म विना धंधे पड्यारे, सुख नवि पामे कोय ॥ ज० वा० ॥ २ ॥ अश्व युगल जो तुं दीएरे, नदी उतारुं तुज ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त कहे तुमे चोरटारे, घोडो एहवुं अबुज ॥ ज० वा० ॥ ३ ॥ जो तुं बेसीश नावमांरे, तो रहेशे हय दोय ॥ ज० ॥ कमलश्री कहे पीयुजीरे, सवि चिंता नाखो खोय ॥ ज० वा० ॥ ४ ॥ आकाशगामी उपरेरे, चढी बेसो मुज संग ॥ ज० ॥ जलगामी हाथे धरीरे, जलनिधि तरो निःशंक ॥ ज० वा० ॥ ५ ॥ तेम करीने ते उतर्यांरे, आव्यां चंपापुरी मांह ॥ ज० ॥ एक अश्व नृपने दीयोरे, नृप पुत्री दे उछाह ॥ ज० वा० ॥ ६ ॥ अर्ध राज वली आपेरे, वे नारीशुं सुख ॥ ज० ॥ समुद्रदत्त नित भोगवेरे, दूर गयां सवि दुःख ॥ ज० वा० ॥ ७ ॥

सुरदेवने आपीयोरे, हय नृप रक्षा काज ॥ ज० ॥ सुर तीरययात्रा करेरे, चढी विजय-
तर वाज ॥ ज० वा० ॥ ८ ॥ गगने जातां देखीयोरे, पल्लिपतिए एक वार ॥ ज० ॥
सुभट सहुने ते कहेरे, वेगो सजा मोझार ॥ ज० वा० ॥ ए ॥ ए अश्व आणी आपे
जीकेरे, पुत्री सहित अर्ध राज ॥ ज० ॥ तेहने आंपुं सांजलीरे, कुंतल कहे लावुं वाज
॥ ज० वा० ॥ १० ॥ चंपा मांहे आवीनेरे, जइ हय हरण उपाय ॥ ज० ॥ कोय न लाजे तव
तिहांरे, कपट श्रावक ते थाय ॥ ज० वा० ११ ॥ सुरदेवने देहरेरे, आंखे पाटा बांध ॥
ज० ॥ पडीयो पूछे तेहनेरे, कहे मुजने आवाध ॥ ज० वा० ॥ १२ ॥ सुरदेव जिन
पूजीनेरे, पूछ्युं ए छे कुण ॥ ज० ॥ महा श्रावक अचाक कहेरे, नेत्रा मइ गांठीन तुण
॥ ज० वा० ॥ १३ ॥ पय प्रणमीने विनवेरे, दयावंत सुरदेव ॥ ज० ॥ वाले आवो आ-
पणेरे, घर करुं तुमारां सेव ॥ ज० ॥ वा० ॥ १४ ॥ मंदिर तेड्यो हाथशुंरे, करे परि-
चर्या तास ॥ ज० ॥ कपटी निशि अवसर लहीरे, हय चढी चाल्यो आकाश ॥ ज०
वा० ॥ १५ ॥ वहेता वाहने चाबखोरे, मार्यो कुंतल वीट ॥ ज० ॥ पाड्यो हेठो
पापीनेरे, शत खंड थयो शरीर ॥ ज० वा० ॥ १६ ॥ अश्व जइ अष्टापदेरे, चैत्य तणे
रह्यो घार ॥ ज० ॥ विद्याधर हरि देखीनेरे, रुपिने पूछे विचार ॥ ज० वा० ॥ १७ ॥

चारण मुनिय अवधे करीरे, कह्युं गंधर्व सरूप ॥ ज० ॥ तुरंग विना सुरदेवनेरे, वेदन ॥ ज० वा० ॥ १८ ॥ आठमा खंड तणी कहीरे, दशमी ढाल रसाल ॥ ज० शिष्य एम कहेरे, नेमविजय उजमाल ॥ ज० वा० ॥ १९ ॥

## दुहा.

सूतो उठ्यो शेठजी, हय नवि दीठो तेथ ॥ अश्वपालने पूछीयुं, कोण जाणे गयो ॥ १ ॥ ठगी गयो ते धर्म ठग, थयो उत्तर नृप देश ॥ धर्म करंतां एहवो, आवी यो क्लेश ॥ २ ॥ टाले श्री जगवंतजी, मरणांतग उवसग्ग ॥ शरण करी जिन-नो, चैत्य कर्यो काउस्सग्ग ॥३॥ चुगले जइ चाडी करी, कह्यो अश्व उदंत ॥ घर लुंटी जूपति कहे, करो एहनो अंत ॥४॥ चाकर चैत्ये दोमीया, कर साही करवाल ॥ देरा मांही पेसतां, देवे थंज्या ततकाल ॥ ५ ॥ सेनानी नृप मूकीयो, कहेवा तेह हेवाल ॥ कोपी सेना सज करी, चमी आव्यो जूपाल ॥ ६ ॥ नृप विना सहु थंजीया, चिंते राजा चित्त ॥ कोइ उपाय इसो होये, रहे रतन ने मित ॥ ७ ॥ विद्याधर जिनवर नमी, सामी साहाय्य निमित्त ॥ अश्व लेइने आवीया, चंपापुरी तुरत ॥ ८ ॥

## ढाल अगीआरमी.

जगजीवन जग वालहो–ए देशी.

ऋषभने मुनी आगणे, जिनहर मांही जाय लालरे ॥ पदपंकज परमेष्टिनां, प्रणमी पाणे गुणीगाय लालरे ॥ साचो धरम संसारमां ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ साचो धरम संसारमां, धरम करो सहु कोय लालरे ॥ धरमे धण कण संपजे, धरमथी शिवसुख होय लालरे ॥ सा० ॥ २ ॥ अमे विद्याधर आवीया, अष्टापदनी जात्र लालरे ॥ अश्व तुमारो आणीयो, तुज दीठे ठर्यां गात्र लालरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ शरण करी नृप शेठनो, चरण नमे वारंवार लालरे ॥ मूकी सेना मोकली, देवे यंत्री जे द्वार लालरे ॥ सा० ॥ ४ ॥ गुरदेव काउस्सग्ग पारीने, हय सोंप्यो नृप हाथ लालरे ॥ वय गये संयम लीयो, शेठ नृपति वे साथ लालरे ॥ ५ ॥ विद्याधर उच्छव करी, पहोत्या निज आवास ला-लरे ॥ एम प्रत्यक्ष फल देखीने, धरम कर्यो उल्लास लालरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ नारी स-हित कहे शेठजी, तें जाण्युं ए सत्य लालरे ॥ कुंदलता कहे एकली, ए पण वात असत्य लालरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ चित्त मांहे एम चिंतवे, श्रेणिक अभयकुमार लालरे ॥ प्रत्यक्ष दीठुं उथवे, अहो पापिणी ए नार लालरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ हुं पहने कही परे,

देशुं शिक्षा सवार लालरे ॥ आज पछी जेम गइवुं, न कहे कुरु कचार लालरे ॥ सा०
॥ ए ॥ अरुणोदय देखी हवे, कुकडे कीधो सोर लालरे ॥ आव्यो मंदिर आपणे, रा-
जा मंत्री चोर लालरे ॥ सा० ॥ १० ॥ परजाते परिवारशुं, परवरीयो नृपाल लालरे ॥
अर्हद्दासने घर आवीयो, शेठ रतन जरी थाल लालरे ॥ सा० ॥ ११ ॥ आगल मूकी
जेटणुं, कर जोडी पाये लाग लालरे ॥ उत्तो एम विनति करे, माहरो मोटो जाग
लालरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ जंगम तीरथ माहरे, घर आव्या महाराज लालरे ॥ प्रसन्न
थइ प्रजु जाखीए, मुज सरिखुं जे काज लालरे ॥ सा० ॥ १३ ॥ अवनिपति कहे धर्म-
नी, कथा कही तुमे रात लालरे ॥ निंदी नारी जेणीए, दाखवो ते मुज त्रात लालरे
॥ सा० ॥ १४ ॥ निग्रह करशुं तेहनो, सुणी शेठ झांखो थाय लालरे ॥ शुं नृप पोते
आवीयो, के दुर्जने कह्युं जाय लालरे ॥ सा० ॥ १५ ॥ असत्ये नृप दंम पामीए, सा-
चे नारी नाश लालरे ॥ एम त्यां जन कहेवे सहु, अर्हद्दास रह्यो विमास लालरे ॥
सा० ॥ १६ ॥ कुंदलता निसुणी एशुं, आवी नृपने पास लालरे ॥ दुष्ट नारी ते हुं
अतुं, पण सुणजो अरदास लालरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ धणी शोकने आवीयो, परियागत
जिनधर्म लालरे ॥ पितर न जाणे माहरा, श्रीजिनशासन मर्म लालरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

तोपण ए फल सांजली, पामी हुं वैराग लालरे ॥ प्रिय पूठी करी पारणुं, व्रत लेशुं धरी राग लालरे ॥ सा० ॥ १ए ॥ महीमा दीठो धरमनो, एणे सघले साक्षात् लालरे ॥ तोपण जोग तजे नहीं, तेणे जूठी कहुं वात लालरे ॥ सा० ॥ २० ॥ आठमा खंम तणी कही, अग्यारमी ढाल रसाल लालरे ॥ रंगविजय शिष्य एम जणे, नेमविजय उजमाल लालरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

## डुहा.

जो ए संयम आदरे, तो सघलुं कहुं सत्य ॥ जूपादिक सहुको कहे, अहो अहो ताहरी मत्य ॥ १ ॥ व्रत लेवा मुज मन हतुं, पड्यो जोगने पास ॥ दीक्षा लेशुं हवे अमे, एम जंपे अर्हद्दास ॥ २ ॥ जोजन जक्ति करी जली, नृप संप्रेड्यो धाम ॥ आठ दिवस उंछव करी, धन खरच्युं शुज ठाम ॥ ३ ॥ सद्गुरु पासे संयम लीयो, आठ नारीशुं अर्हद्दास ॥ तप जप कर्म खपावीने, कीधो शिवपुर वास ॥ ४ ॥ सुहस्ती सूरि देशन सुणी, संप्रति नाम नरेश ॥ जिनवर धर्म विशेषथी, वरतावे निज देश ॥ ५ ॥ धरम करो जवियण सदा, धरमे जावठ जाय ॥धरमे मनवंछित फले, वसे शिवपुर मांय ॥ ६ ॥ जिन प्रासाद करावीयां, दीधां बहु परे दान ॥ जनम सफल करी आपणो,

पाम्यो अमर विमान ॥ ७ ॥ श्री हीरविजय सूरीसरु, शुनविजय तस शिष्य ॥ नाय-विजय कविजन नला, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ ८ ॥ रूपविजय कविराजमां, कृष्णविजय कर जोम ॥ रंगविजय वे रंगीला, नावे पदनी होम ॥ ९ ॥ आठमो खंड पूरो थयो, ढाल अग्यारे सार ॥ नेमविजयने नित्य प्रते, होजो जयजयकार ॥ १० ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे अष्टम खंमः

---

## खंड ए मो.

### ढाल पहेली.

ते मुज मिछामि डुक्कडं—ए देशी.

सांजलरे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेश ॥ मानवजव दोहिलो लह्यो, उत्तम कुल एश ॥ सां० ॥ १ ॥ देवतत्त्व नवि उंलख्यो, गुरुतत्त्व न जाएयो ॥ धरमतत्त्व नवि सद्दह्यो, हयडे ज्ञान न आण्यो ॥ सां० ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी जिन सूर प्रते, सरिखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि उंलख्या, वयणे वखाण्या ॥ सां० ॥ ३ ॥ देव थया मोहे मह्या, पासे राखे ठे नारी ॥ काम तणे वशे जे पड्या, अवगुण अधिकारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ कोइक क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ को कीणथी ते बीहता, हथियार संवाह्या ॥ सां० ॥ ५ ॥ क्रूर नर जेहने घणुं, देखंतां मरीए ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीए ॥ सां० ॥ ६ ॥ आठ करम सांकल जड्या, जमे जवही मोजारो ॥ जनम मरणां जव देखीने, पाम्यो नहीं पारो ॥ सां० ॥ ७ ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगे ॥ वेष करी राजा कृष्णनो, वली जिक्षा मागे ॥ सां० ॥ ८ ॥ मुखकर वाये वांसली, पहेरे तन वागा ॥ जावतां मन जोजन करे, एहवा ज्रम लागा ॥ सां० ॥ ए ॥ दे-

॥ हरि हरणाकस मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥
लो दैत्य संहारया, अथा उद्यमवंतो ॥ दस अवतारे जुजुआ, दश
सां० ॥ १० ॥ मछ कछ अवतार लेइ, सहु असुर विदार्या ॥ दश अवतारे जुजुआ, दश
दैत्य संहार्या ॥सां०॥ ११॥ माने मूढ मिथ्यामति, पहवा पण देवो ॥ फेर फेर अवतार
ले, देवो कर्मनी टेवो ॥ सां० ॥ १२ ॥ स्वामि शोभे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम
जाणीने परिहरो, नेमविजय विचारो ॥ सां० ॥ १३ ॥

## ढाल बीजी.

ऊधव माधवने केजो—ए देशी.

जगनायक जिनराजने, दाखवीए देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव
॥ ज० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया नहीं, ठांव्यां आठे मदथान ॥ रति अरति वेदे नहीं,
नहीं लोभ अज्ञान ॥ ज० ॥ २ ॥ निद्रा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक ॥ म-
छर नय वंध प्राणीनो, न करे प्रण तीक ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, न-
हीं नारी प्रसंग ॥ हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अंग ॥ ज० ॥ ४ ॥ पद्मासन
पूरी करी, बेठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण जेहनां, नाशाग्र रहंत ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिन-
मुद्रा जिनराजनी, दीठे परम उल्लास ॥ समकित थाये निरमलुं, दीपे ज्ञान उजास

॥ ज० ॥ ६ ॥ गत आगत सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ जिन देखे सवि वस्तुने, केवलज्ञाने अलोक ॥ ज० ॥ ७ ॥ मूरत श्री जिनराजनी, समतारस भंडार ॥ शीतल नयण सोहामणां, नहीं वांक लगार ॥ ज० ॥ ८ ॥ हसित वदन हरखे हीयो, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर छवी प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवर तणी एहवी छवी, कीहांए न दीसंत ॥ देवतत्त्व एम जाणीए, सहु सुणजो संत ॥ ज० ॥ १० ॥ नवमा खंड तणी कही, ढाल बीजी ए सार ॥ रंगविजय शिष्य नेमने, होजो जय-जयकार ॥ ज० ॥ ११ ॥

## ढाल त्रीजी.

### यत्तनी देशी.

श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, मांही कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासत्थादिक पंचेह, पाप श्रमण कह्या पंचेह ॥ १ ॥ गृहीनां मंदिरथी आणी, आहार करे भात पाणी ॥ सुइ उंघे जे निशदिस, सरसादि विसवा वीस ॥ २ ॥ क्रिया न करे केणे वार, पडिक्कमणुं सांज सवार ॥ न करे सूत्र अरथ सझाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाये न करे पच्चखाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां ते सुपवित्र ॥ ४ ॥ सु-

विहित मुनि समाचारी, पाले नहीं ते अणगारी ॥ आहारना दोष घायाल, टाले नहीं कीणही काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जले देह पखाले ॥ चरचा अरचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभ बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली झाझो राखे, वली वली अधिकाने धांखे ॥ माठी जे करणी कहीए, ते सघली जिणमें लहीए ॥ ७ ॥ एवा जेह कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाये दंभी ॥ किम कम्म प्रशंसा करीए, जब जव भवमां अवतरीए ॥ ८ ॥ लोढानी नावाने तोले, भवसायरमां जे बोले ॥ नेम कहे भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ए ॥

ढाल चोथी.

कर जोडी आगल रही—ए देशी.

गुण गिरुआ गुरु ओलखो, हयडे सुमति विचारीरे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहली, जूलां पडे नर नारीरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांचे इंद्रि वश करे, पंच महाव्रत पालेरे ॥ चार कषाय तजी जेणे, पांचे किरिया टालेरे ॥ गु० ॥ २ ॥ पांचे सुमते सूमता रहे, तीन गुपति जे धारेरे ॥ दोष बेंतालीश टालीने, पाणी भात आहारेरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ ममता छांडी देहनी, निरलोभी निरमायीरे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंत न कांइरे

॥ गु० ॥ ४ ॥ पमिलेहण नित्ये विधे, करे प्रमाद निवारीरे ॥ काळे शुद्ध क्रिया करे, पन्नर ठायांगे निवारीरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ धर्म तणां उपग्रण धरे, संयम पालवा काजेरे ॥ जोय जोइ पगलां नरे, लोक विरुद्धथी लाजेरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ल्ये देखी सुविशेषरे ॥ काळ प्रमाणे खप करे, दूषण टलता देखेरे ॥ गु० ॥७॥ कुपी संघल जे कला, सानिध्य केमही न राखेरे ॥ दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख नाखेरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ तन मेला मन उजला, तप करी क्षीण देहरे ॥ बंधन बे छेदी करी, विचरे जन निसनेहीरे ॥ गु० ॥ ९ ॥ एहवा गुरु जोइ करी, आदरीए शुभ नावेरे ॥ बीजो तत्त्व सुगुरु तणो, जगमां एम कहावेरे ॥ गु० ॥ १० ॥ नवमा खंमनी ए कही, ढाल चोथी ए चारुरे ॥ रंगविजय शिष्य एम कहे, नेमविजय श्रोता सारुरे ॥ गु० ॥ ११ ॥

## ढाल पांचमी.

करम न छूटेरे प्राणीया–ए देशी.

जवसायर तरवा जणी, धरम करे सारंभ ॥ पथ्थर नावेरे बेसणे, तरवो समुद्र

१ कर्मादान.

डुलंज ॥ज०॥१॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्यारे दान॥ आपे क्षेत्र पुण्यारथे, ब्रा-
ह्मणने देइ मान ॥ ज० ॥ २ ॥ छुटावे धाणी वली, पृथ्वी दानशुं प्रेम ॥ गोला कल-
सारे मोरीया, आपे दल तिल हेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ वली खणावेरे खांतशुं, कुवा सुंदर
वाव ॥ पुष्करणी करणी जली, सरवर सखर तलाव ॥ ज० ॥ ४ ॥ कंदमूल मूके नहीं, अ-
ग्यारस व्रत दीस ॥ आरंज ते दिन अति घणो, धरम किहां जगदीश ॥ ज० ॥ ५ ॥
याग करे होमे तिहां, घोडा नर नेरे छाग ॥ होमे जलचर माछीकां, धर्म किहां वीत-
राग ॥ ज० ॥ ६ ॥ करे सदाइरे नोरतां, जीव तणा आ आरंज ॥ हणे जेंसारे बोकडा,
तेहथी नरक सुलंज ॥ ज० ॥ ७ ॥ सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वज तणोरे श्राद्ध ॥ ते-
हथी पोंखेरे कागला, देखो एह उपाध ॥ ज० ॥ ८ ॥ तीरथ जाये गोदावरी, गंगा ग-
यारे प्रयाग ॥ नाहे आणगल नीरमां, धरम तणो नहीं लाग ॥ ज० ॥ ए ॥ इत्यादिक
करणी करे, परजव सुखनेरे काज ॥ एणी करणी मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥
ज० ॥ १० ॥ नवमा खंड तणी जली, पांचमी ढाल रसाल ॥ रंगविजय शिष्य एम
नणे, नेमने मंगल माल ॥ ज० ॥ ११ ॥

## ढाल ७मी.

जंबूद्वीपना जरतमां–ए देशी.

धरम खरो जिनवर तणोरे, शिवसुखनो दातार ॥ श्री जिनराजे प्रकाशीयोरे, जेहना चार प्रकारोरे ॥ ज्ञान विचारी जोय ॥ डुरगति पमतां जीवनेरे, धारे ते धर्म होयरे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ पांच महाव्रत साधुनांरे, दश विध धर्म विचार ॥ हितकारी जिनवर कह्यांरे, श्रावकनां व्रत बारोरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ पांचुंवर चारे वगेरे, विष सहु माटी हेम ॥ रात्रिजोजनने कह्यारे, बहुवीजांनो नेमरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ घोलवमां वली रींगणांरे, अनंतकाय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूलमांरे, संधाणां निशदिसोरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ चलित अन्न वासी कह्योरे, उंच सहु फल दक्ष ॥ धरमी नर खाये नहींरे, ए बावीश अजक्ष्यरे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ न करे निधंधसपणेरे, घरना पण आरंज ॥ जीव तणी जयणा घणीरे, न पीए अणगल अंबरे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ घृत परे पाणी वावरेरे, बीहे करतो पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधेरे, टाले जवना तापोरे ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीरे, सेवा जगति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकारे, समजे कोमल जीवोरे ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ मास मासने आंतरेरे, कुश अग्र जुंजे बाल ॥

कला न पहोंचे सोलमीरे, श्री जिनधर्म विशालोरे ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ जिनधर्म मुक्ति-
पुरी दीएरे, चोगति भ्रमण मिथ्यात ॥ एम जिनवर प्रकाशीयोरे, त्रीजो तत्व विख्या-
तोरे ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥

## ढाल सातमी.

घर आवोजी आंबो मोरीयो—ए देशी.

श्री जिनधर्म आराधीए, करी निज समकित शुद्ध ॥ जवि तप जप क्रिया कीधली,
लेखे पडे ते विशुद्ध ॥ १ ॥ कंचन कसी कसी लीजीए, नाणुं लीजे परीख ॥ देव गुरु
धर्म जोइने, आदरीए सुणो शीख ॥ कं० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने, परिहरीए
विष जेम ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मने, ग्रहीए अमृत करी तेम ॥ कं० ॥ ३ ॥ मूल धरम
जिनवरे कह्यो, समकित सुरतरु एह ॥ परजव सुख संपत्ति थकी, समकितशुं धरी
नेह ॥ कं० ॥ ४ ॥ सफल वारुव प्रतिबूझीया, केइ ग्रह्यां व्रत बार ॥ केइए चोथा
व्रतने ग्रह्यो, केइ थया अणगार ॥ कं० ॥ ५ ॥ केइ मृषावाद उचरे, के पाले शुद्ध
आचार ॥ समकतिधारी सहु थया, विनयी विवेकी नर नार ॥ कं० ॥ ६ ॥ सुहस्ती
सूरिना उपदेशथी, पाम्या धर्मनो मर्म ॥ केइ जाशे सुरलोकमें, केइ पामशे मृत्यु-

लोक धर्म ॥ कं० ॥ ७ ॥ संवत् अढार एकवीशमां, मास वैशाक सुद पक्ष ॥ तिथि पांचम गुरुवासरे, गाया गुण में सक्ष ॥ कं० ॥ ८ ॥ विजापुरमां विराजता, वृद्ध तप पक्षे सनूर ॥ चंद्र गछमां दीपता, श्री जिनसागर सूर ॥ कं० ॥ ए ॥ तेहनी सानिध में सही, गायो रास उल्लास ॥ उंठो अधिको अक्षर होये, शुद्ध करजो पंमित तास ॥ कं० ॥ १० ॥ रास कर्या कविए घणा, पण धर्मपरीक्षानो रास ॥ एह समोवम को नहीं, जेमां अधिकार छे खास ॥ कं० ॥ ११ ॥ सर्व संख्याए ग्रंथ कह्यो, पांच हजार उपर पांच ॥ ढालो कही नव खंमनी, एकसो ने दश वांच ॥ कं० ॥ १२ ॥ श्री हीरविजय सूरि तणो, शुभविजय तस शिष्य ॥ भावविजय कवि दीपता, सिद्धि नमुं निशदिस ॥ कं० ॥ १३ ॥ रूपविजय रंगे करी, कृष्ण नमुं कर जोम ॥ रंगविजय गुरु माहरा, मुज प्रणम्यानो कोम ॥ कं० ॥ १४ ॥ नवमो खंम पूरो थयो, साते ढाले करी सत्य ॥ नेमविजय कहे नित्य प्रते, राखजो धर्मशुं चित्त ॥ कं० ॥ १५ ॥

इति श्रीधर्मपरीक्षारासे नवम खंमः समाप्तः

धर्मपरीक्षानो रास समाप्त.